भीष्मपर्व

विषय-सूची

अध्याय | पृष्ठ

अध्याय		पृष्ठ
१—रणनीति	... ...	१
२—भयानक उत्पात	... ...	४
३— ,, ,,	... ...	७
४—चराचर वर्णन	... ...	१५
५—सुदर्शन द्वीप का वर्णन	... ...	१७
६—भूमि का परिमाण	... ...	१८
७—मेरु आदि का वर्णन	... ...	२२
८—अन्य वर्षों (भूखण्डों) का वर्णन	... ...	२५
९—भरतखण्ड का वर्णन	... ...	२६
१०—युगानुसार आयु वर्णन	... ...	३१
११—शाकद्वीप वर्णन	... ...	३२
१२—उत्तर द्वीप का वृत्तान्त	... ...	३५
१३—भीष्म की मृत्यु का सुनना	... ...	३६
१४—धृतराष्ट्र की जिज्ञासा	... ...	४०
१५—दुर्योधन का आदेश	... ...	४७
१६—सेनाओं का वर्णन	... ...	४८
१७—सैन्यव्यूह	... ...	५१
१८—कौरवों की सेना का वर्णन	... ...	५२
१९—पाण्डवों के सैन्यव्यूह का वर्णन	... ...	५५

अध्याय	पृष्ठ
२०—कौरवसैन्यव्यूह वर्णन	५८
२१—युधिष्ठिर और अर्जुन का कथोपकथन	६०
२२—श्रीकृष्ण अर्जुन-संवाद	६२
२३—दुर्गा-स्तुति	६३
२४—धृतराष्ट्र का विकल होकर सञ्जय से प्रश्न करना	६६
२५—सैन्यदर्शन वर्णन	६६
२६—सांख्य-योग	६९
२७—कर्म-योग	७८
२८—ज्ञान-योग	८४
२९—कर्मसंन्यास	८९
३०—अध्यात्म योग	९२
३१—ज्ञान विज्ञान योग या ज्ञान की व्याख्या	९८
३२—ब्रह्माक्षर निर्देश योग अथवा अन्तिम भावना का फल ...	१०१
३३—राजविद्या राजगुह्य योग	१०५
३४—भगवान् की विभूति	१०९
३५—विराट रूप दर्शन	११३
३६—भक्ति-योग	१२०
३७—क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-विज्ञान	१२२
३८—सत्व, रज, तम का वर्णन	१२६
३९—पुरुषोत्तम योग	१३०
४०—दैवी और आसुरी सम्पत्ति	१३३
४१—गुणत्रय-भेद वर्णन	१३५
४२—अर्जुन के अज्ञान का तिरोभाव	१३८
४३—गुरुजन पूजन	१४६
४४—समर का आरम्भ	१५४

अध्याय | पृष्ठ

४५—द्वन्द्व युद्ध १५६
४६ घोर प्रलय १६२
४७—विराट कुमार उत्तर का मारा जाना १६५
४८—विराट कुमार श्वेत का वध १६६
४९—शङ्ख के साथ लड़ाई १७७
५०—पाण्डवों की सेना का क्रौञ्चव्यूह १८१
५१—कौरवों के सैन्यव्यूह का वर्णन १८५
५२—भीष्म-अर्जुन युद्ध १८७
५३—धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य की लड़ाई १९१
५४—कलिङ्गराज भानुमान का वध १९४
५५—अभिमन्यु और लक्ष्मण की लड़ाई २०१
५६—गरुड़-व्यूह और अर्धचन्द्राकार व्यूह २०४
५७—तुमुल संग्राम २०५
५८—भीष्म प्रतिज्ञा २०८
५९—श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र ग्रहण २११
६०—अर्जुन और भीष्म का संग्राम २२१
६१—सायंमनि-नन्दन का वध २२४
६२—भीमसेन द्वारा गजसेना का संहार २२६
६३—सात्यकि और भीम की भेंट २३०
६४—महाराज धृतराष्ट्र के आठ पुत्रों का संहार २३३
६५—ब्रह्मा जी की स्तुति २३८
६६—ब्रह्मा के साथ देवगण का वार्त्तालाप २४४
६७—भीष्म और दुर्योधन का कथोपकथन २४७
६८—श्रीविष्णुस्तव २४९
६९—मकरव्यूह-श्येनव्यूह २५१

पृष्ठ

अध्याय २५३
७०—तुमुल युद्ध २५५
७१— ,, ,, ... २५८
७२— ,, ,, ... २६०
७३—भीषण मुठभेड़ २६२
७४—सात्यकि के पुत्रों का मारा जाना २६५
७५—सैन्यव्यूहों की रचना २६७
७६—चिन्तित धृतराष्ट्र २७०
७७—भीम और द्रोण की बहादुरी २७५
७८—भीमसेन की वीरता २७७
७९—भीम दुर्योधन संवाद २८१
८०—भीष्म और दुर्योधन की बातचीत २८३
८१—प्रथम धावा २८६
८२—शङ्ख वध २९०
८३—शल्य की हार २९४
८४—युधिष्ठिर का रोष २९७
८५—चित्रसेन का रथ भङ्ग ३००
८६—पाण्डवों का विजय ३०४
८७—महासागर व्यूह और शृङ्गाटक व्यूह ३०६
८८—भीम द्वारा धृतराष्ट्र के अष्ट पुत्रों का संहार ३०९
८९—विकट युद्ध ३१२
९०—आर्षशृङ्गि द्वारा इरावान का वध ३१८
९१—घटोत्कच का पराक्रम ३२०
९२—दुर्योधन के साथ घटोत्कच की लड़ाई ३२२
९३—कौरवों का घटोत्कच के साथ युद्ध ३२५
९४—घटोत्कच की माया ... ...

अध्याय पृष्ठ

९५—घटोत्कच के साथ भगदत्त की लड़ाई ३२८
९६—समरभूमि का दृश्य ३३३
९७—दुर्योधन का विलाप ३३८
९८—भीष्म का दुर्योधन को उत्तर ३४१
९९—अपशकुन और व्यूह रचना ३४५
१००—अभिमन्यु का पराक्रम ३४६
१०१—अलम्बुष का रणक्षेत्र से पलायन ३५०
१०२—गजों का संहार ३५३
१०३—भीष्म और धृष्टद्युम्न का युद्ध ३५५
१०४—भीष्म-सात्यकि-युद्ध ३५९
१०५—शल्य के साथ धर्मराज का युद्ध ३६१
१०६—अपराजित भीष्म पितामह ३६३
१०७—भीष्म का पाण्डवों को अपने मारे जाने का उपाय बतलाना ३६६
१०८—भीष्म शिखण्डी संवाद ३७७
१०९—भीष्म और अर्जुन का युद्ध ३८१
११०—भीष्म संरक्षण ३८४
१११—द्वन्द्व युद्ध ३८७
११२—उदास द्रोण का अश्वत्थामा के साथ वार्तालाप ३९१
११३—भीष्म का आगे बढ़ना और अर्जुन का पराक्रम ३९४
११४—भारी विपत्ति, भीमार्जुन की अद्भुत वीरता ३९८
११५—प्राणों का दाँव ४०१
११६—भीष्म का विस्मयोत्पादक पराक्रम प्रदर्शन ४०४
११७—भीष्म का शौर्य ४०८
११८—भीष्म का भीषण पराक्रम ४१३

अध्याय | पृष्ठ

११९—भीष्म का पतन ··· ··· ··· ··· ४१६
१२०—अर्जुन और भीष्म का तकिया ··· ··· ··· ४२५
१२१—बाणगङ्गा का प्राकट्य ··· ··· ··· ४२१
१२२—कर्ण और भीष्म का वार्त्तालाप ··· ··· ··· ४३४

ग्रन्थ-लेखन

भीष्मपर्व

जम्बूखण्ड-विनिर्माण-पर्व

प्रथम अध्याय

रणनीति

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय ने कहा—हे मुने ! अब आप मुझे यह बतलावें कि, कौरवों के साथ, पाण्डवों, सोमकों तथा अन्य देशों से आये हुए राजाओं का युद्ध किस प्रकार हुआ था ?

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय ! सुनिये ; मैं बतलाता हूँ कि, कौरवों के साथ तपोभूमि कुरुक्षेत्र में पाण्डवों और सोमकों ने मिल कर किस प्रकार युद्ध किया था और उनका वर्ताव कुरुक्षेत्र में कौरवों के प्रति कैसा था ? यथाविधि वेदों का अध्ययन किये हुए, वे सब लड़ने के लिये उत्सुक थे और अपने अपने विजय के लिये दोनों पक्षों वाले लालायित भी थे । अतः वे सेना सहित गये और उन्होंने लड़ना आरम्भ कर दिया । रणक्षेत्र के पश्चिम भाग में दुर्योधन की सेना का पड़ाव था । उसकी वह सेना अजेय थी । इस सेना के निकट ही दुर्योधन के सहायक राजा अपनी अपनी सेनाओं के सहित पूर्वाभिमुख पड़ाव डाल ठहर गये । कुन्तीसुत युधिष्ठिर ने स्यमन्तपञ्चक नामक कुरुक्षेत्र के मैदान में बाहर की ओर क्रमशः सहस्रों तंबू खड़े कर दिये । बूढ़ों, बालकों तथा स्त्रियों को छोड़,

समस्त धरामण्डल के मनुष्य मात्र कुरुक्षेत्र में इतने जमा हुए कि, भूमण्डल के प्रदेश निर्जन से जान पड़ने लगे। जम्बूद्वीप के अन्तर्गत जो भूभाग सूर्यलोक से आलोकित है, उस भूभाग के समस्त राजा अपनी अपनी सेनाओं सहित कुरुक्षेत्र में एकत्रित हुए थे। समस्त वर्णों के लोगों ने देशों, नदियों, पर्वतों को अतिक्रम कर और बहुयोजन व्यापी भूभाग को घेर कर, एक स्थान पर निवास किया। हे राजन्! उन समस्त समागत श्रेष्ठ क्षत्रिय राजाओं से ले कर म्लेच्छ पर्यन्त पुरुषों के लिये उत्तम उत्तम प्रकार के भोज्य पदार्थ बनवा उनको भोजन करवाये। फिर जब रात हुई; तब उनको उत्तम स्वच्छ बिस्तरों सहित पलँग सोने के लिये दिये। इस प्रकार युधिष्ठिर ने सब का यथोचित सम्मान किया। जब लड़ाई का समय आया; तब युधिष्ठिर ने अपने पक्ष के योद्धा कहीं भ्रम में पड़ अपने ही पक्ष के योद्धाओं को न मारने लगें। अतः अपने पक्ष के योद्धाओं की पहिचान के लिये चिन्ह विशेष, आभूषणों तथा रथों में लगवा दिये।

अर्जुन की ध्वजा के अग्रभाग को देख कर श्वेत-छत्रधारी दुर्योधन ने अपने पक्ष के समस्त राजाओं सहित, अपनी सेना को पाण्डवों से लड़ने के लिये तैयार किया। स्वयं भी अपने भाइयों और अधीनस्थ घुड़सवार एवं गजसवार सेना सहित रणक्षेत्र में उपस्थित हुआ। दुर्योधन की इस धूमधाम और तैयारी को देख, हर्षितमना, युद्धाभिलाषी एवं विजय की कामना रखने वाले पाण्डवों ने तथा श्रीकृष्ण ने अपने सैनिकों को भी हर्षित देख, प्रसन्नता प्रकट की। फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन रथ पर सवार हो, अपने अपने शङ्ख बजाये। इन दोनों वीरसिंहों के पाञ्चजन्य एवं देवदत्त नामक शङ्खों की ध्वनि को सुन, मारे डर के कौरव-सेना के वीरों के वैसे ही मलमूत्र निकल पड़े; जैसे सिंहनाद सुन मृगादि पशु मलमूत्र त्यागने लगते हैं। सारांश यह कि, कौरव-सेना शङ्खध्वनि सुन घबड़ा गयी। सेनाओं के कूँच करने पर ऐसी धूल उड़ी कि, सूर्य ढक सा गया।

उस समय अन्धकार में कुछ भी न देख पड़ता था। उधर बादलों ने चारों ओर से सेना के ऊपर माँस और रुधिर की वृष्टि की। यह देख, सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। फिर कंकड़ियाँ उड़ाता हुआ पवन चलने लगा। इससे सैकड़ों हज़ारों योद्धा घायल हो गये।

हे राजेन्द्र! उस समय कुरुक्षेत्र में सावधान हो कर युद्ध करने के लिये खड़ी हुई दोनों सेनाएँ उमड़ते हुए दो समुद्रों की तरह जान पड़ती थीं। उस समय सचमुच उन दोनों सेनाओं की परस्पर भिड़न्त प्रलयकालीन दो समुद्रों की तरह अद्भुत देख पड़ती थी। हे राजन्! समस्त पृथिवी, जिसमें केवल बालक और वृद्ध ही बच रहे थे, कौरवों द्वारा बुलाये गये—उन सैन्यसमूहों के कारण घोड़ों, सिपाहियों, रथों और गजों से शून्य सी जान पड़ती थी। तदनन्तर कौरवों, पाण्डवों और सोमकों ने मिल कर आगे होने वाले युद्ध के नियंत्रण के लिये सर्वसम्मति से नियम बनाये। उन नियमों में एक नियम यह भी था कि, जब युद्ध बंद हुआ करे, तब वे सब आपस में पूर्ववत् प्रीति के साथ रहा करें। दूसरा नियम यह था कि समान बलवाला समान बलवाले के साथ ही लड़े। भीरु का युद्ध भीरु के साथ हो। जो वाक्युद्ध करे उसके साथ वाक्युद्ध किया जाय। जो सैनिक सेना को छोड़ बाहिर चला जाय, उसके ऊपर प्रहार न किया जाय। रथी रथी से, गजारोही गजारोही से, अश्वारोही अश्वारोही के साथ और पैदल पैदल के साथ लड़ें। अपनी इच्छा, उत्साह और योग्यतानुसार योद्धा को देख, योद्धा युद्ध करें। जो अपने ऊपर विश्वास रखता हो अथवा जो घबड़ाया हुआ हो, उसके साथ युद्ध न किया जाय। दूसरे के साथ युद्ध करने वाला, शरणागत, युद्धविमुख, शस्त्रहीन और भग्न-कवचधारी के ऊपर शस्त्रप्रहार कदापि न किया जाय। सारथि, साईस शस्त्र लाने वालों, मारु बाजे बजाने वालों, शङ्ख बजाने वालों में से किसी के ऊपर भी शस्त्रप्रहार न किया जाय।

इस प्रकार दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध सम्बन्धी नियमों के

ठहराव हुए। ऐसे ठहरावों का दो परस्पर विरोधी दलों में होना आश्चर्यप्रद व्यापार था। तदनन्तर वे समस्त महाबली वीर इन ठहरावों की अपने अपने सैनिकों को सूचना दे, परम प्रसन्न हुए। उनकी वह प्रसन्नता उनके मुखमण्डलों पर झलक रही थी।

दूसरा अध्याय
भयानक उत्पात

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! पूर्व और पश्चिम दिशाओं में युद्ध करने के लिये तैयार खड़ी दोनों पक्षों की सेनाओं को देख, सत्यवती-सुत, भरतवंशियों के पितामह, भावी युद्ध को प्रत्यक्ष देखने वाले—त्रिकालज्ञ, भगवान् वेदव्यास जी ने, शोकपीड़ित अपने पुत्रों के अन्याय का विचार कर, विचित्रवीर्य के पुत्र धृतराष्ट्र के पास आ, एकान्त में उनसे कहा—

व्यास जी बोले—हे धृतराष्ट्र! तुम्हारे पुत्रों एवं अन्य समस्त राजाओं के लिये यह विपरीत समय उपस्थित हुआ है। ये सब आपस में लड़ कर मरेंगे। क्योंकि इनकी परमायु अब पूर्ण होने को है। अतः इनका नाश अवश्यम्भावी है। समय के विपर्यय को देख, तुम हिराँसा मत हो। यदि तुम्हें इनको संग्राम में युद्ध करते हुए देखने की चाहना है, तो हे पुत्र! मैं तुम्हें देखने के लिये नेत्र दे सकता हूँ। तुम सहर्ष संग्राम देखना।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे ब्रह्मर्षिश्रेष्ठ! ऐसे भयङ्कर दृश्य का देखना मुझे पसंद नहीं है। किन्तु यदि आपकी मेरे ऊपर कृपा है तो मैं युद्ध का यथार्थ वृत्तान्त अवश्य सुनना चाहता हूँ।

वैशम्पायन जी ने कहा—हे जनमेजय! जब वेदव्यास जी ने यह जाना कि, धृतराष्ट्र युद्ध को अपनी आँखों से देखना तो नहीं चाहते, किन्तु युद्ध का वृत्तान्त सुनना चाहते हैं; तब वरदान देने वालों में श्रेष्ठ वेदव्यास जी ने सञ्जय को यह वर दिया।

वेदव्यास बोले—हे राजन्! संग्रामक्षेत्र में जो युद्ध होगा उसका वृत्तान्त यह सञ्जय नित्य तुम्हें सुनाया करेगा। संग्रामभूमि की कोई ऐसी घटना न होगी, जो सञ्जय को प्रत्यक्ष न देख पड़े। हे राजन्! दिव्य दृष्टि से सञ्जय को संग्रामभूमि की समस्त घटनाएँ देख पड़ेंगी और इसे सर्वज्ञता भी प्राप्त होगी। प्रत्यक्ष या परोक्ष—रात में या दिन में तथा मन में सोची हुई बात भी सञ्जय को अवगत हो जायगी। इसके शरीर पर शस्त्राघात न होगा, यह कभी श्रान्त भी न होगा। सञ्जय युद्ध में मारा न जा कर जीता जागता लौट कर आवेगा। हे राजन्! तुम शोक मत करो। मैं इन समस्त कौरवों और पाण्डवों की कीर्ति को फैलाऊँगा। हे नरेन्द्र! अवश्यम्भावी टल नहीं सकती। अतः उसके लिये तुम्हें शोक करना उचित नहीं। रही हार और जीत—सो समझ लो कि, जिधर धर्म है उधर ही विजय भी है।

वैशम्पायन जी बोले—हे राजन्! कौरवों के पितामह वेदव्यास जी इतना कह कर ही शान्त न हुए—प्रत्युत उन्होंने यह और कहा—हे राजन्! इस समर में बड़ा भारी लोकक्षय होगा। क्योंकि बड़े बड़े अपशकुन देख पड़ रहे हैं। बाज, गिद्ध, कौए, कङ्क और बक वृक्षों की डालियों पर आ कर गिरते हैं और एक साथ एकत्र हो जाते हैं। ये समस्त पक्षी अत्यानन्दित हो, युद्ध का अभिनन्दन कर रहे हैं। कच्चा माँस खाने वाले जीव जन्तु गजों और अश्वों का माँस खायँगे। भयानक भैरव जाति के पक्षी, भयानक शब्द कर रहे हैं। कङ्कपक्षी कुरुक्षेत्र की भूमि के मध्य में हो कर दक्षिण दिशा की ओर उड़े चले जाते हैं। हे भारत! प्रातःकाल और सायंकाल दोनों सन्ध्याओं के समय उदय और अस्त होते हुए सूर्य को मैं नित्य अनेक राहुओं से घिरा हुआ देखता हूँ। सन्ध्या के समय उभय ओर से श्वेत और रक्त वर्ण के बीच कृष्ण रंग की बिजली से युक्त एवं परिघ जैसे श्वेत, कृष्ण और लाल वर्ण के बादल सूर्य नारायण को ढका करते हैं, सूर्य, चन्द्रमा और तारागण प्रज्वलित से देख पड़ते हैं। यह

दृश्य मुझे रात दिन दिखलायी पड़ता है। यह भयङ्कर उत्पात बड़ा भय-दायक है। कार्तिकी पूर्णिमा के दिन नीलकमल की तरह स्वच्छ आकाश में ऐसा जान पड़ता है, मानों चन्द्रमा है ही नहीं; किन्तु वास्तव में चन्द्रमा कान्तिहीन और अग्नि की तरह धधकता हुआ सा देख पड़ता है। इसका फल यह है कि, परिघ तुल्य लंबी भुजाओं वाले शूरवीर और मृतक राजा एवं राजकुमार भूमि को आलिङ्गन कर रणभूमि में शयन करेंगे। रात्रि के समय उछल कर अन्तरिक्ष में लड़ते हुए शूकर और बिलावों के भयानक शब्द मुझे नित्य ही सुनायी पड़ते हैं। देवमूर्तियाँ काँपती हैं, हँसती हैं, और रुधिर की वमन करती हैं। वे पसीने में नहा उठती हैं और अपने आप गिर पड़ती हैं।

[नोट :—इससे स्पष्ट है कि महाभारत के काल में मूर्तिपूजन था और हिन्दू मूर्तिपूजन किया करते थे।]

हे राजन्! नगाड़े बिना बजाये अपने आप ही बजा करते हैं। क्षत्रियों के बड़े बड़े रथ बिना ही घोड़ों के अपने आप चल पड़ते हैं। कोयल, शतपत्र, कठकुड़वा पक्षी, तोता, पपैया, भास, सारस और मयूर बड़े दारुण बोल बोलते हैं। शस्त्र एवं कवचधारी अश्वारोही रुदन करते हैं। सूर्योदय वेला में आकाश में असंख्य टीढ़ियाँ देख पड़ती हैं। उभय सन्ध्याकाल में आग लगने जैसा उजियाला देख पड़ता है। धूल और माँस की वृष्टि होती है। त्रिलोकी में प्रसिद्ध और साधुजन पूजित अरुन्धती ने वसिष्ठ को अपने आगे से अपने पीछे कर लिया है। हे राजन्! देखिये शनैश्चर रोहिणी को पीड़ा देता हुआ स्थित है। चन्द्रमा में मृगचिन्ह नहीं देख पड़ता। अतः आगे चल बड़ा भय उपस्थित होने वाला है। यद्यपि आकाश में बादलों का पता नहीं है; तथापि महाभयानक मेघगर्जन सुन पड़ता है। यह देखो रुदन करते हुए हाथियों और घोड़ों की आँखों से अश्रुविन्दु टपक रहे हैं।

तीसरा अध्याय

भयानक उत्पात

वैशम्पायन जी बोले—हे राजन् ! गौओं की कोख से गधे उत्पन्न हो रहे हैं। पुत्र लोग अपनी जननियों के साथ रमण करने लगे हैं। अनऋतु के फूल फल वृक्षों में लगे हुए देख पड़ते हैं। पुत्र उत्पन्न करने वाली गर्भवती स्त्रियाँ, भयानक बालक उत्पन्न करती हैं। मांसभक्षी बनैले जीव, पक्षियों के साथ खाते हुए देख पड़ते हैं, तीन सींग, चार नेत्र, पाँच पैर, दो लिङ्ग, दो सिर, दो पूँछ और बड़ी बड़ी डाढ़ों वाले इन पशुओं का दिखलायी पड़ना सदा ही अनुभसूचक है। देखो, तीन पैरों वाले मोर एवं चार डाढ़ों और सींगों वाले पक्षी पैदा होते हैं और वे मुख फाड़ अमङ्गल सूचक चीत्कार करते हैं। इनके अतिरिक्त और भी नयी नयी बातें देख पड़ती हैं। तुम्हारे नगर में ब्रह्मवादियों की स्त्रियाँ गरुड़ और तोतों को जनती हैं। घोड़ी के गोवत्स उत्पन्न होता है। कुतिया के गीदड़ और शुकी अशुभभाषी मुर्गों और करभ (ऊँट के बच्चे) को जनती हैं। किसी किसी स्त्री के एक साथ चार चार पाँच पांच कन्याएँ उत्पन्न होती हैं और वे कन्याएँ जन्मते ही हँसती हैं, नाचती हैं और गाती हैं। चाण्डाल जाति के क्षुद्रजन महा-भय सूचक अट्टहास करते हुए नाचते और गाते हैं। इस धराधाम पर जान पड़ता है, मानों कालप्रेरित और शस्त्रधारिणी अनेक मूर्तियाँ बनी हुई हैं। बालक भी हाथों में डंडे लिये हुए एक दूसरे के ऊपर आक्रमण करते हैं। बालक खेल ही खेल में नगरों की रचना कर, लड़ने की अभिलाषा से एक दूसरे के नगरों को नष्ट कर डालते हैं। पेड़ों में पद्म, उत्पल और कुमुद के पुष्प उत्पन्न होते हैं। चारों दिशाओं में प्रचण्ड पवन चलता है। धूल का उड़ना बंद नहीं होता, बारबार भूचाल आता है और राहु का सूर्य पर आक्रमण होता है। केतु ने चित्रा नक्षत्र पर सवारी कसी है। जो राहु और केतु सदा सात राशियों के अन्तर पर रहा करते हैं, वे इस समय एक राशि पर आ

गये हैं। इससे जान पड़ता है कि, विशेषतया कौरवों का नाश होने वाला है। महाघोर धूमकेतु भी आकाश में उदय हुआ करता है और वह पुष्य नक्षत्र को दबाये बैठा है। यह महाउग्र ग्रह उभयपक्ष की सेनाओं का नाश करेगा। मङ्गल तिरछा हो कर मघा नक्षत्र में और बृहस्पति श्रवण नक्षत्र में हैं। सूर्यपुत्र शनिश्चर ने पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रों को पीड़ित कर रखा है। शुक्र पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र को दबा कर, प्रकाशित हो रहा है और परिघ नामक उपग्रह के साथ उत्तराभाद्रपद नक्षत्र को आक्रान्त करना चाहता है। धूमरहित अग्नि की तरह दहकता हुआ केतु ग्रह तेज सम्पन्न हो, इन्द्रदैवत ज्येष्ठा नक्षत्र को दबाये हुए है। चित्रा स्वाति के बीच में स्थित क्रूर ग्रह राहु, बड़े भयङ्कर रूप से धधक रहा है। वह रोहिणी को तथा एक नक्षत्र में स्थित सूर्य एवं चन्द्र को पीड़ित करता हुआ दक्षिण की ओर से टेढ़ा होता हुआ जा रहा है। अग्नि जैसा धधकता हुआ मङ्गलग्रह बार बार टेढ़ा हो बृहस्पति द्वारा आक्रान्त श्रवण नक्षत्र को पूर्ण दृष्टि से वेध करता हुआ स्थित है। खेती के कारण प्रशंसनीय पृथिवी सब प्रकार के क्षेत्रों से परिपूर्ण हो, पाँच बालों वाले यवों और शत बालों वाले धानों को उत्पन्न करती है। जो प्राणियों में उत्तम चौपाये हैं, और जिनके आधार पर यह जगत् स्थित है, वे गौएँ अपने बछड़ों को दूध पिलाने बाद दुहने पर दूध के बदले रक्त की धारें निकालती हैं। धनुषों से अग्नि की चिनगारियाँ निकलती हैं। तलवारें अग्निरूप हो रही हैं। इससे जान पड़ता है कि, युद्ध अति निकट है। इसकी सूचना इन अस्त्रों से मिल रही है। शस्त्रों की, कवचों की और ध्वजाओं की कान्ति अग्नि जैसी हो रही है। इससे जान पड़ता है कि, आगे चल कर बड़ा भयानक जनक्षय होने वाला है। हे राजन्! जब कौरवों का पाण्डवों के साथ महासंहारकारी युद्ध होगा; तब रक्त की नदियाँ बह निकलेंगी और उन नदियों में ध्वजा रूपी नावें तैरती फिरेंगी। जब पशु और पक्षी दिशाओं की ओर मुख फैला कर चीखें मारते हैं, तब ऐसा जान पड़ता

है कि उनके मुखों से मानों आग की लपटें निकल रही हों। यह बड़ा भारी अशुभ लक्षण है और यह महाभय का सूचक है। रात के समय एक पंख, एक आँख और एक ही टाँग का अत्यन्त क्रोधी पक्षी आकाश में उड़ता तथा रुधिर की वमन करता हुआ बड़ा भयङ्कर शब्द करता है। शस्त्र प्रज्वलित हो भयङ्कर प्रतीत होते हैं और सप्तर्षियों की आभा मन्द पड़ गयी है। अत्यन्त तेजस्वी बृहस्पति और शनि अपनी वार्षिक गति में नियत हो, विशाखा नक्षत्र के सामने नित्य दिखलायी पड़ते हैं। एक ही दिन अर्थात् तेरस को चन्द्र और सूर्य को राहु केतु ने ग्रस लिया है। इससे प्रजा का नाश होना जान पड़ता है। चारों ओर धूल की वर्षा होने से समस्त दिशाएँ अशोभित जान पड़ती हैं। रात्रि के समय बड़े बड़े भयानक उत्पात हुआ करते हैं और मेघों से रक्त की वर्षा हुआ करती है। राहु कृत्तिका को पीड़ित करता है। उत्पातसूचक धूमकेतु का आश्रय ग्रहण कर, प्रचण्ड वायु ऊपर ही ऊपर चला करता है। ऐसा वायु महा-युद्धकारी वैर को उत्पन्न करता है। अश्विनी आदि नौ नक्षत्रों में से जब किसी भी नक्षत्र का वेध किसी पापग्रह से होता है; तब *अश्वपति के लिये अनिष्ट होता है। मघा आदि नव नक्षत्रों में से जब किसी नक्षत्र का वेध किसी पापग्रह से होता है तब गजपति का अनिष्ट होता है। इसी प्रकार मूल आदि नव नक्षत्रों में से जब किसी नक्षत्र का वेध किसी पापग्रह से होता है, तब राजा का अनिष्ट होता है। हे राजन्! किसी समय तीनों प्रकार के छत्र सम्बन्धी नव नव नक्षत्रों की श्रेणी में से किसी नक्षत्र पर भी यदि पाप ग्रह पड़ जाय तो इस योग के कारण महाभय उपस्थित होता है। पहले चौदहवें, पन्द्रहवें अथवा सोलहवें दिन अमावास्या हुई थी। यह बात मैं जानता हूँ। किन्तु तेरहवें दिन अमावास्या का कभी होना मुझे तो स्मरण नहीं है। इस बार तो एक मास के भीतर ही तेरहवें दिन

---

* राजाओं के छत्र चक्र तीन प्रकार के होते हैं—यथा अश्वपति, गजपति और नरपति।

चन्द्रमा और सूर्य दोनों का ग्रहण हुआ है। सारांश यह कि, इस बार बिना पर्व ही के चन्द्र और सूर्य को राहु केतु ने ग्रस लिया है। इसका फल प्रजा का क्षय होना है। कृष्ण चतुर्दशी को माँस की दारुण वृष्टि हुई थी। यद्यपि राक्षसों के मुख तक रुधिर भर गया था; तथापि वे तृप्त नहीं हुए। महानदियाँ उलटी बहने लगी हैं और छोटी नदियों में रुधिर जैसा लाल जल बहने लगा है। कूओं के जल में वैसा ही फेन उमड़ता हुआ देख पड़ता है जैसा कि बैलों के मुख से निकला करता है। इन्द्र के वज्र जैसे कान्ति वाली उल्का बड़ी भारी गर्जन के साथ आकाश से नीचे गिरती हैं (अतः तुम्हें कल प्रातःकाल अन्याय करने का फल मिलेगा)। महर्षियों ने समस्त दिशाओं को अन्धकारमयी देख और जलती मशालें ले तथा बाहिर निकल एवं एकत्र हो आपस में कहा है कि, पृथिवी अगणित राजाओं का रक्त पीवेगी। कैलास, मन्दराचल और हिमाचल पर्वतों पर हज़ारों शब्द होंगे और पर्वत शिखर नीचे गिर पड़ेंगे। भूमि काँप उठेगी। चारों समुद्र उमड़ कर, पृथिवी को दोलायमान कर के अपने तटों के बाहिर निकल पड़ेंगे। यह देखो कंकड़ों की वर्षा करने वाला प्रचण्ड पवन वृक्षों का उन्मूलन करता हुआ बड़े वेग से बह रहा है। उसके वेग से उखड़े हुए वृक्ष ग्रामों और नगरों के भीतर जा जा कर गिरते हैं। ब्राह्मणों के अग्निहोत्र के अग्नि का रंग नीला पीला और लाल देख पड़ता है। वह दुष्टगन्धा वामार्चि भयानक शब्द करती है। हे राजन्! स्पर्श, गन्ध और रस भी विपरीत हो रहे हैं। बराबर काँपती हुई ध्वजाओं में से धूम निकलता है। नगाड़े और ढोलों में से अंगारों की वर्षा होती है। बड़े बड़े वृक्षों की टहनियों पर टोलियाँ बना कर बाईं ओर बैठे हुए कौए भयानक बोलियाँ बोल रहे हैं। पक्षीगण "पक्का" "पक्का" अशुभ सूचक शब्द करते हुए राजाओं के नाश के लिये इधर उधर उड़ कर, बारंवार राजाओं की ध्वजाओं के दण्डों के ऊपर जा बैठते हैं। हाथी बारंबार मल सूत्र का त्याग करते हुए थरथर काँपते हैं। घोड़े तथा हाथी उदास हो पसीने से

नाश जाते हैं। इस प्रकार स्थान स्थान पर वैपरीत्य और उत्पात देख पड़ते हैं। इस बात को सुन कर, हे राजन्! पृथिवी पर लोकक्षय न हो, इस बात पर ध्यान दे, जैसा उचित जान पड़े, वैसा समयानुकूल कार्य करिये।

वैशम्पायन जी बोले—अपने पिता वेदव्यास जी के इन वचनों को सुन कर, धृतराष्ट्र कहने लगे—यह तो मैं मानता हूँ कि, यह होनी टल नहीं सकती। अतः लोकक्षय अवश्य होगा। जो राजागण युद्ध में मारे जायँगे वे वीरों के लोकों में जायँगे और मोक्षरूपी सुख प्राप्त करेंगे। वे पुरुषसिंह महासमर में प्राण गँवा इसलोक में कीर्ति और परलोक में अनन्त सुख प्राप्त करेंगे।

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! धृतराष्ट्र से यह कह वेदव्यास जी ध्यान में मग्न हो गये। एक मुहूर्त्त तक ध्यान में मग्न रह, वे कहने लगे—हे राजेन्द्र! निश्चय ही जगत का संहारकर्त्ता काल है और पुनः लोकों की रचना करने वाला भी काल है। इस लोक में ऐसा कोई पदार्थ नहीं, जो सदा बना रहे। अतः तुम कुरुओं, जाति वालों, सगे सम्बन्धियों और अपने स्नेहियों को समझा बुझा कर चाहो तो रोक सकते हो। स्मरण रखो, जाति का नाश करना बड़ा बुरा काम है। यह मत धर्मवेत्ता ऋषियों मुनियों का है। इस कार्य को इसीसे मैं अच्छा नहीं समझता। अतः इसे तुम भी मत करो। हे राजन्! तुम्हारे घर में काल ही पुत्र रूप से उत्पन्न हो गया है। वेद हिंसा की निन्दा करता है। हिंसा से किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता। मनुष्य को अपना कुल धर्म निज शरीरवत् प्यारा होता है। जो अपने कुलधर्म को नष्ट करता है, उसे कुलधर्म भी नष्ट कर डालता है। तुम इस अनर्थ को रोकने का सामर्थ्य रखते हुए भी काल के वशवर्त्ती हो, इस अनर्थ में फँस गये हो। निजकुल और अपने पक्ष के राजाओं के नाश के लिये, तुम्हारा यह राज्य ही अनर्थ रूप हो गया है। यद्यपि स्वयं तुम धर्म से सर्वथा च्युत हो गये हो; तथापि कम से कम अपने पुत्रों

को धर्ममार्ग प्रदर्शित कर दो। हे दुर्धर्ष ! जो राज्य तुम्हें पापपङ्क में फँसा रहा है, उससे तुम्हें प्रयोजन ही क्या है? स्मरण रखो—यश, कीर्त्ति और धर्म द्वारा ही तुम स्वर्ग में जा पावोगे। तुम पाण्डवों का राज्य उनको लौटा दो और कौरवों को शान्त कर के बिठाओ।

जिस समय विप्रेन्द्र वेदव्यास यह सब कह रहे थे। उस समय उनके कथन में बाधा दे, अम्बिकानन्दन धृतराष्ट्र उनसे कहने लगे—

धृतराष्ट्र ने कहा—जन्म-मरण-सम्बन्धी मेरा और आपका तथा अन्य-जनों का ज्ञान समान है। मैं जन्म मरण का रहस्य यथार्थरीत्या जानता हूँ। किन्तु किया क्या जाय? लोग अपने लाभ के सामने धर्माधर्म का विचार नहीं करते। हे तात! अतः आप मुझे भी एक साधारण मनुष्य की तरह समझें। आप अतुलित प्रभाव सम्पन्न हैं, आप धीर हैं। आप सन्मार्गप्रदर्शक और जीवनाधार हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि, आप मेरे ऊपर प्रसन्न हों। हे महर्षे! मेरे पुत्र मेरे कहने में नहीं हैं। मैं जान बूझ कर अधर्म करना नहीं चाहता। आप धर्मप्रवर्त्तक हैं। आप ही भरतवंशियों के यश और कीर्ति के कारण रूप हैं। आप कौरवों और पाण्डवों के मान्य पितामह हैं।

व्यास जी बोले—हे धृतराष्ट्र! तेरे मन में यदि कुछ सन्देह हो तो तू उसे खोल कर कह, मैं तेरे सन्देहों को दूर कर दूँगा।

धृतराष्ट्र बोले—जिन जिन लक्षणों को देख कर युद्ध में विजय प्राप्त होने का निश्चय हो जाता है, उन समस्त लक्षणों को मैं आपसे यथावत् सुनना चाहता हूँ।

व्यास जी ने कहा—यदि होम के अग्नि से स्वच्छ ज्वालाएँ निकलें, उसकी लपटें ऊँची उठें और दहिनी ओर झुकी हों, उनमें धूम न हो, आहुतियों की पवित्र सुगन्धि चारों ओर फैल जायँ, तो यह भावी विजय के लक्षण समझने चाहिये। जब शङ्खों एवं मृदङ्गों से बड़ा गम्भीर शब्द निकले,

जब चन्द्र सूर्य की किरणें निर्मल हो जायँ तो ये सब भावी विजय के लक्षण हैं। हे राजन्! जब कौए उड़ते उड़ते एक स्थान पर बैठ मधुर बोलियाँ बोलें अथवा जिस सेना के पीछे बोलते हुए कौए देख पड़ें, उस सेना का विजय निश्चय ही समझना चाहिये। यदि सेना के आगे कौए बोलें तो समझना चाहिये कि वे सेना को आगे बढ़ने से रोकते हैं। राजहंस, तोते, क्रौंच, शतपत्र आदि पक्षी जब मङ्गलकारिणी बोलियाँ बोलते हैं और रणक्षेत्र की दहिनी ओर उड़ कर जाते हैं; तब जीत होती है। यह जानकार ब्राह्मणों का मत है। जिसकी सेना भूषणों, कवचों, ध्वजा, पताकाओं से सज्जित होती है और जिसकी सेना के घोड़े हिनहिनाते हैं और जिस सेना को देख विपक्षी सेना के सैनिक दहल जाते हैं, उस सेना का अधीश्वर निश्चय ही अपने वैरी पर विजय प्राप्त करता है। जिस सेना के सैनिक प्रसन्नमना हो परस्पर वार्तालाप करते हैं, जिस सेना के सैनिक अपने बल पराक्रम का बखान करते हैं, जिस सेना के सैनिकों की मालाओं के फूल कुम्हलाते नहीं हैं, वह सेना संग्राम रूपी महासागर के पार हो जाती है। जो सैनिक शत्रुसैन्य में घुस अपने प्रतिद्वन्द्वी से चातुर्यपूर्ण एवं भयभीत करने वाली ऐसी बातें कहता है। "मैं अभी तुझे मारे डालता हूँ।" अथवा—"देख अब तू मारा गया"—उसीकी अन्त में जीत होती है। यदि कोई सैनिक जाते ही "तू लड़ मत, तू मारा जायगा" आदि निषेध सूचक बातें कहे, तो ऐसी बातें अन्त में कहने वाले के मरण की सूचक हैं। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध—यदि इनमें कुछ भी विकार उत्पन्न न हो और ये शुभप्रतीत हों और सैनिक प्रसन्नचित्त देख पड़ें, तो यह लक्षण विजय का है। यदि वायु अनुकूल बहे, मेघ तथा पक्षी भी अनुकूल जान पड़ें या इन्द्रधनुष देख पड़े और मेघ जल बरसावें, तो ये सब विजय के लक्षण हैं।

हे राजन्! ये सब विजय के लक्षण हैं। किन्तु जो युद्ध में मारे जाने वाले होते हैं, उनको इनके विपरीत अपशकुन होते हैं। सेना थोड़ी हो,

चाहे बहुत, यदि उस सेना के सैनिक हर्षित हों तो एकमात्र यही लक्षण उस सेना के विजय का सूचक है। इसी प्रकार जिस सेना का एक भी योद्धा डर जाय, तो वह सेना भले ही बड़े बड़े वीरों से युक्त हो, तो भी वह शत्रु द्वारा परास्त कर दी जाती है। अर्थात् एक सैनिक के हतोत्साह होने से समस्त सैनिकों का उत्साह भङ्ग हो जाता है। बड़ी भारी सेना में जब भगदड़ पड़ती है, तब उसे लौटाना या रोकना वैसे ही असम्भव हो जाता है जैसे वर्षा के जल के प्रचण्ड प्रवाह को अथवा भयभीत मृगों को भागने से रोकना या लौटाना असम्भव है। भागती हुई सेना को बड़े बड़े वीर नहीं सम्हाल सकते। अतः उन्हें स्वयं भी भागती हुई सेना के पीछे भागना पड़ता है। भयभीत और भागते हुए योद्धाओं को देख कर, सैनिक अधिक भयभीत हो जाते हैं। जब सेना डर कर भागती है, तब वह चारों ओर भागने लगती है। उस समय बड़े बड़े वीर सेनापति भी उस चतुरङ्गिणी सेना को समझा बुझा कर और मना कर नहीं लौटा सकते। अतएव हे राजन्! बुद्धिमान पुरुष को सदैव सचेत रह कर, सामदानादि उपायों से सेना को अपने वश में रख शत्रु को जीतने का उद्योग करना चाहिये। हे राजन्! पण्डितों का कथन है कि साम से जो विजय प्राप्त होता है, वह श्रेष्ठ है। भेद से प्राप्त विजय मध्यम और युद्ध द्वारा प्राप्त विजय अधम है। क्योंकि युद्ध समस्त दोषों का भाण्डार है। वह मनुष्यों के नाश का मुख्य कारण है। एक दूसरे के मन की बात जानने वाले, उत्साह एवं शक्ति से युक्त तथा पुत्र कलत्रादि में अनासक्त, दृढ़ निश्चय रखने वाले, पचास वीर पुरुष भी अपने से कहीं बड़ी भारी सेना का संहार कर सकते हैं। पीछे को पैर न रखने वाले, दृढ़ निश्चय वाले पाँच, छः अथवा सात योद्धा भी बड़ी भारी सेना का नाश कर सकते हैं। हे राजन्! विनतानन्दन एवं सुपर्ण गरुड़ जी जब बड़े भारी पक्षिदल को देखते हैं तब उसे परास्त करने के लिये बहुत से मनुष्यों की सहायता की अपेक्षा नहीं करते। अतः यह बात सदा ठीक नहीं निकलती कि, जब बड़ी भारी सेना हो, तभी किसी का

विजय हो। विजय का मिलना अनिश्चित है। विजय दैवाधीन है। यह सब होने पर भी संग्राम में विजयी को भी बड़ी हानि उठानी पड़ती है।

चौथा अध्याय

चराचर वर्णन

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! बुद्धिमान् धृतराष्ट्र से वेदव्यास जी ये बातें कह कर वहाँ से चल दिये। तब धृतराष्ट्र बड़े विचार में पड़ गये। कुछ देर तक विचार कर तथा बारंबार लंबी साँसे ले, धृतराष्ट्र ने बुद्धिमान् सञ्जय से पूँछा—हे सञ्जय! ये समस्त छोटे बड़े और युद्धप्रिय राजा शस्त्रप्रहार से आपस में एक दूसरे का नाश करने को तथा पृथिवी को अपने प्राण की बलि देने के लिये ही एकत्रित हुए हैं। निश्चय ही ये सब अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे; किन्तु बचेंगे नहीं। ये तो आपस में मर मिट कर केवल यमलोक ही की शोभा बढ़ावेंगे। भूमि के ऐश्वर्य के अभिलाषी ये लोग एक दूसरे को नहीं देख सकते। हे सञ्जय! भूमि अनेक गुण धारण करने वाली है। हे सञ्जय! इसका वर्णन मुझे विस्तार से सुनाओ। इस कुरुजाङ्गल देश में करोड़ों राजा लोग एकत्रित हुए हैं। मैं उनके देशों, नगरों और ग्रामों का परिमाण यथावत् सुनना चाहता हूँ। परम तेजस्वी व्यास जी के अनुग्रह से तुझे दिव्य बुद्धि और ज्ञान दृष्टि मिल गयी है। अतः तू मुझे सब सुना।

सञ्जय ने कहा—हे महाबुद्धिमान्! मैं आपको प्रणाम कर, अपनी जानकारी के अनुसार धरा के गुणों का वर्णन सुनाता हूँ। उसे आप शास्त्ररूपी नेत्रों को धारण कर विचार कीजिये। इस पृथिवी पर स्थावर और जङ्गम दो प्रकार के प्राणी हैं। इनमें जो जङ्गम हैं, उनमें तीन प्रकार के प्राणी होते हैं। यथा अण्डज, स्वेदज और जरायुज। हे राजन्! स्थावर और जङ्गम प्राणियों में जरायुज श्रेष्ठ माने गये हैं। इन जरायुजों में भी मनुष्य

और पशु श्रेष्ठ माने जाते हैं। ये ही अनेक प्रकार के रूप धारण करने वाले हैं। वेद में उनके जो प्रकार बतलाये गये हैं, उनकी संख्या चौदह है। फिर ग्रामवासी प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ माना गया है। इसी प्रकार वनवासियों में सिंह श्रेष्ठ माना गया है। ये सब एक दूसरे पर अपनी जीविका के लिये निर्भर हैं। हे राजन्! जो भूमि को फोड़ कर उत्पन्न होते हैं, वे स्थावर उद्भिज्ज कहलाते हैं। इस श्रेणी में वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली और त्वचासार की गणना है। तृण की जाति के भी पाँच भेद माने गये हैं। स्वेदज प्राणी भी उद्भिज्जों के अन्तर्गत ही माने गये हैं। क्योंकि वे जल से उत्पन्न होते हैं। अण्डजों को जरायुज के अन्तर्गत माना जाता है (क्योंकि अण्डजों और जरायुज—दोनों की उत्पत्ति स्त्री मैथुन ही से होती है)। ग्रामपशु और वनैले पशु सात सात प्रकार के तथा उद्भिज्ज पाँच प्रकार के माने गये हैं। इस प्रकार सब मिला कर उन्नीस प्रकार के होते हैं। इनमें, इनकी मूल प्रकृति पञ्चमहाभूतों को एकत्र कर देने से, चौबीस भेद हो जाते हैं। चौबीस तत्त्व रूप एवं कार्य कारणात्मक ब्रह्म को गायत्री नाम से कहते हैं। हे राजन्! समस्त गुणों से युक्त पवित्र और कार्य कारण रूप गायत्री मंत्र स्वरूप ब्रह्म को जो पुरुष ठीक ठीक जानता है, वह जन्म मरण से छूट जाता है। समस्त प्राणी पृथिवी में ही उत्पन्न होते हैं और पृथिवी पर ही नष्ट भी होते हैं। पृथिवी समस्त प्राणियों का आवासस्थान है और बहुत प्राचीन है। प्राणधारियों में सात ग्रामवासी और सात वनवासी हैं। गौ, बकरी, भेड़, मनुष्य, घोड़ा, खच्चर, गधा—ये सात साधुजनों के मतानुसार ग्रामवासी हैं और सिंह, व्याघ्र, वाराह, भैंसा, गज, रीछ, वानर—ये सात वनवासी कहलाते हैं। ग्रामवासी और वनवासी—मिला कर चौदह होते हैं। इन्हीं चौदह के अन्तर्गत मनुष्य की भी गणना है। जिसकी यह भूमि है उसीका यह स्थावर जङ्गमात्मक जगत है। किन्तु धरती के लाभ में पड़, लालची राजा लोग आपस में लड़ कर प्राण गँवा दिया करते हैं।

पाँचवाँ अध्याय
सुदर्शनद्वीप का वर्णन

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! नदी पर्वत, देश और भूमण्डल में जो अन्य भूखण्ड हैं, उन सब के नाम, पृथिवी का परिमाण तथा अन्य जो वन हैं उन सब के नाम तुम मुझे विस्तारपूर्वक सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! भूतल पर यावत् पदार्थ हैं—वे सब पञ्चमहाभूतात्मक हैं। अतः पण्डितों ने सब को समान माना है। भूमि, जल, वायु, अग्नि और आकाश ये पाँच तत्व हैं। इन पाँचों में पहिले पहिले से अगला अगला विशेष गुणों वाला माना गया है। भूमि सर्व प्रधान मानी गयी है। तत्वज्ञ ऋषियों ने शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध को, पृथिवी के गुण बतलाये हैं। जल में चार गुण हैं। जल में गन्ध नहीं है। तेज के शब्द, स्पर्श और रूप—ये तीन गुण हैं। वायु के शब्द और स्पर्श—दो ही गुण हैं। आकाश में केवल एक अर्थात् शब्द ही गुण है। अखिल ब्रह्माण्ड के आश्रय रूप पञ्चमहाभूतों में जिनसे सकल भूतों की उत्पत्ति होती है, ये ही पाँच गुण हैं। जब पाँचों तत्व समभाव में होते हैं, तब वे आपस में नहीं मिलते। किन्तु जब उनमें वैषम्य होता है तब ही वे आपस में मिलते हैं और तब जीवधारियों के शरीर की रचना होती है और उस शरीर में जीव प्रवेश करते हैं। किन्तु जब पाँचों तत्व समान भाव में होते हैं; तब ऐसा नहीं होता। इन सब की उत्पत्ति क्रमशः हुआ करती है। प्रथम पृथिवी, जल में; जल तेज में; तेज वायु में और वायु आकाश में लय होते हैं। फिर आकाश से वायु, वायु से तेज, तेज से जल और जल से पृथिवी की उत्पत्ति होती है। किसी भी तत्व का परिमाण नहीं है—ये सब अपरिमेय हैं तथा ऐश्वर्ययुक्त हैं। प्रत्येक दृश्यमान पदार्थ में पञ्चमहाभूतों की प्रकृति देख पड़ती है। मनुष्य तर्क-शक्ति द्वारा पञ्चभूतात्मक पदार्थों के प्रमाण कहने को उद्यत हो जाते हैं।

किन्तु जो पदार्थ विचारातीत हैं—उनको तर्क द्वारा निर्णय न करना चाहिये। क्योंकि प्रकृति से परे जो पदार्थ हैं, वह अचिन्त्य हैं। वह तो विचार में आ ही नहीं सकता। अचिन्त्य वस्तु का लक्षण ही यह है।

हे कुरुनन्दन ! अब मैं तुमको सुदर्शन द्वीप का वर्णन सुनाता हूँ। हे राजन् ! यह द्वीप चक्र की तरह गोलाकार है। यह खारी जल से भरे सागर से चारों ओर से घिरा है। इसमें अनेक नदियाँ हैं और मेघों जैसे विशाल पर्वत हैं। इसमें बड़े बड़े रमणीय पुर और नगर बसे हुए हैं। इसमें भाँति भाँति के बहुत से पुष्पित वृक्ष हैं। जैसे मनुष्य दर्पण में अपना मुख देखता है वैसे ही सुदर्शन द्वीप, चन्द्रमण्डल में देख पड़ता है। इस द्वीप में चारों ओर सब प्रकार की ओषधियाँ हैं। इसके दो भागों में पीपल के आकार के और दो में बड़े भारी खरगोश (शश) के आकार के भूखण्ड हैं। इन स्थानों को छोड़ इस द्वीप के अन्य समस्त प्रदेश जलमय हैं। अब इससे सम्बन्ध रखने वाला और वृत्तान्त कहता हूँ। उसे भी तुम सुनो।

छठवाँ अध्याय

भूमि का परिमाण

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे बुद्धिमान् सञ्जय ! तुमने अपनी बुद्ध्यानुसार द्वीप का संक्षिप्त वृत्तान्त मुझे सुनाया। किन्तु तुम तो सब के ज्ञाता हो, अतः तुम सविस्तर उसका वर्णन मुझे सुनाओ। शश के आकार की पृथिवी का परिमाण तथा पीपल के समान जो भूभाग है, उसको भी विस्तार पूर्वक कह कर मुझे सुनाओ।

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय ! धृतराष्ट्र ने जब यह पूँछा; तब सञ्जय ने उनसे इस प्रकार कहा—राजन् ! पूर्व दिशा से ले कर, पश्चिम दिशा तक फैले हुए वर्ष नामक छः पर्वत हैं। ये इतने बड़े हैं कि, ये पूर्व

एवं पश्चिम समुद्र के भीतर तक घुसे हुए हैं। १ हिमवान्, २ हेमकूट, ३ पर्वतश्रेष्ठ निषध, ४ वैदूर्यनील, ५ शशिप्रभ, ६ श्वेतसर्वधातुमय शृङ्गवान्—नामक छः पर्वत हैं। इन पर सिद्धचारण लोग रहा करते हैं। हे राजन्! इन पर्वतों में से प्रत्येक पर्वत का विस्तार एक एक सहस्र योजनों का है और उनके ऊपर बड़े रमणीय एवं पवित्रस्थल हैं। इन स्थलों को वर्ष कहते हैं। इनमें अनेक प्रकार के अनेक प्राणी रहते हैं। हम लोग जिसमें रहते हैं, उसका नाम भारतवर्ष है। इसके बाद उत्तर की ओर जो देश है, उसका नाम हिमवान्वर्ष है। हेमकूट की उस ओर जो भूमि है, उसका नाम हरिवर्ष है। नील पर्वत की दक्षिण ओर और निषध पहाड़ की उत्तर ओर पूर्व पश्चिम में फैला हुआ माल्यवान नामक पर्वत है। इन दोनों पहाड़ों के बीच चारों ओर से गोल मटोल सुवर्ण का मेरु पर्वत है। यह प्रातः कालीन सूर्य अथवा धधकते हुए निर्धूम अग्नि की तरह दमकता रहता है। इस पहाड़ की ऊँचाई चौरासी हज़ार योजन है। यह पहाड़ भूमि में नीचे चौरासी हज़ार योजन गड़ा हुआ है। मेरु पर्वत ऊपर नीचे तथा बीच में लोकों को घेरे हुए खड़ा है। हे विभो! उसके आस पास के भागों में चार द्वीप स्थित हैं। हे राजन्! वह द्वीप भद्राश्व, केतुमाल, जम्बूद्वीप और उत्तर कुरु नामक हैं तथा उनमें पुण्यात्मा जन रहते हैं। सुमुख नामक गरुड़ पक्षी ने सुमेरु पर सुनहले काकों को देख, अपने मन में विचारा कि, यह सुमेरु उत्तम, मध्यम और अधम—सब को एक सा समझता है। यह सोच और क्रुद्ध हो सुमुख सुमेरु को छोड़ चल दिया। प्रकाश के पदार्थों में मुख्य सूर्य, नक्षत्रों सहित चन्द्रमा और वायुदेव भी निरन्तर मेरु की परिक्रमा किया करते हैं। मेरु पर्वत पर वृक्षों में सदा फल फूल लगे रहते हैं। इस पर्वत पर सुवर्ण आभा से युक्त अनेक भवन हैं। इसी पर्वत पर देवता, गन्धर्व, असुर और राक्षस अप्सराओं के साथ विहार किया करते हैं। वहाँ ब्रह्मा, रुद्र और इन्द्र आदि एकत्र हो, यज्ञ करते हैं और विपुल दक्षिणाएँ दिया करते हैं। तुम्बुरु, नारद, विश्वावसु, हाहा, हूहू आदि गन्धर्व देवताओं की

अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए वहाँ विचरा करते हैं। प्रत्येक पर्व में सप्तर्षि प्रजापति कश्यप जी इस पर्वत पर जाते हैं और उसे आशीर्वाद दे, उसका कल्याण चाहते हैं। इस पर्वत के शिखरों पर उशना, दैत्यों के साथ विहार करते हैं। इस पर्वत के जिन स्थानों पर रत्नों की खाने हैं, वे मेरु के शाखा पर्वत कहलाते हैं। इनमें जितने रत्न उत्पन्न होते हैं, उनमें से चतुर्थांश कुबेर लेते हैं और उस धन का सोलहवाँ भाग मनुष्यों को देते हैं। मेरु पर्वत के उत्तरी भाग में एक बड़ा रमणीय कर्णिकार नामक दिव्य वन है। इसमें जगह जगह चट्टाने हैं और इसमें सब ऋतुओं में फूलने वाले फूलों के भी वृक्ष हैं। उस वन में दिव्य प्राणियों सहित, प्राणिमात्र के हितैषी पशुपति शिव, उमादेवी के साथ रमण किया करते हैं। उमा के साथ रमण करते समय पैरों तक लटकने वाली कनेर की वनमाला शिव जी धारण करते हैं। उदय कालीन तीन सूर्यों की तरह शिव जी अपने तीनों नेत्रों से वहाँ प्रकाश किया करते हैं। इनका दर्शन उन्हींको मिलता है, जो बड़े तपस्वी एवं व्रतधारी हैं और जो सदा सत्य ही बोला करते हैं। इसी पर्वत के शिखर से दुग्ध-धार जैसी सफेद धारा वाली, विश्वरूपा एवं उछलती हुई तथा भयङ्कर शब्द करती हुई पवित्रसलिला, कल्याण-कारिणी भागीरथी गङ्गा, बड़े वेग से चन्द्रमस नामक एक विशाल एवं सुन्दर सरोवर में गिरती है। उस सरोवर के तटों पर बहुत से पुण्यात्मा जन निवास करते हैं। गङ्गा के संयोग से उत्पन्न एवं पवित्र वह सरोवर सागरोपम जान पड़ता है। यह भागीरथी गङ्गा वही है, जिसे पर्वत भी धारण नहीं कर सकते; किन्तु जिसे शिव जी ने अपनी जटाओं में सैकड़ों सहस्रों वर्षों तक रखा था।

हे राजन्! मेरु से पश्चिम केतुमाला नामक एक पहाड़ है। वहाँ जम्बू-खण्ड नामक बड़ा भारी एक भूखण्ड है। वहाँ जो लोग रहते हैं, उनकी परमायु दस सहस्र वर्षों की होती है। वहाँ के पुरुष सुवर्ण वर्ण वाले और स्त्रियाँ अप्सराओं जैसी सुन्दरी होती हैं; वे रोग, शोक से रहित होती हैं और सदा प्रसन्न रहा करती हैं। वहाँ के पुरुष तप्त सुवर्ण की तरह कान्ति

वाले होते हैं। गन्धमादन पहाड़ पर, गुह्यकों के स्वामी कुवेर राक्षसों और अप्सराओं सहित आनन्द मनाते हैं। गन्धमादन के आस पास अनेक छोटे छोटे पहाड़ हैं। वहाँ रहने वालों की ग्यारह हज़ार वर्ष की परमायु होती है। हे राजन्! महाबली, तेजस्वी और आनन्द युक्त पुरुष वहाँ रहते हैं और उनकी स्त्रियाँ भी कमल पुष्प जैसे रङ्ग वालीं और प्रियदर्शना होती हैं। नीलगिरि से आगे श्वेतगिरि है और उसके आगे हेमगिरि नामक पहाड़ है। उसके आगे अनेक देशों से घिरा हुआ ऐरावतवर्ष है। दक्षिणोत्तर में भरतखण्ड और ऐरावतखण्ड—धनुष समान अर्थात् त्रिकोणरूप है। बीच में इलावर्त्तादि पाँच खण्ड और हैं। ये सातों खण्ड आयु आरोग्यता, धर्म, अर्थ और काम में एक से एक बढ़ चढ़ कर हैं। इन भूखण्डों में विविध प्रकार के प्राणी रहते हैं। उन सब की आयु एक ही सी होती है। इस प्रकार समस्त पृथिवी पहाड़ों से छायी हुई है। वहाँ कैलाश नाम से प्रसिद्ध हेमकूट पर्वत बड़ा भारी है। हे राजन्! कुवेर गुह्यकों के साथ आनन्द से रहते हैं। कैलाश पर्वत से उत्तर मैनाक पर्वत के निकट सुवर्ण शृङ्गों वाला दिव्य मणिमय गिरि है। इस पर्वत के एक भाग में सुवर्ण बालुका वाला, सुन्दर विन्दुसर नामक एक बड़ा भरी सरोवर है। यहाँ पर राजा भगीरथ ने गङ्गा के दर्शन पा, बहुत दिवसों तक निवास किया था। यहाँ पर जो यज्ञस्तम्भ खड़े हैं; उनमें मणियाँ जड़ी हुई हैं और टूटी हुई यज्ञवेदियाँ सोने की हैं। यहीं पर देवराज इन्द्र ने एक बड़ा यज्ञ किया था और बड़ी सिद्धि प्राप्त की थी। यहीं पर सनातन रुद्र भगवान की सब लोग उपासना किया करते हैं। यहाँ पर नर, नारायण, ब्रह्मा, मनु और पाँचवें स्थाणु नामक रुद्र भी सदा निवास किया करते हैं। त्रिपथगामिनी गङ्गा, ब्रह्मलोक से अवतीर्ण हो, पहले यहीं आयी थी। यहाँ से फिर वह सात धारों में विभक्त हो, विस्तार को प्राप्त हुई। उसकी उन सात धारों के नाम ये हैं—१ वस्त्रौकसारा, २ नलिनी, ३ पावनी, सरस्वती, ४ जम्बूनदी, ५ सीता, ६ गङ्गा और ७ सिन्धु। परमेश्वर की

सात नदी के रूप में यह रचना लोकों का बड़ा उपकार किया करती है। यह लोग सहस्रों युगों तक यज्ञ द्वारा सर्वेश्वर का आराधना करते हैं। सरस्वती नाम्नी गङ्गा की धार कहीं देख पड़ती और कहीं छिप जाती है। ये दिव्य सप्त गङ्गाएँ तीनों लोकों में विख्यात हैं। हिमवान पर राक्षस रहते हैं। गुह्यकों का निवास हेमकूट पर है। निषध पर्वत पर सर्प और नागों का वास है। गोकर्ण में तपस्वियों का तपोवन है। श्वेत पर्वत पर देवताओं का और असुरों का वास है। नीलगिरि पर ब्रह्मर्षि रहा करते हैं। किन्तु शृङ्गवान् पर एकमात्र देवगण ही विचरा करते हैं। चर और अचर प्राणियों के रहने का स्थान इस प्रकार सात भूखण्डों में विभक्त है। वहाँ पर देवता और मनुष्य अतुलित ऐश्वर्यशाली हैं। कल्याणाभिलाषी पुरुष को इस पर श्रद्धा रखनी चाहिये। हे राजन्! तुमने मुझसे जिस शशाकृति भूखण्ड के विषय में प्रश्न किया था, उसका वर्णन मैंने तुमको सुना दिया। शशाकृति भूखण्ड के दक्षिण और उत्तर में जो दो भूखण्ड और हैं, उनका वर्णन भी मैं तुम्हें सुना चुका। शशाकृति खण्ड के कर्णस्थानीय नागद्वीप और काश्यप द्वीप हैं। ताम्रवर्ण शिलाखण्डों वाला परम शोभन मलयगिरि जम्बूद्वीप में शश जैसा जान पड़ता है और इसे जम्बूद्वीप का वासनामय अपर रूप समझना चाहिये।

सातवाँ अध्याय

मेरु आदि का वर्णन

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! मेरु के उत्तर भाग का और माल्यवान का विस्तृत वर्णन तुम मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! नीलगिरि की दहिनी ओर मेरु की बाईं ओर एक देश है। उसका नाम उत्तरकुरु है। वहाँ सिद्ध पुरुषों का निवास

है। यहाँ के वृक्ष मधुर फलों से युक्त और सदा फलों फूलों से आच्छादित रहते हैं। यहाँ के फूलों में बड़ी सुगन्धि होती है और यहाँ के फल बड़े रसीले होते हैं। यहाँ कोई कोई वृक्ष तो इच्छानुरूप फल देने वाले हैं। हे राजन्! यहाँ चीरी नामक भी अनेक वृक्ष हैं। उनसे अमृतोपम स्वादिष्ट छः प्रकार का रस टपका करता है। ये वृक्ष वस्त्रों को पैदा करते और फलों से आभूषण भी उत्पन्न करते हैं। यहाँ की समस्त भूमि मणि-मयी है और यहाँ की वालू में सोने के कण मिले हैं। यहाँ की भूमि का स्पर्श करने ही से समस्त ऋतुओं के सुख प्राप्त हो जाते हैं। यहाँ कीचड़ काँदो का नाम निशान भी नहीं है। यहाँ जो पुष्करणियाँ हैं, वे बड़ी सुन्दर हैं और उनका जल बड़ा स्वादिष्ट और गुणकारक है। यहाँ जो लोग जन्म लेते हैं वे देवलोक से च्युत हुए होते हैं। वे सब विष्णुभक्तों के साथी और प्रियदर्शन होते हैं। यहाँ क्या पुरुष और क्या स्त्रियाँ—सभी बड़े सुन्दर होते हैं। स्त्रियाँ तो अप्सराओं जैसी सुन्दरी होती हैं। उन सब का पालन-पोषण चीरी नामक वृक्षों के अमृतोपम स्वादिष्ट दुग्ध के द्वारा होता है। यहाँ स्त्री पुरुष के जोड़े उत्पन्न होते हैं। वे रूप, गुण और वेशभूषा में एक समान होते हैं। वे चक्रवाक के जोड़े जैसे अनुरागवान् और रोग से रहित तथा सदा हर्षितमना होते हैं। उनकी परमायु ग्यारह सहस्र वर्षों की होती है। वे एक दूसरे का त्याग भी नहीं करते। यहाँ तीक्ष्णतुण्ड और महावली भारुण्ड पक्षी भी पाये जाते हैं। ये मृत प्राणियों को उठा कर पहाड़ों की खोहड़ों में पटक आया करते हैं। हे राजन्! यह तो मैंने तुमको उत्तरकुरु का वर्णन सुनाया, अब मैं आपको मेरु के पूर्वीय भाग का यथावत् वर्णन सुनाता हूँ। मेरु के पूर्व भाग में भद्राश्व नामक एक भूभाग है। वहीं पर भद्राशाल नाम का वन और कालाम्र नामक बड़ा भारी एक वृक्ष है, वह कालाम्र वृक्ष बड़ा अच्छा जान पड़ता है। उसमें सदा फूल फल लगे ही रहते हैं। इसका विस्तार चार कोस का है और उसके नीचे सिद्ध चारण रहा करते हैं। यहाँ के निवासियों के शरीर का रङ्ग

गोरा होता है और वे बड़े बलवान भी होते हैं। यहाँ की स्त्रियाँ कुमुद-वर्ण वाली और प्रियदर्शना होती हैं। वे चन्द्रवत् कान्ति वाली, चन्द्रवत् गौरवर्णिनी और पूर्णमासी के चन्द्रमा जैसे मुखों वाली होती हैं। उनका शरीर चन्द्रवत् शीतल-स्पर्श होता है। वे नाचने गाने में भी बड़ी चतुर होती हैं। यहाँ के लोगों की परमायु दस सहस्र वर्षों की होती है और वे लोग कालाम्र वृक्ष का रसपान कर, सदा युवा बने रहते हैं। नील के दक्षिण और निषध के उत्तर जम्बू नामक एक विशाल और सुन्दर वृक्ष है। वह बड़ा प्राचीन, समस्त इष्ट पदार्थों का देने वाला, पुण्यवान् और सिद्ध-चारण-सेवित है। यह देश इसी वृक्ष के नाम पर विख्यात होने ही से जम्बूद्वीप कहलाता है। जम्बू नामक वृक्ष की ऊँचाई एक हज़ार एक सौ योजन की है। यह वृक्षराज गगनस्पर्शी सा जान पड़ता है। इस वृक्ष में ऐसे फल लगते हैं जो पकते ही अपने आप टूट पड़ते हैं। ये फल ढाई हज़ार अरत्नी (मुट्ठी) लंबे होते हैं। जब यह फल वृक्ष से टूट कर पृथिवी पर गिरते हैं; तब बड़ा धमाका होता है। गिरते ही ये फल फट जाते हैं और उनके भीतर से चाँदी जैसा शुभ्ररस निकल कर, भूमि पर फैल जाता है। हे राजन्! जम्बूफलों के रस की नदी बन कर और मेरु का प्रोक्षण कर, उत्तरकुरु देश में आती है। यहाँ की प्रजा उस फल के रस को पान करती है। इससे हे राजन्! उनके मन को शान्ति मिलती है। इससे उन्हें न तो प्यास ही लगती और न उन्हें बुढ़ापा ही आ कर घेरता है। इस वन में इन्द्रगोप की तरह पीतवर्ण एवं देवताओं को भी शोभित करने वाला सोना उत्पन्न होता है। यहाँ पर उदयकालीन सूर्य जैसे लाल रङ्ग के पुरुष भी पैदा होते हैं, माल्यवान पर्वत के शृङ्ग पर सदैव यज्ञाग्नि दिखलायी पड़ती है। यह कालाग्नि पर्वत संवर्तक नाम से प्रसिद्ध है। माल्यवान के पूर्व में अनेक छोटे छोटे पहाड़ हैं। उनकी उचाई ग्यारह ग्यारह योजनों तक की है और वे भी माल्यवान ही के नाम से प्रख्यात हैं। यहाँ पर सुवर्ण के रङ्ग जैसे और ब्रह्मलोक से भ्रष्ट हुए जीव ही मानव रूप में जन्म लेते हैं। वे सब

ब्रह्मसाधना ही में संलग्न रहा करते हैं। वे पूर्ण ब्रह्मचारी और उग्रतपा होते हैं। प्राणिमात्र के हितसाधन के लिये ये सूर्यमण्डल में प्रवेश करते हैं। इन साधुजनों में से छियासठ हज़ार पुरुष तो सूर्य भगवान को घेर कर अरुण के आगे आगे चला करते हैं। वे लोग छियासठ हज़ार वर्षों तक सूर्यातप सह कर, चन्द्रमण्डल में जाते हैं।

आठवाँ अध्याय

अन्य वर्षों (भूखण्डों) का वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! सकल वर्षों के और पर्वतों के नाम तथा उन वर्षों के रहने वालों का वर्णन तुम मुझे यथावत् सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—श्वेत पर्वत के दक्षिण में और निषध के उत्तर में रमणक नामक देश है। यहाँ पर ऐसे मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिनकी आयु साढ़े ग्यारह सहस्र वर्षों की होती है। वे बड़े सुन्दर, शत्रुरहित, सदा आनन्द में मग्न रहने वाले और कुलीन होते हैं। नील के दक्षिण और निषध के उत्तर में हिरंणमय वर्ष है। इस देश में हैरण्यवती नदी है। यहीं पर पक्षिराज गरुड़ और यक्षों सहित दर्शनीय कुबेर रहते हैं। हे राजन्! वहाँ जो लोग उत्पन्न होते हैं; वे प्रसन्नमना और बड़े बलवान होते हैं। वे लोग बारह हज़ार पाँच सौ वर्षों तक पुण्यफल भोगते हैं। शृङ्ग पर्वत की तीन सुन्दर चोटियाँ है। एक चोटी रत्नों से, दूसरी चाँदी से और तीसरी सुन्दर सुन्दर भवनों और सम्पूर्ण रत्नों से परिपूर्ण है। वहाँ पर शाण्डिली नाम्नी एक देवी है जो अपने आप प्रकाश करती है। शृङ्ग पर्वत के उत्तर में समुद्र तक फैला हुआ ऐरावतवर्ष है। उसके निकट ही उसीके समान महिमा वाला शृङ्गवान नामक एक पर्वत है। यहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता और यहाँ के रहने वाले लोग बूढ़े भी नहीं होते हैं। यहाँ पर

नक्षत्रों सहित चन्द्रमा ही प्रकाश किया करता है। यहाँ पर कमल जैसी कान्ति वाले कमलवर्ण और कमल नेत्र एवं कमलवत् सुगन्धि वाले मनुष्य उत्पन्न होते हैं। वे खाते पीते कुछ भी नहीं; तो भी जीवित रहते हैं। ये लोग जितेन्द्रिय और देवतुल्य पराक्रमी होते हैं। उन्हें सुगन्धि प्रिय है। उनमें रजोगुण का अभाव होता है। वे देवलोक से भ्रष्ट हो कर, यहाँ जन्मते हैं। उनकी परमायु तेरह हज़ार वर्षों की होती है। क्षीर सागर से उत्तर सुवर्ण शकट पर भगवान् विष्णु रहते हैं। विष्णु के इस शकट में आठ पहिये हैं। यह सब प्राणियों से युक्त, मन की तरह वेगवान्, अग्नि की तरह दमकने वाला, महातेजस्वी और सुवर्ण भूषित है। वे देव समस्त प्राणियों के स्वामी और सर्वव्यापक हैं। पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश वे ही हैं। वे ही यज्ञस्वरूप हैं और अग्निमुख से वे हवि ग्रहण करते हैं।

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! सञ्जय से यह वृत्तान्त सुन, महामना धृतराष्ट्र अपने पुत्रों के बारे में सोचते विचारते ध्यानमग्न हो गये। कुछ देर बाद महातेजस्वी धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! सच-मुच इस जगत के नाश का समय आ गया है। इस संसार में सदा रहने वाला कुछ भी नहीं है। सर्वज्ञ नर और नारायण ही सब का नाश करते हैं। फिर वे ही सब की रचना करते हैं। देवगण उन्हीं प्रभु को वैकुण्ठ-वासी कहते हैं और मनुष्य उन्हींको विष्णु भगवान् कहते हैं।

नवाँ अध्याय

भरतखण्ड का वर्णन

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! यह भरतखण्ड जिसमें इतनी बड़ी सेना भ्रम में पड़ी हुई है, जिसको प्राप्त करने के लिये मेरा पुत्र दुर्योधन ललचा

रहा है, जिसको प्राप्त करने के लिये पाण्डवपुत्र भी लुभा रहे हैं और जिसके लिये मेरा मन भी लुभा रहा है, उस भरतखण्ड का यथार्थ वर्णन तुम मुझे सुनाओ, क्योंकि तुम बड़े बुद्धिमान हो।

सञ्जय ने कहा—हे राजन! जो मैं कहता हूँ उसे आप सुनो। भरतखण्ड पर अपना अधिकार जमाने को पाण्डव लालायित नहीं हैं, प्रत्युत दुर्योधन, शकुनि तथा अन्यान्य देशाधिपति तथा क्षत्रियों के मनों में लालच समाया हुआ है। लोभ के कारण वे एक दूसरे को नहीं सह सकते। हे भारत! अब मैं आपको भारतवर्ष का वर्णन सुनाता हूँ। सुनो। देवराज इन्द्र, वैवस्वत मनु, वेनपुत्र पृथु, महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अम्बरीष, मान्धाता, नहुष, मुचकुन्द, उशीनरसुत शिवि, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक और महात्मा गाधिराज, सोमक, दिलीप तथा अन्यान्य बल-वान क्षत्रिय राजाओं का तथा और लोगों को भी यह भारतवर्ष प्रिय है। अतः हे शत्रुदमन! मैं तुम्हें उसी भारतवर्ष का वर्णन सुनाता हूँ। तुम सुनो। हे राजन्! तुमने मुझसे जो पूँछा है, उसीका वर्णन अब मैं करता हूँ।

हे राजन्! इस भारतवर्ष में महेन्द्र, मलय, सह्य, शक्तिमान्, ऋक्षमान्, विन्ध्य और पारियात्र नामक सात पर्वत, भारतवर्ष की सीमा पर अवस्थित हैं। इसीसे ये सातों कुलपर्वत कहलाते हैं। हे राजन्! इन पर्वतों के इर्द गिर्द और भी सहस्रों पर्वत हैं। इनमें से बहुत से ऐसे हैं, जिन्हें कोई जानता ही नहीं। उनके शिखर विचित्र हैं और उनमें बहुत सा धन भरा हुआ है। ये सब इन कुलाचल पर्वतों के समीप ही हैं, इनके अतिरिक्त क्षुद्रजीवों के उपजीवन स्वरूप और भी बहुत से छोटे छोटे पर्वत हैं। इन पर्वतों के निकट आर्य जाति के अर्थात् वर्णाश्रमी धर्म वाले और म्लेच्छ जाति के अर्थात् वेदविरुद्ध मतावलम्बी तथा अन्य जातियों के भी मनुष्य रहते हैं। हे राजन्! ये लोग इन नदियों के जलों को पिया करते हैं। ये नदियाँ बड़ी गहरी हैं। उनके नाम ये हैं—गङ्गा, सिन्धु, सरस्वती, गोदावरी,

नर्मदा, महानदी, *बाहुदा, शतद्रु, चन्द्रभागा, यमुना, दृषद्वती, विपाशा, स्थूलवालुका, वेत्रवती, कृष्णवेणा, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वेदस्मृता, वेदवती, त्रिदिवा, इक्षुला, कृमि, करीषिणी, चित्रवाहा, चित्रसेना, गोमती, धूतपापा, महानदी, वन्दना, कौशिकी, त्रिदिवा, कृत्या, निचिता, लोहतारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मण्वती, वेत्रवती, हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती, पयोष्णी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुक, वाणी, शतवली, नीवारा, महिता, सुप्रयोगा, अञ्जना, पवित्रा, कुण्डली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, अमोघवती, भीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीषिणी, असिक्नी, कुशचीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैब्या, कापी, सदानीरा, अधृष्या, महानदी, कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वीरवती, वस्त्रा, सुवस्त्रा, गौरी, कम्पना, हिरण्वती, वरा, वीरकरा, महानदी, पञ्चमी, रथचित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिञ्जला, उपेन्द्रा, बहुला, कुचीरा, अम्बुवाहिनी, विनदी, पिञ्जला, वेणा, महानदी, तुङ्गवेणा, विदिशा, कृष्णवेणा, ताम्रा, कपिला, खलु, सुवामा, वेदाश्वा, हरिश्रवा, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छिला, भारद्वाजी, निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, *बाहुदा, चन्द्रमा, दुर्गा, मंत्रशिला, ब्रह्मवाध्या, बृहद्वुला, यवक्षा, अर्यरोही, जाम्बूनदी, सुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरुण, असली, नीला धृतमती, महानदी पर्णाशा, मानवी, वृषभा, ब्रह्ममेध्या, बृहद्वती।

हे राजन्! इन नदियों के अतिरिक्त और भी बहुत सी महानदी हैं। यथा सदानीरा, आद्या, कृष्णा, मन्दगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी, दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मञ्जुला, वाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरणी, महानदी, कोशा, शुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषका, कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा, सरस्वती, सुपुण्या, मन्दाकिनी तथा समस्त गङ्गाओं की शाखाएँ—ये सब विश्व की माता रूप और महाफल-

* बाहुदा नदी का नाम १४ वें और २९ वें श्लोक में आया है।

इनके अतिरिक्त दक्षिण दिशा में अनेक देश हैं। उनके नाम ये हैं—

द्रविड़, केरल, प्राच्य, भूषिक, वनवासिक, कर्णाटक, महिषक, विकल्प, मूषक, झिल्लीक, कुन्तल, सौहृद, नभकानन, कौकुट्टक, चोल, कोंकण, मालवणक, समङ्ग, करक, कुक्कुर, अङ्गार मारिष, ध्वजिन्युत्सव-सङ्केत, त्रिगर्त्त, शाल्वसेनि, व्यूक, कोकबक, प्रोष्ठ, समवेगवश, विन्ध्यचुलिक, पुलिन्द, वल्कल, मालव, वल्लव, अपरवल्लव, कुलिन्द, कालद, कुण्डल, करट, मूषक, तनबाल, नीप, घट, सृञ्जय, अठिद, पाशिवाट, तनय, सुनय, ऋषिक, विदर्भ, काक, तङ्गण, परतङ्गण।

हे राजन्! इसी प्रकार उत्तर में कठोर चित्त और म्लेच्छों के आराम स्थल रूप बहुत से देश हैं। उनके नाम हैं—यवन, चीन, काम्बोज, सकृद्ग्रह, कुलत्थ, हूण, पारसीक, रमण, *चीन दशमालिक। जिन देशों में क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र रहते हैं, उनके नाम हैं शूद्राभीर, दरद और काश्मीर। इनके अतिरिक्त जिन देशों में अन्य जातियों के लोग रहते हैं, उनके नाम ये हैं—खाशीर, अन्तचार, पह्लव, (इनकी पहलवी भाषा प्रसिद्ध है।) गिरिगह्वर, आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, पोषक, कलिङ्ग, किरात, तोमर, हन्यमान और करभञ्जक। पूर्व और उत्तर दिशाओं में इनके अतिरिक्त और भी देश हैं। मैंने उन्हीं देशों के नामों का उल्लेख किया, जिन्हें आप सहज में समझ सकें। हे राजन्! अपने गुण तथा बल से क्षत्रियों की रक्षा की हुई यह भूमि कामधेनु की तरह रक्षा करने वाले को धर्म, अर्थ और काम का फल देने वाली है। इसीसे धर्मार्थ को जानने वाले क्षत्रिय इसकी चाहना किया करते हैं और धन प्राप्ति की कामना से वे पराक्रम प्रदर्शित करने में अपने प्राण तक दे दिया करते हैं। यह भारत भूमि इच्छानुसार देवताओं और मनुष्यों के शरीरों के पालन पोषण का स्थान है। पृथिवी को भोगने की कामना रखने वाले क्षत्रियगण, आपस में एक दूसरे को मारते हैं। जिस प्रकार माँसपिण्ड को कुत्ते खण्ड खण्ड

* यह चीन का नाम दुबारा आया है।

कर डालते हैं, उसी प्रकार क्षत्रिय राजा लोग पृथिवी के खण्ड खण्ड करते हैं। आज तक उनमें से किसी की भी तृष्णा कम नहीं हुई। हे राजन्! इसीसे तो कौरव पाण्डव भी साम, दाम, भेद, दण्ड नाम्नी नीतियों द्वारा पृथिवी को जीतने के लिये बड़े बड़े उद्योग कर रहे हैं। हे राजन्! यदि सावधानता पूर्वक काम किया जाय, तो यह पृथिवी ही समस्त प्राणियों का पिता, भाई, पुत्र, आकाश और स्वर्गरूपिणी हो जाती है। अर्थात् इस पृथिवी से सब प्रकार के आनन्द प्राप्त हो सकते हैं।

दसवाँ अध्याय

युगानुसार आयु वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! भारतवर्ष, हैमवतवर्ष एवं हरिवर्ष में बसने वाले मनुष्यों की आयु का परिमाण, उनका बल, उनके शुभाशुभ, उनके भूत, भविष्यत्, तथा वर्त्तमान आदि कालों का यथावत् वर्णन तुम मुझको सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! भारतवर्ष में चार युग होते हैं। अर्थात् सत्ययुग, फिर त्रेतायुग, फिर द्वापरयुग तदनन्तर कलियुग आता है। सत्य-युग में मनुष्यों की परमायु चार हज़ार वर्षों की बतलायी गयी है। त्रेतायुग में मनुष्यों की परमायु का परिमाण तीन सहस्र वर्षों का है। द्वापरयुग में मनुष्यमात्र दो हज़ार वर्षों तक जीवित रहते हैं। कलियुग में मनुष्यों की आयु का कुछ भी ठीक नहीं है। यहाँ तक कि, कोई तो गर्भ ही में और कोई जन्मते ही मर जाते हैं। सतयुग के लोग महाबलवान, महा-पराक्रमी, बड़े बुद्धिमान् और सद्गुण विभूषि, देखने में सुन्दर और धनी हुआ करते हैं। उनके सैकड़ों सहस्रों लड़के बाले हुआ करते हैं। उनमें बड़े बड़े तपस्वी और धनी उत्पन्न होते हैं। इस युग के क्षत्रिय महोत्साही,

महाबलवान्, धर्मात्मा एवं सत्यभाषी, रूपवान्, विशाल-वपु-धारी, महावीर तथा बड़े बड़े धनुषों को धारण करने वाले हुआ करते हैं। उनमें वर देने की सामर्थ्य होती है। वे बड़े शूर और युद्ध में कुशल होते हैं।

हे राजन्! त्रेतायुग में समस्त क्षत्रिय चक्रवर्ती ही हुआ करते हैं। द्वापर युग में समस्त वर्णों के लोग बड़े उत्साही, वीर एवं आपस में एक दूसरे को हरा देने की इच्छा रखने वाले हुआ करते हैं। किन्तु हे राजन्! कलियुग के मनुष्य स्वल्प तेजस्वी, महाक्रोधी एवं मिथ्याभाषी होते हैं। वे लोग आपस ही में ईर्ष्या रखते हैं, बड़े अभिमानी, बड़े क्रोधी और बड़े कपटी एवं परछिद्रान्वेषी, लम्पट तथा लोभी होते हैं। हे राजन्! प्रचलित द्वापरयुग में पूर्वकाल की अपेक्षा कम गुणों वाले मनुष्य होने लगे हैं। भरतखण्ड की अपेक्षा हैमवतखण्ड में लोग अधिक गुणवान् होते हैं। हरिखण्ड के लोग हैमवतखण्डवासियों से भी बढ़ कर श्रेष्ठ और गुणी होते हैं।

जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्व समाप्त

ग्यारहवाँ अध्याय

शाकद्वीप वर्णन

धृतराष्ट्र कहने लगे—हे सञ्जय! तुमने जम्बूद्वीप का वर्णन तो मुझे यथावत् सुनाया, अब तुम मुझे उसका परिमाण और उसके विभागों का वर्णन भी सुनाओ। साथ ही मैं समुद्र, शाकद्वीप और कुशद्वीप के परिमाणों का भी वर्णन सुनना चाहता हूँ। हे सञ्जय! तुम मुझे शाल्मली, क्रौंच-द्वीप, राहु, चन्द्रमा, तथा सूर्य सम्बन्धी वृत्तान्त भी यथावत् सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस जगत में द्वीप बहुत से हैं। किन्तु उनमें से मैं केवल सात द्वीपों का तथा सूर्य एवं चन्द्रमा का ही वृत्तान्त

कहूँगा। हे राजन्! जम्बू नामक पर्वत की लंबाई अठारह हज़ार छः सौ योजन की है। इसकी दुगुनी लवणसागर की परिधि है। उसके तट पर और द्वीपों में बहुत से देश बसे हुए हैं। ये देश मणियों और मूँगों से शोभित हैं। नाना प्रकार की धातुओं से चित्र विचित्र देख पड़ने वाले बहुत से पर्वतों से सागर घिरा हुआ, सिद्ध चारणों से सेवित तथा चारों ओर से मण्डलाकार है। हे राजन्! अब मैं तुम्हें उन सप्तद्वीपों में से प्रथम शाकद्वीप का वृत्तान्त सुनाता हूँ। शाकद्वीप, जम्बूद्वीप से दुगुना है। इसके चारों ओर जो सागर है वह अपने प्रमाण के अनुसार इससे दुगना है। इस द्वीप के समस्त निवासी धर्मात्मा हैं और वे कभी मरते नहीं। यहाँ पर कभी अकाल भी नहीं पड़ता। यहाँ के निवासी क्षमावान् और तेजस्वी हैं। यही शाकद्वीप का संक्षिप्त वर्णन है। बतलावें, अब आप क्या सुनना चाहते हैं?

धृतराष्ट्र बोले—यह तो तुमने संक्षिप्त वर्णन सुनाया, किन्तु मैं तो विस्तृत वर्णन सुनना चाहता हूँ। सञ्जय ने कहा—हे राजन्! शाकद्वीप में मणियों से शोभायमान सात पर्वत हैं। उन सब में रत्नों की खानें हैं और बहुत सी नदियाँ भी हैं। उनके नाम अब आप सुनें। इस द्वीप में सब वस्तुएँ अतिपवित्र और गुणकारी हैं। यहाँ देवता, ऋषियों, गन्धर्वों से सेवित मेरु नाम का पर्वत है। दूसरा पहाड़ पूर्व की ओर को फैला हुआ मलय नामक है। यहाँ ही समस्त मेघों का अड्डा है और यहीं से वे समस्त दिशाओं में फैला करते हैं। इस द्वीप में जलधार नामक तीसरा एक बड़ा भारी पहाड़ है। इसी पर्वत से इन्द्र सदा पवित्र जल लेते हैं और वही जल भूमि पर बरसाया जाता है। बड़ा ही ऊँचा रैवतक नामक चतुर्थ पर्वत है। इस पर्वत पर ही आकाशचारी रेवती नामक नक्षत्र रहता है। यह मर्यादा स्वयं ब्रह्मा जी की स्थापित की हुई है। हे राजेन्द्र! उत्तर में नूतन-जलधर की तरह कान्ति वाला तथा उज्ज्वल शरीर वाला, सुन्दर एवं श्याम एक अत्युच्च पहाड़ है। वहाँ जो लोग रहते हैं, वे श्याम वर्ण के होते

हैं। धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! तुमने अभी जो कहा, उससे मेरे मन में बड़ी शङ्का उठती है। वहाँ के लोग श्याम रंग के क्यों होते हैं?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! समस्त द्वीपों में गौर-श्याम और गौर-कृष्ण मिश्रित रंग के लोग देखे जाते हैं। किन्तु इस द्वीप में तो केवल श्यामरंग ही के लोग देखे जाते हैं। इसीसे यह पहाड़ श्यामगिरि कहलाता है। इसके आगे महान् उदय वाला दुर्गशैल नाम का बड़ा भारी ऊँचा पहाड़ है। इसके आगे केसरी नामक पर्वत है—जिसमें केसर सुगन्धित वायु चला करता है। हे कुरुवंशी! पूर्वकथित पर्वत के परिमाण से इन सब पर्वतों का परिमाण दुगना है। विद्वानों का कथन है कि, सात वर्ष और हैं। मेरु पर्वत के वर्षों को महाकाश कहते हैं, मलय के ऊपर वाले वर्षों को कुमुदोत्तर और जलधार के ऊपर वाले वर्ष सुकुमार कहलाते हैं। रैवत के ऊपर वाला कौमार, श्यामगिरि के ऊपर वाला मणिकाञ्चन और केसर गिरि के ऊपर वाला मौदाकी वर्ष कहलाता है। उसके आगे महापुमान् नामक एक और पहाड़ है। उसके बीच में बड़ा भारी शाक नामक वृक्ष है। उसकी लंबाई और उसका फैलाव जम्बू वृक्ष जितना ही है। वहाँ के रहने वाले सदैव उस वृक्ष की उपासना किया करते हैं। वह देश बड़ा पवित्र है। वहाँ के लोग शङ्कर का पूजन किया करते हैं। वहाँ देवताओं और चारणों का आना जाना हुआ करता है। वहाँ चारों वर्णों के लोग उत्पन्न होते हैं और बड़े धर्मात्मा होते हैं। वे सब अपने अपने कर्मों में तत्पर रहते हैं। वहाँ चोर नहीं होते। क्योंकि वहाँ के सब लोग अपने धर्मपालन में तत्पर रहते हैं। वहाँ के निवासी जरा मरण के भय से रहित और बड़े आदरणीय हैं। उनकी वृद्धि वैसे ही आनन फानन होती है, जैसे वर्षाकाल में नदियों के जल की। वहाँ पर पवित्रसलिला बहुत सी नदियाँ हैं। वहाँ पर गङ्गा का विस्तार बहुत बड़ा देखा जाता है। वहाँ सुकुमारी, कुमारी, शीताशी और वेणिका नाम्नी चार महानदियाँ हैं। मणिजला नाम्नी एक साधारण नदी और है। इनके अतिरिक्त चक्षुवर्धनिका आदि

पवित्रतोया असंख्य नदियाँ हैं। अगाध जलवाली इन नदियों से इन्द्र जल ले कर, जलवृष्टि किया करते हैं। वहाँ की सब नदियों के नाम और गणना बताना कठिन है। इस शाकद्वीप में चार पवित्र देश हैं। उन देशों के नाम मङ्ग, मशक, मानस और मन्दग हैं। हे राजन्! मङ्ग देश में केवल अपने कर्म में कुशल ब्राह्मण ही रहते हैं। मशक देश में इच्छानुसार वस्तुएँ देने वाले धर्मात्मा क्षत्रिय लोग बसते हैं। मानस नामक देश में वैश्य रहते हैं, जो व्यापार से अपनी आजीविका चलाते हैं। मन्दग देश में शूद्रों का निवास है। ये शूद्र धर्म अर्थ में अनुरागवान्, वीर एवं सफल कार्य करने वाले हैं। इस शाकद्वीप में राजा नहीं है, दण्ड नहीं है तथा दण्ड देने योग्य कोई मनुष्य भी नहीं है। वहाँ के धर्मज्ञ जन, अपने कर्म के द्वारा ही आपस में एक दूसरे की रक्षा किया करते हैं। शाकद्वीप के बारे में केवल इतना ही कहा जा सकता है और सुनने वाले मनुष्यों को भी इस द्वीप के विषय में सुनना भी इतना ही चाहिये।

बारहवाँ अध्याय

उत्तर द्वीप का वृत्तान्त

सञ्जय बोले—हे राजन्! उत्तर दिशा के द्वीपों के बारे में जो कुछ मैंने सुन रखा है, वह अब मैं आपको विस्तृत रूप से सुनाता हूँ। सुनिये। उत्तर दिशा में जल के बदले एक घी का, दूसरा दही का, तीसरा मद्य का और चौथा जल का समुद्र है। हे राजन्! उत्तर में उत्तरोत्तर आगे बढ़ने पर जो द्वीप मिलते हैं, वे क्रमशः एक दूसरे की अपेक्षा दुगुने बड़े हैं। वहाँ जो पहाड़ हैं, वे सब समुद्र से घिरे हैं। द्वीप के मध्य में मनःशिल नाम का बड़ा पहाड़ है। उसका नाम गौरगिरि भी है। पश्चिम में नारायण का बड़ा प्रिय कृष्ण नामक एक विशाल पर्वत है। वहाँ भगवान् केशव रत्नों की

स्वयं रक्षा करते हैं और जब प्रसन्न होते हैं, तब प्रजाओं को सुख देते हैं। कुशद्वीप में कुश होता है और शाल्मली द्वीप में सेमल का वृक्ष होता है और वहाँ के लोग उसका पूजन करते हैं।

क्रौंच द्वीप में क्रौंच नामक एक विशाल पर्वत है। यह पर्वत रत्नों की खान है। सब वर्णों के लोग इसका पूजन करते हैं। समस्त धातुओं का आकर गोमन्त नामक एक और विशाल पर्वत है। मोक्षकामियों द्वारा यह पर्वत सेवित है। इस पर कमलनयन नारायण वास करते हैं। कुश द्वीप में हेम नामक एक पर्वत और है। इस पर मूँगों के वृक्ष हैं। यह किसी भी पर्वत से दबने वाला नहीं है। चौथा पुष्पवान, पाँचवाँ सुकेशी और छठवाँ हरिगिरि नाम का पर्वत है। सब मिला कर यहाँ छः पहाड़ हैं। इन पहाड़ों का मध्यभाग ज्यों ज्यों उत्तर की ओर बढ़ता है, त्यों त्यों वह एक दूसरे से दूना विस्तार वाला होता जाता है। प्रथम औद्भिद्वर्ष, दूसरा वेणुमण्डलवर्ष, तीसरा सुरथाकारवर्ष, चौथा कम्बलवर्ष, पाँचवाँ धृतिमत्वर्ष, छठवाँ प्रजाकारवर्ष और सातवाँ कपिलवर्ष है। इनमें देवगण और गन्धर्वगण रहते हैं। वे यहाँ सदा विहार किया करते हैं और सदा सुख में कालयापन किया करते हैं। वे मरते तो कभी हैं ही नहीं। यहाँ पर न तो एक चोर है और न एक भी म्लेच्छ। यहाँ के निवासी गोरे रंग के और सुकुमार और सुन्दर होते हैं। अब अन्य लोगों के बारे में मैंने जो सुना है—वह मैं कहता हूँ। आप सावधान हो कर सुनिये। क्रौंच द्वीप में क्रौंच नामक बड़ा भारी पहाड़ है। इसके आगे जो पहाड़ है उसका नाम वामनक है। इसके आगे अन्धकारक है। इसके आगे पर्वतश्रेष्ठ मैनाक है। मैनाक के आगे पर्वतश्रेष्ठ गोविन्दगिरि है। गोविन्दगिरि से आगे निविड़ गिरि है। ये सब पर्वत भी एक दूसरे की अपेक्षा दुगुने बड़े हैं। इन पर अनेक देश बसे हुए हैं। उनके नाम भी मैं आपको बतलाता हूँ। सुनिये।

क्रौंच के पास कुशल नाम का देश है। वामनक के निकट मनोनुग

और मनोनुग के आगे उष्ण नाम का देश है। उष्ण के आगे प्रावरण,प्रावरण के आगे अन्धकारक और अन्धकारक के आगे मुनि देश है। मुनि देश के आगे दुन्दुभिस्वन नाम से प्रसिद्ध एक और देश है। हे राजन्! वहाँ सिद्ध चारण तथा अधिकतर गौर लोग रहते हैं। यह देश देव-गन्धर्व-सेवित है।

पुष्करद्वीप में मणियों और रत्नों वाला पुष्कर नामक गिरि है। इसकी उपासना देवता और महर्षि किया करते हैं। साक्षात् प्रजापति वहाँ स्वयं रहते हैं हे राजन्! देवता और महर्षि मन हर्षित करने वाले वचनों से उनका पूजन करते हैं। इस जम्बूद्वीप से विविध प्रकार के रत्न अन्य द्वीपों में भेजे जाते हैं। वहाँ के लोग उन्हें अपने काम में लाते हैं। जम्बूद्वीप की प्रजा ब्रह्मचर्य, सत्य और धर्म का पालन करती है। इन द्वीपों के वासियों की आयु और स्वास्थ्य एक दूसरे से उत्तरोत्तर द्विगुना होता जाता है। यद्यपि इन द्वीपों में देश बहुत हैं, तथापि वे सब एक ही नाम से प्रसिद्ध हैं। उन सब देशों के रहने वाले एक ही धर्म के अनुयायी हैं। स्वयं प्रजापति, नियन्ता और शास्ता बन और हाथ में दण्ड ले, इन द्वीपों की रक्षा करते हैं और वहीं रहते हैं। वे स्वयं इन सब के राजा, पिता, प्रपिता और कल्याणकारक हैं। वे चराचरात्मक प्राणियों की रक्षा करते हैं। वहाँ रहने वालों को पका पकाया पक्वान्न मिल जाया करता है। उन्हें स्वयं नहीं बनाना पड़ता। वे उसी पक्वान्न को खा कर अपनी उदरपूर्ति किया करते हैं। इसके आगे जो देश है, उसका चौकोर आकार है और उसमें तेंतीस मण्डल हैं। वहाँ वामन ऐरावतादि प्रधान चार दिग्गज नियत हैं। इन हाथियों में सुप्रतीक जाति के हाथी भी हैं। इनकी कनपुटियों से मद टपकता है। इनकी ऊँचाई और मुटाई का वर्णन मैं नहीं कर सकता। इनकी ऊँचाई और मुटाई ऊपर नीचे तथा मध्य में अकथनीय है। वहाँ सदैव समस्त दिशाओं का पवन चला करता है। वहाँ विचरण करने वाले हाथी उस पवन में अपनी चमचमाती और कमल जैसी लाल सूँड़ों से स्वास लिया करते हैं। उस पवन को वे हाथी अनेक प्रकार से पुनः अपनी सूँड़ों

हीं से निकाल दिया करते हैं। वे दिग्गज अपनी सूँड़ों से जो पवन निकालते हैं, उसीसे लोग अपना निर्वाह करते हैं।

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! तुमने उस द्वीप का विस्तार तथा अन्य द्वीपों की दशा भी सुनायी। अब तुम मुझे सूर्य, चन्द्रमा तथा राहु का परिमाण भी सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे महाराज ! मैं द्वीपों की लंबाई चौड़ाई आपको सुना चुका। अब आपको ग्रहों का यथावत् परिमाण सुनाता हूं। सुनिये। हे राजन् ! राहु का जो परिमाण सुनने में आता है, वह मैं आपको सुनाता हूँ। राहु का विस्तार बारह हज़ार योजन का है। परिधि का नाप छत्तीस हज़ार योजन का बतलाया जाता है। पौराणिकों का मत है कि, वह छः हज़ार योजन है।

हे राजन् ! चन्द्रमा का विस्तार ग्यारह हज़ार योजन का है और परिधि से तैंतीस हज़ार योजन का है; किन्तु कितने ही लोग चन्द्रमा का व्यास पाँच हज़ार नौ सौ योजन का बतलाते हैं।

परमोदार शीघ्रगामी सूर्यमण्डल का विस्तार दस हज़ार योजन का है और परिधि से तीस हज़ार योजन का। किन्तु कोई कोई लोग सूर्यमण्डल का विस्तार पाँच हज़ार आठ सौ योजन का बतलाते हैं। हे भारत ! मैंने तुम्हें सूर्य, चन्द्र, राहु का परिमाण सुनाया। राहु अपनी बड़ाई से चन्द्र और सूर्य को ढक लेता है। तुमने जो प्रश्न किया था उसका उत्तर मैंने ज्ञान रूपी नेत्र से देख कर संक्षेप से दे दिया। इस जगत् की रचना किस प्रकार हुई, यह भी मैं तुमको यथावत् सुना चुका। अब तुम अपने चित्त को सावधान करो। हे राजन् ! तुम अपने पुत्र दुर्योधन की ओर से निश्चिन्त हो जाओ। इस रमणीय भूमिपर्व को सुनने से राजाओं की श्रीवृद्धि होती है, वे जो कुछ विचारते हैं, वह पूरा होता है। साधुपुरुषों में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। उनकी आयु, उनका बल, उनकी कीर्ति और उनका

तेज बढ़ता है। हे राजन्! जो पुरुष पूर्णिमासी अथवा अमावस को उपवास कर, इस भूमिपर्व की कथा सुनता है, उसके पितर और पितामह तृप्त होते हैं। जिस भारतवर्ष में पूर्वकालीन राजागण बड़े बड़े धर्मानुष्ठान कर चुके हैं और जिस भारतवर्ष में हम लोग रहते हैं, उसके बारे में भी आप बहुत कुछ सुन चुके हैं।

भूमिपर्व समाप्त

भगवद्गीतापर्व

तेरहवाँ अध्याय

भीष्म की मृत्यु का सुनना

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! त्रिकालज्ञ तथा समस्त घटनाओं को प्रत्यक्ष देखने वाले एवं विद्वान् सञ्जय, रणक्षेत्र में होने वाली घटनाओं को देख, सहसा दुःखी होता हुआ, राजा धृतराष्ट्र के पास जा खड़ा हुआ। उस समय राजा धृतराष्ट्र इस विचार में मग्न थे कि, भरतवंश के पितामह भीष्म जी क्या मारे गये? सञ्जय उनको भीष्म के मारे जाने का दुस्संवाद सुना, उनसे कहने लगा।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! मैं सञ्जय, आपके निकट आया हूँ और आपको प्रणाम करता हूँ। भरतवंशियों के पितामह शान्तनुनन्दन भीष्म मारे गये। समस्त योद्धाओं के स्तम्भ रूप एवं धनुषधारियों के आश्रय रूप तथा कुरुओं के पितामह भीष्म आज रणभूमि में शरशय्या पर शयन कर रहे हैं। जिनके भुजबल पर निर्भर हो, आपके पुत्र ने जुआ खेला था, उन्हीं भीष्म को आज शिखण्डी ने मार डाला है। वे रणक्षेत्र में सो रहे हैं। जिन महावीर ने काशीपुरी में समवेत समस्त राजाओं का अकेले ही सामना कर, सब को परास्त किया था, जिन्होंने जमदग्निनन्दन परशुराम से

युद्ध कर, ज़रा सी भी घबड़ाहट प्रकट नहीं की थी और जिन्हें परशुराम भी न मार सके थे, वे ही भीष्मपितामह आज शिखण्डी के हाथ से मारे गये। जो शौर्य में इन्द्रतुल्य, स्थिरता में हिमवान सदृश, गम्भीरता में समुद्रवत्, सहनशीलता में साक्षात् पृथिवी के समान थे, जिनकी शूरता दंष्ट्रा, धनुष मुख और खड्ग जिह्वा थी, वे दुर्जय एवं पुरुषसिंह भीष्म आज शिखण्डी के हाथ से मार डाले गये। जैसे सिंह को देख गौओं के झुंड भाग जाते हैं, वैसे ही रणभूमि में भीष्म को लड़ने के लिये उद्यत देख, पाण्डवों की सेना भाग जाती थी। शत्रुसैन्य का संहार करने वाले भीष्म-पितामह दस दिवस तक आपकी सेना की रक्षा कर, एवं महाविक्रम प्रदर्शित कर, आज सूर्य की तरह अस्त हो गये। इन्द्र की तरह किसी से न दबने वाले भीष्मपितामह अगणित बाणों की वृष्टि कर और दस दिन के भीतर एक अर्बुद योद्धाओं का संहार कर, आज निर्जीव हो वैसे ही भूमि पर पड़े हैं, जैसे वायु के झकझोरों से टूटा हुआ वृक्ष भूमि पर गिर पड़ता है। भीष्म इस योग्य न थे कि. उनकी ऐसी दशा होती; किन्तु ये सब आपकी अनुचित करतूतों ही का प्रतिफल है।

चौदहवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र की जिज्ञासा

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! यह तो बतला, कुरुश्रेष्ठ भीष्म को शिखण्डी ने किस तरह मार डाला? जो इन्द्र के समान कहलाते थे, वे मेरे पिता रथ के नीचे कैसे गिरे? हे सञ्जय! भीष्म के मारे जाने बाद मेरी ओर के योद्धाओं ने क्या किया? जो भीष्म बल में देवताओं के समान थे और जिन्होंने पिता के लिये आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया था, उन महाबुद्धिमान्, महाधनुर्धर, महाबली, महोत्साही एवं पुरुषसिंह भीष्म जी

के मारे जाने पर हमारे पक्ष के योद्धाओं के मन पर कैसा प्रभाव पड़ा? कुरुश्रेष्ठ, वीर, निर्भीक और पुरुषश्रेष्ठ भीष्म जी के मरने का संवाद सुन, मेरा मन बड़ा दुःखित हुआ है। हे सञ्जय! जिस समय भीष्म जी पाण्डवों से लड़ने के लिये गये, उस समय उनका पृष्ठरक्षक एवं पार्श्वरक्षक बन, कौन कौन योद्धा उनके साथ गये थे। उनके साथ युद्ध में कौन कौन खड़े थे? कौन कौन रथ छोड़ कर भागे थे? रथियों में श्रेष्ठ तथा क्षत्रियश्रेष्ठ पाण्डवों की सेना में जिस समय वे गये, उस समय उनके साथ मेरी सेना के कौन कौन से वीर गये थे? जैसे सूर्य अन्धकार को नष्ट कर देते हैं, वैसे ही शत्रु-सैन्य का नाश करने वाले सूर्य की तरह तेजस्वी एवं शत्रु को भयभीत करने वाले, पाण्डवों के साथ लड़ते समय अद्भुत अभूतपूर्व पराक्रम प्रदर्शित करने वाले और शत्रु-सैन्य को ग्रसने वाले भीष्म जी को किसने घेरा था? हे सञ्जय! तू स्वयं पास रह कर, उनके असह्य पराक्रम को देख चुका है। अतः मुझे बतला कि, शान्तनुनन्दन को पाण्डवों ने क्यों कर घेरा? शत्रु-सैन्य-नाशक, बाण रूपी दंष्ट्राओं वाले, धैर्यधारी, धनुष रूपी खुले हुए मुख वाले, भयानक, दुरासद, खड्ग रूपी जिह्वा वाले, जाने के अयोग्य, पुरुषसिंह, लज्जालु एवं अजेय पितामह भीष्म को अर्जुन ने युद्ध में कैसे गिरा दिया? उनका धनुष विशाल था। उनको लड़ने के लिये खड़ा देख, पाण्डवों की सेना काँपने लगी थी। शत्रु-सैन्य को कालाग्नि की तरह भस्म करने वाले और अपनी सेना को साथ ले बड़े कठिन कर्म करने वाले भीष्म, दस दिवस तक घोर युद्ध कर, सूर्य की तरह क्योंकर अस्त हो गये? इन्द्र की तरह असंख्य बाणों की वृष्टि कर और युद्ध में दस दिन के भीतर एक अर्ब्ज योद्धाओं का संहार कर, भीष्मपितामह, मेरी अनुचित सम्मति के कारण, वायु के वेग से उखड़े हुए पेड़ की तरह रणभूमि में पड़े हैं। हरे! हरे!! वे तो इस प्रकार मारे जाने के योग्य न थे। भयानक पराक्रम वाले, शान्तनुनन्दन भीष्म जी को देख कर, पाञ्चालों की सेना उन पर क्योंकर

आक्रमण कर सकी? हे सञ्जय! पाण्डवों ने भीष्म जी के साथ कैसे युद्ध किया? द्रोण के जीवित रहते, भीष्म विजय प्राप्त क्यों न कर सके? जब कृपाचार्य और भरद्वाज के पुत्र द्रोण उनके साथ थे, तब भीष्म कैसे मारे गये? अतिरथ और देवता भी, जिनके ऊपर हाथ नहीं छोड़ सकते, वे भीष्मपितामह, युद्ध में शिखण्डी के हाथ से कैसे मारे गये? वे तो जमदग्नि-नन्दन परशुराम का सामना करने वाले थे। परशुराम उनको कभी जीत नहीं सके थे। इन्द्रतुल्य पराक्रमी एवं महारथी के कुल में उत्पन्न भीष्म जी कैसे मारे गये? हे सञ्जय! अब तुम मुझे इसीका वृत्तान्त सुनाओ। क्योंकि इसे सुने बिना मेरा मन शान्त नहीं होवेगा। हे सञ्जय! मेरी सेना के कौन कौन धनुर्धर ऐसे थे, जो युद्धक्षेत्र से मुँह न मोड़, भीष्म जी की रक्षा अन्त तक करते रहे। जिस समय पाण्डवों ने शिखण्डी को आगे कर, भीष्म पर आक्रमण किया, उस समय कौन कौन भीष्म जी के आस पास खड़े थे? सचमुच मेरा हृदय पत्थर का है। इसीसे तो भीष्म जी का मरण सुन मेरा हृदय नहीं विदीर्ण हो जाता। जिन भरतवंशी भीष्मपितामह के सत्य, उनकी बुद्धि एवं नीतिचातुरी की थाह नहीं मिलती थी; वे दुराधर्ष पितामह रण में कैसे मारे गये? जो धनुष के रोदे के घोष रूपी गर्जन से युक्त, बाण रूपी धारा वाले और धनुष से वज्र जैसी ध्वनि निकालने वाले अत्युच्च महामेघ की तरह थे, वे भीष्म जी कैसे मारे गये! पाण्डवों, पाञ्चालों, सृञ्जयों तथा अन्य रथियों के ऊपर, दानवों पर वज्रधारी इन्द्र की तरह बाणवृष्टि करने वाले भीष्म कैसे मारे गये? जिस समुद्र में बाण ही कछुए थे, धनुष लहरें थीं, जिसका न तो ओर छोर था और न जिसमें टापू थे, जिसमें तूफान उठने के कारण, पार होने का कोई साधन न था, जिसमें गदाएँ और तलवारें तथा पैदल सैनिक मछलियों की तरह उतरा रहे थे; जिसमें हाथी, घोड़े और रथ भँवर स्थानीय थे; जिसमें शङ्खों और दुन्दुभियों का, समुद्र जैसा गर्जन हो रहा था; उस समुद्र में शत्रुपक्ष के बहुत से हाथियों, घोड़ों और रथों को बड़े वेग से डुबोते हुए एवं शत्रु-सैन्य

का नाश करने वाले भीष्म को वैसे ही रोकने वाले ; जैसे समुद्रतट, समुद्र को रोकता है, कौन कौन वीर थे ?

हे सञ्जय ! दुर्योधन के हितार्थ, शत्रुओं का संहार करने वाले भीष्म ने जब युद्ध में महान् पराक्रम प्रदर्शित किया, तब उनके रथ के आगे कौन कौन से वीर चलते थे ? अपार पराक्रमी भीष्म के रथ के दहिने पहिये की रखवाली कौन वीर करता था ? उनके पृष्ठ भाग का रक्षक कौन था ? उन्होंने किन किन व्रतधारी शत्रु वीरों को आगे बढ़ने से रोका था ? कौन कौन उनके निकट रह कर आगे आगे उनकी रक्षा करते थे ? जब भीष्म जी लड़ रहे थे, तब उनके रथ के वामचक्र की रक्षा किसने की थी ? जिस समय सृञ्जयों ने इनको घेरा था, तब किसने सेना के अग्रभाग में था. उन दुरासद एवं मुख्य पितामह की रक्षा की थी ? हे सञ्जय ! वह कौन था, जिसने घोर सङ्कट की कुछ भी परवाह न कर, उनके पार्श्व की रक्षा की थी ? उन्होंने सामान्य युद्धकाल में किन किन योद्धाओं के साथ युद्ध किया था ? यदि हमारे वीरों ने उनकी रक्षा की होती और उन्होंने उन वीरों की रक्षा की होती ; तो यह कभी सम्भव न था कि, दुर्जेय पाण्डवों की सेना की सहसा जीत होती ।

हे सञ्जय ! सर्वेश्वर प्रजापति के परमेष्ठी अर्थात् हिरण्यगर्भ की तरह भीष्म जी के ऊपर पाण्डवों ने कैसे प्रहार कर पाया ? जिस द्वीप का आश्रय ग्रहण कर कौरव अपने शत्रुओं से लड़ रहे थे, उन्हीं नरव्याघ्र भीष्म रूपी द्वीप को तुम डूबा हुआ बतला रहे हो । जिनके वीरत्व के ऊपर निर्भर रह कर मेरे पुत्र, पाण्डवों को कुछ भी नहीं समझते थे, उन्हीं भीष्म को पाण्डवों ने क्योंकर मार डाला ? उन दुर्मद एवं व्रतधारी मेरे पिता से समस्त देवताओं ने दानवों के वध के लिये सहायता माँगी थी । जब भीष्म का जन्म हुआ था, तब उनमें पुत्र के यथार्थ लक्षण देख, जगत्प्रसिद्ध राजा शान्तनु ने पुत्रशोक एवं दैन्यभाव को त्याग दिया था । भीष्म जी तो स्व-कर्त्तव्य-निष्ठ, बड़े बुद्धिमान् स्वधर्म-निरत तथा साङ्गोपाङ्ग वेद के ज्ञाता

थे। तिस पर भी तुम उनके मारे जाने की बात कहते हो। हा! समस्त अस्त्रों शस्त्रों के ज्ञाता, शान्त, दान्त और धीरजधारी शान्तनुनन्दन भीष्म के मारे जाने की बात जब तुम कह रहे हो, तब तो मैं समझता हूँ कि, शेष सेना भी मारी गयी होगी। मेरी समझ में इस समय धर्म से अधर्म प्रबल हो गया है। क्योंकि राजा पाण्डु के पुत्र भी अपने वृद्ध पितामह को मार कर ही राज्य का उपभोग करने को लालायित हैं। सकल अस्त्रों शस्त्रों के ज्ञाताओं में निपुण परशुराम ने अम्बा के पीछे जिन भीष्म जी से युद्ध किया था और अन्त में उन्हें भी जिनसे हार खानी पड़ी थी, उन्हीं इन्द्र-तुल्य-पराक्रमी एवं समस्त धनुर्धरों में श्रेष्ठ भीष्म जी के मारे जाने की तुम बात कहते हो। अतः इससे अधिक और दुःख की क्या बात होगी? सब भूमण्डल के क्षत्रियों को युद्ध में बारंबार हराने वाले, शत्रु-सैन्य का नाश करने वाले परशुराम के हाथ से भी जो नहीं मारे गये, वे बुद्धिमान् भीष्म जी आज शिखण्डी के हाथ से मारे गये! इससे तो जान पड़ता है कि, सचमुच द्रुपदनन्दन शिखण्डी, महावीर्यवान् एवं युद्धदुर्मद भृगुनन्दन परशु-राम जी से भी बल में बहुत चढ़ा बढ़ा है। क्योंकि उसने सर्व-अस्त्र-शस्त्र-कुशल एवं कितने ही भीषण संग्रामों में विजय प्राप्त किये हुए भीष्म को मार डाला है। यह तो बतलाओ कि, उस युद्ध में कौन कौन से वीर पुरुष शत्रुओं का नाश करने वाले पितामह के पीछे पीछे गये थे?

हे सञ्जय! भीष्म जी ने पाण्डवों के साथ कैसा युद्ध किया था? यह वृत्तान्त तुम मुझे सुनाओ। निश्चय ही उस समय मेरे पुत्र की सेना, पति-पुत्र-हीन स्त्री की तरह हो गयी होगी। मेरा सैन्यदल तो अब बिना ग्वाला के विकल गौओं के समूह के समान हो गया होगा। जिन भीष्म में सब से बढ़ कर पुरुषार्थ था, जब वे ही मारे गये, तब मेरी सेना के सैनिकों की क्या दशा हुई होगी? हे सञ्जय! संसार में अद्वितीय धर्मात्मा एवं वीर अपने पिता को मरवा कर, अब मेरे जीवित रहने से लाभ ही क्या है? नदी पार होने की इच्छा वाले लोग जब अपनी नाव को अथाह पानी में

निमग्न होते देखते हैं, तब उनकी जो दशा होती है, वही दशा भीष्म जी के मारे जाने पर मेरे पुत्रों की हुई होगी। मेरी समझ में उन्हें पितामह के मारे जाने का बड़ा शोक हुआ होगा।

हे सञ्जय! सचमुच मेरा हृदय पत्थर का है जो पुरुषव्याघ्र भीष्म के मारे जाने का संवाद सुन टुकड़े टुकड़े नहीं हो जाता। जिन भीष्म में निर्भीकता, शस्त्रज्ञान, बुद्धि और नीतिकुशलता असीम थी, वे युद्ध में क्यों कर मारे गये? अस्त्र, शूरता, तप, बुद्धि, धैर्य और दान द्वारा कोई भी प्राणी मृत्यु से छुटकारा नहीं पा सकता। निश्चय ही महाबली काल ही सब लोकों का नाश करता है।

हे सञ्जय! तुम कहते हो कि भीष्म जी मारे गये। किन्तु पुत्रशोक से कातर मुझको तो शान्तनुनन्दन भीष्म ही से अपने पक्ष की रक्षा की पूर्ण आशा थी, किन्तु सूर्य की तरह भूमि पर पड़े हुए भीष्म को देख, दुर्योधन ने आत्मरक्षा के लिये क्या उपाय सोचा था? मुझे तो बुद्धिपुरस्सर सोचने विचारने पर जान पड़ता है कि, मेरे और शत्रु के समस्त राजाओं में से अब कोई भी जीता जागता न बच पावेगा। हा! ऋषियों ने क्षत्रिय-धर्म बड़ा ही दारुण निर्दिष्ट किया है। उसी क्षात्रधर्म के अनुसार ही पितामह का वध कर, पाण्डव राज्य लेना चाहते हैं और हम उन महाव्रत-धारी को मरवा, उस राज्य को अपने अधिकार में रखना चाहते हैं। क्षात्रधर्मानुसार चलने वाले कुन्तीनन्दन और मेरे पुत्र अपने धर्म का पालन करते हुए क्या पापकर्म नहीं कर रहे हैं? घोर विपत्ति पड़ने पर ही क्षत्रियों को ऐसा कर्म करना चाहिये था। क्योंकि पराक्रम और परमशक्ति क्षत्रियों ही में रहती है। हे सञ्जय! तुम ठीक ठीक बतलाओ कि, पाण्डवों ने शान्तनु के पुत्र और मेरे पिता भीष्म जी को कैसे रोक लिया? वे तो बड़े विनयी और अजेय सैन्य का नाश करने में संलग्न थे। शत्रुओं ने कैसा सैन्यव्यूह रचा था और किस प्रकार भीष्म पितामह से उन लोगों ने युद्ध किया था? मेरे पिता भीष्म को शत्रुओं ने कैसे मार डाला? जिस

समय वे मारे गये, उस समय दुर्योधन, कर्ण, शकुनि और दुःशासन ने क्या कहा था ? सिपाहियों, गजों और अश्वों से आच्छादित ; बाण, शक्ति, बड़ी बड़ी तलवार और तोमर रूपी पाशों वाली महाभयानक एवं युद्ध के कारण अप्रधर्प (रण यज्ञ रूपी मण्डप) द्यूतसभा में कौन कौन अल्प बल वाले ज्वारियों ने पदार्पण किया था ? किन किन महापुरुषों ने प्राणनाश के कारण उस भयानक सभा में द्यूतक्रीड़ा की थी ? भीष्म को छोड़ और कौन कौन से राजे रण में विजयी हुए थे और किन किन राजाओं को परास्त होना पड़ा था ? कौन कौन राजे लक्ष्य बन कर, समर-भूमि में सदा के लिये गिर पड़े थे ? तुम मुझे ये सब बातें बतलाओ। क्योंकि रण में भीष्म जी के मारे जाने का संवाद सुन, मैं धैर्यच्युत हो गया हूँ। भीम पराक्रमी भीष्म जी मेरे पितृस्थानीय और युद्ध की शोभा थे। मुझे अब अपने पुत्र के मारे जाने की बड़ी चिन्ता उत्पन्न हो गयी है। वह चिन्ता मेरी मानसिक यंत्रणा को वैसे ही बढ़ा रही है. जैसे घृताहुति अग्नि को बढ़ाती है। सर्वमान्य और जगत्प्रसिद्ध भीष्म ने जब युद्ध का समस्त भार अपने ऊपर उठा लिया था और जब वे ही मारे गये, तब मैं समझता हूँ कि, मेरे पुत्रों को तो बड़ा दुःख हुआ होगा। मैं दुर्योधन के दुःखदायी कृत्यों को सुनना चाहता हूँ।

अतएव हे सञ्जय ! मूढ़ पुरुषों के बुद्धिदोष से समर भूमि में जो शुभाशुभ फल हुआ है, वह तुम मुझे बतलाओ। उस महासमर में, विजय की इच्छा रखने वाले तथा शस्त्रविद्या में चतुर भीष्म जी ने जो शूरता के कृत्य किये हों—वे भी सब तुम मुझे यथावत् सुनाओ। कौरवों और पाण्डवों में जिस ढंग से युद्ध हुआ हो, वह भी मुझे सुनाओ।

प्रथम दिवस का प्रभात

पन्द्रहवाँ अध्याय

दुर्योधन का आदेश

संजय बोले—हे राजन्! आपने मुझसे जो प्रश्न किये वे आपके योग्य ही हैं। किन्तु ये सब दोष आपको अकेले दुर्योधन ही के सिर न मढ़ने चाहिये। क्योंकि जो मनुष्य अपने खोटे कर्मों से बुरा फल पाता है, उसे उस पाप का भार अन्य के सिर न पटकना चाहिये। हे राजन्! समस्त मनुष्यों में जो मनुष्य निन्दा का काम करता है, वह समस्त जनों द्वारा मारे जाने योग्य कहा जाता है। सीधे सादे स्वभाव वाले पाण्डवों ने केवल तुम्हारे बड़प्पन के विचार ही से अपने मित्र और मंत्रियों के साथ वन में वास कर, बड़े बड़े अपमान सहे हैं। घोड़ों, गजों और बहुत से तेजस्वी राजाओं के उन सब कार्यों को मैं आपको सुनाता हूँ। योगबल से जिन्हें मैंने अपनी आँखों देखा है, अब आप सुनें और वृथा दुःखी मत हों, क्योंकि यह सब भावी ही है। जिनकी कृपा से मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई है और मुझे त्रिकाल का ज्ञान प्राप्त हुआ है तथा जिनके अनुग्रह से मैं दूसरों के मन की बात जान सकता हूँ, जिनकी कृपा से उठे हुए अस्त्र की उत्पत्ति का ज्ञान मुझे प्राप्त हो जाता है; जिनकी कृपा से मैं आकाश में विचर सकता हूँ और युद्ध में अस्त्रप्रहार से आत्मरक्षा कर सकता हूँ; उन पराशर के पुत्र और आपके बुद्धिमान पिता व्यास जी को मैं प्रणाम करता हूँ। भरतवंशी राजाओं में जिस प्रकार यह अद्भुत रोमाञ्चकारी युद्ध हुआ था अब मैं वही कहता हूँ। अब आप उसीको सविस्तर सुनिये। हे राजन्! जब कुरुक्षेत्र के मैदान में व्यूहरचना की रीति से सेना की तैयारियाँ होने लगीं; तब दुर्योधन ने दुःशासन से इस प्रकार कहा—हे दुःशासन! पितामह भीष्म जी की रक्षा के लिये अब शीघ्र ही रथों को जोड़ दो और समस्त सैन्यदलों को शीघ्र ही लड़ने के लिये तैयार करो। जिस समय

की प्रतीक्षा मैं बहुत दिनों से कर रहा था, वह समय आज आ पहुँचा है। इस रण में भीष्म जी की रक्षा से बढ़ कर, मेरी समझ में हम लोगों के लिये अन्य कोई विशेष कार्य नहीं है। यदि हम लोग भीष्म जी की रक्षा कर सकें तो वे पाण्डवों, सोमकों और सृञ्जयों को निश्चय ही मार डालेंगे। किन्तु शुद्धमना भीष्मपितामह तो पहले ही कह चुके हैं कि, मैं शिखण्डी को नहीं मारूँगा। क्योंकि मैंने सुना है कि, पूर्वजन्म में वह स्त्री था। अतः युद्ध में वह त्यागने ही योग्य है। पितामह भीष्म का यह कथन है—अतः युद्ध में विशेषरूप से उनकी रक्षा करनी है। ऐसा हो जिससे मेरे पक्ष के समस्त सैनिक शिखण्डी का वध करने को तैयार रहें। पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर के जो योद्धा शस्त्रविद्या में निपुण हों वे ही पितामह की रक्षा के लिये नियुक्त किये जाँय। यदि महाबली सिंह अपनी रक्षा में असावधान हो तो उसे भी भेड़िया मार डालता है। हमें भी शिखण्डी रूपी शृगाल से भीष्मरूपी सिंह का नाश न करवाना चाहिये। युधामन्यु, अर्जुन के रथ के वामचक्र की रक्षा करता है और उत्तमौजा दहिने चक्र की। इन दोनों से रक्षित अर्जुन, शिखण्डी की रक्षा करता है। अतः हे दुःशासन! ऐसा प्रबन्ध करो कि, जिससे अर्जुन से रक्षित और भीष्म से परित्यक्त शिखण्डी कहीं गङ्गानन्दन भीष्म को मार न डाले।

सोलहवाँ अध्याय

सेनाओं का वर्णन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब रात बीती; तब तैयार हो. तैयार हो कहते हुए राजाओं का चीत्कार सुन पड़ा। सिंहनाद जैसी शङ्ख और दुन्दुभियों की ध्वनि से, घोड़ों की हिनहिनाहट से, रथों के पहियों की घरघराहट से, गजों की चिंघारों से, योद्धाओं के सिंहनाद से, तालों के ठोंकने

के शब्दों से तथा सामने खड़े हुए योद्धाओं को लड़ने के लिये ललकारने के शब्द से जहाँ देखो वहीं घोर कोलाहल होने लगा। सूर्योदय होते होते कौरवों और पाण्डवों की सेनाएँ लड़ने के लिये तैयार हो गयीं। सूर्योदय होते ही आपके पुत्रों के और पाण्डवों के वे बड़े बड़े सैन्यदल देख पड़ने लगे, जिनके सैनिक समरभूमि में कभी पीठ नहीं दिखाते थे और कवच धारण किये हुए थे तथा अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित थे। सुवर्ण भूषित हाथियों के हाँदे और रथ—समरभूमि में विद्युतयुक्त मेघों की तरह जान पड़ते थे। रथों और सैनिकों की टोलियों से मानों वास्तव में नगर बसा हुआ सा जान पड़ता था। उस समय उनमें आपके पिता चन्द्रमा की तरह शोभित हो रहे थे। धनुष, ऋष्टि, खड्ग, गदा, शक्ति, तोमर आदि बहुत से सुन्दर हथियारों को ले योद्धागण पंक्तिबद्ध हो खड़े हो गये। सैकड़ों हज़ारों गज, घोड़े, रथ और पैदल सिपाही जालव्यूह बना कर खड़े हो गये। आपकी सेना की तथा पाण्डवों की सेना की विविध आकार प्रकार की ध्वजाएँ चमचमाती हुईं फहराने लगीं। वे ध्वजाएँ सोने से मढ़ी रत्नों से जड़ी अग्नि की तरह दमक रही थीं। वे हाथियों के ऊपर खड़ी की जाने के कारण बड़ी सुन्दर जान पड़ती थीं। वे ऐसी जान पड़ती थीं, मानों अमरावतीपुरी में श्वेत पताकाएँ खड़ी की गयी हों। उन ध्वजाओं के पास युद्धक्षेत्र में शस्त्रों से सुसज्जित चित्रविचित्र रणबाँकुरे वीर देख पड़ते थे। वृषभ जैसे विशाल नयनों वाले, पीठ पर तरकस कसे और हाथों में दस्ताने पहिने हुए योद्धा गण अपने अपने दलों के आगे, अस्त्र उठाये खड़े हुए थे। सुवलनन्दन शकुनि, शल्य, जयद्रथ, उज्जैननरेश, विन्द और अनुविन्द, केकय बान्धव, काम्बोजाधिपति राजा सुदक्षिण, कलिङ्गराज श्रुतायुध, राजा जयत्सेन, कोशलाधिपति राजा बृहद्बल और सात्वत् वंशीय कृतवर्मा नामक दस योद्धा ऐसे थे—जो पुरुषों में व्याघ्र के समान, लोहदण्ड जैसे भुजदण्डों वाले, बड़ी बड़ी दक्षिणाओं वाले यज्ञ कर के ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करने वाले थे। इनमें से प्रत्येक के अधीन एक एक अक्षौहिणी सेना थी और ये सब अपनी अपनी

सेनाओं के आगे खड़े थे। इनके अतिरिक्त अन्य और भी अनेक महारथी तथा नीतिविशारद राजकुमार और राजागण दुर्योधन के अधीन थे। वीर पुरुष हथियारों को सम्हाल कर अपनी अपनी सेनाओं के आगे खड़े थे। उन सब की कमरों में काले मृगचर्म लपटे हुए थे। बलवान योद्धा हर्षित हो दुर्योधन के पीछे ब्रह्मलोक जाने की तैयारी कर, दस अक्षौहिणी सेनाओं के आगे आ कर खड़े हो गये थे। इन दस प्रधान पुरुषों के अतिरिक्त कुरु सैन्य का प्रधान नायक दुर्योधन जिस सैन्य के आगे खड़ा था, वह कौरवों के पक्ष की सेना का ग्यारहवाँ विभाग था। दुर्योधन सब के आगे था और उसके आगे शान्तनुनन्दन भीष्म थे। सफेद शिरस्त्राण, सफेद घोड़े, सफेद छत्र, और सफेद कवच से शोभायमान भीष्म जी वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे उदयकालीन चन्द्रमा जान पड़ता है। सुवर्ण की तालवृक्ष जैसी ध्वजा से युक्त रथ पर सवार एवं सफेद मेघ से घिरे हुए सूर्य की तरह भीष्म को कौरवों और पाण्डवों ने देखा। जँभाई लेते हुए सिंह को देखते ही जैसे वनवासी क्षुद्र जीव जन्तु भयभीत हो जाते हैं, वैसे ही रणभूमि में भीष्म जी को देख, धृष्टद्युम्नादि पाण्डव पक्षीय बड़े बड़े धनुर्धर योद्धा थरथरा उठे। हे राजन्! आपकी सेना इस प्रकार एकादश विभागों में विभक्त थी।

पाण्डवों की सेना सात भागों में विभक्त थी और उन सातों विभागों की रक्षा का भार पृथक् पृथक् महाबलवान वीरों के हस्तगत था। आमने सामने खड़ी हुई दोनों पक्षों की सेनाएँ प्रलय कालीन नक्रों द्वारा विलोड़ित और बड़े बड़े ग्राहों से पूर्ण दो महासागरों जैसी जान पड़ती थी। हे राजन्! कौरवों की सेना का इतना बड़ा समुदाय पहले मैंने न तो कभी देखा था और न सुना ही था।

सत्रहवाँ अध्याय

सैन्यव्यूह

सञ्जय बोले—हे राजन्! भगवान् कृष्ण द्वैपायन के कथनानुसार ही कुरुक्षेत्र के युद्ध में समस्त राजा एकत्रित हुए। जिस दिन लड़ाई आरम्भ हुई; उस दिन चन्द्रमा मघा नक्षत्र में अर्थात् पितृलोक में था। साथ ही सात महाग्रह भी आकाश में देदीप्यमान देख पड़ता था। उदयकाल में सूर्य के दो खण्ड से देख पड़ते थे। साथ ही उसमें दहकती हुई लपटें देख पड़ती थीं। माँस और रुधिर को खाने वाले शृगाल और काक भी कलेवे के लिये मुर्दे पाने की आशा से प्रकाशमय आकाश में उड़ते हुए शब्द करने लगे। प्रतिदिन प्रातःकाल के समय उठ कर भीष्म एवं द्रोण पाण्डवों का विजय मनाया करते थे। हे राजन्! यद्यपि वे आपकी ओर से युद्ध करते थे, क्योंकि युद्ध करने के लिये वे आपसे वचनबद्ध हो चुके थे। फिर सब धर्मों के जानने वाले आपके पिता भीष्म जी ने समस्त राजाओं को अपने निकट बुला कर यह कहा—हे क्षत्रियों! स्वर्ग में जाने के लिये (युद्ध रूपी) यह एक बड़ा द्वार खुला है। इस द्वार से तुम इन्द्र और ब्रह्मलोकों को आनन्द पूर्वक जाओ। आपके पूर्वपुरुषों तथा उनके पूर्वपुरुषों ने यह सनातन मार्ग तुम लोगों के लिये स्थापित किया है। अतः तुम शान्त मन से इस युद्ध में अपने आत्मा को शोभित करो। पूर्वकाल में ऐसे ही कर्मों से नाभाग, ययाति, मान्धाता, नहुष और नृगादि राजे अपना प्रयोजन सिद्ध कर, परमपद को प्राप्त हुए थे। क्षत्रिय का रोगग्रस्त हो घर में मरना पाप है। किन्तु जो क्षत्रिय युद्ध में शस्त्राघात से मारा जाता है वह सनातन क्षात्रधर्म का अनुसरण करता है। हे राजन्! भीष्म जी के इन वचनों को सुन कर, समस्त राजागण अपने अपने रथों पर सवार हो, अपनी अपनी सेनाओं की ओर चले गये। किन्तु हे भरतश्रेष्ठ! मंत्री और बन्धु बान्धवों सहित अकेले. सूर्यपुत्र कर्ण ही के अस्त्र भीष्म जी ने. फिकवा दिये थे।

कर्ण को उसी दशा में वहीं छोड़ आपके पुत्र और आपके पक्ष के समस्त राजागण सिंहनाद कर दसों दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुए सैन्य-शिविर के बाहिर आये। सफेद छत्रों, पताकाओं, ध्वजाओं, हाथियों तथा घोड़ों से एवं पैदलों से वे सेनाएँ बड़ी शोभायमान जान पड़ती थीं। नफीरियों, ढोलों और नगाड़ों के बजाये जाने से, रथों के पहियों की घरघराहट से उस समय भूमण्डल क्षुब्ध हो गया। सोने के बाजूबंदों और केयूरों से भूषित और धनुषों से सुसज्जित हो वे ऐसे जान पड़ते थे, मानों ज्वालामुखी पर्वत हों। पाँच तारों के चिन्ह से चिन्हित ध्वजा से युक्त रथ पर सवार भीष्म पितामह कुरुओं की सेना के मुहाने पर खड़े हुए विमल मार्त्तण्ड की तरह शोभायमान हो रहे थे। हे भरतसत्तम! बड़े बड़े धनुषधारी जो राजा लोग आपके पक्ष की सेना में थे, वे शान्तनुनन्दन के आदेशानुसार अपनी अपनी जगहों पर, सतर्क हो खड़े हो गये। सब से प्रथम गोवाशन का राजा शैब्य, पताका से युक्त एवं राजाओं के चढ़ने योग्य एक गजराज के ऊपर बैठ, समरभूमि में आया। फिर कमल जैसे रङ्ग वाला और सिंह की पूँछ के समान ध्वजा वाला अश्वत्थामा, सब सेना के आगे जा खड़ा हुआ। श्रुतायुध चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा और विकर्ण नामक सात धनुर्धरों के आगे रहने वाला, द्रोणपुत्र समस्त कवचधारी महारथियों एवं रथसेना के आगे जा खड़ा हुआ। उस समय राजाओं के ऊँचे रथों पर सोने की ध्वजाएँ शोभायमान हो रही थीं। सोने की वेदी, कमण्डलु और धनुष के चिन्ह से चिन्हित ध्वजा बड़ी भली जान पड़ती थी। जिस दुर्योधन के पीछे एक विशालवाहिनी चलती थी, उस दुर्योधन की नागचिन्हयुक्त एवं मणियों से जड़ी हुई ध्वजा बड़ी शोभायमान जान पड़ती थी। उसके आगे पौरव, काम्बोज, सुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य नामक महारथी दुर्योधन के आगे आगे चलते थे। पूर्व की ओर के राजाओं की बड़ी भारी सेना की रक्षा जो शरद् ऋतु के मेघों जैसी जान पड़ती थी, उदारमना अङ्गदेशाधिपति और कृपाचार्य करते थे।

जिस पर वाराह का चिन्ह था, उस रुपहली ध्वजा से शोभित बड़ा कीर्ति-शाली राजा जयद्रथ, सेना के आगे खड़ा था। जयद्रथ की अधीनता में एक लाख रथ, आठ हज़ार हाथी और साठ हज़ार घुड़सवार थे। असंख्यों रथ, हाथी और घोड़ों से भरा हुआ, सिन्ध देशाधिपति की आज्ञा में रहने वाला, बड़ा भारी सैन्यदल बड़ा भला जान पड़ता था। कलिङ्गराज केतुमान साठ हज़ार रथों और दस सहस्त्र गजों को साथ ले कर चला। पर्वताकार डीलडौल वाले उसके साथ के हाथी बड़े सुन्दर जान पड़ते थे। उन हाथियों के ऊपर ध्वजाएँ पताकाएँ लगी थीं और तोमर एवं बाणों से भरे भाथे रखे हुए थे। अग्नि की तरह चमकीले ध्वजदण्डों, सफेद छत्रों, बाजूबंदों, चँवरों, पंखों से सुसज्जित कलिङ्गराज बड़ा सुन्दर जान पड़ता था। निर्दोष लक्षणों से युक्त एक विशाल हाथी पर सवार केतुमान वैसे ही शोभायमान हो रहा था जैसे सूर्य मेघमण्डल में शोभा पाता है। तेज से देदीप्यमान और उत्तम हाथी पर सवार इन्द्रवत् देख पड़ने वाला राजा भगदत्त भी रण में खड़ा था। अवन्ती के राजकुमार विन्द अनुविंद जो बल में भगदत्त के बराबर थे, केतुमान के पीछे अपने सुन्दर हाथियों पर बैठ कर रणभूमि में आये। हे राजन्! द्रोणाचार्य, शान्तनुनन्दन भीष्म, आचार्यपुत्र अश्वत्थामा, वाल्हीक और कृपाचार्य ने रथसेना की जो व्यूह रचना की थी, उस सेना का अङ्ग हाथी, मस्तक राजों का समुदाय और पङ्ख घोड़े थे। इस प्रकार का वह सैन्यव्यूह हँसता हुआ सा चारों ओर से कुरुक्षेत्र में प्रतिपक्षी वीरों की ओर उड़ने लगा।

अठारहवाँ अध्याय

कौरवों की सेना का वर्णन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! ऐसी रचना हो जाने पर, तुरन्त ही युद्ध

करने के लिये एकत्रित हुए योद्धाओं के हृदयों को कम्पित करने वाला शब्द सुन पड़ा। शङ्खों, दुन्दुभियों की ध्वनि हाथियों की चिंघारें और रथों की घरघराहट के शब्दों से जान पड़ता था पृथिवी विदीर्ण हुई जाती है। उस समय अश्वों की हिनहिनाहट ने और योद्धाओं के गर्जन तर्जन ने पृथिवी और आकाश में कुछ देर के लिये महाकोलाहल उत्पन्न कर दिया। हे राजन्! आपके प्रतापी पुत्रों की और पाण्डवों की सेनाएँ आमने सामने आ कर भिड़ गयीं और कम्पित होने लगीं। उनमें सुवर्ण भूषणों से सज्जित रथ और हाथी बिजली वाले मेघों की तरह शोभा पा रहे थे। हे राजन्! आपके सैनिकों की तरह तरह की सुवर्णभूषित ध्वजाएँ रणक्षेत्र में धधकते हुए अग्नि की तरह दमक रही थीं। आपके और पाण्डवों के बड़े भारी भारी झंडे इन्द्रभवन के श्वेत झंडों की तरह देख पड़ते थे। अद्भुत आयुधों और धनुषों को उठाये और हाथों में चमड़े के दस्ताने पहिने हुए वृषभ जैसे विशाल नेत्रों वाले कौरवों के प्रधान प्रधान योद्धा लोग, अपने अपने निर्दिष्ट स्थानों पर आ डटे। उस समय वे बड़े भले जान पड़ते थे।

हे राजन्! आपके पुत्र—दुःशासन, दुर्विषह, दुर्मुख, दुस्सह, विविंशति, चित्रसेन, महारथी विकर्ण, सत्यव्रत, पुरुमित्र, जय, भूरिश्रवा, शल और इनके अनुयायी बीस हज़ार रथी योद्धा भीष्म जी के पीछे पीछे रहते हुए उनकी रक्षा करते थे। आभीषह, शूरसेन, शिवि, वसाती, शल्व, मत्स्य, अम्बष्ठ, त्रिगर्त्त, कैकय, सौवीर, कैतव, एवं पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर देशों वाले द्वादश देशों के राजा लोग, अपने अपने प्राणों का दाँव लगा, एक विशाल रथवाहिनी को साथ ले भीष्म पितामह की रक्षा करने को नियुक्त किये गये थे। इस रथ सैन्य के पीछे मगधराज दस हज़ार हाथियों की सेना को साथ ले चल रहा था। रथचक्रों और गजों के पैरों की रक्षा करने वाले सिपाहियों की संख्या आठ हज़ार के लगभग थी। धनुष, तलवार, ढाल लिये और हाथों में गोह के चमड़े के दस्ताने पहिने हुए और सेना के आगे चलने वाले पैदल सिपाहियों की संख्या सैकड़ों हज़ारों की थी। हे राजन्!

आपके पुत्र की ग्यारह अक्षौहिणी सेना यमुना नदी के साथ मिली हुई गङ्गा की तरह जान पड़ती थी।

उन्नीसवाँ अध्याय

पाण्डवों के सैन्यव्यूह का वर्णन

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय ! मेरी ओर की ग्यारह अक्षौहिणी सेना के सैन्यव्यूह को देख, पाण्डुनन्दन युधिष्ठिर ने अपनी अल्प संख्यक सेना की व्यूहरचना किस प्रकार की थी। हे सञ्जय ! जो भीष्म मनुष्यों, देवताओं, गन्धर्वों और असुरों की व्यूहरचना के जानकार हैं, उनके सामने कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर ने अपनी सेना की व्यूहरचना कैसी की थी ; अब तुम मुझे यही सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—आपके पुत्रों के सैन्यव्यूह को देख, धर्मात्मा युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा—हे तात ! महर्षि बृहस्पति के कथनानुसार यदि थोड़े योद्धा हों, तो उन्हें एकत्र कर लड़ावे। यदि सेना में बहुत से सैनिक हों तो उन्हें फैला कर युद्ध करे। यदि बहुसंख्यक सैनिकों के साथ अल्पसंख्यक सैनिकों को लड़ना पड़े तो सूचीमुख व्यूह की रचना करे। शत्रु-सैन्य के साथ अपनी सेना की तुलना करने पर हमारी सेना बहुत कम है। अतः हे पाण्डव ! महर्षि बृहस्पति के मतानुसार अब तुम अपना सैन्यव्यूह बनाओ। धर्मराज के इन वचनों को सुन, अर्जुन ने कहा—हे राजसत्तम ! मैं आपके लिये वज्रपाणि इन्द्र का आविष्कृत अटल वज्रव्यूह रचता हूँ। यह वायु के समान उद्धत और वायु ही से उत्पन्न हुआ है। युद्ध में शत्रु इसको सह नहीं सकते और आक्रमण करने के लिये इससे बढ़ कर अन्य व्यूह नहीं है। इस व्यूह में खड़ी हुई सेना के मुहाने पर खड़े हो भीम युद्ध करेंगे। युद्ध-कला-कुशल एवं पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन, शत्रु-सैन्य के बल को कम करता

हुआ, हमारी सेना के अग्रभाग में रह कर युद्ध करेंगे। उसे देखते ही दुर्योधनपक्षीय योद्धा भयभीत हो वैसे ही भागेंगे जैसे सिंह को देख वन के क्षुद्र जीवजन्तु भाग जाते हैं। आक्रमणकारियों में श्रेष्ठ भीष्म, हम लोगों के लिये परकोटे की दीवाल जैसा हो जायगा। जैसे देवता अपने राजा इन्द्र के सहारे रहते हैं वैसे ही हम लोग भी निर्भय हो, भीमसेन के आसरे रहेंगे। क्योंकि इस लोक और परलोक में ऐसा कोई भी पुरुष नहीं है जो क्रोध में भरे उग्रकर्मा पुरुषश्रेष्ठ भीमसेन की ओर आँखें उठा कर देखने का साहस करे।

यह कह, अर्जुन ने तुरन्त ही अपनी सेना की व्यूहरचना की। तदनन्तर अर्जुन शत्रु की ओर गये। जब पाण्डव-सैन्य ने कौरव-सैन्य को अपनी ओर आते देखा, तब लबालब जल से भरी हुई गङ्गा की तरह वह धीरे धीरे आगे को बढ़ी। भीमसेन, धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और राजा धृष्टकेतु उस सेना के आगे आगे चल रहे थे। पुत्रों, भाइयों और एक अक्षौहिणी सेना को साथ ले, राजा विराट उस सेना की रक्षा करते हुए उसके पीछे पीछे चल रहे थे। माद्रीनन्दन नकुल और सहदेव भीमसेन के रथ के दहिने, बाएँ पहियों की रक्षा कर रहे थे। द्रौपदी के पाँचो पुत्र तथा सुभद्रा-नन्दन अभिमन्यु भीम के पृष्ठरक्षक थे। महारथी धृष्टद्युम्न और पाञ्चाल शूर प्रभद्रक रथियों के साथ साथ उन राजकुमारों की रक्षा करते थे। हे भरतर्षभ! भीष्म का नाश करने के लिये अर्जुन की रक्षा में शिखण्डी तैयार हो कर चलता था। अर्जुन के पीछे बलवान युयुधान चल रहा था। पाञ्चालराजपुत्र युधामन्यु और उत्तमौजा, केकय, धृष्टकेतु और वीर्यवान चेकितान साथ में रह कर अर्जुन के चक्र की रक्षा करता था। हे महाराज! इस समय अर्जुन ने भीमसेन को दिखला धर्मराज युधिष्ठिर से कहा—हे राजन्! वज्रसारमयी गदा को धारण कर यह भीमसेन बड़े वेग से चले जाते हैं। ये समुद्र को भी सुखा सकते हैं। मंत्रियों सहित धृतराष्ट्रपुत्र भी भीमसेन को देख कर सहम से गये हैं। हे भारत! जब अर्जुन इस प्रकार

सेना के बीच कह रहे थे, तब उनके इन वचनों को सुन उनकी सेना के अन्य समग्र प्रधान सैनिक उनके कथन का समर्थन करते हुए भीमसेन की प्रशंसा करने लगे। इस समय कुन्ती-नन्दन राजा युधिष्ठिर सेना के मध्यभाग में बड़े बड़े मदमत्त पर्वताकार हाथियों से घिर कर खड़े हुए थे। मनस्वी एवं पराक्रमी पाञ्चालराज द्रुपद, विराट राजा की एक अक्षौहिणी सेना के साथ पीछे पीछे चल रहे थे। उन राजाओं के रथों पर सूर्य और चन्द्रमा की समान कान्तिवाली तथा सोने के श्रेष्ठ गहनों से भूषित अनेक चिन्हों से चिन्हित ध्वजाएँ चढ़ी हुई थीं। महारथी धृष्टद्युम्न उन समस्त राजाओं को पीछे छोड़ कर अपने बन्धुओं और पुत्रों के साथ आगे जा, युधिष्ठिर के पीछे के भाग की रक्षा करने लगा। आपके पुत्रों तथा शत्रुओं के रथों पर चढ़ी हुई विविध प्रकार की ध्वजाओं का तिरस्कार करता हुआ एक महाकपि अर्जुन की ध्वजा पर आसीन था। तलवारधारी, भालेबरदार और ऋष्टिधारी सैनिकराज भीमसेन के आगे थे और उनकी रक्षा करते थे। मदमत्त बड़े बलवान, सुवर्ण की झूलों से आच्छादित, बहुमूल्यवान्, पर्वताकार डीलडौल वाले, जलवृष्टि करने वाले मेघों की तरह मद टपकाते हुए, कमल जैसी सुगन्धिवाले और वर्षाकालीन मेघों की तरह रंग वाले दस सहस्र हाथी युधिष्ठिर के रथ के पीछे चल रहे थे। उदारमना एवं दुराधर्ष भीम, परिघ की तरह अपनी मोटी गदा को उठा कर, रणभूमि में चलता था। आपकी सेना को उतप्त करने वाले और सूर्य की तरह दुष्प्रेक्ष्य भीमसेन को, निकट होने पर भी आपके सैनिक आँख उठा कर नहीं देख सकते थे। चारों ओर के आक्रमण को रोकने वाले, निर्भीक, गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन से रक्षित और भयङ्कर वज्रव्यूह को रच, पाण्डव आपकी सेना के सामने आ खड़े हुए। वज्रव्यूह, मनुष्यलोक में वैसे ही अजेय है, तिस पर पाण्डव उसके रक्षक हैं। सूर्योदय काल में दोनों ओर की सेनाएँ सामने आ कर डट गयीं। इस समय मेघहीन आकाश से वृष्टि हुई, बादलों की गड़गड़ाहट सुन पड़ी और ठंडी हवा चलने लगी। फिर भयङ्कर पवन

निचले भाग में कंकड़ों की वृष्टि करता हुआ प्रचण्ड वेग से चलने लगा, पृथिवी पर धूल उड़ने लगी और अंधकार छा गया। हे भरतर्षभ! इस समय पूर्वाभिमुख हो कर, एक बड़ा भारी उल्कापात हुआ। उससे उदय-कालीन सूर्य ढक सा गया। हे राजन्! जब दोनों पक्षों की सेनाएँ लड़ने को तैयार हो गयीं, तब सूर्य की आभा फीकी पड़ गयी और बड़े ज़ोर के धड़ाके के साथ भूमि फट गयी और काँपने लगी। समस्त दिशाएँ अन्धकार मयी हो गयीं। धूल उड़ने से आकाश में धूल ही धूल देख पड़ती थी। ध्वजाएँ जिनमें घुँघरू बँधे थे, जो सुवर्ण की मालाओं से भूषित थीं; और जो रेशमी वस्त्र की पताकाओं से सुशोभित हो रही थीं, तथा सूर्य की तरह चमकीली थीं—वे पवन के चलने से फर फर करती फहराने लगीं। जैसे तालवन में पवन के चलने पर खरखर शब्द होता है। वैसे ही ध्वजाओं के फरफर शब्द से वहाँ का वातावरण प्रतिध्वनित हो उठा।

हे राजन्! युद्ध से कभी मुँह न मोड़ने वाले, पुरुषव्याघ्र पाण्डव आपके पुत्र के सम्मुख, अपना सैन्यव्यूह रच और गदाधारी भीम को आगे कर, युद्ध करने को अग्रसर हुए। हे भरतर्षभ! आपके सैनिकों की मज्जा तक को निगल जाने को उद्यत पाण्डवों की सेना, आपके पुत्र की सेना के सामने आ खड़ी हुई।

बीसवाँ अध्याय

कौरवसैन्यव्यूह वर्णन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जब सूर्योदय हुआ; तब मेरी सेना के सेनापति भीष्म और पाण्डवों के सेनापति भीम में लड़ने के लिये उतावला कौन हो रहा था? किस पक्ष के युवा पुरुषों के मुख हर्ष से प्रफुल्लित हो रहे थे।

सञ्जय ने कहा—हे नरेन्द्र ! दोनों सेनाएँ व्यूहबद्ध हो लड़ने को खड़ी हो गयीं—तब दोनों सेनाओं के सैनिक दर्प से वैसे ही प्रफुल्लित देख पड़ते थे; जैसे फूले हुए कमल पुष्पों का वन। हाथियों और घोड़ों से सम्पन्न दोनों पक्षों की सेनाएँ बड़ी विचित्र देख पड़ती थीं। वे इतनी भयङ्कर जान पड़ती थीं कि, उनकी ओर देखना कठिन था। उनको देख कर ऐसा बोध होता था, मानों वे स्वर्ग-विजय के लिये ही रची गयी हैं। क्योंकि वे सत्पुरुषों से सेवित थीं। धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव पश्चिम की ओर मुख कर के खड़े हुए थे। कौरवों की सेना दैत्यों के राजा की सेना के समान और पाण्डवों की सेना देवराज की सेना के समान शोभा पा रही थीं। जब पाण्डवों के पीठ की ओर वायु चलता था, तब धृतराष्ट्र के पुत्रों के पीछे श्वान आदि रोते थे। पाण्डवों के मतवाले हाथियों के मद की गन्ध से आपकी सेना के हाथी न सह सके। कमलवर्ण, सोने की झूलों से अच्छादित, मोतियों के हार से भूषित और मदमत्त एक गज पर सवार दुर्योधन अपनी सेना के मध्य भाग में स्थित था। बन्दी मागध उसकी स्तुति कर रहे थे। चन्द्रमा के समान श्वेत छत्र उसके सिर पर तना हुआ था। वह सोने के आभूषण, पहिने हुए था। सोने की माला उसके गले में पड़ी हुई थी। गान्धारराज शकुनि पार्वत्य गान्धार सैनिकों के साथ चारों ओर से उसकी रक्षा कर रहा था। श्वेत छत्र, श्वेत धनुष, श्वेत पगड़ी-धारी वृद्ध भीष्म पितामह कमर में तलवार बाँधे, स्फटिक शिला जैसे सफेद रङ्ग के रथ पर सवार हो, अपनी सेना में सब से आगे थे। हमारी सेना में आपके पुत्र, बाल्हीक, शल्य, अम्बष्ठ, सिन्धु, सौवीर और शूर पञ्चनद देश के समस्त शूरवीर थे। उनके पीछे लाल घोड़ों वाले सुवर्ण के रथ पर सवार, परमपराक्रमी, प्रायः समस्त राजाओं के गुरु, महात्मा एवं धनुर्धर महाबली द्रोणाचार्य जी पर्वत की तरह अटल हो कर पीछे पीछे चलते थे। समस्त सेना के मध्य भाग में वृद्ध क्षत्रिय भूरिश्रवा, पुरुमित्र जयत्सेन, शाल्व तथा मत्स्यदेश के योद्धा और गजसेना

के सेनापति युद्धाभिलाषी समस्त केकय राजकुमार थे। हे राजन्! गौतम-वंशोत्पन्न महात्मा शरद्वान के पुत्र, विचित्र युद्ध करने वाले महाधनुर्धर कृपाचार्य अपने साथ शक, भिल्ल, यवन और पल्हवों को लिये हुए, उत्तर विभागीय सेना के साथ चल रहे थे। उनके रथ का अग्रभाग उत्तम था। हे राजन्! महारथी वृष्णि और भोजवंशी यादवों से शस्त्रविद्या में निपुण सौराष्ट्र योद्धाओं तथा कृतवर्मा से रक्षित आपकी बड़ी भारी सेना, मुख्य सेना की दहिनी ओर थी। अर्जुन का वध करने को नियुक्त किये गये दस हज़ार संशप्तक सैनिक और शस्त्र-विद्या-विशारद त्रिगर्तदेश के योद्धा अर्जुन की ओर लपक रहे थे। आपकी सेना में एक लाख छटा छटा गजारोही योद्धा थे। प्रत्येक गजारोही के साथ सौ सौ रथ और प्रत्येक रथ के साथ सौ सौ अश्वारोही और प्रत्येक अश्वारोही के पीछे दस दस धनुर्धर सिपाही और प्रत्येक धनुर्धर के पीछे दस दस ढाल वाले थे। हे राजन्! भीष्म ने आपकी सेना को रणक्षेत्र में इस प्रकार खड़ा किया था। भीष्म किसी दिन मानुषव्यूह, किसी दिन दैवव्यूह, किसी दिन गन्धर्वव्यूह और किसी दिन आसुरव्यूह की रचना करते थे। आपके पुत्रों का, भीष्म द्वारा रचित सैन्यव्यूह समुद्र की तरह गर्जन करता था। आपके सैन्यव्यूह का मुख पश्चिम की ओर था। आपके सैनिकों की संख्या अगणित थी और बड़ी भयङ्कर थी। यद्यपि पाण्डवों की सेना ऐसी न थी, तथापि उस सेना को मैं अजेय और बड़ी मानता हूँ। क्योंकि उस सेना में अर्जुन और श्रीकृष्ण हैं।

इक्कीसवाँ अध्याय

युधिष्ठिर और अर्जुन का कथोपकथन

सञ्जय बोले—युद्ध करने को तत्पर धृतराष्ट्र के पुत्रों की विशाल-वाहिनी को देख, कुन्तीनन्दन राजा युधिष्ठिर को बड़ा विषाद हुआ। धर्मराज

भीष्म के रचे हुए व्यूह को देख और उसे अभेद्य समझ, मारे चिन्ता के पीले पड़ गये और अर्जुन से बोले—हे अर्जुन ! जिन कौरवों के सेनापति पितामह भीष्म हैं, उनके साथ युद्ध कर हम लोग किस प्रकार टिक सकेंगे । सचमुच शत्रुनाशी, महातेजस्वी भीष्म ने यह अक्षोभ्य और अभेद्यव्यूह यथाविधि रचा है । इस व्यूह को देख हम और हमारे सैनिक चिन्तित हो गये हैं । इस व्यूह के सामने हम किस प्रकार जय पा सकेंगे । तदनन्तर शत्रुमर्दन अर्जुन ने आपकी सेना की ओर देख उदास हुए युधिष्ठिर से कहा—हे धर्मराज ! अल्पसंख्यक सेना बुद्धिबल से विशालवाहिनी को क्यों कर जीत लेती है—अब आप यह सुनिये । हे राजन् ! आप ईर्ष्याशून्य हैं, अतः मैं आपको इसके उपाय बतलाता हूँ । सुनिये । ये उपाय भीष्म, द्रोण और नारद को भी अवगत हैं । पूर्वकाल में देवासुर संग्राम के अवसर पर ये उपाय ब्रह्मा जी ने देवताओं तथा इन्द्र को बतलाये थे ।

उन्होंने कहा था—विजयाभिलाषी बल और वीर्य से विजय प्राप्त नहीं करते ; उन्हें सत्य, सौजन्य और उत्साह से विजय की प्राप्ति होती है । धर्म, अधर्म और लोभ के स्वरूप को पहिचान कर और अहङ्कार से शून्य हो कर, युद्ध करने वाला सदैव विजयी होता है । क्योंकि जहाँ धर्म है वहीं विजय है । हे राजन् ! इसलिये आप निश्चय ही समझ रखें कि जीत हम लोगों ही की होगी । क्योंकि नारद जी का कथन है कि, जहाँ कृष्ण हैं, वहाँ ही जय है । विजय गुण रूप से श्रीकृष्ण में रहता है । वह श्रीकृष्ण के पीछे पीछे चलता है । जैसे जय उनके अधीन है, वैसे ही सम्मति उनका अधीनस्थ दूसरा गुण है । गोविन्द अनन्त तेजसम्पन्न हैं । वे शत्रुओं के मध्य पीड़ारहित स्थित रहते हैं । क्योंकि वे ही तो सनातन पुरुष हैं । अतः जहाँ श्रीकृष्ण हैं, वहीं विजय है । पूर्वकाल में मायातीत, अच्छेद्य एवं आयुधधारी हरिरूप से प्रकट हो कर, तथा अपनी वज्र समान वाणी से सुरों और असुरों को सतर्क कर, हरि ने यह पूँछा था, कि तुममें से जीतेगा कौन ? उस समय देवताओं ने कहा था कि, हे विष्णो ! हमें तो आपकी

कृपा का भरोसा है। हमें आपके ही अनुग्रह से विजय प्राप्त होगी। अतः यह कहने वाले देवता ही जीते। इन हरि के अनुग्रह से और इन्द्र के सेनापतित्व में देवताओं ने तीनों लोकों को जीता था। हे भारत! अतः आपके विषाद युक्त होने का मुझे तो कोई कारण नहीं देख पड़ता। क्योंकि तीनों लोकों के स्वामी और विश्वभोक्ता श्रीकृष्ण तो आपका विजय चाहते हैं।

बाईसवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद

सञ्जय बोले—हे भरतर्षभ! राजा युधिष्ठिर अपनी सेना को व्यूह-बद्ध कर, भीष्म पितामह के सामने ले गये। हे कुरुकुलोत्पन्न! धर्मयुद्ध कर के स्वर्ग जाने की इच्छा रखने वाले पाण्डवों ने कौरवों के सामने जाने के समय समयानुकूल व्यूहरचना की थी। पाण्डवों की सेना के मध्यभाग में अर्जुन से रक्षित शिखण्डी अपनी सेना सहित खड़ा था। भीमसेन से रक्षित धृष्टद्युम्न भीमसेन से रक्षित हो आगे आगे चलता था। सेना का दक्षिण भाग, धनुषधारी देवराज इन्द्र से रक्षित देवसेना की तरह, महायोद्धा युयुधान से रक्षित था। देवराज के विमान की तरह सुवर्णभूषित एवं रत्नजटित रथ में बैठे राजा युधिष्ठिर वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे वे हस्तिनापुर में बैठते थे। हाथीदाँत के डंडीवाला श्वेतछत्र उनके मस्तक पर शोभायमान था। महर्षि-गण स्तुति करते हुए युधिष्ठिर की दहिनी ओर चल रहे थे। साथ ही उनके पुरोहित उन्हें शत्रुओं के नाश होने का आशीर्वाद दे रहे थे और समस्त ब्रह्मर्षि तथा सिद्ध पुरुष उन आशीर्वादों को सुनते जा रहे थे। मंत्र और महोषधियों द्वारा ब्राह्मण सब ओर से उनका स्वस्तिवाचन करते थे। कुरुकुलराजा युधिष्ठिर ब्राह्मणों को कपड़े, गौ, फल, पुष्प और अशर्फ़ियाँ

घाँटते हुए देवराज इन्द्र की तरह मस्त चाल से रणभूमि की ओर जा रहे थे। अर्जुन का रथ जाम्बूनद सुवर्ण से मढ़ा हुआ था और उसमें रत्न जड़े हुए थे। उसमें सैकड़ों घंटियाँ लटक रही थीं। वह अग्नि की तरह दमक रहा था और उससे सैकड़ों प्रकाश की किरणें निकल रही थीं। उसमें सुन्दर सफेद घोड़े जुते हुए थे और वह सुन्दर पहियों से युक्त था। गाण्डीव धनुषधारी एवं कपिध्वज जिस अर्जुन के समान इस धराधाम पर न कोई है और न होगा; वही अर्जुन श्रीकृष्ण सहित उस रथ पर सवार था।

हे राजन्! आपकी सेनाओं का नाश करने के लिये ही अत्यन्त भयङ्कर रूप धारण करने वाले, अश्वों और गजों को नाश करने वाले, अपने रथियों की रक्षा करने वाले, मदमत्त सिंह की तरह क्रीड़ा करने वाले, इन्द्र जैसे सेना-पति, दुष्प्रेक्ष्य और गजराज की तरह गर्वीले, भीमसेन के साथ में नकुल तथा सहदेव को देख, आपके सैनिक केवल घबड़ाये ही नहीं; बल्कि दलदल में फँसे हुए हाथियों की तरह अत्यन्त व्यथित भी हुए। मारे भय के वे बलहीन हो गये। तदन्तर हे भरतसत्तम! सेना के अग्रभाग में स्थित एवं दुरधिगम्य अर्जुन से श्रीकृष्ण ने कहा—अर्जुन! जो क्रोध से सन्तप्त हो रहे हैं और जो अपनी सेना के अग्रभाग में स्थित हो हमारे पक्ष के सैनिकों को सिंह की तरह घूर रहे हैं; वे तीन सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाले कुरुकुलावतंस भीष्म जी हैं। मेघ जिस तरह सूर्यनारायण को ढक देते हैं, वैसे ही शत्रु-सेना आस पास में उन महानुभाव को घेर कर खड़ी है। अतः हे वीर! तुम इनकी सेना को नष्ट कर, भरतवंशश्रेष्ठ भीष्म से लड़ने को तैयार हो।

तेईसवाँ अध्याय

दुर्गा-स्तुति

सञ्जय ने कहा—युद्ध के लिये धृतराष्ट्र के पुत्रों की सेना को तैयार देख, अर्जुन के हित के लिये भगवान् वासुदेव ने अर्जुन से पुनः कहा—

अर्जुन! शत्रुओं को पराजित करने के लिये तुम पवित्र हो कर, इस संग्राम में प्रवृत्त होने के समय, इस स्तव से दुर्गा देवी को प्रसन्न करो।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! बुद्धिमान् वासुदेव के इस प्रकार सूचना देते ही अर्जुन रथ छोड़ नीचे उतर पड़े और हाथ जोड़ इस प्रकार दुर्गा देवी की स्तुति करने लगे।

अर्जुन ने कहा—हे आर्ये! हे सिद्धसेनानि! हे मन्दर-पर्वतवासिनी देवि! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे कुमारी! हे भद्रकाली! हे कपाली! हे कपिले! हे कृष्णपिङ्गले! हे भद्रकालि! हे महाकालि! हे चण्डि! हे चण्डे! हे तारिणि! हे वरवर्णिनि! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे कात्यायिनि! हे महाभागे! हे करालि! हे विजया! हे जया! हे मयूर-पंख की ध्वजा को धारण करने वाली! हे श्रीकृष्ण की छोटी बहिन! हे ज्येष्ठे! हे नन्द-गोप-कुलोद्भवा! हे महिषासुर-मर्दिनी! हे कौशिकी! हे नित्य पीतवसिनी! हे अट्टहासकारिणी! हे चक्र समान मुख वाली! हे रण-प्रिये! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे उमे! हे शाकम्भरि! हे श्वेते! हे कृष्णे! हे कैटभ-दैत्य-नाशिनी! हे हिरण्याक्षि! हे विरूपाक्षि! हे सुन्दर धूम्राक्षि! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे ब्रह्मण्ये! हे भूतकालज्ञा! हे जम्बू-द्वीप-वासिनी! हे मन्दिरों में निवास करने वाली! वेदों में जिनकी महापुण्यदायिनी महिमा सुनी जाती है उन आपको मैं प्रणाम करता हूँ। आप विद्याओं में महाविद्या हैं, देहधारियों में महानिद्रा रूपिणी हैं। हे स्वामिकार्तिक की माता! हे दुर्गे! हे भगवति! हे वनवासिनी! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप ही स्वाहाकार, आप ही स्वधा, आप ही कला, आप ही काष्ठा, आप ही सरस्वती, आप ही वेदमाता सावित्री और आप ही वेदान्त स्वरूप वाली हैं। हे महादेवि! मैंने शुद्ध चित्त से आपकी स्तुति की है। हे देवि! आपके प्रसाद से युद्धभूमि में मेरा सदा विजय हो। जयनी, मोहिनी, माया, ह्री, श्री, सन्ध्या, प्रभावती, सावित्री, और जननी आप ही हैं, आप ही तुष्टि, पुष्टि, धृति, सावित्री, और चन्द्र तथा सूर्य की

वृद्धि करने वाली है। आप ही ऐश्वर्यवानों का ऐश्वर्य हैं। संग्राम में सिद्ध और चारण आपका दर्शन करते हैं।

सञ्जय ने कहा—अर्जुन की ऐसी भक्ति को जान कर मानववत्सला देवी, श्रीकृष्ण के सामने आकाश में प्रकट हुई और बोलीं—हे पाण्डव! तुम थोड़े ही काल में शत्रु को जीत लोगे। हे तेजस्वी! तुम नारायण की सहायता प्राप्त नर हो। अतः यदि इन्द्र ही स्वयं क्यों न आवें, तो भी, कोई भी शत्रु तुम्हें परास्त नहीं कर सकता। वरदायिनी देवी यह कह कर, तुरन्त ही आकाश में पुनः अन्तर्धान हो गयीं। यह वरदान पा, अर्जुन अपने को समरविजयी समझने लगे और फिर परमसत्तम अर्जुन रथ पर सवार हो गये। तदनन्तर श्रीकृष्ण और अर्जुन एक ही रथ पर सवार हो, दिव्य शङ्खों को बजाने लगे।

जो मनुष्य प्रातःकाल उठ कर, इस दुर्गास्तोत्र का पाठ करता है, उसको यक्ष, राक्षस और पिशाचों का भय कभी नहीं व्यापता। उसे न तो शत्रुओं का और न दंष्ट्रा वाले सर्प आदि का भय सताता है। उसे राजकुल का भी भय कभी नहीं सताता। उसकी मामले मुकदमे में जीत होती है। कैदी कैद से छूट जाता है। उसे चोर का भी भय नहीं होता। युद्ध में उसकी सदा जीत होती है। इस स्तव का जो पाठ करता है, उसको लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वह निरोग और बलवान रह सौ वर्षों तक जीवित रहता है। बुद्धिमान व्यास जी के प्रसाद से—मैं यह रहस्य जान पाया हूँ।

हे राजन्! आपके समस्त पुत्र दुष्ट और क्रोधी हैं। अतः वे मोह में फँस नर नारायण को नहीं पहचान पाये। हे राजन्! आपके पुत्र को वेद-व्यास जी ने, नारद जी ने, कण्व ऋषि ने और निष्पाप परशुराम ने समयानुसार बातें समझा बहुत रोका। किन्तु उसने एक की भी नहीं मानी। जहाँ धर्म है वहाँ ही द्युति, कीर्ति, ह्री, श्री और सुबुद्धि हैं। जहाँ धर्म है वहाँ श्रीकृष्ण हैं। जिसके पक्ष में श्रीकृष्ण हैं, उसीकी जीत है।

चौबीसवाँ अध्याय

धृतराष्ट्र का विकल हो कर सञ्जय से प्रश्न करना

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय ! रण में किस पक्ष के सैनिक हर्षित हो युद्ध करते थे और किस पक्ष के योद्धा उदास थे ? और कौन चित्तव्यामोह-वश दैन्य को प्राप्त हो गये थे ? इस रणभूमि में हृदय कँपाने वाले युद्ध में मेरे या पाण्डु के पुत्रों में से प्रथम किसने प्रहार किया ? किस सेनादल में सुगन्धित वायु चलता था ? किस पक्ष के योद्धा वीररस पूर्ण वार्तालाप करते थे ।

सञ्जय कहता है—उस रणभूमि में उभय सेनाओं के सैनिक उस समय आनन्दमग्न देख पड़ते थे। दोनों सेनाओं के सैनिकों की पुष्प-मालाओं से सुगन्ध निकलती थी। हे भरतसत्तम ! उभय सेनाएँ व्यूह रचना कर जब खड़ी हो गयीं, तब उनके सैनिकों में आपस में देखादेखी होते ही भारी मार काट आरम्भ हो गयी थी। मारू बाजों के साथ मिली हुई शङ्खों और नगाड़ों के बजने का घोर शब्द सुन पड़ता था। सिंहनाद करते हुए वीर सैनिक बड़ा कोलाहल करते थे। हे राजन् ! उभय सेनाओं में घोर युद्ध होने लगा, योद्धा लोग परस्पर घूरते हुए लड़ने लगे। गज चिंघारने लगे। सैनिक हर्ष से पूर्ण हो गये और वे एक दूसरे से लड़ने लगे।

श्रीमद्भगवद्गीतापर्व

पचीसवाँ अध्याय

सैन्यदर्शन वर्णन

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में जिस समय अर्जुन ने कौरवों की सेना में अपने

सम्बन्धियों और पूज्यों को लड़ने के लिये प्रस्तुत देखा, उस समय वे अत्यन्त करुणापूर्ण और खिन्नमना हो कर श्रीकृष्ण से कहने लगे—॥२७॥

अर्जुन ने कहा—हे कृष्ण ! अपने कुटुम्बियों को युद्ध करने की इच्छा से सम्मुख खड़े देख कर, मेरे सम्पूर्ण अङ्ग ढीले पड़ते जाते हैं, मुख सूखा जाता है, शरीर कम्पायमान और रोमाञ्चित होता है। गाण्डीव-धनुष हाथ से खिसक कर गिर पड़ता है और सम्पूर्ण शरीर की त्वचा में जलन सी उत्पन्न हो गयी है ॥ २८ ॥ २६ ॥

हे केशव ! स्थिरता के साथ खड़े होने की शक्ति मेरी नष्ट हो गयी है। मुझे चक्कर से आ रहे हैं। मुझे अनेकों अपशकुन दिखलायी पड़ रहे हैं ॥ ३० ॥

युद्ध में अपने भाईबन्धुओं को मारने से मुझे अपना किसी प्रकार का कल्याण नहीं दिखलायी पड़ता। रही विजय की बात, सो मुझे जय की इच्छा इसलिये नहीं है कि, मैं राज्य-सुख-भोग की कामना से रहित हूँ ॥ ३१ ॥

हे गोविन्द ! मुझे राजपाट से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। यही नहीं मुझे जीवन धारण करने में भी कोई लाभ नहीं दीख पड़ता। क्योंकि जिनके लिये लोग राज्य, भोग और सुख की इच्छा किया करते हैं, वे आज प्राण और धन की ममता को छोड़ कर, रणभूमि में युद्ध के लिये प्रस्तुत हैं ॥ ३२ ॥

आचार्य, पिता, पुत्र, पितामह, मामा, ससुर, साले और अपने से सम्बन्ध रखने वाले मित्र-गण, धन तथा प्राणों की आशा त्याग कर, युद्ध करने के लिये, रणभूमि में उपस्थित हुए हैं। हे मधुसूदन ! यदि ये लोग मेरे ऊपर प्रहार भी करें ; तो भी मैं उनके प्राण लेना नहीं चाहता ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

और तो और, यदि मुझे कोई त्रैलोक्य का साम्राज्य भी दे, तो भी मैं इनकी हत्या न करूँगा ; फिर इस तुच्छातितुच्छ साधारण पृथिवी के राज्य की प्राप्ति के लिये मैं इनकी हत्या क्यों करने लगा ? कभी नहीं, मैं ऐसा कभी न करूँगा। हे जनार्दन ! तुम्हीं कहो, दुर्योधनादि को मार कर, क्या मैं सुखी हो सकता हूँ ? ॥ ३५ ॥

इसमें सन्देह नहीं कि ये लोग आततायी हैं और शास्त्रानुसार आततायियों का वध करने से पाप नहीं लगता, तो भी अपने भाईबन्धु, एवं महाराज धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि पुत्रों को मारना मुझे अच्छा नहीं लगता। यदि ऐसा मैं करूँ तो अवश्य ही मुझे पाप का भागी होना पड़ेगा। हे माधव! अपने कुटुम्बियों को मार, क्या मुझे सुख मिल सकता है? ॥३६॥

यद्यपि, लोभ में फँस जाने के कारण दुर्योधनादि को, कुलनाश और मित्रद्रोह से उत्पन्न होने वाली पापराशि नहीं दिखलायी पड़ती ॥ ३७ ॥

तथापि, हे जनार्दन! कुलनाश से उत्पन्न होने वाले पापों को जान कर भी मैं उनसे क्यों न बचूँ? अतः मेरे पक्ष में युद्ध करना सर्वथा अनुचित है ॥ ३८ ॥

क्योंकि कुल का नाश होने पर, परम्परागत सनातन धर्म नष्ट हो जाता है और धर्म का नाश होते ही बचा हुआ धर्म, अधर्मयुक्त हो जाता है ॥ ३९ ॥

हे कृष्ण! कुल में अधर्म फैलते ही कुल की स्त्रियाँ आचारभ्रष्ट हो जाती हैं और उनके आचार-भ्रष्ट होते ही वर्णसङ्कर (दोग़ली) सन्तान उत्पन्न होती है ॥ ४० ॥

ऐसी सन्तान के उत्पन्न होते ही उस कुल और उसके नाशकों को नरक में गिरना पड़ता है और उस धर्महीन कुल में पितृतर्पण एवं पिण्डदानादि का कोई अधिकारी नहीं रहता। इससे उस कुल के पूर्वपुरुषों की सद्गति नहीं होती। वे क्रम से अधोगति को प्राप्त होते चले जाते हैं ॥ ४१ ॥

वर्णसङ्कर सन्तान के उत्पन्न होने के कारण रूप—इन दोषों से कुलनाशक पुरुष के जाति-धर्म, सनातन-कुल-धर्म एवं आश्रम-धर्म, उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं ॥ ४२ ॥

हे जनार्दन! मैंने सुन रखा है कि, जिसके कुल में सनातन-धर्म, जाति-धर्म और आश्रम-धर्म नष्ट हो जाते हैं, वह चिरकाल तक नरक में पड़ा पड़ा सड़ा करता है ॥ ४३ ॥

बड़े ही खेद और आश्चर्य की बात है, जो मैंने ऐसे महापातक के करने का विचार निश्चय किया; जो मैं साधारण राज्यसुख को पाने के लिये, अपने हितू कुटुम्बियों के प्राण नष्ट करने को उद्यत हुआ! ॥ ४४ ॥

अपना बचाव न करते हुए और हाथ में शस्त्र न रहने पर भी, यदि शस्त्रधारी धृतराष्ट्र के पुत्र, इस संग्राम में मुझे मार डालें, तो इसमें भी मेरे लिये भलाई ही है ॥ ४५ ॥

यह कह कर, शोकाकुल अर्जुन ने धनुष बाण रख दिये और वे रथ में अपने स्थान पर यों ही बैठ गये ॥ ४६ ॥

छब्बीसवाँ अध्याय

सांख्य योग

अर्जुन को उदासमन और साश्रुनयन देख कर, भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा ॥ १ ॥

भगवान् ने कहा—हे अर्जुन! यह क्या? ऐसे घोर सङ्कट के समय, तुम इस प्रकार मोह के वशवर्त्ती क्यों हो गये? क्या तुम नहीं जानते कि, यह मोह श्रेष्ठ पुरुषों के अयोग्य, स्वर्ग प्राप्ति में विघ्न-कारक और कीर्त्ति-नाशक है ॥ २ ॥

हे पार्थ! तुम कातर मत हो। क्योंकि कातर होना, तुम्हें शोभा नहीं देता। हे परन्तप! हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर उठो ॥ ३ ॥

अर्जुन ने कहा—वैरियों को नष्ट करने वाले हे श्रीकृष्ण! जिन भीष्म, द्रोण आदि का पूजन करना चाहिये, उनके ऊपर अस्त्र चला कर, मैं इस युद्ध-भूमि में उनको कैसे मारूँ? ॥ ४ ॥

महानुभाव कुरुवंशियों का नाश न कर के. यदि इस लोक में मुझे भिक्षा भी माँगनी पड़े, तो भी अच्छा है। इन्हें मारने से मुझे केवल परलोक ही का भय नहीं है; किन्तु ऐसा करने से मुझे इसलोक में भी अपने भाई

बन्धुओं के रुधिर युक्त, अर्थ कामना रूपी भोग्य विषयों का उपभोग करना पड़ेगा ॥ ५ ॥

इस युद्ध में जय और पराजय—इन दोनों में कौन सा मार्ग मेरे लिये अधिक गौरवान्वित होगा—यह मैं निश्चय नहीं कर सकता। क्योंकि जिनको मार कर मैं स्वयं जीवित रहना नहीं चाहता, वे धृतराष्ट्र के पुत्र ही मेरे सामने लड़ने के लिये खड़े हैं ॥ ६ ॥

इस समय मेरी इन्द्रियाँ मेरे वश में नहीं हैं, इसीसे मेरा मन धर्माधर्म के विचार करने में असमर्थ हो रहा है. अतएव मैं आपका शिष्य बन कर और शरणागत हो कर आपसे पूँछता हूँ कि, मेरी भलाई जिससे हो वह बात आप मुझे बतावें ॥ ७ ॥

मुझे इस समय कोई भी ऐसा उपाय नहीं सूझ पड़ता, जिससे समस्त इन्द्रियों को दुःख देने वाली, मन की यह बड़ी भारी विकलता दूर हो। शत्रुरहित समूची पृथिवी का निष्कण्टक राज्य मुझे मिले अथवा स्वर्गराज्य ही मुझे क्यों न मिल जाय, पर ऐसा होने पर भी मुझे अपना कल्याण नहीं दिखलायी पड़ता ॥ ८ ॥

ठीक युद्ध के समय, बीचों बीच रणक्षेत्र में, जब अर्जुन ने कहा कि, "मैं युद्ध न करूँगा" तब श्रीकृष्ण ने हँस कर कहा ॥ ९ ॥ १० ॥

श्रीकृष्ण बोले—हे अर्जुन! जिनके लिये चिन्ता करनी व्यर्थ है उनके लिये व्यर्थ शोक कर के, अविवेकी पुरुष की तरह, तुम काम कर रहे हो। तुम बातें तो पण्डितों जैसी करते हो, पर काम ऐसा कर रहे हो जो अपने को पण्डित कहने वाला कोई भी पुरुष कभी न करेगा। जो पण्डित होता है, वह न तो जीतों के लिये और न मरों के लिये शोक करता है ॥ ११ ॥

हे अर्जुन! इस शरीर धारण के पूर्व मैं नहीं था या तुम नहीं थे अथवा ये राजा लोग नहीं थे, अथवा इस शरीर को त्यागने के बाद मैं न होऊँगा, तुम न होगे, या ये राजा लोग न होंगे? नहीं, हम, तुम और ये राजा लोग पहले भी थे और मरने के बाद भी होंगे ॥ १२ ॥

जिस प्रकार इस शरीर ही से मनुष्य बालकपन, युवावस्था, वृद्धावस्था को प्राप्त होता है, उसी प्रकार दूसरे शरीर की प्राप्ति भी शरीर का अवस्थाभेद मात्र है। जो धीर पुरुष हैं वे इन अवस्थाओं में प्राप्त हो कर भी मोह में नहीं पड़ते ॥ १३ ॥

हे अर्जुन ! इन्द्रियों की सम्पूर्ण वृत्तियों के संसर्ग से, शीत उष्ण और सुख दुःखादि का अनुभव होता है, परन्तु हे भारत ! वे सब नाशवान् हैं ; अतः जब तक सुख दुःखादि का भोग है, तब तक उसको सहना ही उचित है। इसी प्रकार इष्ट अनिष्ट तो सदा हुआ ही करते हैं, उनके लिये हर्ष विषाद न मान कर, धैर्य्य धर कर उन्हें सहना ही उचित है ॥ १४ ॥

जो धीर पुरुष सुख दुःख को एक सा मानता है, अर्थात् इन्द्रियों की वृत्तियों और विषयों का संसर्ग, जिसको चलायमान नहीं कर सकता, वह ही धर्म और ज्ञान को प्राप्त होता हुआ मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ॥ १५ ॥

जो वस्तु नाशवान् (असत्) है, उसकी विद्यमानता अथवा स्थिति का कुछ भी ठीक ठिकाना नहीं और जो वस्तु नाशवान् नहीं है अर्थात् सत् है उसका अभाव किसी समय नहीं है। जो तत्वज्ञानी हैं, वे सत् असत् अथवा नित्य, अनित्य का वर्णन इसी प्रकार करते हैं ॥ १६ ॥

जो आत्मा, इस प्रपञ्च में हमें दिखलायी पड़ रहा है, सत्य रूप से व्याप्त है, वह अविनाशी है। उस अव्यय स्वरूप आत्मा को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता ॥ १७ ॥

आत्मा नित्य अविनाशी और अप्रमेय है यह नाशवान् शरीर उसी आत्मा का है। यह तत्व-ज्ञानियों का मत है। अतः हे भारत ! तुम युद्ध करो ॥ १८ ॥

यह आत्मा दूसरे का हनन करता है अथवा यह आत्मा दूसरे से हनन किया जाता है, जो ऐसा समझता है—वह आत्मतत्व को नहीं जानता। क्योंकि न तो यह आत्मा किसी को मारता है और न कोई इसे मार ही सकता है ॥ १९ ॥

यह आत्मा न कभी जन्मता है और न कभी मरता है और न इसकी ह्रास वृद्धि होती है; किन्तु यह स्वयं जन्म-रहित हो कर चिरकाल तक विद्यमान रहता है। आत्मा नित्य, सर्वदा एक रूप में रहता है, यह शाश्वत, क्षयहीन है, वह पुराना होने पर भी नूतन है, वह परिणाम द्वारा रूपान्तरित होने पर नूतन नहीं होता और शरीर के मारे जाने पर भी नहीं मरता ॥२०॥

हे पार्थ! जो इस आत्मा को क्षय और जन्म-रहित एवं अविनाशी जान रहा है, वह क्यों और किस प्रकार किसी का वध करेगा और किसका वध करावेगा? ॥ २१

जिस प्रकार मनुष्य एक पुराने वस्त्र को त्याग कर दूसरा नया वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीव भी एक पुराने शरीर को त्याग कर, दूसरा नया शरीर धारण करता है ॥ २२ ॥

इस आत्मा को शस्त्र छेदन नहीं कर सकते, अग्नि भस्म नहीं कर सकता, जल भिगो नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकता ॥ २३ ॥

आत्मा ऐसा पदार्थ नहीं जो कट सके, भींग सके, भस्म हो सके और सूख सके—किन्तु यह तो नित्य, सर्वव्यापी, स्थिर, अचल, अनादि, अव्यक्त अचिन्त्य और अविकारी है। इस लिये आत्मा के ऐसे स्वरूप को जान कर, तुम शोक करना त्याग दो ॥ २४ ॥ २५ ॥

आत्मा वारंवार जन्मता है और वारंवार मरता है। यदि तुम ऐसा ही मानते हो, तो भी हे बड़ी भुजा वाले! तुमको शोकाकुल नहीं होना चाहिये ॥ २६ ॥

क्योंकि जन्म के अनन्तर मृत्यु और मृत्यु के अनन्तर, जीवन दशा में किये हुए कर्मानुसार अवश्य जन्म लेना पड़ेगा। इस कारण इस अवश्य होने वाली घटना के लिये शोक करना, तुम्हें शोभा नहीं देता ॥ २७ ॥

ये सम्पूर्ण प्राणी जन्म के पूर्व अदृश्य (अव्यक्त) थे और मरने के पीछे फिर अदृश्य हो जाँयगे। ये बीच ही में अर्थात् जन्म के बाद और मरने

के पहिले दिखलायी पड़ते हैं। अतएव ऐसे सब भूतों के लिये तुम क्यों शोक करते हो? ॥ २८ ॥

शास्त्र और आचार्य के उपदेश द्वारा इस आत्म-तत्त्व को जान कर, कोई आश्चर्य सहित उसे सुनता है, कोई साश्चर्य उसका कीर्त्तन करता है, कोई स्वयं ग्रहण करता है और कोई इस आत्म-तत्व को सुन कर भी जान नहीं सकता है ॥ २९ ॥

सब के शरीर में यह नित्य और अवध्य आत्मा विराजमान है, इस कारण हे भारत! किसी प्राणी के शरीर-नाश के विषय में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिये ॥ ३० ॥

[नोट—यहाँ तक तो श्रीकृष्ण ने शास्त्रीय युक्ति से अर्जुन को समझाया अब आगे वे लौकिक तर्क और शास्त्र से उन्हें समझाते हैं।]

अर्जुन! अपने क्षत्रिय धर्म की ओर दृष्टि डालने पर भी, युद्ध का स्मरण कर के तुम्हारा काँप उठना ठीक नहीं। क्षत्रियों के लिये धर्मयुद्ध से बढ़ कर, कल्याण करने वाला और कोई धर्म नहीं ॥ ३१ ॥

हे पार्थ! अचानक प्राप्त और खुले हुए स्वर्ग के द्वार रूपी ऐसे युद्ध को जो क्षत्रिय पाते हैं, वे सुख भोगते हैं ॥ ३२ ॥

अब यदि तुम इस धर्मयुद्ध में प्रवृत्त न होगे, तो तुम केवल क्षत्रिय धर्म ही से च्युत न होगे; किन्तु धर्म और यश, दोनों को गँवा कर, पाप के भागी बनोगे ॥ ३३ ॥

चिरकाल तक प्राणी तुम्हारी अपकीर्त्ति (निन्दा) करेंगे और अपकीर्त्ति या निन्दा प्रतिष्ठित पुरुष के लिये मरने से भी बढ़ कर है ॥ ३४ ॥

जो महारथी तुमको बड़ा पराक्रमी जानते हैं, वे भी तुम्हें भय के कारण युद्ध से हटा हुआ मानेंगे और उनमें तुम्हारी बड़ी हलकाई होगी ॥ ३५ ॥

दुर्योधनादि शत्रु भी तुम्हारे बल की निन्दा कर के, न जाने कैसी कैसी अनकहनी बातें कहेंगे, तब इससे बढ़ कर अधिक दुःख और क्या होगा? ॥३६॥

हे कुन्तीनन्दन! यदि इस युद्ध में तुम मारे भी गये तो मर कर स्वर्ग

में पहुँचोगे और यदि विजयी हुए तो सारी पृथिवी का राज्य पाओगे। इस कारण युद्ध करने का निश्चय कर के खड़े हो जाओ ॥ ३७ ॥

सुख दुःख, हानि लाभ और विजय पराजय, समान जान कर, युद्ध के लिये उद्यत हो जाओ; ऐसा करने से तुम पाप के भागी न होओगे ॥ ३८ ॥

हे अर्जुन ! यहाँ तक मैंने तुम्हें सांख्य योग के अनुसार आत्म-तत्व समझाया, अब कर्मयोग के अनुसार आत्म-तत्व समझता हूँ, उसे सुनो। यदि इस कर्मयोग में कहीं तुम्हारी बुद्धि दृढ़ हो गयी, तो तुम कर्मबन्धन से छूट जाओगे ॥ ३९ ॥

जिस निष्काम कर्म के फल का नाश नहीं होता, जिसको यथाविधि न करने पर भी पाप का भागी नहीं बनना पड़ता और जिसका थोड़ा सा अनुष्ठान भी बड़े भारी भय से रक्षा करता है ; ॥ ४० ॥

हे अर्जुन ! उसी निष्काम कर्म के विषय में उद्योग करने वाली अथवा आत्म-तत्व का निश्चय करने वाली बुद्धि ही बलवती है। नहीं तो कर्ममार्ग में लगे हुए पुरुषों की अनेकों मार्गों पर चलने वाली भिन्न भिन्न प्रकार की बुद्धियाँ हैं हीं ॥ ४१ ॥

हे पार्थ ! जो अविवेकी जन कामनाओं से व्याकुल होते हैं; वे स्वर्ग की प्राप्ति ही को परम पुरुषार्थ समझ बैठते हैं। जो परलोक में स्वर्ग और इस लोक में धन जनादि के साधक कर्म के सिवाय और कोई ईश्वरतत्व नहीं मानते हैं; जिनके मन स्वर्ग की लालसा आदि अनेक प्रकार की कामनाओं से भरे हुए हैं और जो पुष्पयुक्त विषलता की समान केवल देखने ही में सुन्दर—भोग ऐश्वर्य की प्राप्ति के साधनभूत यज्ञादि क्रिया के विषय की चर्चा ही में सदा लगे रहते हैं; जिन का मन भोग ऐश्वर्य आदि में फँसाने वाले और केवल कर्मकाण्ड की प्रशंसा करने वाले सुन्दर वाक्यों ने हर लिया है; उन मूढ़ पुरुषों की निश्चयात्मक बुद्धि, ईश्वरतत्व की ओर कभी नहीं दौड़ती ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

हे अर्जुन ! वेद के बहुत से अंश सकाम व्यक्तियों के कर्म-फल प्रतिपादक हैं; किन्तु तुम निष्काम हो। सुख दुःख, शीतोष्णादि को सहो, सर्वदा सत्वगुण का आश्रय ग्रहण करो, अलब्ध वस्तु का लाभ और लब्ध वस्तु की रक्षा से निवृत्त और प्रमादरहित हो ॥ ४५ ॥

जिस प्रकार थोड़े जल वाले जलाशयों से स्नान पानादि कार्य होते हैं, उसी प्रकार बड़े लंबे चौड़े और गहरे जलाशयों से भी उतने ही स्नान पानादि के कार्य होते हैं। वेद-विहित सकाम कर्मों के करने पर स्वर्गादिफल रूप जो आनन्द मिलता है—वह ही आनन्द ब्रह्मज्ञानी को मिलता है ॥ ४६ ॥

तुम तत्वज्ञान जानना चाहते हो; अतएव तुम कर्म में लगो; किन्तु संसार के बन्धन के हेतु की चिन्ता मत करो। अर्थात् फल प्राप्ति के लिये तुम्हारी प्रवृत्ति कर्म की ओर नहीं होनी चाहिये या कर्म करने के तुम अधिकारी हो, किन्तु कर्मफल की प्राप्ति में तुम्हारा अधिकार नहीं है ॥ ४७ ॥

हे धनञ्जय ! योगस्थ हो कर, अर्थात् एक परमात्मा ही में तत्पर हो कर और " मैं अमुक कार्य्य करता हूँ " इस अभिमान को त्याग कर, एवं कार्य की सिद्धि अथवा असिद्धि में सुख अथवा दुःख न मान कर निष्काम भाव से कर्मानुष्ठान कर के जो चित्त की समता प्राप्त होती है, उसका नाम योग है ॥ ४८ ॥

हे धनञ्जय ! सकाम कर्म, निष्काम कर्म से अत्यन्त निकृष्ट है। इसलिये तुम आत्म-ज्ञान के लिये निष्काम कर्म करने की इच्छा करो। जो पुरुष किसी फल की इच्छा से कर्मानुष्ठान करते हैं, वे नीच हैं ॥ ४९ ॥

निष्काम कर्म करने वाले पुरुष इस लोक ही में पाप और पुण्य को त्याग देते हैं। इस लिये तुम निष्काम भाव से युद्ध करने में प्रवृत्त हो। क्योंकि निष्काम भाव से कर्म में प्रवृत्त होना ही योग कहलाता है ॥ ५० ॥

निष्काम कर्म करने वाले पण्डित कर्म द्वारा उत्पन्न होने वाले फल को त्याग कर, आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होते हैं और जन्म रूपी बन्धन से छूट कर, सब प्रकार के उपद्रवों से रहित मोक्ष नामक परमपद को प्राप्त होते हैं ॥ ५१ ॥

जिस समय तुम्हारा अन्तःकरण अविवेक रूपी मलिनता को त्याग देगा, उस समय तुम्हारी बुद्धि सुने हुए और सुनने योग्य कर्मफल से विरक्त हो जायगी या हट जायगी ॥ ५२ ॥

अनेक प्रकार के लौकिक और वैदिक विषयों के श्रवण से चलायमान तुम्हारी बुद्धि, जिस समय परमात्मा में निश्चल हो जायगी, उस समय तुम्हें तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होगी ॥ ५३ ॥

इतना सुन कर अर्जुन बोले—हे केशव ! योगस्थित, स्थिरबुद्धि (स्थिरप्रज्ञ) पुरुष का क्या लक्षण है ? ऐसा मनुष्य किस प्रकार की बात-चीत करता है ? किस प्रकार रहता है ? और किस प्रकार चलता है ? ॥५४॥

इस पर भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—जिस समय योगी पुरुष अपने चित्त में भरी हुई सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर, परमानन्द रूप आत्मा ही से अपने को प्रसन्न रखता है, उस समय वह स्थिरप्रज्ञ कहलाता है ॥ ५५ ॥

जिसका चित्त दुःख को प्राप्त हो कर, चलायमान नहीं होता, जो विषयसुख की इच्छा से रहित है और जो राग, भय एवं क्रोध से छूट गया है, वह पुरुष ही स्थिरबुद्धि अर्थात् स्थिरप्रज्ञ है ॥ ५६ ॥

जिनका देहादि सम्पूर्ण पदार्थों में स्नेह नहीं है, जो प्रिय और अप्रिय वस्तु को प्राप्त हो कर, आनन्द तथा खेद नहीं मानते हैं उन ही की बुद्धि अथवा प्रज्ञा स्थिर है अर्थात् ऐसे ही लोग तत्त्वज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ॥ ५७ ॥

कछुआ जिस प्रकार अपने सिर चरण आदि अङ्गों को समेट लेता है, उसी प्रकार जिस समय महात्मा पुरुष अपनी इन्द्रियों को शब्दादि विषयों से हटा लेते हैं, उस समय उनकी प्रज्ञा स्थिर होती है ॥ ५८ ॥

जो पुरुष रोग दारिद्र्य आदि कारणों से जब शब्दादि भोगों को प्राप्त नहीं होते, तब उन देहाभिमानी पुरुषों की इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं ; किन्तु उनकी विषय-लालसा दूर नहीं होती। किन्तु परब्रह्म का साक्षात्कार होने के कारण, स्थिरप्रज्ञ पुरुष की वासनाएँ स्वयं दूर हो जाती हैं ॥ ५९ ॥

हे कुन्तीपुत्र ! यह बलवान् इन्द्रियों का समूह अत्यन्त यत्न करने वाले विवेकी पुरुषों के मन को भी अपने बल से चलायमान कर देता है ॥ ६० ॥

मेरे अनन्य भक्तों को उचित है कि, वे यत्न पूर्वक सम्पूर्ण इन्द्रियों को रोक कर, अपने चित्त को स्वाधीन करें ; जिसकी सम्पूर्ण इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं, उसी की प्रज्ञा स्थित होती है ॥ ६१ ॥

सदा मन में विषयों को सोचते सोचते उन विषयों में वह मनुष्य आसक्त हो जाता है, फिर उस आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है, कामना से (यदि उस कामना के पूर्ण होने में किसी प्रकार की बाधा पड़ी तो) क्रोध उत्पन्न होता है ॥ ६२ ॥

क्रोध से सम्मोह (हित अनहित के विचार का न होना) ; सम्मोह से स्मृति-विभ्रम (अर्थात् सत्पुरुषों के सदोपदेश का भूल जाना) ; स्मृति-विभ्रम से बुद्धि का नाश और बुद्धि-नाश से मनुष्य स्वयं अपना सर्वनाश कर लेता है ॥ ६३ ॥

जिन लोगों ने मन को अपने वश में कर लिया है, वह रागद्वेष रहित स्वाधीनचेता पुरुष इन्द्रियों द्वारा विषयभोग में लिप्त रह कर भी, आत्म-प्रसाद रूप शान्ति को प्राप्त होता है ॥ ६४ ॥

इस प्रकार शान्ति के प्राप्त होने पर, उस पुरुष के सम्पूर्ण दुःखों का नाश हो जाता है और उस शुद्ध-चित्त पुरुष की बुद्धि शीघ्र ब्रह्म में लग जाती है ॥ ६५ ॥

जो पुरुष अपने चित्त को अपने वश में नहीं कर सकता, उसको न तो ब्रह्म की प्राप्ति होती है और न उसका मन ही आत्मज्ञान में लगता है । आत्म-ज्ञान-रहित पुरुष को शान्ति भी नहीं प्राप्त होती और जिसको शान्ति प्राप्त नहीं होती, उसको मोक्षसुख कहाँ ? ॥ ६६ ॥

विषयभोग में लिप्त इन्द्रियों में जिस समय एक इन्द्रिय की ओर भी मन दौड़ता है ; उस समय मार्गविस्मृत मल्लाह की नाव को जैसे प्रतिकूल

पवन जल में डुबो देता है, उसी प्रकार वह एक इन्द्रिय ही उस साधक की बुद्धि को हर लेती है अथवा उसे विषयभोग में डुबो देती है ॥ ६७ ॥

अतएव हे महाबाहो ! जिसकी इन्द्रियाँ अपने अपने विषयों से हट गयी हैं, उसी की प्रज्ञा स्थित है अर्थात् उसी को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो सकता है ॥ ६८ ॥

आत्म-साक्षात्कार की बुद्धि अज्ञानी पुरुषों के लिये रात्रिस्वरूप है, ऐसी रात्रि में इन्द्रियों को वश में रखने वाला ही जागृत रहता है और जिस अविद्या रूपी रात्रि में अज्ञानी पुरुष जागता है, वह अविद्या आत्मज्ञानी स्थिरप्रज्ञ पुरुष के लिये रात्रि स्वरूप है ॥ ६९ ॥

जिस प्रकार अनेक नदियों के जल से परिपूर्ण अचलमर्य्याद समुद्र में वर्षा के जल की धारा भी आ कर प्रवेश कर जाती है, उसी प्रकार सम्पूर्ण शब्दादि विषय स्थिरप्रज्ञ मुनि में प्रवेश करते हैं, परन्तु उनसे वह महात्मा किसी समय भी चलायमान नहीं होता है; किन्तु शान्ति ही को प्राप्त होता है। विषयों की कामना करने वाले पुरुष को यह शान्ति दुर्लभ है ॥ ७० ॥

जो मनुष्य कामनाओं को त्याग कर तथा स्पृहा ममता और अहंकार रहित होकर संसार में चिरकाल लों विचरता है—वही स्थिरप्रज्ञ पुरुष शान्ति पाता है ॥ ७१ ॥

हे पार्थ ! यही ब्रह्मज्ञान की निष्ठा है। इस निष्ठा को प्राप्त करने वाला पुरुष संसार की माया में नहीं फँसता। यदि मरते समय मनुष्य क्षण भर को भी इस निष्ठा में स्थित हो जाय, तो निस्सन्देह वह पुरुष ब्रह्म में लय हो जाता है ॥ ७२ ॥

सत्ताइसवाँ अध्याय

कर्मयोग

अर्जुन ने कहा—हे जनार्दन ! यदि आपकी समझ में निष्काम धर्म

की अपेक्षा ज्ञान ही श्रेष्ठ है, तो हे केशव ! आप इस महाघोर हिंसात्मक युद्धरूपी कर्म में मुझे क्यों प्रवृत्त करने का उद्योग करते हैं ? ॥ १ ॥

कभी ज्ञान और कभी कर्म की श्रेष्ठता को सुना कर, आपने मुझे उलझन में डाल रखा है। हे भगवन् ! जिससे मेरा कल्याण हो ऐसी एक बात को विचार कर मुझे बतलाइये ॥ २ ॥

इस पर श्रीकृष्ण ने कहा—हे अनघ ! (पाप रहित) इस लोक में दो प्रकार की ब्रह्मनिष्ठा है—यह मैं तुम्हें बतला चुका हूँ। अर्थात् ज्ञानी के लिये ज्ञानयोग और चित्त की शुद्धि के लिये निष्काम कर्म करने की इच्छा करने वाले योगियों के लिये कर्मयोग है ॥ ३ ॥

निष्काम कर्म्मों का अनुष्ठान बिना किये ज्ञान (निष्क्रियभाव) की उत्पत्ति नहीं होती है। निष्काम कर्म के द्वारा चित्त को शुद्ध किये बिना अकेले संन्यास से सिद्धि अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति भी कदापि नहीं हो सकती ॥ ४ ॥

कोई भी मनुष्य क्यों न हो, बिना कर्म किये एक क्षण भी नहीं ठहर सकता, क्योंकि प्रकृति के सत्त्वादि गुणों के वशीभूत हो कर, सभी को कर्मों के करने में प्रवृत्त होना पड़ता है ॥ ५ ॥

जो मूढ़ पुरुष वाणी आदि कर्म्मेन्द्रियों को रोक कर मन ही में शब्द रसादि विषयों का स्मरण करता है, वह झूँठा आडम्बर करने वाला कपटी कहलाता है ॥ ६ ॥

हे अर्जुन ! जो पुरुष मन और ज्ञानेन्द्रियों को रोक कर, फल की इच्छा रहित चित्त से कर्मेन्द्रियों के द्वारा कर्म करने में प्रवृत्त होता है, वह अशुद्ध-चित्त संन्यासी की अपेक्षा बहुत श्रेष्ठ है। क्योंकि बाहर का कर्म, पुरुषों को बन्धन में नहीं डालता है ; किन्तु मन का बर्ताव ही जीव के सुख दुःख और बन्धन का कारण है। इसलिये जिसने यत्न कर के मन को कर्म से हटा लिया है, वही महान् है ॥ ७ ॥

अतः तुम निष्काम हो कर, नित्य नैमित्तिक कर्म करो, क्योंकि कर्म न

करने की अपेक्षा कर्म करना ही श्रेष्ठ है। क्योंकि यदि तुम कर्म करना ही छोड़ दोगे; तो तुम अपनी देह की भी रक्षा न कर सकोगे अर्थात् तुम्हारा शरीर नष्ट हो जायगा ॥ ८ ॥

मनुष्य भगवान् की आराधना के लिये कर्म न कर के, अन्य कामनाओं से कर्म करते हुए बन्धन में पड़ते हैं। परन्तु हे कौन्तेय! तुम फल की इच्छा को छोड़ कर, भगवान् की आराधना के लिये कर्म करो ॥ ९ ॥

सृष्टि रचना के प्रारम्भ में प्रजापति ने यज्ञ के अधिकारी जीवों को रच कर यह ही कहा है कि इस यज्ञ के द्वारा तुम्हारी वृद्धि होगी। यह यज्ञ ही तुम्हारे मनोवाञ्छित फल को देगा ॥ १० ॥

हे प्रजावर्ग! यज्ञादि कर्म कर के तुम देवताओं को प्रसन्न करो। देवता भी तुम्हें तुम्हारे मनोवाञ्छित फल दे कर तुम्हें प्रसन्न करें। इस प्रकार परस्पर की प्रसन्नता से तुम्हारा कल्याण होगा ॥ ११ ॥

यज्ञ से सन्तुष्ट हो कर देवता तुम्हें मनोवाञ्छित भोग देंगे। देवताओं के दिये हुए भोगों को पा कर, जो पुरुष देवताओं को बिना दिये अपने आप ही भोगता है, वह निस्सन्देह चोर है। जो यज्ञ से बचे हुए अन्न को भोजन करते हैं, वे सब पापों से छूट जाते हैं और जो पापी केवल अपना पेट भरने के लिये ही अन्न राँधते हैं, वे पाप के भागी होते हैं। अतः गृहस्थों को पञ्चयज्ञ* अवश्य करने चाहिये। ऐसा करने से उनके पञ्चसूना पाप† नष्ट होते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

अन्न से शरीर उत्पन्न होता है, अन्न मेघ की जलवर्षा से उत्पन्न होता है, और मेघ यज्ञकर्म से उत्पन्न होते हैं ॥ १४ ॥

---

* पञ्चयज्ञ—१ ऋषियज्ञ, (वेदपाठ सन्ध्योपासनादि), २ देवयज्ञ (अग्निहोत्रादि) ३ भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेव) ४ नृयज्ञ (अन्नादि से अतिथि का सत्कार करना) ५ पितृयज्ञ (श्राद्ध तर्पण आदि।)

†१ ओखली, २ चक्की, ३ चूल्हा, ४ पनहपड़ी और बुहारी के घिसने से जो प्रतिदिन जीवहिंसा होती है—इन्हींको पञ्चसूना-पाप कहते हैं।

अग्निहोत्रादि सब कर्म वेद से उत्पन्न हुए हैं और वेद ब्रह्म से उत्पन्न हुआ है, इस कारण सर्वव्यापी, अविनाशी, परब्रह्म, धर्मरूपी यज्ञ में सदा ही विराजमान रहते हैं ॥ १५ ॥

हे अर्जुन ! जो पुरुष मनुष्यदेह धारण कर के, इस चलते हुए कर्मचक्र के अनुसार नहीं चलता है, उस इन्द्रियों में फँसे हुए पाप-युक्त पुरुष का जीवन वृथा है ॥ १६ ॥

आत्मा ही में जिनका प्रेम है, जो आत्मा ही में तृप्त रहते हैं और जो अन्य भोगों की कामना को त्याग कर आत्मा ही में सन्तुष्ट रहते हैं, उनको कर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं है ॥ १७ ॥

इस लोक में ज्ञानी पुरुष को कर्म करने पर पुण्य और कर्म न करने से कोई पाप नहीं होता, क्योंकि अविद्याजनित मोह छूट जाने के कारण देव मनुष्यादि सम्पूर्ण प्राणियों में मोक्ष के लिये उसको किसी का शरण लेने की आवश्यकता नहीं है ॥ १८ ॥

इसलिये फल की इच्छा को त्याग कर, कर्म करना चाहिये फल की इच्छा को त्याग कर कर्म करने से मुक्ति मिलती है। इस लिये हे अर्जुन ! तुम निष्काम भाव से कर्म करो ॥ १९ ॥

जनक आदि महात्माओं ने निष्काम कर्म कर के ही ज्ञान पाया, अतः तुम भी उनकी तरह संसार को स्वधर्म में प्रवृत्त करने की ओर दृष्टि रख कर निष्काम कर्म करो ॥ २० ॥

क्योंकि श्रेष्ठ पुरुष जिस प्रकार आचरण करते हैं, साधारण पुरुष उन्हींका अनुकरण करते हैं। श्रेष्ठ पुरुष जिसको ठीक (प्रामाणिक) मानते हैं, साधारण जन भी उसी के अनुसार वर्त्ताव करते हैं ॥ २१ ॥

हे पार्थ ! त्रैलोक्य में ऐसा कोई कर्म नहीं, जो मुझे कर्त्तव्य हो। क्योंकि ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो मेरे पास न हो या जो मुझे न मिल सकती हो ; तिस पर भी मैं कर्म करता हूँ ॥ २२ ॥

यदि आलस्य को छोड़ कर मैं शुभकर्म करने में प्रवृत्त न होऊँ; तो सब जन मेरा अनुकरण कर, कर्म को त्याग दें ॥ २३ ॥

यदि मैं कर्म न करूँ तो समस्त प्राणी धर्मलोप हो जाने के कारण भ्रष्ट हो जायँ। ऐसा होने पर सारी प्रजा वर्णसङ्कर हो कर, सब प्राणी नष्ट हो जायँ और इन सब बुराइयों का कारण मैं होऊँ ॥ २४ ॥

हे भारत! अज्ञानी पुरुष, जिस प्रकार आसक्त हो कर, कर्म को करते हैं, संसार को शिक्षा देने की इच्छा करता हुआ, विद्वान् पुरुष भी उसी प्रकार चित्त से आसक्ति को त्याग कर कर्म का अनुष्ठान करे ॥ २५ ॥

विद्वान् पुरुष कर्म करने में तत्पर अज्ञानी जनों की बुद्धि में कदापि भेद या अन्तर न डाले, किन्तु अपने आप भी शुभकर्म का अनुष्ठान कर के उनको कर्ममार्ग में स्थिर रखे ॥ २६ ॥

सम्पूर्ण कर्म प्रकृति, गुण अर्थात् बुद्धि इन्द्रियादि द्वारा हुआ करते हैं; परन्तु अहङ्कार के कारण, इन्द्रियादिकों में आत्मबुद्धि रखने वाला मूढ़बुद्धि पुरुष "मैं ही कर्म करता हूँ"—ऐसा मानता है ॥ २७ ॥

परन्तु हे महाबाहो! आत्मा, गुण एवं कर्म से भिन्न है, ऐसे तत्व को जानने वाला विद्वान् पुरुष, कर्त्ता होने का अभिमान यह जान कर छोड़ देता है कि, रूपरसादि कार्य प्रकृति से बुद्धि इन्द्रियादि गुण द्वारा होते हैं। आत्मा तो असङ्ग है ॥ २८ ॥

जो अज्ञानी पुरुष, प्रकृति के सत्त्वादि गुणों से मोहित हो कर इन्द्रिय और इन्द्रियों के भोगने योग्य विषयों में आसक्त हो गये हैं, आत्मज्ञानी विद्वान् पुरुष, कर्म से उनकी श्रद्धा न हटावें ॥ २९ ॥

अतः तुम सम्पूर्ण कर्मों को भगवान् को अर्पण कर और कामना, ममता और शोक को त्याग कर, युद्ध करो ॥ ३० ॥

जो मनुष्य श्रद्धायुक्त हो कर और दोषदृष्टि को त्याग कर मेरे इस मत के अनुसार नित्य वर्ताव करते हैं, वे कर्मजाल से छूट जाते हैं ॥ ३१ ॥

और जो पुरुष दोषदृष्टि से इस मेरे कहने के अनुसार वर्त्ताव नहीं

करते, उन अविवेकियों को सब प्रकार के ज्ञान से शून्य और नष्ट हुआ समझो ॥ ३२ ॥

ज्ञानी पुरुष भी अपनी प्रकृति के अनुसार कार्य करते हैं। जब सब ही प्राणी अपनी प्रकृति के वश में हैं, तब फिर उनको मेरी शिक्षा क्या कर सकती है और वे इन्द्रियों का दमन ही क्या कर सकते हैं? क्योंकि स्वभाव ही बलवान् है ॥ ३३ ॥

सब इन्द्रियों का अनुकूल विषय में राग और प्रतिकूल विषय से द्वेष अवश्य होता है; किन्तु ये राग एवं द्वेष जीव के परमशत्रु हैं। इससे इनके वश में कदापि नहीं होना चाहिये ॥ ३४ ॥

यदि अपना धर्म पूरा पूरा न कर के थोड़ा बहुत ही कर सके, वह भी दूसरे धर्म के करने से श्रेष्ठ है। क्योंकि परधर्म परमभयदायक है। अपने धर्म की रक्षा करते समय यदि मर भी जाना पड़े, तो भी कल्याणकारी ही है ॥ ३५ ॥

यह सुन कर, अर्जुन ने कहा—हे वार्ष्णेय! अर्थात् श्रीकृष्ण; यह तो बतलाइये कि, पुरुष पापकर्म करने की इच्छा नहीं करता, तो भी बलपूर्वक उसे पापकर्म करने की कौन प्रेरणा करता है? ॥ ३६ ॥

श्रीकृष्ण जी ने कहा—हे अर्जुन! काम (इच्छा) और क्रोध रजोगुण से उत्पन्न होते हैं। मनुष्य की कामना कभी पूरी नहीं होती; बल्कि यह महा-पाप-रूप हैं और जब कामना में किसी प्रकार की बाधा पड़ती है, तब क्रोध उत्पन्न होता है। अतः कर्म करने वाले के लिये कामना घोर शत्रु है, क्योंकि यही उसे पापकर्म में लगाती है ॥ ३७ ॥

जैसे धुएं से अग्नि, मैल से दर्पण और गर्भ की झिल्ली से गर्भजात बालक ढका रहता है; वैसे ही कामना से ज्ञान ढक जाता है ॥ ३८ ॥

हे कौन्तेय! ज्ञानी के सदा के शत्रु और कदापि पूर्ण न होने वाले अग्नि तुल्य काम से ज्ञान ढका रहता है ॥ ३९ ॥

इन्द्रिय, मन और बुद्धि कामना के रहने के स्थान कहे जाते हैं। इन

ही के द्वारा काम ज्ञान को ढक कर, देहाभिमानी जीव को मोह में फँसा लेता है ॥ ४० ॥

अतः हे अर्जुन ! प्रथम सब इन्द्रियों को वश में कर के, सब पापों के मूलभूत और ज्ञान विज्ञान के नाश करने वाले काम (कामना) का नाश करे ॥ ४१ ॥

स्थूल शरीर से इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं ; इन्द्रियों से मन ; मन से बुद्धि श्रेष्ठ है और बुद्धि से भी जो श्रेष्ठ है—वही आत्मा है ॥ ४२ ॥

हे अर्जुन ! तुम इस प्रकार आत्मा को जान कर और निश्चय रूपी बुद्धि से मन को स्थिर कर, इस तृष्णा रूपी दुर्जय परम शत्रु कामना को नष्ट करो ॥ ४३ ॥

[नोट—यह इसलिये कि, पुरुष को पापकर्म करने की इच्छा न रहते हुए भी—कामना ही बलपूर्वक उसे पापकर्म करने की प्रेरणा करती है ।]

अट्ठाइसवाँ अध्याय

ज्ञान योग

भगवान् श्रीकृष्ण जी कहने लगे—हे अर्जुन ! यह कभी नष्ट न होने वाला योग अथवा उपदेश ; जो मैंने अभी तुम्हें बतलाया है, उसे पहले मैंने सूर्य्य को बतलाया था । सूर्य्य ने अपने पुत्र मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु को बतलाया था ॥ १ ॥

हे अर्जुन ! इस उपदेश का प्रचार परम्परा की रीति से निमि आदि राजर्षियों तक रहा ; किन्तु काल की गति से पीछे यह नष्ट हो गया ॥ २ ॥

यह योग अथवा उपदेश नया नहीं है ; किन्तु अनादि काल (सदैव) का है । तुम मेरे मित्र और भक्त हो और यह ज्ञानोपदेश परम उत्तम है, इसीसे मैंने तुम्हें बतलाया है ॥ ३ ॥

यह सुन कर अर्जुन ने पूँछा—हे भगवन् ! सूर्य का जन्म तो आपके

जन्म से बहुत पहले हुआ था, फिर मुझे कैसे विश्वास हो कि, सृष्टि की आदि में यह उपदेश आपने सूर्य्य को दिया था ॥ ४ ॥

इसके उत्तर में श्रीकृष्ण ने कहा—हे अर्जुन ! हमारे और तुम्हारे, इस जन्म के पहले, हजारों जन्म हो चुके हैं ; किन्तु मुझे उनकी याद है, तुम्हें नहीं है ॥ ५ ॥

मैं जन्म एवं मरण रहित हो कर भी अपनी प्रकृति में स्थित हो कर, अपनी माया के बल से जन्म धारण करता हूँ ॥ ६ ॥

हे अर्जुन ! जिस समय संसार में धर्म की घटती और अधर्म की बढ़ती होती है, तब ही मैं इस धराधाम पर आता हूँ ॥ ७ ॥

साधुओं की रक्षा और दुष्टों का नाश तथा धर्म को स्थिर करने के निमित्त ही मैं युग युग में अवतार धारण करता हूँ ॥ ८ ॥

हे अर्जुन ! जो मेरे इस दिव्य जन्म और कर्म के वृत्तान्त को जानता है, वह मरण के अनन्तर फिर जन्म नहीं लेता है और वह मेरे पास आता है ॥ ९ ॥

विषय-वासना, भय एवं क्रोध को छोड़ कर और एकाग्रचित्त हो कर, मेरी ओर मन लगाने वाले और मेरे शरण में आये हुए बहुत से प्राणी ज्ञान एवं तप से पवित्र हो कर, मेरे पास आ चुके हैं ॥ १० ॥

हे अर्जुन ! लोग जिस भाव से मुझे भजते हैं, मैं उनको उनकी भावना के अनुसार ही फल देता हूँ, क्योंकि सम्पूर्ण कर्माधिकारी पुरुष, चाहें जिस भाव से मेरा आराधन करें, वे सब मेरे ही प्रसन्न करने का कारण हैं ॥ ११ ॥

इस लोक में कर्म का फल बहुत शीघ्र मिलता है, इसीसे सकाम पुरुष इन्द्रादि देवताओं का पूजन किया करते हैं ॥ १२ ॥

गुण और कर्मों के तारतम्य के अनुसार मैंने चार वर्णों की रचना की है। तो भी मैं अविनाशी अकर्त्ता ही हूँ ॥ १३ ॥

न तो कर्म मुझे छू सकते हैं और न कर्मफल प्राप्त करने की मुझे

वासना है। जो मेरे स्वरूप को इस प्रकार का समझता है, वह कर्म के बन्धन में नहीं फँसता ॥ १४ ॥

आत्मा को इस प्रकार कर्मों का न करने वाला और कर्मफल को न भोगने वाला जान कर, पुराने समय के ज्ञानी जनकादि ने भी कर्म किये—अतः उन्हींका अनुकरण कर, हे अर्जुन! तुम भी निष्काम कर्म करो ॥ १५ ॥

कौन सा कर्म करने योग्य है? कौन सा कर्म करने योग्य नहीं? इस बात का निर्णय करने में बड़े बड़े बुद्धिमान् जन भी चक्कर में पड़ जाते हैं। अतः मैं करने एवं अनकरने कर्मों का वर्णन करता हूँ। उनको जान कर तुम संसार के बन्धन से छूट जाओगे ॥ १६ ॥

कर्म तीन प्रकार के हैं १ विहित कर्म (करने योग्य कर्म), २ निषिद्ध कर्म (बुरे कर्म) और ३ अकर्म। इन तीन प्रकार के कर्मों का तत्व जानना आवश्यक है। क्योंकि इनका रहस्य बड़ा दुर्ज्ञेय है ॥ १७ ॥

जो कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखते हैं वे ही मनुष्यों में बुद्धिमान्, वे ही योगी और वे ही सब कर्मों के करने वाले हैं ॥ १८ ॥

जिनके सम्पूर्ण कर्म, कामना के सङ्कल्प से रहित और ज्ञानरूपी अग्नि के द्वारा भस्म हो गये हैं, ज्ञानी पुरुष उनको ही पण्डित कहते हैं ॥ १९ ॥

जो कर्म और फल में आसक्ति को त्याग कर, सदा तृप्तचित्त और निराश्रय रहता है, वह कर्म करता हुआ भी कुछ नहीं करता ॥ २० ॥

जो अपने आप मिले हुए पदार्थ से सन्तुष्ट हो जाता है; जो सुख और दुःख दोनों को सह लेता है; जो मत्सरता-रहित है और हानि एवं लाभ को समान समझ कर, दुःखी अथवा सुखी नहीं होता; वह यदि केवल अपने शरीर के निर्वाहार्थ ही कर्म करे, तो भी वह पाप का भागी नहीं होता अर्थात् कर्म के बन्धन रूपी अच्छे बुरे फल पाने का भागी नहीं होता ॥ २१ ॥

जो कामना-रहित है, जो कर्त्तापन तथा भोक्तृपन के अभिमान से रहित है, और जिसका मन ब्रह्म स्वरूप में निश्चल भाव से लगा हुआ (स्थित)

है ; वह यदि यज्ञादि कर्मों को करे भी, तो भी उसका सम्पूर्ण कर्म, फल सहित नष्ट हो जाता है ॥ २२ ॥

समर्पण (आहुति) ब्रह्म है। ब्रह्मरूपी अग्नि में ब्रह्मरूपी होता के द्वारा होने वाला हवन भी ब्रह्म ही है और यज्ञादि करने से जो स्वर्गादि प्राप्त होता है सो भी ब्रह्म ही है—इस प्रकार कर्म में जिसकी ब्रह्मबुद्धि है, वह ब्रह्म ही को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

कितने ही कर्मानुष्ठान करने वाले योगी दैव-यज्ञ अर्थात् इन्द्रादि देवताओं के निमित्त यज्ञादि कर्म करते हैं और कितने ही ब्रह्म और आत्मा को एक रूप में देखने वाले ज्ञानी योगी ब्रह्मरूपी अग्नि में (अपनी) आहुति देते हैं। अर्थात् परब्रह्म में समाधि-द्वारा, जीवात्मा के लय रूप यज्ञ को करते हैं ॥ २४ ॥

कितने ही पुरुष श्रोत्रादि इन्द्रियों को संयम रूपी अग्नि में और कितने ही पुरुष शब्दादि विषयों को श्रोत्रादि इन्द्रिय रूपी अग्नि में आहुति देते हैं। अर्थात् इन्द्रियों को अपने वश में करना भी एक प्रकार का यज्ञ है ॥ २५ ॥

कोई ऐसे भी योगी होते हैं जो इन्द्रियों के कर्म तथा प्राणादि के कर्मों को ज्ञान से प्रज्वलित होती हुई आत्म-संयम-योग रूपी आग में हवन करते हैं ॥ २६ ॥

कोई कोई पुरुष द्रव्ययज्ञ (दान-रूपी-यज्ञ), कोई तपोरूपी यज्ञ, कोई योग (अर्थात् मन की वृत्ति को रोकना) यज्ञ, कोई वेदपाठ रूपी यज्ञ, कोई ज्ञानरूपी यज्ञ और कोई यत्नशील पुरुष दृढ़व्रत रूपी यज्ञ करते हैं ॥ २७ ॥

कोई ऐसे भी योगी हैं जो अपान वायु में प्राण की आहुति देते हैं, प्राणवायु में अपान की आहुति देते हैं और कोई कोई नियमित भोजन करने वाले योगी प्राण और अपान की गति को रोक कर, निरन्तर प्राणायाम करते हुए, प्राण में ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की आहुति देते हैं ॥२८॥

ये सब यज्ञ करने वाले पुरुष, यज्ञों के द्वारा निष्पाप हो कर, यज्ञ से

बचे हुए, अमृत तुल्य अन्न का भोजन करते हुए, सनातन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं ॥ २६ ॥

हे अर्जुन ! इस प्रकार यज्ञ न करने वाले, मनुष्य को यह मनुष्य-लोक भी प्राप्त नहीं होता है, फिर स्वर्गादि प्राप्ति की बात ही निराली है ॥ ३० ॥

इस प्रकार बहुत से यज्ञ वेद में वर्णन किये गये हैं। तुम, उन सब यज्ञों को कायिक, वाचिक, मानसिक कर्मों से उत्पन्न होने वाले और निष्क्रिय आत्मा से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है—ऐसा जान कर, संसार से मुक्त हो जाओगे ॥ ३१ ॥

हे कौन्तेय ! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है ; क्योंकि हे पार्थ ! सम्पूर्ण कर्मों की आत्मज्ञान में समाप्ति होती है ॥ ३२ ॥

ब्रह्मज्ञानी गुरु के चरणों में दण्डवत प्रणाम कर के प्रश्न और सेवा करते हुए, आत्मज्ञान को शिक्षा ले, ऐसे वर्त्ताव से ज्ञानवान् तत्त्वदर्शी गुरु शिष्य को ज्ञान का उपदेश करते हैं ॥ ३३ ॥

हे पाण्डव ! उस ज्ञान को प्राप्त हो कर, तुम फिर ऐसे मोह में नहीं पड़ोगे और उस ज्ञान से सब प्राणियों को अपने आत्मा और मुझ परमात्मा के साथ अभेद रूप से देखोगे ॥ ३४ ॥

यदि तुम और सब पापियों से अधिकतर पापाचरण करने वाले हो, तो भी उस पाप रूप समुद्र को ज्ञानरूपी नौका के द्वारा सहज ही में पार कर जाओगे ॥ ३५ ॥

हे अर्जुन ! जैसे प्रज्वलित अग्नि लकड़ी के ढेर को भस्म कर डालता है, वैसे ही ज्ञान रूपी अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्म कर देता है ॥ ३६ ॥

इस लोक में ज्ञान के समान पवित्र कोई वस्तु नहीं है, उस ज्ञान को योग-सिद्ध-पुरुष अर्थात् कर्मयोग से जिसका अन्तःकरण शुद्ध हो गया है, समय पा कर स्वयं ही पा लेता है ॥ ३७ ॥

जो श्रद्धावान्, गुरु की सेवा सुश्रूषा करने में तत्पर और जितेन्द्रिय है, वह ही आत्मज्ञान को प्राप्त कर के, शीघ्र ही मोक्ष पाता है ॥ ३८ ॥

अज्ञानी, श्रद्धाहीन और संशय युक्त पुरुष नष्ट हो जाता है। जो संशयात्मा है अर्थात् बात बात में सन्देह करता है; उसे इस लोक तथा परलोक में—कहीं भी सुख नहीं मिलता ॥ ३९ ॥

हे अर्जुन! समता बुद्धि रूपी योग से जिन लोगों ने सम्पूर्ण कर्म भगवान् को समर्पण कर दिये हैं और आत्मज्ञान के द्वारा, जिनके सम्पूर्ण संशय नष्ट हो गये हैं; कर्म, उस आत्मज्ञानी को संसारबन्धन में नहीं डाल सकते ॥४०॥

अतएव हे अर्जुन! ज्ञान रूपी खड्ग से हृदय में स्थित और अज्ञान से उत्पन्न होने वाले सब संशयों को काट कर, कर्मयोग का आश्रय ग्रहण कर के, तुम युद्ध करने के लिये खड़े हो जाओ ॥ ४१ ॥

उनतीसवाँ अध्याय

कर्मसंन्यास

इसके बाद अर्जुन ने कहा—हे कृष्ण! आपने कर्मयोग (कामों को करना) और कर्मसंन्यास (कामों को छोड़ना) इन दो का वर्णन किया, परन्तु मेरे लिये इन दोनों में जो कल्याण-कारक हो, निश्चय कर के, उसे ही मुझे बतलाइये ॥ १ ॥

यह सुन कर, श्रीकृष्ण बोले—अर्जुन! संन्यास और कर्मयोग—दोनों ही मुक्ति देने वाले हैं; किन्तु इन दोनों में कर्मसंन्यास से कर्मयोग श्रेष्ठ है ॥ २ ॥

हे अर्जुन! जो न तो किसी से द्वेष रखता है और न जिसे किसी वस्तु की आकांक्षा है—वही सच्चा और पूरा संन्यासी है। ऐसा पुरुष अनायास, अथवा सहज में संसार के बन्धनों से छूट जाता है ॥ ३ ॥

हे अर्जुन! जो पण्डित हैं, वे अज्ञानियों की तरह कर्मसंन्यास और कर्मयोग को अलग अलग नहीं समझते। वे दोनों को समान जानते हैं। क्योंकि दोनों का फल एक समान ही है। जो इन दोनों में से एक का भी आचरण करता है, वह दोनों का फल पाता है ॥ ४ ॥

ज्ञानवान् संन्यासी जिस पद को पहुँच सकते हैं, उसीको कर्मयोगी भी पा सकता है, संन्यास और कर्मयोग को एक समान समझने वाले ही यथार्थ दर्शी हैं ॥ ५ ॥

हे अर्जुन ! कर्मयोग के विना संन्यास लेना, परम दुःखदायी है; किन्तु कर्मयोगी बन कर मनुष्य सिद्ध हो जाता है और शीघ्र ही ब्रह्म का दर्शन भी पाता है ॥ ६ ॥

जो योगनिष्ठ, शुद्धचित्त और जितेन्द्रिय है, तथा जो सब प्राणियों के आत्मा में अपने आत्मा के समान बुद्धि रखता है, वह कर्म करने पर भी उसमें लिप्त नहीं होता ।' ७ ॥

तत्त्वज्ञानी कर्मयोगी कोई भी कार्य क्यों न हो, उसका करने वाला वह स्वयं अपने को नहीं समझता । वह समझता है कि देखना, सुनना; छूना, सूँघना, चलना, सोना, श्वास लेना, बोलना, छोड़ना, ग्रहण करना, आँखें खोलना, बन्द करना आदि कार्य इन्द्रियों के कर्म हैं । मैं इनका करने वाला नहीं हूँ ॥ ८ ॥ ९ ॥

जो ईश्वर को कर्म का फल समर्पण कर के, निष्काम भाव से कर्म करता है, वह कमल के पत्ते पर स्थित जल की तरह, कर्म में लिप्त नहीं होता ।१०॥

कर्मयोगी फल की इच्छा को त्याग कर, केवल अन्तःकरण की शुद्धि के निमित्त मन, बुद्धि एवं इन्द्रियों द्वारा कर्म करते हैं ॥ ११ ॥

कर्मयोगी कर्म के फल को त्याग कर, मोक्ष रूपी शान्ति को पाता है और धन जनादि की इच्छा से कर्म करने वाला पुरुष कामना के कारण फल की प्राप्ति में आसक्त हो कर, बन्धन में पड़ता है ॥ १२ ॥

जितेन्द्रिय आत्मज्ञानी पुरुष सम्पूर्ण कर्मों को मन से त्याग कर, नव द्वार वाले शरीर रूपी घर में सुख पूर्वक निवास करता है । न तो वह स्वयं कोई काम करता है और न दूसरे से कोई कर्म कराता है ॥ १३ ॥

ईश्वर किसी के शरीर की रचना नहीं करता—न कर्म ही को वह रचता है

और कर्मफल के सम्बन्ध की भी वह रचना नहीं करता ; किन्तु स्वाभाव या अज्ञान रूपी माया ही सब कार्यों में कर्त्ता आदि रूप से प्रवृत्त होती है ॥१४॥

परमेश्वर से और मनुष्यों के पाप पुण्यों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, पर अविद्या रूपी ढकने से ज्ञान के ढक जाने के कारण जीव मोहित हो रहा है ॥ १५ ॥

जिनका अज्ञान, आत्मविचार से नष्ट हो जाता है, उनका आत्मज्ञान सूर्य्य की तरह ब्रह्म को प्रकाशित कर देता है ॥ १६ ॥

उस ब्रह्म में जिनकी बुद्धि लगी है, उस ब्रह्म में जिनकी निष्ठा है और जो ब्रह्मपरायण हैं तथा ज्ञान द्वारा जो निष्पाप हो गये हैं, वे ही मुक्ति पाने के अधिकारी होते हैं ॥ १७ ॥

ज्ञानी पुरुष, विद्या विनय-युक्त ब्राह्मण, गौ, हस्ती, श्वान और चाण्डाल आदि सब में समान (बराबर) दृष्टि रखते हैं। अर्थात् सब में ब्रह्मदृष्टि रखते हैं ॥ १८ ॥

जिनका मन उस समता रूपी ब्रह्मभाव में स्थित है, वे इस लोक में (जीवित रह कर) ही संसार को जीत चुके हैं। क्योंकि ब्रह्म निर्दोष और सब जगह समान रूप से है; समदर्शी पुरुष उस ब्रह्म ही में अवस्थित रहते हैं ॥ १९ ॥

स्थिर निर्मोह, बुद्धि, ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ पुरुष, प्रियवस्तु की प्राप्ति से प्रसन्न और अप्रिय वस्तु की प्राप्ति से खिन्न नहीं होते हैं ॥ २० ॥

बाह्य शब्दादि विषयों की आसक्ति रहित पुरुष, अन्तःकरण में शान्ति सुख का अनुभव करते हैं और समाधि के द्वारा ब्रह्म में लवलीन हो कर मुक्ति सुख को पाते हैं ॥ २१ ॥

हे अर्जुन ! पण्डित पुरुष, इन्द्रियों के विषयों के भोग से उत्पन्न होने वाले सुख में आसक्त नहीं होते हैं, क्योंकि वह दुःखदायक और क्षण भर में नष्ट होने वाला है ॥ २२ ॥

जो शरीर त्याग से प्रथम ही काम क्रोधादि के वेग को रोकने में समर्थ हो जाता है, वह ही योगी और वही सुखी है ॥ २३ ॥

जिनको आत्मा ही में सुख है, जो आत्मा ही में क्रीड़ा करते हैं और आत्मा ही में जिनका प्रकाश है, वे योगी पुरुष ब्रह्म में लवलीन हो कर, ब्रह्म-निर्वाण-पद को प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

जो निष्पाप, संन्यासयुक्त, संशयरहित एकाग्रचित्त और सब प्राणियों के हित करने में तत्पर है, वह-ब्रह्म-निर्वाण-पद पाता है ॥ २५ ॥

जिनके हृदय में काम क्रोधादि उत्पन्न नहीं होते, जिन्होंने चित्त को अपने वश में कर रखा है और जिनको आत्मज्ञान हो गया है, वे जीवित और मृत्यु के पीछे भी—सब अवस्थाओं में ब्रह्म-निर्वाण-पद को पाते हैं ॥ २६ ॥

सम्पूर्ण बाह्य विषयों के चिन्तवन को मन से दूर कर के तथा दोनों नेत्रों को भौंहों के बीच में लगा कर और प्राण अपान वायु को नासिका में रोक कर, जिन्होंने इन्द्रिय, मन और बुद्धि को जीत लिया है और इच्छा, मन, क्रोध को वश में कर लिया है तथा जो विषय से विरक्त हो गये हैं, वे मनन-शील संन्यासी सदा मुक्त हैं ॥ २७ ॥ २८ ॥

हे अर्जुन ! इन सब साधनों की प्राप्ति हो जाने पर, मनुष्य मुझे यज्ञ एवं तपस्याओं का भोक्ता, सब लोकों का महेश्वर तथा सब प्राणियों का सुहृद जान कर, मुक्ति-पद को प्राप्त होता है ॥ २९ ॥

तीसवाँ अध्याय

अध्यात्म योग

भगवान् फिर बोले—जो कर्मफल की आशा को त्याग कर, नित्य नैमित्तिक कर्मों को करता है, वही संन्यासी, वही योगी है, वह निरग्नि और निष्क्रिय नहीं है। अर्थात् जिसने केवल अग्निहोत्रादि धर्म कार्यों को छोड़ रखा है, वह संन्यासी नहीं है ॥ १ ॥

हे पाण्डुपुत्र ! श्रुति जिसको संन्यास नाम से कहती है वही योग है; क्योंकि सङ्कल्प का त्याग किये बिना योगी होना असम्भव है ॥ २ ॥

जो मननशील पुरुष ज्ञानयोग प्राप्त करने की इच्छा करता है, उसको योगसाधन करने में धर्म का अवलम्बन करना चाहिये और जिसको योग-सिद्धि प्राप्त हो गयी है, उसके लिये कर्मसंन्यास ही परम साधन है ॥ ३ ॥

जिस समय मनुष्य विषय और कामों में नहीं फँसता एवं सब प्रकार की वासनाओं को छोड़ देता है, उस समय उसे योगारूढ़ कहते हैं ॥ ४ ॥

जीवात्मा अपने आप ही संसार से अपना उद्धार करे, अविवेकी हो कर कदापि अपनी अधोगति न होने दे—क्योंकि आत्मा ही आत्मा का शत्रु और मित्र है। अर्थात् जो मनुष्य ज्ञानी है वह अपने आत्मा का मित्र है और जो अज्ञानी है वह शत्रु है ॥ ५ ॥

जिसने अपने मन तथा अन्य इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया या इन्हें जीत लिया है वही अपना स्वयं मित्र है और जो ऐसा नहीं कर सका या करने में असमर्थ है वह अपने आत्मा का आप ही शत्रु है ॥ ६ ॥

जो जाड़ा गरमी तथा सुख दुःखों को सहने में समर्थ है, या सह लेता है और जो आत्मा, मान अपमान को समान जान कर जितात्मा या जिते-न्द्रिय हो कर, परम शान्ति युक्त हो चुका है, उसी आत्मा में परमात्मा विराजमान रहते हैं ॥ ७ ॥

जिनका चित्त ज्ञान और विज्ञान से अत्यन्त तृप्त हो रहा है, जो विकार रहित और जितेन्द्रिय हैं तथा जो सुवर्ण के डेले को मृत्तिका के डेले के समान जानते हैं, वे योगी पुरुष ही योगारूढ़ कहलाते हैं ॥ ८ ॥

सुहृद्, मित्र, शत्रु, उदासीन, मध्यस्थ, द्वेषी, बन्धु, साधु, असाधु और अन्य सब प्राणियों में जिसकी समान बुद्धि है वह ही श्रेष्ठ है ॥ ९ ॥

योगारूढ़ पुरुष निरन्तर निर्जन स्थान में रह कर, देह और अन्तःकरण को वशीभूत करे और आशा तथा परिग्रह को त्याग कर, चित्त को समाधि में लगावे ॥ १० ॥

पवित्र स्थान में अपने आसन को स्थिर करे। आसन न अधिक ऊँचा हो और न अधिक नीचा हो। पहले कुशा का उसके ऊपर मृगचर्म का और उसके ऊपर वस्त्र को बिछावे॥ ११॥

ऐसे आसन पर बैठ कर, जितेन्द्रिय और जितक्रिय और सुचित हो कर अन्तःकरण को शुद्ध करने के लिये समाधि लगावे॥ १२॥

योगाभ्यास करने वाला पुरुष यत्नपूर्वक धड़ और ग्रीवा को समान और निश्चल रख कर, नासिका के अग्रभाग को देखे, अन्य ओर को दृष्टि न करे॥ १३॥

तदनन्तर परम शान्त हो कर, भय छोड़ कर और ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर, मुझमें मन लगाने वाला, मुझमें लवलीन हो जाता है और ऐसा योगाभ्यासी पुरुष सम्प्रज्ञात समाधि में स्थित हो जाता है॥ १४॥

चित्त को अपने वश में रखने वाला योगाभ्यासी पुरुष, मन को रोक कर मेरे स्वरूप अर्थात् निर्वाण रूप परम शान्ति को प्राप्त होता है॥ १५॥

जो पुरुष अधिक अन्न भोजन करने वाला है, या जो बिलकुल अन्न भोजन नहीं करता और जो मनुष्य बहुत सोता है या बिलकुल नहीं सोता—हे अर्जुन! ऐसे पुरुष योगाभ्यास करने के अधिकारी नहीं हैं॥ १६॥

जो नियम से रहता, खाता पीता और काम काज करता है और नियमित रूप से जो ओंकार के जप का यत्न करता है और जो नियमपूर्वक सोता एवं जागता है; वही समाधियोग में सिद्ध हो कर, दुःखों को दूर करने में समर्थ होता है॥ १७॥

चित्त-संयत कर के जिस समय योगी उसे आत्मा में स्थित करता है और जिस समय उसे किसी बात की स्पर्द्धा नहीं रहती, उस समय ही योगी को योग की सिद्धि होती है॥ १८॥

चित्त रोक कर योगाभ्यास करने वाले पुरुष के अन्तःकरण की वृत्ति वायु रहित स्थान में स्थित दीपक की शिखा के समान निश्चल होती है॥ १९॥

जिस अवस्था में योगाभ्यास के द्वारा चित्त रुक कर उपराम को प्राप्त हो

जाता है, जिस समय शुद्ध अन्तःकरण में आत्म-साक्षात्कार कर के, आत्मा ही में सन्तुष्ट रहता है ॥ २० ॥

जिस अवस्था में इन्द्रियों के अगोचर और केवल शुद्ध बुद्धि से ग्रहण करने योग्य परम सुख का योगी अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थिति को प्राप्त कर, योगी आत्मस्वरूप भाव से तिल भर भी चलायमान नहीं होता है ॥ २१ ॥

उस अवस्था ही का नाम योग है, अर्थात् जिस अवस्था को प्राप्त हो कर, योगी और किसी लाभ को अधिक नहीं मानता है और जिस अवस्था में स्थित हो कर वह कठिन से कठिन दुःख से भी चलायमान नहीं होता है ॥ २२ ॥

योग की अवस्था में दुःख का लेशमात्र भी नहीं रहता। दुःख प्राप्त होने के भय से अभ्यास में रत योगी को अपने उद्योग में शिथिल न होना चाहिये और निश्चय पूर्वक योग का निरन्तर अभ्यास करना चाहिये ॥ २३ ॥

योगाभ्यास के समय, सङ्कल्प से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर और मन के द्वारा इन्द्रियों को विषय व्यापार से हटा कर, वश में करे ॥ २४ ॥

धैर्ययुक्त बुद्धि से योगी धीरे धीरे मन को रोके। आत्मा में मन को लगा कर और कुछ चिन्तवन न करे ॥ २५ ॥

स्वाभाविक चञ्चल मन जिस जिस विषय की ओर दौड़े, उस समय उस विषय से उसे यत्नपूर्वक हटावे और दृढ़तापूर्वक उसे आत्मा ही में लगावे ॥ २६ ॥

शान्तचित्त योगी का मन जिस समय रज, तम आदि गुणों से रहित हो कर, ब्रह्मरूप को प्राप्त होता है, उस समय वह परम सुखी होता है ॥२७॥

इस प्रकार मन को वश में करने वाला निष्पाप योगी ब्रह्म के साक्षात्कर रूप, परम सुख को प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

योगाभ्यास से जिसका चित्त सावधान हो गया है और जो सर्वत्र ब्रह्म-दृष्टि ही रखता है, वही योगी अविद्या-रचित-देहादि-उपाधियों रहित आत्मा को सम्पूर्ण प्राणियों में और सम्पूर्ण प्राणियों को आत्मा में, अभेद रूप से देखता है ॥ २९ ॥

जो योगी मुझ आत्म रूप भगवान् को सब प्राणियों में देखता है और मुझमें सम्पूर्ण प्राणियों को देखता है, उस योगी से मैं कभी अदृश्य नहीं रहता और न वह मुझसे अदृश्य रहता है ॥ ३० ॥

जो योगी सम्पूर्ण प्राणियों में स्थित मुझको अभेद रूप से भजता है, वह चाहे जहाँ रहे, वह मुझीमें रहता है ॥ ३१ ॥

हे अर्जुन ! जो पुरुष अपनी तरह दूसरों के सुख दुःखों की ओर भी दृष्टि रखता है, वह ही योगी सब से श्रेष्ठ है ॥ ३२ ॥

यह सुन कर, अर्जुन बोले—हे मधुसूदन ! आपने समता के द्वारा अर्थात् राग द्वेष को त्याग कर सर्वत्र समदृष्टि रखने के द्वारा जिस योगतत्व का वर्णन किया, मन की चञ्चलता के कारण उस समता को मैं दीर्घ काल तक ठहरने वाली नहीं समझता हूँ ॥ ३३ ॥

हे कृष्ण ! मन स्वभाव ही से चञ्चल है । देह की सारी इन्द्रियों को यह चलायमान किया करता है, विचार से भी उसको वश में करना दुष्कर है । ऐसे मन को अपने वश में करना उसी प्रकार कठिन है, जैसे वायु को वश में करना ॥ ३४ ॥

इस पर श्रीकृष्ण ने कहा—हे महाबाहो ! निस्सन्देह चञ्चल मन का वश में करना बड़ा कठिन है, परन्तु यह मन अभ्यास और वैराग्य के द्वारा वश में हो सकता है ॥ ३५ ॥

जिसका मन वश में नहीं है, वह योगी नहीं हो सकता । परन्तु चित्त को वश में करने वाला पुरुष उचित उपाय से यत्न करता हुआ, क्रम से योगी हो सकता है ॥ ३६ ॥

अर्जुन ने पूँछा—हे कृष्ण ! जो श्रद्धायुक्त हो कर योगसाधन में विशेष यत्न नहीं करता; अथवा योगसाधन करते करते चित्त की चञ्चलता के कारण भ्रष्ट हो जाता है, वह योगसिद्धि को प्राप्त न हो कर, किस गति को प्राप्त होता है ? ॥ ३७ ॥

कर्म और ज्ञान इन दोनों के मार्ग से भ्रष्ट हुआ पुरुष, छिन्न भिन्न हुए मेघों के समान नष्ट तो नहीं हो जाता ? ॥ ३८ ॥

हे कृष्ण ! मेरे इस सन्देह को आप पूर्ण रीति से दूर कर दीजिये। क्योंकि सिवाय आपके दूसरा कोई भी मेरे सन्देहों को नहीं मिटा सकता ॥ ३९ ॥

इसके उत्तर में श्रीकृष्ण जी ने कहा—हे अर्जुन ! योगभ्रष्ट पुरुष इस लोक अथवा परलोक में नष्ट नहीं होता। यही नहीं; किन्तु जो शास्त्र में कही विधि के अनुसार कार्य करता है, उसकी भी कभी दुर्गति नहीं होती ॥ ४० ॥

योगभ्रष्ट पुण्यात्मा पुरुष मरने के बाद उचित लोकों में पहुँच कर, वहाँ अनेक वर्षों तक रहते हैं। फिर पृथिवी पर आ कर श्रीमानों के घर में जन्म लेते हैं ॥ ४१ ॥

अथवा योगभ्रष्ट पुण्यात्मा जन किसी योगी के घर में जन्म लेता है। ऐसा जन्म जगत में दुर्लभ है ॥ ४२ ॥

हे अर्जुन ! योगभ्रष्ट का जन्म धारण करने पर उसके पूर्व-देह-संस्कार के अनुसार, ज्ञान-दायक बुद्धि होती है। इसीसे वह मुक्ति के लिये अधिकतर यत्न करता है ॥ ४३ ॥

योगभ्रष्ट पुरुष, यत्न न भी करै, तो भी पूर्वाभ्यास के कारण ब्रह्मनिष्ठा को प्राप्त होता है। आत्मतत्व जानने की इच्छा होने पर वेदोक्त कर्म के फल से भी अधिक फल उसे मिलता है॥ ४४ ॥

जो योगी पुरुष, पूर्व प्रयत्न से भी अधिक प्रयत्न करता है और निष्पाप हो कर, जन्म जन्मान्तरों के पुण्य-फल से ऐसा जन्मधारण करता है, वह योगसिद्धि के द्वारा पूर्ण ज्ञानी हो कर मुक्ति पाता है ॥ ४५ ॥

तत्वज्ञानी योगी, तपस्वियों, ज्ञानियों और अग्निहोत्रियों से भी श्रेष्ठ है, इस लिये हे अर्जुन ! तुम भी योगी बनो ॥ ४६ ॥

योगियों में जो मुझमें मन लगा कर, केवल मेरी ही आराधना करता है, वह सब से परम श्रेष्ठ है और मुझे प्रिय है ॥ ४७ ॥

इकतीसवाँ अध्याय

ज्ञानविज्ञान योग या ज्ञान की व्याख्या

भगवान् श्रीकृष्ण जी ने फिर कहा—हे अर्जुन ! अब मैं तुम्हें वे उपाय बतलाता हूँ, जिनसे तुम मेरे अनन्य भक्त हो कर, मुझे भली भाँति जान सको ॥ १ ॥

मैं तुम्हें अब साधन फलादि सहित ज्ञान का वर्णन सुनाता हूँ, उसे जान कर मनुष्य के लिये फिर कोई बात जानने योग्य नहीं बच रहती ॥२॥

हज़ारों मनुष्यों में कोई एकाध मनुष्य ही सिद्धि पाने के लिये यत्न करता है और उन यत्न करने वालों में कोई विरला ही मेरे स्वरूप के तत्व को जान पाता है ॥ ३ ॥

पृथिवी, जल, वायु, तेज, आकाश, मन, बुद्धि और अहङ्कार—ये आठ प्रकार की प्रकृतियाँ हैं ॥ ४ ॥

इन आठ प्रकार की प्रकृतियों का नाम अपरा (अर्थात् निम्नश्रेणी) है। इस प्रकृति की विरुद्ध जीव रूपी प्रकृति सम्पूर्ण जगत् का आधार है और उसका नाम परा (अर्थात् उच्चश्रेणी) है ॥ ५ ॥

सारे प्राणी इन आठ प्रकार की प्रकृतियों से उत्पन्न हुए हैं। इस जगत की उत्पत्ति और प्रलय का मैं ही कारण हूँ ॥ ६ ॥

हे धनञ्जय ! इस संसार में कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो मुझसे भिन्न हो। इस संसार में मैं व्याप्त हूँ। मुझसे रहित कोई वस्तु नहीं है ॥ ७ ॥

जल में रसीलापन मैं हूँ, चन्द्र और सूर्य में प्रकाश मैं ही हूँ; सब वेदों में प्रणव रूपी और मनुष्यों में पुरुषार्थ रूपी मैं ही हूँ ॥ ८ ॥

पृथिवी में पवित्र गन्ध रूपी और अग्नि में तेजोरूप मैं ही हूँ। सब प्राणियों में जीवन रूप और तपस्वियों में तपोरूप मैं ही हूँ ॥ ९ ॥

हे अर्जुन! मुझे तुम सम्पूर्ण प्राणियों का सनातन बीज रूप जानो; बुद्धिमानों और तेजस्वियों में तेजोरूप मैं ही हूँ ॥ १० ॥

हे भरतर्षभ! बलवानों में कामराग सहित बलरूप और सम्पूर्ण प्राणियों में धर्म में बाधा न डालने वाला काम रूप मैं ही हूँ ॥ ११ ॥

सात्विक्, राजसिक और तामसिक जितने पदार्थ हैं—वे सब मुझ ही से उत्पन्न हुए हैं; परन्तु मैं उनके अधीन नहीं हूँ, वे ही मेरे आश्रित हैं ॥१२॥

इन सत्वादि त्रिगुणमय भावों कर के यह सम्पूर्ण जगत् मोहित हो रहा है; इसी कारण इन तीनों गुणों से यह मुझे नहीं जानता है ॥ १३ ॥

यह सत्वादि त्रिगुणमयी मेरी अलौकिक माया है; निस्सन्देह इससे पार पाना अति कठिन है; परन्तु जो पुरुष केवल मेरे ही शरणागत हो कर मेरी आराधना करते हैं, वे इस दुस्तर माया को भी तर जाते हैं ॥ १४ ॥

जो पाप कर्म करने वाले और झूठे अधम पुरुष हैं; जिनका ज्ञान माया से हर गया है और जिनमें दम्भ, अभिमान आदि के कारण आसुरी भाव आ गया है—वे मुझसे नहीं मिल सकते ॥ १५ ॥

हे अर्जुन! आर्त्त,* जिज्ञासु,† अर्थार्थी‡ और ज्ञानी§—चार प्रकार के पुरुष मेरा भजन करते हैं ॥ १६ ॥

इन चार प्रकार के भक्तों में, मेरे में सदा निष्ठा रखने वाला ज्ञानी ही

---

* रोगादि से दुःखित "आर्त्त" कहलाते हैं।

† आत्मतत्व को जानने की इच्छा करने वाले "जिज्ञासु" कहलाते हैं।

‡ इस लोक और परलोक में भोग के साधनभूत पदार्थों की इच्छा रखने वालों की "अर्थार्थी" संज्ञा है।

§ आत्मतत्व को जानने वाले "ज्ञानी" होते हैं।

सब से श्रेष्ठ है, मैं ज्ञानियों का बड़ा प्यारा हूँ और ज्ञानी भी मुझे परम प्रिय है ॥ १७ ॥

चारों प्रकार के भक्त मोक्ष को प्राप्त होते हैं ; परन्तु ज्ञानी भक्त मेरा आत्मा रूप है। क्योंकि ज्ञानी सब से श्रेष्ठगति रूप मेरा ही आश्रय रखता है ॥ १८ ।

अनेक जन्मों में ज्ञानसञ्चय कर के मनुष्य सम्पूर्ण जगत् को वासुदेव रूप समझता है। जब उसमें यह अभेद दृष्टि उत्पन्न हो जाती है, तब वह मुझे प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

जिनका तत्वज्ञान नष्ट हो गया है, वे अपने पूर्वजन्मों के अनुसार अनेक नियमों को स्वीकार कर अपनी प्रकृति के अधीन हो, देवताओं की उपासना करते हैं ॥ २० ॥

जो जो भक्त देवता स्वरूप जिस मूर्त्ति को श्रद्धा से पूजा करने की इच्छा करते हैं ; मैं उन उन भक्तों को उसी उसी मूर्त्ति विषयक वैसी ही दृढ़ श्रद्धा उत्पन्न करता हूँ ॥ २१ ॥

जब वे भक्त उसी श्रद्धा से उस मूर्त्ति की आराधना करते हैं, तब मैं उनके सङ्कल्पानुसार उनकी कामनाओं को पूरा करता हूँ ॥ २२ ॥

किन्तु अल्पबुद्धियों का वह फल भी क्षणस्थायी है। क्योंकि देवपूजन के प्रभाव से उस देवता की आराधना करने वाला, मरने पर उस देवता के लोक में जाता है और जो मेरी आराधना करता है, वह अनादि, अनन्त, परमानन्द-स्वरूप मुझको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अविवेकी पुरुष, मुझे अविनाशी और सर्वोत्तम रूपी न जान कर, मुझ अव्यक्त* रूप को व्यक्त† रूप मानते हैं ॥ २४ ॥

मैं सब के लिये प्रकट नहीं होता हूँ। क्योंकि मैं अपनी योगमाया से

* प्रपञ्चातीत—प्रपञ्च के अतीत को "अव्यक्त" कहते हैं।

† मनुष्य आदि भाव को व्यक्त कहते हैं।

ढका रहता हूँ। इसीसे मूढ़ पुरुष, मेरे अजन्मा एवं अविनाशी रूप को नहीं जान सकते हैं॥ २५॥

मैं बीते हुए, वर्त्तमान और होने वाले तीनों कालों की सम्पूर्ण घटनाओं को जानता हूँ, परन्तु हे अर्जुन! मुझे कोई नहीं जानता॥ २६॥

हे परन्तप! प्राणियों को स्थूल शरीर के कारण तथा इच्छा द्वेष आदि उत्पन्न होने वाले शीत उष्ण आदि, के कारण मोह हो जाता है॥ २७॥

जिनके पाप पुण्य कर्मों के द्वारा नष्ट हो जाते हैं, वे मोहरहित पुरुष, अनन्य चित्त से मेरा भजन करते हैं॥ २८॥

जो पुरुष जरा मरण को निवारण करने के निमित्त मुझ सगुण ब्रह्म का आश्रय ग्रहण कर, साधना करते हैं—वे तत्पद के लक्ष्यार्थ रूपी परब्रह्म* कर्म* और अध्यात्म* को जानते हैं॥ २९॥

जो पुरुष अधिभूत* अधिदैव* और अधियज्ञ* के साथ मेरा चिन्तवन करते हैं—वे युक्तचित्त हो कर, मरणकाल में भी मुझे नहीं भूलते॥ ३०॥

बत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्माक्षर निर्देशयोग अथवा अन्तिम भावना का फल

अर्जुन बोले—हे पुरुषोत्तम! ब्रह्म क्या है? अध्यात्म किसको कहते हैं? कर्म क्या है? अधिभूत किसको कहते हैं? और अधिदैव क्या कहाता है?॥ १॥

अधियज्ञ किस प्रकार इस शरीर के भीतर बाहिर स्थित रहता है? और मरते समय संयतचित्त पुरुष आपको किस प्रकार से जान सकते हैं?॥ २॥

यह सुन कर, श्रीभगवान् बोले कि, जो परम अक्षर (जगत्) का मूल कारण है, वही ब्रह्म है, स्वभाव अध्यात्म कहलाता है, प्राणियों की उत्पत्ति और वृद्धि करने वाला यज्ञादि ही कर्म कहलाता है॥ ३॥

* इन शब्दों की परिभाषाएँ बत्तीसवें अध्याय में देखो।

हे जीवसत्तम अर्जुन ! नश्वर (नाशवान्) पदार्थ अधिभूत, हिरण्य-नामक पुरुष अधिदैव और विष्णु स्वरूप मैं अधियज्ञ हूँ। अधियज्ञ पुरुष ही मनुष्य के शरीर में विद्यमान है ॥ ४ ॥

जो पुरुष मरते समय भी भगवान् का चिन्तवन कर के, शरीर को त्याग कर के जाते हैं, हे अर्जुन ! वे पुरुष मेरे ही स्वरूप को प्राप्त होते हैं—इसमें तिल भर भी सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

हे कौन्तेय ! जिन जिन भावों को स्मरण करता हुआ, मनुष्य शरीर त्याग करता है ; वह सदा उस भाव का चिन्तवन करते रहने के कारण उस ही भाव को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

इस कारण सदा मेरा स्मरण कर और युद्ध करने में प्रवृत्त हो तथा मन और बुद्धि भी मेरे ही अर्पण कर, तब तू निस्सन्देह मुझे ही प्राप्त होगा ॥ ७ ॥

हे पार्थ ! निरन्तर परमात्मा के चिन्तवन के द्वारा अभ्यास रूपी योग करने वाला और एक परमात्मा की ओर ही चित्त को लगाने वाला पुरुष, उस दिव्य परमात्मा ही को प्राप्त हो जाता है ॥ ८ ॥

सर्वज्ञ, अनादि, सब जगत् के नियन्ता, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सम्पूर्ण जगत् के विधाता, अचिन्त्य रूप, सूर्य के समान अपने और दूसरे को प्रकाशित करने वाले तथा प्रकृति से परे, परम दिव्य पुरुष का जो पुण्यात्मा, मरते समय भक्तियुक्त हो कर, निश्चल मन से योग के प्रभाव से प्राणों को भौंहों के बीच में भली भाँति रख कर ; स्मरण करता है, वह उस दिव्य परम पुरुष ही को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥ १० ॥

वेदवेत्ता पुरुष जिसको अविनाशी कहते हैं, वीतराग संन्यासी ज्ञान प्राप्त होने पर, जिसमें लवलीन हो जाते हैं और ब्रह्मचारी जिसको जानने की इच्छा से ब्रह्मचर्य धारण करते हैं, अपने उस पद ही का संक्षेप से मैं वर्णन करूँगा ॥ ११ ॥

जो उपासक सब इन्द्रिय रूप द्वारों को बन्द कर के और मन को

हृदय में रोक कर तथा प्राणवायु को मस्तक में स्थिर कर के आत्मसमाधि का साधन करता है और " ॐ " इस ब्रह्मरूप अक्षर का उच्चारण करता है तथा मुझ परमेश्वर का चिन्तवन करता हुआ शरीर को त्यागता है, वह परमगति को प्राप्त होता है ।। १२ ।। १३ ।।

हे पार्थ ! जो चित्त से अन्य भावनाओं को दूर कर के, प्रति दिन निरन्तर मेरा ही स्मरण करता है उस सावधानचित्त योगी को मैं सहज ही में मिल जाता हूँ ।। १४ ।

ऐसे उपासक मुझको प्राप्त हो कर, फिर अने दुःखों के स्थान रूप अनित्य जन्म को नहीं प्राप्त होते हैं, क्योंकि वे परम सिद्धि रूपी मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं ।। १५ ।।

ब्रह्मलोक को आदि ले कर सम्पूर्ण ही लोकों के निवासी बारम्बार जन्म मरण को प्राप्त होते हैं, परन्तु हे कौन्तेय ! मुझको प्राप्त हो कर, फिर जन्म नहीं होता है ।। १६ ।।

जो चार सहस्र युग प्रमाण वाले ब्रह्मा जी के दिन को और चार सहस्र युग प्रमाण वाली ब्रह्मा जी की रात्रि को जानते हैं, वे योगी पुरुष ही दिन रात को जानते हैं और इस साधारण रात दिन को जानने वाले तो असंख्यों जीव उत्पन्न और मृत होते ही रहते हैं ।। १७ ।।

ब्रह्मा जी का दिन आने पर अव्यक्त कारण रूप से सम्पूर्ण व्यक्ति अर्थात् स्थावर जङ्गम रूपी प्राणी उत्पन्न होते हैं और ब्रह्मा जी की रात्रि आने पर वे सब व्यक्त पदार्थ अव्यक्त रूप कारण में लय को प्राप्त हो जाते हैं ।। १८ ।।

हे पार्थ ! जो पूर्व कल्प में थे वे ही सब प्राणी उत्तर कल्प में (ब्रह्मा जी का दिन आने पर) उत्पन्न हो कर, ब्रह्मा जी की रात आने पर लय को प्राप्त होते हैं ।। १९ ।।

परन्तु उस चराचर का कारण रूप अव्यक्त से भी परे अर्थात् उसका भी कारण रूप मन बुद्धि इन्द्रियों से जानने में न आने वाला, जो अनादि

सत्तामात्र पदार्थ है, सो नित्य है, वह ब्रह्मादि सकल प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता है ॥ २० ॥

उस अक्षय्य, अव्यक्त सत्ता रूप को श्रुति स्मृति जीव की परमागति वर्णन करती हैं। उस सत्ता रूपी भाव के प्राप्त हो कर, फिर जन्म धारण नहीं करना पड़ता, वही मेरा सर्वोत्तम धाम है ॥ २१ ॥

हे पार्थ ! वह परम पुरुष अनन्य भक्ति के द्वारा प्राप्त होता है, सम्पूर्ण प्राणी उसके भीतर रहते हैं और सम्पूर्ण जगत् उससे व्याप्त है ॥ २२ ॥

हे अर्जुन ! जिस समय प्रयाण (गमन) करने पर योगी (ज्ञानी और कर्मनिष्ठ) अनावृत्ति (मोक्ष) और आवृत्ति (जन्म मरणादि रूपी बन्धन) के प्राप्त होते हैं, उस काल का वर्णन करता हूँ ॥ २३ ॥

जहाँ ज्योति रूपी अग्नि, दिन, शुक्लपक्ष और छः मास उत्तरायण आदि हैं, उस देवयान मार्ग से गमन कर के सगुण ब्रह्म के उपासक पुरुष, सगुण ब्रह्म को प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

जहाँ धूमरात्रि कृष्णपक्ष और छः मास दक्षिणायण आदि हैं, उस पितृयान मार्ग से गमन कर के कर्मोपासक पुरुष चन्द्रलोक को प्राप्त हो कर और वहाँ कर्मफल को भोग कर फिर भूलोक में आ कर जन्म धारण करते हैं ॥ २५ ॥

शुक्ल (देवयान) और कृष्ण (पितृयान) ये दोनें मार्ग जगत् में अनादि से चले आते हैं, इनमें से पहले रास्ते से जाने वाले का मोक्ष होता है और दूसरे मार्ग से जाने वालों के फिर से जन्म लेना पड़ता है ॥ २६ ॥

हे पार्थ ! इन दोनें मार्गों के तत्त्व को जान कर कोई भी योगी मोहित नहीं होता है, अर्थात् सुख की बुद्धि से स्वर्गादि फल पाने की इच्छा नहीं करता है, इस कारण हे अर्जुन ! तुम भी सब काल में योगयुक्त रहो ॥२७॥

वेदों का पाठ करने पर, अनेक प्रकार के यज्ञ करने पर, तपस्या के करने पर और नाना प्रकार के दान करने पर, जो पुण्यफल शास्त्रों में कहा

है, इस मेरे कहे हुए तत्व को जान कर योगी उन सम्पूर्ण पुण्यफलों को उल्लङ्घन कर परमोत्तम, कारण रूपी स्थान (ब्रह्म) को प्राप्त होता है ॥२८॥

तेतीसवाँ अध्याय

राजविद्या राजगुह्य योग

श्रीभगवान् कहने लगे—हे अर्जुन ! तुम असूया (पराये गुणों में दोष लगाना) आदि दोषों से रहित हो, इस कारण मैं तुमसे विज्ञान सहित ज्ञानतत्व कहता हूँ ; जिसको जान कर, तुम संसारबन्धन से छूट जाओगे ॥ १ ॥

यह आत्मज्ञान सब विद्याओं का राजा, सब गुप्त पदार्थों का राजा और सर्वोत्तम, पवित्र प्रत्यक्ष ज्ञानदाता, सब धर्मों का फल रूपी सुख से करने योग्य और अक्षय्य फल का देने वाला है ॥ २ ॥

इस आत्मज्ञान रूपी धर्म में जिसकी श्रद्धा नहीं है, वह मुझको प्राप्त न हो कर, निरन्तर मृत्यु से भरे हुए संसार मार्ग में घूमता रहता है ॥ ३ ॥

अव्यक्त रूपी मैं इस सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हो रहा हूँ । सब भूत मुझ चैतन्य स्वरूप में स्थित हैं । परन्तु मैं गुण क्रियादि रहित होने के कारण किसी में स्थित नहीं हूँ ॥ ४ ॥

तुम मेरे योग-प्रभाव को देखो । सर्वभूत मुझमें स्थित नहीं करते हैं, क्योंकि मैं असङ्ग हूँ । मेरा सच्चिदानन्द स्वरूप, सम्पूर्ण भूतों को धारण और उत्पन्न कर के भी भूतों में स्थित नहीं है ॥ ५ ॥

सर्वत्र जाने वाला, परम वेगवान् वायु जिस प्रकार नित्य असङ्ग भाव से आकाश में स्थित रहता है, उसी प्रकार सम्पूर्ण भूत (चराचर) मेरे में स्थित हैं । यह तुम निश्चित जानो ॥ ६ ॥

हे अर्जुन ! प्रलय काल में यह सब चराचर भूत मेरी शक्ति रूपी

त्रिगुणात्मिका प्रकृति में लीन हो जाते हैं और सृष्टिकाल में फिर मैं उन सब चराचर भूतों को उत्पन्न कर देता हूँ ॥ ७ ॥

मैं अपनी मायारूपी प्रकृति का आश्रय कर के उसके प्रभाव से कर्मफल के वशीभूत इन सम्पूर्ण प्राणियों को वार वार रचता हूँ ॥ ८ ॥

हे धनञ्जय ! उन कर्मों में आसक्ति रहित हो कर उदासीन के समान स्थित मुझको, सृष्टयादि कर्म बाँध नहीं सकते हैं ॥ ९ ॥

केवल साक्षी अथवा देखने वाली प्रकृति ही मुझको अवलम्बन कर के इस चराचर जगत् को उत्पन्न करती है और मेरी अधिष्ठान सत्ता के प्रभाव ही से यह जगत् नाना रूप से बराबर उत्पन्न होता है ॥ १० ॥

अज्ञानी पुरुष मेरे सर्वभूत महेश्वर स्वरूप का परमार्थतत्व न जान कर, मनुष्य शरीर धारण करने पर, मेरी अवज्ञा करते हैं ॥ ११ ॥

वह पुरुष, बुद्धि को बिगाड़ने वाली राक्षसी तथा आसुरी प्रकृति के वश में हो जाने के कारण, निष्फल कर्म करने वाले और विपरीत ज्ञान वाले तथा विक्षिप्तचित्त हो रहे हैं ॥ १२ ॥

हे अर्जुन ! जो दैवी प्रकृति को आश्रय कर के केवल मुझ ही में अनन्य भाव से चित्त को लगाते हैं, वे ही महात्मा पुरुष मुझे सर्वभूतों का कारण और अविनाशी जान कर भजते हैं ॥ १३ ॥

वे महात्मा सदा मेरे नामों का कीर्तन करते हुए और प्रयत्न पूर्वक दृढ़ व्रत हो कर, मुझे नमस्कार करते हुए निरन्तर सावधान चित्त हो कर, मेरी उपासना करते हैं ॥ १४ ॥

कोई कोई महात्मा ज्ञान रूपी यज्ञ कर के मेरी उपासना करते हैं । कोई कोई मुझसे अपने को अभिन्न रूप चिन्तवन करते हुए मेरी उपासना करते हैं । कोई कोई पृथक् भाव से अर्थात् " हे प्रभो ! आप स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ " इस भाव से मेरी उपासना करते हैं और कोई कोई मुझ सर्वात्मा की ब्रह्म रुद्रादि रूप से उपासना करते हैं ॥ १५ ॥

श्रीकृष्ण जी अपने सर्वात्म रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि, हे

अर्जुन ! मैं ही वेदों में कहे हुए अग्निष्टोमादि यज्ञ हूँ, मैं ही स्मृतियों में कहे हुए पञ्चमहायज्ञ हूँ। मैं ही स्वधा अर्थात् पितरों के लिये श्राद्धादि हूँ। मैं ही अन्न हूँ, मैं ही मंत्र हूँ, मैं ही हवन का साधन घी आदि हूँ। मैं ही अग्नि और मैं ही होम हूँ ॥ १६ ॥

मैं ही इस जगत् का पिता माता, विधाता (कर्म फल का देने वाला) और पितामह हूँ और मैं ही जानने योग्य पदार्थों को पवित्र करने वाला "ओंकार" तथा ऋक् यजु और साम वेद रूपी हूँ ॥ १७ ॥

मैं ही जगत् की गति मैं पालन करने वाला नियन्ता, मैं ही साक्षी (शुभ अशुभ का देखने वाला), मैं ही आश्रय, मैं ही रक्षक, मैं ही हितकारी, मैं ही उत्पन्न करने वाला, मैं ही प्रलय करने वाला, मैं ही आधार, मैं ही निधान (प्रलय का स्थान), मैं ही कारण और मैं ही अविनाशी हूँ ॥ १८ ॥

हे अर्जुन ! मैं ही सूर्य्य रूप से ताप देता हूँ, मैं ही जल को वर्षाता और खींचता हूँ। मैं ही जीवन हूँ, मैं ही मृत्यु हूँ, मैं ही स्थूल और सूक्ष्म रूप हूँ ॥ १९ ॥

तीनों वेदों के पारगामी पुरुष यज्ञों के द्वारा मेरा पूजन कर के यज्ञ में बचे हुए सोम को पीने से निष्पाप हो कर (कामना के वश में हो कर) स्वर्गप्राप्ति की प्रार्थना करते हैं और वे सकाम पुरुष पुण्यों के फल रूपी इन्द्र-लोक (स्वर्ग) को प्राप्त हो कर, वहाँ देवताओं के दिव्य भोगों को भोगते हैं ॥ २० ॥

(परन्तु भोग चिरस्थायी नहीं होते हैं इस कारण) वे पुरुष नाना प्रकार के स्वर्गसुखों को भोग कर, पुण्यक्षीण होने पर फिर मृत्युलोक में जन्म धारण करते हैं। इस प्रकार वेदोक्त कर्मों को स्वर्गादि की कामना से करने वाले पुरुष बारंबार संसार में जन्म मरण को प्राप्त होते हैं ॥ २१ ॥

जो पुरुष किसी प्रकार की कामना न कर के अनन्य भाव से मेरा चिन्तवन करते हुए मेरी उपासना करते हैं, उन एक मुझ ही में निष्ठा रखने वाले पुरुषों को मैं धन और अन्त में मोक्ष देता हूँ ॥ २२ ॥

हे कौन्तेय ! जो श्रद्धापूर्वक भक्ति युक्त हो अन्य देवताओं की उपासना करते हैं वे भी अज्ञान पूर्वक ही मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि उनको यह ज्ञान नहीं होता है कि इन्द्रादि देवताओं की उपासना भी परमात्मा ही की उपासना है, एक आत्मा ही सर्वपदार्थ रूप है; उसके बिना कोई वस्तु नहीं है, ऐसा ज्ञान न होने के कारण ही उन उपासकों को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है ॥ २३ ॥

मैं ही सब यज्ञों का भोक्ता और फल देने वाला हूँ, ऐसा ज्ञान न होने के कारण ही जीव वारंवार जन्म मरण को प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

देवताओं को प्रसन्न करने के निमित्त यज्ञादि करने वाले, देवताओं को; पितरों को प्रसन्न करने के निमित्त श्राद्धादि करने वाले, पितरों को; भूतों के पूजने वाले लोग भूत आदि को और मेरी उपासना करने वाले मुझ परमानन्द स्वरूप परमात्मा को प्राप्त होते हैं ॥ २५ ॥

जो मेरे अर्थ भक्ति-पूर्वक पत्र, पुष्प, फल जल आदि जो कुछ देता है, मैं उस शुद्धचित्त पुरुष के भक्तिपूर्वक दिये हुए पत्रपुष्पादि को प्रसन्नता से ग्रहण करता हूँ ॥ २६ ॥

हे कौन्तेय ! तुम जो कुछ कार्य करो, जो कुछ भोजन करो, जो कुछ हवन करो, जो कुछ दान करो और जो कुछ तप करो, वह मेरे अर्पण करो ॥ २७ ॥

ऐसा करने पर तुम शुभाशुभ कर्मों के बन्धन से छूट जाओगे और संन्यास-योग से मुक्त होते हुए, मुझे प्राप्त हो जाओगे ॥ २८ ॥

मैं सब प्राणियों के विषय में समदृष्टि हूँ; मेरा कोई द्वेष का पात्र अथवा प्रिय नहीं है, परन्तु जो पुरुष भक्तिपूर्वक पूर्वोक्त रीति से मेरी उपासना करते हैं, वे उस भक्ति के प्रभाव से मुझमें रहते हैं और मुझसे अभिन्न हो जाने के कारण मैं भी उनमें रहता हूँ ॥ २९ ॥

यदि कोई पुरुष अत्यन्त दुराचारी हो कर भी अनन्य चित्त से मेरा भजन करे, तो उसको साधु ही जानो, क्योंकि उसको सत्य निश्चय हो गया है ॥३०॥

अत्यन्त दुराचारी पुरुष भी मेरा भजन करने से तुरन्त ही धर्मात्मा होता है और नित्य शान्ति को प्राप्त हो जाता है। हे अर्जुन! इस बात को तुम निस्सन्देह जानो कि, मेरा भक्त कदापि नष्ट नहीं होता है ॥ ३१ ॥

पापयोनि में उत्पन्न होने वाले जीव, स्त्री, वैश्य और शूद्र भी मेरी विशेष रूप से सेवा कर के निस्सन्देह परमगति को प्राप्त हो जाते हैं। फिर पुण्यवान् ब्राह्मण और भक्त क्षत्रिय तो, मेरी भक्ति के प्रभाव से अवश्य ही परम गति को प्राप्त होंगे—इसमें सन्देह ही क्या है? इस कारण तुम इस अनित्य और दुःखपूर्ण मनुष्यजन्म को प्राप्त हो कर मेरी आराधना करो ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

तुम मुझमें चित्त लगाने वाले मेरे भक्त और मेरी पूजा करने में तत्पर होओ और मुझे नमस्कार करो—इस प्रकार शरणागत हो कर, तुम अपने मन को मुझमें लगा कर, मुझे ही प्राप्त हो जाओगे ॥ ३४ ॥

चौंतीसवाँ अध्याय

भगवान् की विभूति

भगवान् फिर बोले—हे अर्जुन! तुम फिर भी मेरे परमात्मनिष्ठ वचनों को सुनो। तुम्हारे ही हित की इच्छा से मैं प्रीतिपूर्वक कहता हूँ ॥ १ ॥

देवता और महर्षि भी मेरे प्रभाव को नहीं जानते हैं, क्योंकि मैं देवता और महर्षि आदि सब का आदि कारण हूँ ॥ २ ॥

जो मुझे जन्म रहित अनादि और सर्वलोकों का स्वामी जानता है, वह भेद रहित हो कर, सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है ॥ ३ ॥

बुद्धि, ज्ञान, अमोह, क्षमा, सत्य, इन्द्रियों का दमन, चित्त का शमन, सुख, दुःख, उत्पत्ति, नाश, हिंसा, समदृष्टि, सन्तोष, तप, दान, यश, और अपयश, ये प्राणियों के सम्पूर्ण भिन्न भिन्न भाव मुझ ही से उत्पन्न हुए हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

सृष्टि की आदि में भृगु आदि सप्त महर्षि, सनकादि चार ऋषि तथा स्वायंभुव आदि चौदह मनु, ये सब मेरे प्रभाव से मुक्त और मुझ ही से उत्पन्न हुए हैं, जिन्होंने मेरी आज्ञा के अनुसार इस लोक में सम्पूर्ण प्रजा को रचा है ॥ ६ ॥

इस मेरी विभूति और योग को जो तत्व रूप से जानते हैं, वे निस्सन्देह चलायमान न होने वाले आत्मज्ञान को प्राप्त हो जाते हैं ॥ ७ ॥

मैं ही सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूँ और मुझसे ही सब को ज्ञान और बुद्धि उत्पन्न होती है। ऐसा जान कर बुद्धिमान् पुरुष प्रेम पूर्वक मेरी उपासना करते हैं ॥ ८ ॥

जो पुरुष और प्राण मुझे समर्पण करना जानते हैं, वे परस्पर मेरी कथा और कीर्त्तन करने ही में परम सन्तोष और सुख मानते हैं ॥ ९ ॥

जो पुरुष एकाग्रचित्त हो प्रीतिपूर्वक मुझे भजते हैं; उनको मैं बुद्धियोग देता हूँ, उस बुद्धियोग के द्वारा वे अनायास ही मुझ परमात्मा को पा जाते हैं ॥ १० ॥

उन भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने के निमित्त मैं उनकी आत्माकार वृत्ति में स्थित हो कर, प्रकाशवान ज्ञान रूपी दीपक के द्वारा उनके अज्ञानाचरण रूपी अज्ञान का नाश कर देता हूँ ॥ ११ ॥

अर्जुन कहने लगे—हे भगवन् ! तुम परब्रह्म और परमधाम तथा तुम्हीं परम पवित्र हो, तुम ही नित्य पुरुष, तुम्हीं आदिदेव, अज, विभु हो, भृगु आदि ऋषि, देवर्षि, नारद, असित, देवल और व्यास आदि आपका इस प्रकार वर्णन करते हैं और आप भी मुझसे ऐसा ही कहते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

हे केशव ! आप जो कुछ मुझसे कहते हो, सो सब मैं सत्य मानता हूँ, हे भगवन् ! देवता और दानव कोई भी आपके स्वभाव को नहीं जानते हैं ॥१४॥

हे पुरुषोत्तम ! हे भूतभावन ! हे भूतेश ! हे देवादिदेव ! हे जगत्पते ! आप किसी अन्य के उपदेश के बिना ही स्वयं अपने (परमात्म रूप) को जानते हो ॥ १५ ॥

हे भगवन् ! आप जिस विभूति कर के सब लोकों में व्याप्त होरहे हैं, आप अपनी उस सम्पूर्ण दिव्य विभूति का वर्णन कीजिये ॥ १६ ॥

हे योगिन् ! मैं आपको किस किस पदार्थ में, किस प्रकार की विभूति के द्वारा, किस भाव से चिन्तवन करूँ, सो कहिये ॥ १७ ॥

हे जनार्दन ! आप फिर अपनी विभूति और योग का तत्व विस्तार पूर्वक मुझसे कहिये, क्योंकि आपके अमृत के समान वचनों को सुन कर, मेरी तृप्ति नहीं होती है ॥ १८ ॥

श्रीकृष्ण जी बोले—हे अर्जुन ! मेरी दिव्य विभूतियाँ इतनी अधिक हैं कि उनका पार नहीं है। अतः मैं तुमसे प्रधान विभूतियाँ विस्तार पूर्वक कहे देता हूँ ॥ १९ ॥

हे अर्जुन ! सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित, आनन्दमय एवं चैतन्य रूप मैं हूँ। सब प्राणियों की उत्पत्ति पालन और प्रलय रूपी भी मैं ही हूँ ॥२०॥

आदित्यों में मैं विष्णु नामक आदित्य हूँ। प्रकाश करने वालों में अंशुमान् नामक रवि हूँ, मरुत नामक देवगण में, मैं मरीच हूँ और नक्षत्रों में चन्द्रमा हूँ ॥ २१ ॥

वेदों में सामवेद हूँ, देवताओं में इन्द्र हूँ, इन्द्रियों में मन हूँ और सब भूतों में चैतन्य रूप हूँ ॥ २२ ॥

रुद्रों में शङ्कर हूँ, यक्ष राक्षसों में कुबेर हूँ, वसुनामक देवगण में अग्नि हूँ और पर्वतों में सुमेरु हूँ ॥ २३ ॥

हे अर्जुन ! मुझे पुरोहितों में प्रधान ब्रह्मस्पति जानो, सेनापतियों में मैं स्कन्द और स्थिर जलाशयों में, मैं सागर हूँ ॥ २४ ॥

महर्षियों में मैं भृगु हूँ, शब्दों में एकाक्षर (ओं) रूप हूँ, यज्ञों में जपयज्ञ और स्थावरों में हिमालय हूँ ॥ २५ ॥

सम्पूर्ण वृक्षों में अश्वत्थ, देवर्षियों में नारद, गन्धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में मैं कपिलमुनि हूँ ॥ २६ ॥

अश्वों में मुझे अमृतमन्थन के समय उत्पन्न हुआ उच्चैःश्रवा नामक अश्व, गजेन्द्रों में ऐरावत और मनुष्यों में राजा मुझे जानो ॥ २७ ॥

शस्त्रों में मैं वज्र और गौओं में मैं कामधेनु हूँ। कामनाओं में मैं पुत्रोत्पन्न करने वाला काम हूँ और सर्पों में मैं वासुकी हूँ ॥ २८ ॥

नागों में अनन्त, (शेष) रूप और जलचारियों में मैं वरुण रूप हूँ, पितरों में मैं अर्यमा रूप और दण्ड देने वालों में मैं यमरूप हूँ ॥ २९ ॥

दैत्यों में प्रल्हाद रुपी और गणना करने वालों में मैं काल रूपी हूँ। पशुओं में सिंह और पक्षियों में गरुड़ रूपी हूँ ॥ ३० ॥

वेगवालों में मैं पवन रूप और शस्त्रधारियों में मैं राम हूँ। मत्स्यों में मकर रूप और नदियों में गङ्गा हूँ ॥ ३१ ॥

हे अर्जुन! उत्पन्न होने वाले पदार्थों का उत्पत्ति, पालन और प्रलय रूप मैं ही हूँ, विद्याओं में मैं अध्यात्मविद्या और वाद करने वालों में मैं तर्क रूप हूँ ॥ ३२ ॥

अक्षरों में अकार और समासों में मैं द्वन्द्व समास हूँ। मैं ही अक्षय्य काल रूपी और मैं ही कर्म का फल देने वाला अन्तर्यामी ईश्वर हूँ ॥ ३३ ॥

मैं संहार करने वालों में सब का हरने वाला मृत्यु हूँ, होने वाले कल्पों में प्राणियों का उत्पत्ति रूप मैं हूँ। स्त्रियों में, मैं कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा रूप हूँ ॥ ३४ ॥

गान रूप सामों में मैं वृहत्साम हूँ, छन्दों में मैं गायत्री छन्द हूँ, मासों में मैं मार्गशीर्ष (अगहन) मास हूँ और ऋतुओं में मैं वसन्त ऋतु हूँ ॥३५॥

छल करने वालों में मैं द्यूत (जुआ) हूँ, तेजस्वियों में, मैं तेजोरूप हूँ। जय को प्राप्त करने वालों में, मैं जय रूप हूँ, उद्योग करने वालों में, मैं उद्योग रूप हूँ, सात्विक पुरुषों में मैं सत्व रूप हूँ ॥ ३६ ॥

यादवों में मैं वासुदेव हूँ, पाण्डवों में मैं धनञ्जय हूँ, मुनियों में, मैं व्यास हूँ और कवियों में, मैं शुक्र हूँ ॥ ३७ ॥

दण्ड देने वालों में, मैं दण्डरूप हूँ। जय की इच्छा करने वालों में, मैं नीति हूँ। गोप्य वस्तुओं में मौन हूँ और ज्ञानियों में ज्ञान मैं ही हूँ ॥ ३८ ॥

सब भूतों का मूल कारण चेतना रूप मैं ही हूँ, मेरे बिना कोई स्थावर जङ्गम वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती ॥ ३९ ॥

मेरी दिव्य विभूतियों की मर्य्यादा (सीमा) नहीं है, हे परन्तप ! मैंने जो कुछ तुमसे कहा सो विस्तार का संक्षेप कर के कहा है ॥ ४० ॥

जो ऐश्वर्य्ययुक्त और बलयुक्त प्राणी हो, उसको तुम मेरी शक्ति के अंश से उत्पन्न हुआ जानो ॥ ४१ ॥

हे अर्जुन ! और अधिक जानने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है, केवल इतना ही जान रखो कि, इस सम्पूर्ण जगत् को मैं एकांश से धारण कर के स्थित हूँ ॥ ४२ ॥

पैंतीसवाँ अध्याय

विराटरूप दर्शन

अर्जुन कहने लगे—हे भगवन् ! आपने अनुग्रह कर के जो अध्यात्म-तत्व की परम गुप्त कथा कही, उसको सुन कर मेरा मोह (अर्थात् मैं जो अज्ञान से देह और जीवात्मा को एक समझे हुआ था वह अज्ञान) दूर हो गया ॥ १ ॥

हे कमलपत्राक्ष ! आपने सर्वभूतों की उत्पत्ति और प्रलय को विस्तार से वर्णन किया—वह सब मैंने सुना और आपका सोपाधिक तथा निरुपाधिक माहात्म्य भी मैंने सुना ॥ २ ॥

हे परमेश्वर ! आपने अपने रूप का जैसा वर्णन किया सो ठीक ही है; परन्तु हे पुरुषोत्तम ! आपके उस ईश्वरीय रूप के दर्शन की मेरी अत्यन्त ही अभिलाषा है ॥ ३ ॥

हे प्रभो ! यदि आप मुझे अपने उस अद्भुत रूप का दर्शन करने के योग्य समझते हो, तो हे योगेश्वर ! मुझे अपने उस अविनाशी नित्य रूप को दिखलाइये ॥ ४ ॥

यह सुन कर भगवान् कहने लगे कि, हे अर्जुन ! नाना प्रकार के वर्ण और आकृति (सूरत) के सैकड़ों और सहस्रों अवयवों वाले मेरे रूप को देखो ॥ ५ ॥

हे भारत ! यह देखो मेरी देह के भीतर आदित्य मण्डल, वसु नामक देवगण, एकादश रुद्र, दोनों अश्विनीकुमार और मरुत् नामक देवगण तथा और बहुत से उन आश्चर्यमय रूपों को जो तुमने कभी पहले न देखे होंगे, तुम देखो ॥ ६ ॥

हे अर्जुन ! इस मेरे शरीर के छोटे से भाग में स्थित स्थावर जङ्गम रूप सम्पूर्ण जगत को तथा और जो कुछ तुम्हें देखना हो सो देख लो ॥ ७ ॥

हे अर्जुन ! तुम इन साधारण नेत्रों से मेरे इस रूप को नहीं देख सकोगे। इस कारण मैं तुम्हें दिव्यनेत्र देता हूँ, तुम इन नेत्रों से मेरे विश्व-रूप का दर्शन करो ॥ ८ ॥

यह कह कर श्रीकृष्णचन्द्र ने अर्जुन को अपना दिव्य विश्वरूप दिख-लाया, जिसमें अनेक मुख और अनेक नेत्र थे। उसमें अनेक अद्भुत वस्तुएँ विद्यमान थीं। उसमें अनेक दिव्य भूषण और अनेक दिव्य शस्त्र विद्यमान थे। वह रूप दिव्य माला और दिव्य वस्त्रों से सुशोभित था। वह दिव्य सुगन्धित पदार्थों से लिप्त था, अति आश्चर्यमय, प्रकाश से पूर्ण, अनन्त तथा सब ओर मुख वाले रूप का दर्शन भगवान् ने अर्जुन को कराया। उसे देख आश्चर्य और हर्षयुक्त तथा पुलकित शरीर हो कर, अर्जुन ने मस्तक झुका कर, नारायण को प्रणाम कर और हाथ जोड़ कर यह विनती की ॥ ९-१४ ॥

अर्जुन ने कहा—हे देव ! आपके इस विश्वरूप शरीर में, मैं देवताओं को देख रहा हूँ, स्थावर जङ्गम सम्पूर्ण भूतों को देख रहा हूँ , कमलासन पर विराजमान सब के नियन्ता चतुर्मुख ब्रह्मा जी को देख रहा हूँ और दिव्य ऋषियों को तथा सर्पों को देख रहा हूँ ॥ १५ ॥

हे विश्वरूप ! हे विश्वेश्वर ! आपके, बहुत सी भुजाएँ, उदर, मुख और

नेत्रों वाले अनन्त रूप को मैं देख रहा हूँ, परन्तु फिर भी आपके अन्त, मध्य और आदि को कौन देख सकता है ? ॥ १६ ॥

हे भगवन् ! किरीट, गदा और चक्र को धारण करने वाला तेजःस्वरूप चारों ओर से प्रकाशमान्, देदीप्यमान अग्नि और सूर्य की समान कठिन से देखने योग्य, कान्तिमान और अप्रमेय आपके स्वरूप को मैं देख रहा हूँ ॥ १७ ॥

आप अक्षर ब्रह्म हैं, आप ही मुमुक्षुओं के लिये जानने योग्य हैं। आप इस जगत् के परम आश्रय हैं। आप नित्य हैं आप ही सनातन धर्म के रक्षक और आप सनातन परमात्मा पुरुष हैं—इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ १८ ॥

हे भगवन् ! मैं देख रहा हूँ आप उत्पत्ति, स्थिति और नाश रहित, अनन्त प्रभावशाली और अनन्त भुजाओं वाले हैं। चन्द्र सूर्य आपके नेत्र हैं। आपके मुखमण्डल में देदीप्यमान अग्नि प्रज्वलित हो रहा है और आप अपने तेज से सम्पूर्ण जगत् को सन्तप्त कर रहे हैं ॥ १९ ॥

हे महात्मन् ! एक आप ही से यह पृथिवी और आकाश का मध्य भाग तथा दिशाओं का मण्डल व्याप्त हो रहा है ; आपके इस अद्भुत और घोर रूप को देख कर, त्रिलोकी भयभीत हो रही है ॥ २० ॥

हे भगवन् ! यह सब देवता अन्तःकरण में भयभीत हो कर आपकी शरण ले रहे हैं, कोई कोई भयभीत हो कर हाथ जोड़े हुए प्रार्थना कर रहे हैं, और महर्षि तथा सिद्धों के समूह, स्वस्ति कह कर, सुन्दर सुन्दर बहुत से स्तोत्रों से आपकी स्तुति कर रहे हैं ॥ २१ ॥

हे भगवन् ! रुद्र, आदित्य, वसु, साध्य, विश्वदेव, दोनों अश्विनीकुमार, मरुत, पितर, गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्ध आदि सब ही आपका दर्शन कर के आश्चर्य में हो रहे हैं ॥ २२ ॥

हे महाबाहो ! आपके बहुत से मुख और नेत्रों वाले, बहुत सी दाढ़ों वाले विकराल रूप महान् विश्वरूप का दर्शन कर के सम्पूर्ण जीव भयभीत हो रहे हैं और मुझे भी भय हो रहा है ॥ २३ ॥

हे विष्णो ! आपके आकाशव्यापी, महातेजस्वी, नानावर्णों वाले मुख और प्रकाशमान विशाल नेत्र वाली मूर्त्ति का दर्शन कर के, मेरा धैर्य और शान्ति—दोनों नष्ट हुए जाते हैं, अर्थात् मेरा चित्त स्थिर नहीं है ॥ २४ ॥

बड़ी बड़ी दाढ़ों और प्रलयकाल के अग्नि के समान आपके मुख का दर्शन कर के मुझे चक्कर सा आया जाता है और मुझे चैन नहीं पड़ता है, हे देवेश ! हे जगन्निवास ! आप मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये ॥ २५ ॥

हे भगवन् ! यह दुर्योधनादि धृतराष्ट्र के पुत्र अपने साथी राजाओं के साथ और भीष्म द्रोण कर्ण—इन तीनों वीरों के साथ और हमारे मुख्य योद्धा बड़े वेग से आपके मुख में घुस रहे हैं। उनमें से किसी किसी का सिर तो कुचल गया है और दाँतों की सन्धि में अटका हुआ है ॥ २६ ॥ २७ ॥

जिस प्रकार बड़े वेग से जाती हुई नदियों का जल समुद्र की ओर जा कर समुद्र में प्रवेश कर जाता है ; उसी प्रकार मनुष्य-लोक में यह जीव सब ओर से प्रकाशमान् आपके मुखों में प्रवेश कर रहे हैं ॥ २८ ॥

हे भगवन् ! जिस प्रकार पतङ्गे बड़े वेग से दौड़ कर अपने मरण के लिये जलती हुई अग्नि में प्रवेश कर जाते हैं, उसी प्रकार यह सम्पूर्ण लोक अपने अपने मरण ही के लिये बड़े वेग से आपके मुख में प्रवेश कर रहे हैं ॥ २९ ॥

हे विष्णो ! आप भी मानों समस्त लोकों के ग्रास करने की अभिलाषा से प्रकाशमान् मुख के फैला कर, तेज के द्वारा सब जगत् के व्याप्त कर के, वीरों के भक्षण कर रहे हैं ॥ ३० ॥

ऐसी उग्र मूर्ति धारण करने वाले आप कौन हैं, सो मुझे बतला दीजिये। हे देवश्रेष्ठ ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप प्रसन्न हूजिये। सर्वकारण स्वरूप आपके जानने की मेरी अत्यन्त ही इच्छा है। क्योंकि आपकी चेष्टा और चरित्र मेरे जानने में नहीं आते हैं ॥ ३१ ॥

यह सुन कर भगवान् बोले—मैं त्रिलोकी का क्षय करने वाला साक्षात् काल स्वरूप हूँ, मैं दुर्योधनादि प्राणियों का सँहार करने के लिये उद्यत हुआ

हैं, तुम युद्ध न करोगे ते। तुम्हारे शत्रुदल में जो योद्धा खड़े हैं उनमें से कोई भी जीवित न रहेगा ॥ ३२ ॥

इस कारण तुम युद्ध करने के लिये खड़े हो जाओ, विजय और यश पाओ तथा शत्रुओं को जीत कर, निष्कण्टक राज्य को भोगो। हे अर्जुन! देख लो, तुम्हारे युद्ध करने से पहिले ही मैंने तुम्हारे शत्रुओं का सँहार कर रखा है, तुम केवल निमित्तमात्र बन जाओ ॥ ३३ ॥

द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, जयद्रथ, कर्ण तथा और वीरों का भी वास्तव में तो मैंने ही वध कर दिया है, तुम बाहरी दृष्टि से इनका वध करो। भय न मानो, तुम रण में शत्रुओं को अवश्य जीतोगे, इस कारण युद्ध करो ॥ ३४ ॥

किरीटी अर्जुन, भगवान् के इस कथन को सुन हाथ जोड़ और काँपते हुए प्रणाम कर के, फिर भी भगवान् से गद्गद् कण्ठ से ये वचन कहने लगे ॥३५॥

अर्जुन बोले—हे हृशीकेश! आपके माहात्म्य का कीर्त्तन कर के सम्पूर्ण जगत् परम हर्ष और प्रसन्नता को प्राप्त होता है। सिद्ध महात्मा पुरुष आपको नमस्कार करते हैं। राक्षस भयभीत हो कर, दिशाओं को भागते हैं, सो उचित ही है ॥ ३६ ॥

हे महात्मन्! हे देवेश! हे अनन्त! हे जगन्निवास! आप ब्रह्मा जी के रचयिता हैं। आपको देवगण क्यों न नमस्कार करें। आप सदा एक रूप में रहने वाले हैं। आप सत्त (जगत् के कारण रूप) और आप ही असत् (जगत् रूप) हैं और आप ही इन दोनों से परे, अव्यय ब्रह्मरूप हैं ॥३७॥

हे अनन्तरूप! आप ही आदिदेव हैं, आप ही पुराणपुरुष हैं, आप ही इस संसार के लयस्थान हैं, आप सर्वज्ञ हैं, आप ही जानने योग्य वस्तु हैं, आप ही परम धाम और आप ही विश्व में सर्वत्र व्याप्त हैं ॥ ३८ ॥

वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजापति और प्रपितामह रूप सब देवता भी आप ही हैं। इस कारण आपको सहस्रों नमस्कार हैं और फिर भी आपको बारंबार नमस्कार है ॥ ३९ ॥

हे सर्वरूप ! मैं आपके सन्मुख आपके पीछे और आपके चारों ओर आपको नमस्कार करता हूँ। हे अनन्तवीर्य ! आप परम पराक्रमी हैं और आप जगत में सर्वत्र विद्यमान हैं। इस कारण आपका "सर्व" नाम हुआ है ॥ ४० ॥

हे भगवन् ! आपके इस विश्वरूप और ऐश्वर्य की महिमा को न जान कर और प्रमाद से आपको सखा मान कर, हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखे ! इस प्रकार की लौकिक बुद्धि से जो कुछ हठ पूर्वक मैंने कहा है, हे अच्युत ! आपके विहार, शयन, बैठने और भोजन करने के समय अथवा एकाकी बैठे होने पर तथा अपने बान्धवों के मध्य में बैठे होने के समय, मैंने हास्य के मिस से भी आपकी जो कुछ अवज्ञा की है, उसको क्षमा करने की मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

हे अनुपम प्रभावशालिन् ! इस सम्पूर्ण चराचर त्रिलोकी के पिता पूजनीय गुरु और गुरु के भी गुरु आप ही हैं, त्रिलोक भर में आपके समान कोई नहीं है, न आपसे श्रेष्ठ कोई हो सकता है ॥ ४३ ॥

इस कारण आपको सब का वन्दना करने योग्य ईश्वर जान कर, मैं दण्डवत प्रणाम करता हुआ, आपको प्रसन्न करता हूँ। जिस प्रकार पुत्र के अपराध को पिता, मित्र के अपराध को मित्र और स्त्री के अपराध को पति क्षमा करता है, उसी प्रकार आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये ॥ ४४ ॥

हे देव ! आपके इसके पहले कभी न देखे हुए इस रूप को देख कर, यद्यपि मैं प्रसन्न हुआ हूँ; तथापि भय के कारण मेरा मन व्याकुल हो रहा है। इस कारण हे जगन्निवास ! हे देवेश ! अब आप अपने पहले ही मनोहर रूप का दर्शन दीजिये और मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये ॥ ४५ ॥

मैंने जैसे आपको पहिले देखा था, वैसे ही किरीटधारी और गदा तथा चक्र को हाथ में लेने वाले आपके पहले रूप को देखने की मुझे इच्छा है। हे सहस्रबाहो ! हे विश्वमूर्त्ते ! इस समय आप उस चतुर्भुजी मूर्त्ति ही को धारण कीजिये ॥ ४६ ॥

यह सुन कर भगवान् बोले—हे अर्जुन ! तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हो कर ही मैंने योगबल से यह तेजोमय सर्वोत्तम अपना आदिरूप तुम्हें दिखलाया है। मेरे इस रूप को तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं देख सका है ॥ ४७ ॥

हे कुरुप्रवीर ! मनुष्य-लोक में वेदपाठ, यज्ञानुष्ठान, अथवा यथेष्ठ दान, धर्म कर्म और अति उग्र तपस्या करने से भी, तुम्हारे सिवाय दूसरा प्राणी मेरे इस रूप को देखने को समर्थ नहीं है ॥ ४८ ॥

हे अर्जुन ! तुम मेरे इस घोर रूप का दर्शन कर के व्यथित मत हो, तुम निर्भय और प्रसन्न चित्त हो कर मेरे उस पूर्व रूप ही का फिर अच्छी तरह से दर्शन करो ॥ ४९ ॥

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से इस प्रकार कह कर, फिर अपना पहला चतुर्भुजी रूप दिखलाया और उस सौम्य शरीर को धारण कर के भगवान् श्रीकृष्ण ने भयभीत अर्जुन को स्वस्थ किया ॥ ५० ॥

अर्जुन बोले—हे जनार्दन ! आपकी इस सौम्य मनुष्य मूर्त्ति का दर्शन कर के, मैं प्रसन्न चित्त और स्वस्थ हुआ हूँ ॥ ५१ ॥

भगवान् ने अर्जुन से कहा—तुमने मेरे जिस रूप का दर्शन किया, उस रूप का दर्शन होना परम दुर्लभ है। देवता सदा ही उस रूप के दर्शन की इच्छा किया करते हैं ॥ ५२ ॥

हे अर्जुन ! तुमने मेरे जिस विश्वरूप का दर्शन किया, उसका वेदाध्ययन, तपस्या, दान और अग्निहोत्रादि कर के भी कोई दर्शन नहीं कर सकता ॥ ५३ ॥

हे परन्तप ! जीव, केवल अनन्य भक्ति के द्वारा ही मेरे उस रूप के तत्व को जान सकता है तथा मेरे स्वरूप का दर्शन करने और मुझमें प्रवेश करने को समर्थ होता है ॥ ५४ ॥

हे पाण्डव ! जो पुरुष मेरे निमित्त अनुष्ठान करता है, मेरा शरणागत

और भक्त होता है, सब प्रकार की आसक्ति से रहित और सब प्राणियों में वैर भाव से रहित होता है, वह पुरुष ही मुझे प्राप्त होता है ॥ ५५ ॥

छत्तीसवाँ अध्याय

भक्तियोग

अर्जुन बोले—हे कृष्ण ! जो पुरुष, इस प्रकार निरन्तर भक्तियुक्त हो कर, आपके साकार रूप की उपासना करते हैं और जो पुरुष आपके अव्यय निर्गुण स्वरूप का ध्यान करते हैं, उन दोनों में श्रेष्ठ कौन है ? ॥ १ ॥

यह सुन कर भगवान् ने कहा—हे अर्जुन ! जो पुरुष एकाग्रचित्त और सात्विक श्रद्धायुक्त हो कर, मेरे सगुण स्वरूप की आराधना करते हैं, मेरे मत में वे ही लोग चतुर हैं ॥ २ ॥

जो सम्पूर्ण इन्द्रियों को रोक कर और सर्वत्र समदृष्टि रख कर तथा सब प्राणियों के हितकारी हो कर, वाणी से वर्णन करने में न आने वाले रूपादि रहित, सर्वव्यापी, नित्य, कूटस्थ, अचल और नित्य स्वरूप अविनाशी ब्रह्म का निरन्तर चिन्तवन करते हैं, वे मुझ निर्गुण स्वरूप को प्राप्त होते हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥

निर्गुण ब्रह्म में चित्त को लगाने वाले पुरुषों को अधिक क्लेश होता है, क्योंकि निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति देहाभिमानी को बड़े ही क्लेश से होती है ॥ ५ ॥

हे पार्थ ! जो पुरुष मुझे सम्पूर्ण कर्म समर्पण कर के और मुझमें परायण हो कर, अनन्य भक्तियोग के द्वारा केवल मेरी ही चिन्ता (ध्यान) और ध्यान किया करते हैं, मेरे में चित्त लगाने वाले उन पुरुषों को मैं मृत्यु से भरे संसार-समुद्र से शीघ्र ही उद्धार कर देता हूँ ॥ ६ ॥ ७ ॥

हे अर्जुन ! तुम मन और बुद्धि को मुझ परमेश्वर में लगाओ, तो मरण

होने पर मुझ शुद्ध ब्रह्म ही में अभेद भाव से स्थित होओगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ ८ ॥

हे अर्जुन ! यदि सगुण ब्रह्म में चित्त को स्थिर नहीं रख सकते हो, तो अभ्यास योग के द्वारा मुझे प्राप्त होने का यत्न करो ॥ ९ ॥

यदि तुम अभ्यास योग की साधना भी न कर सको तो, भगवान् के अर्थ, कर्म करने में तत्पर हो, मुझ परमेश्वर के निमित्त कर्म करने पर तुम ब्रह्ममात्र को प्राप्त हो जाओगे ॥ १० ॥

यदि भगवान् के निमित्तकर्मानुष्ठान करने में भी असमर्थ होओ, तो मेरे अनन्य शरण रूप योग को धारण करने वाले और स्वाधीन चित्त हो कर, सब कर्मों के फल को त्याग दो ॥ ११ ॥

हे अर्जुन ! अभ्यास योग से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से ध्यान और ध्यान से कर्मफल का त्याग श्रेष्ठ है, इस त्याग के अनन्तर ही मुक्तिरूपी शान्ति मिल जाती है ॥ १२ ॥

सम्पूर्ण प्राणियों में जिसका द्वेष भाव नहीं है ; किन्तु मित्रभाव और दयालुता है और जो ममता तथा अहङ्कार रहित है और जो सुख दुःख में समान रहता है और क्षमावान् है, जो सदा सन्तुष्ट रहता है, जिसका चित्त सावधान और वस में है, जिसका निश्चय दृढ़ है और जिसने अपने मन एवं बुद्धि को मेरे समर्पण कर दिया है, वह मेरी भक्ति करने वाला पुरुष ही मुझे प्रिय है ॥ १३ ॥ १४ ॥

जिससे प्राणी भय मान कर, व्याकुल नहीं होते हैं और अपने आप जो अन्य प्राणियों से भय मान कर, व्याकुल नहीं होता है और जिसने हर्ष, विषाद, भय और उद्वेग (चित्त का क्षोभ) को त्याग दिया है वही मेरा प्रिय है ॥ १५ ॥

स्वयं प्राप्त हुए पदार्थ में भी इच्छा न करने वाला, भीतरी बाहिरी शौच रखने वाला, आलस्य-रहित, उदासीन, व्यथा-रहित और सब प्रकार की आसक्तियों को त्यागने वाला जो मेरा भक्त है, वह ही मुझे प्रिय है ॥१६॥

जो प्रिय वस्तु को प्राप्त हो कर, प्रसन्न नहीं होता है और किसी से द्वेष नहीं करता है, जो प्रिय वस्तु के नष्ट होने पर शोक नहीं करता है, जो अप्राप्त वस्तु की आकांक्षा नहीं करता है और *पुण्य पाप त्याग देता है, वह भक्तिमान् पुरुष ही मेरा प्रिय है ॥ १७ ॥

जो शत्रु और मित्र में एक सी दृष्टि रखता है, मान और अपमान में एक सा रहता है, शीत उष्ण और सुख दुःख में जिसकी समान बुद्धि रहती है, जिसकी किसी पदार्थ में भी आसक्ति नहीं है, निन्दा और स्तुति दोनों में जो एक समान रहता है, जो मौन रहता है, जो जिस किसी प्रकार के भी अन्न वस्त्र के मिलने से सन्तुष्ट रहता है, जो नियम से एक ही स्थान पर रहता है और जिसकी बुद्धि स्थिर है, वह भक्तिमान् पुरुष ही मुझे प्रिय है ॥ १८ ॥ १९ ॥

जो पुरुष श्रद्धावान् और मेरे अनन्य शरणागत हो कर, इस कहे हुए धर्म रूपी अमृत का पान करते हैं—वे भक्तिमान् पुरुष मुझे अत्यन्त ही प्रिय हैं ॥ २० ॥

सैंतीसवाँ अध्याय

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-विज्ञान

भगवान् बोले—हे अर्जुन ! यह शरीर क्षेत्र कहलाता है और इस क्षेत्र को जानने वाला क्षेत्रज्ञ नाम से प्रसिद्ध है। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ इन दोनों को जो जानते हैं, उनका ही ऐसा कथन है ॥ १ ॥

हे अर्जुन ! तुम अद्वितीय ब्रह्म रूप मुझको सर्वक्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ रूप

* पाप को तो स्वरूप से ही त्यागना चाहिये किन्तु पुण्य को नहीं। पुण्य प्रदकर्मों को अवश्य करे; किन्तु पुण्य के फल को त्याग दे यही इसका यथार्थ भाव है।

जानो । क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ इन दोनों को जो पृथक् जानता है, मैं उसीको मोक्ष का हेतु होने के कारण ठीक ज्ञानी मानता हूँ ॥ २ ॥

यह शरीर रूपी क्षेत्र जैसी प्रकृति वाला है, जैसे इच्छादि धर्म वाला है, जैसे इन्द्रियादि विकारों कर के युक्त है, उस क्षेत्र रूपी कारण से जिस प्रकार कार्य उत्पन्न होता है और क्षेत्रज्ञ का जैसा स्वभाव और प्रभाव है, इन सब को मैं संक्षेप से कहता हूँ, तुम सुनो ॥ ३ ॥

इस क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के स्वरूप को वसिष्ठादि ऋषियों ने अनेक प्रकार से वर्णन किया है । ऋगादि वेदों में भी इस विषय पर भिन्न भिन्न रीति से व्याख्या की गयी है । युक्तियों के द्वारा विचार करने वाले पुरुष, पदार्थों का निश्चय करने वाले पुरुष और सम्पूर्ण उपनिषद् इस विषय का अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं ॥ ४ ॥

पञ्चमहाभूत, अहङ्कार, बुद्धि, मूलप्रकृति, श्रोत्रादि दस इन्द्रियाँ ; मन श्रोत्रादि के गन्धादि पाँच विषय ; इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, शरीर, ज्ञान रूपी मन की वृत्ति और धृति संक्षेप से इतने पदार्थ विकार युक्त हैं और इन्हींको क्षेत्र कहा है ॥ ५ ॥ ६ ॥

अपने गुणों की प्रशंसा न करना, दम्भ न करना, किसी को पीड़ा न पहुँचाना, सहनशील होना, सरल होना, भीतर बाहर शौच रखना, केवल सन्मार्ग ही में चलना और मन को वस में रखना, इसको ज्ञान कहा है ॥ ७ ॥

श्रोत्रादि इन्द्रियों के विषयों के विषय में विरक्त रहना, अहङ्कार न करना और जन्म, मरण, जरा, व्याधि तथा दोषों का बारंबार विचार करना, इसीको ज्ञान कहते हैं ॥ ८ ॥

पुत्र स्त्री गृहादि पदार्थों में आसक्ति न करना, पुत्रादि के सुख दुःख से अपने को सुखी और दुःखी न मानना, प्रिय अप्रिय और प्राप्ति में सदा समान चित्त रहना, इसीको ज्ञान कहते हैं ॥ ९ ॥

मुझ परमात्मा में सर्वात्म-दृष्टि से एकान्त भक्ति करना, निर्जन स्थान में

रहना, विषयी पुरुषों के संसर्ग से सदा बचे रहना, यह ज्ञान कहलाता है ॥ १० ॥

आध्यात्मिक ज्ञान में निष्ठा रखना, तत्वज्ञान की प्राप्ति के निमित्त विचार करना यह ज्ञान कहलाता है। यहाँ पर्यन्त जो ज्ञान के लक्षण कहे, उनसे विपरीत (उलटा) अज्ञान कहलाता है ॥ ११ ॥

हे अर्जुन ! इस समय मुमुक्षु पुरुषों के जानने योग्य वस्तु के विषय में मैं तुमसे कहता हूँ, जिसको जान कर जीव मोक्ष को पाता है, वह अनादि परब्रह्म न सत् कहा जा सकता है न असत् कहा जा सकता है ॥ १२ ॥

सर्वत्र जिसके हाथ पैर हैं, सर्वत्र जिसके नेत्र मस्तक और मुख हैं, सर्वत्र जिसके कान हैं और जो सम्पूर्ण चेतन अचेतन पदार्थों में व्याप्त हो कर स्थित है ॥ १३ ॥

वह सब इन्द्रियों के गुणों में असमान है, वह सब प्रकार के सम्बन्ध से रहित हो कर भी सब पदार्थों को धारण कर रहा है और वह सत्वादि गुणों करके रहित तथा उन गुणों का भोक्ता है ॥ १४ ॥

वह सब वस्तुओं के बाहिर और भीतर है, स्थावर और जङ्गम में भी वही है, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म होने के कारण वह जानने में नहीं आता है, वह दूर से भी अति दूर है, और समीप से भी अति समीप है ॥ १५ ॥

वह सब प्राणियों से अभिन्न हो कर भी भिन्न रूप से स्थित है, वह सब प्राणियों का उत्पन्न करने वाला, पालन करने वाला और संहार करने वाला है ॥ १६ ।

वह सूर्य्यादि प्रकाशों का प्रकाश्य स्वरूप है और अज्ञान से परे है। वह ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञानगम्य है और वह सब के हृदय में बुद्धिरूप से स्थित है ॥ १७ ॥

हे अर्जुन ! मैंने इस प्रकार तुमसे क्षेत्र, ज्ञान और ज्ञेय का संक्षेप से वर्णन किया, मेरा भक्त इन क्षेत्रादि तीनों पदार्थों को जान कर, ब्रह्मतत्व रूपी मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

प्रकृति और पुरुष ये दोनों अनादि हैं, तुम सम्पूर्ण विकार और गुणों को प्रकृति से उत्पन्न हुआ जानो ॥ १६ ॥

प्रकृति ही शरीर और इन्द्रियों का मूल है और पुरुष सुख दुःख के भोग का कारण कहलाता है ॥ २० ॥

वह क्षेत्रज्ञ पुरुष (जीव) प्रकृति के कार्य शरीर में तदात्म्य रूप से स्थिर हो कर उस प्रकृति से उत्पन्न होने वाले सुख दुःखादि को भोगता है। त्रिगुणात्मिका प्रकृति के तदात्म्य सम्बन्ध होने के लिये ही सत् और असत् योनि में जन्म लेना होता है ॥ २१ ॥

इस देह में स्थित हो कर भी वह शरीरादि से भिन्न है। क्योंकि वह साक्षी, अनुग्रह, पालन करने वाला और ब्रह्मादिकों का स्वामी है तथा श्रुति में उसको परमात्मा कहा है ॥ २२ ॥

जो पुरुष इस प्रकार के स्वरूप वाले पुरुष को और विकारादि गुणों सहित प्रकृति को जानता है, वह विधि वाक्यों का उल्लङ्घन करने पर भी पुनर्जन्म को प्राप्त न हो कर, मुक्ति ही को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

कोई ध्यान कर के देह ही में मन से आत्मा का दर्शन करते हैं कोई सांख्य अर्थात् प्रकृति पुरुष की भिन्नता का विचार रूप योग के द्वारा तथा कोई कर्मयोग के द्वारा उस परमात्मा का दर्शन करते हैं ॥ २४ ॥

हे अर्जुन! कोई कोई इन कहे हुए उपायों से मेरा दर्शन करने में असमर्थ हो कर, गुरु के पास उपदेश सुनते सुनते मृत्युमय संसार को तर जाते हैं ॥ २५ ॥

हे अर्जुन ! जो कुछ स्थावर जङ्गम पदार्थ उत्पन्न होते हैं, वे सब क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के योग से उत्पन्न होते हैं, ऐसा जानो ॥ २६ ॥

जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में समान रूप से स्थित और सर्वभूतों का नाश होने पर भी नाश को प्राप्त न होने वाले परमात्मा का दर्शन करता है, वही तत्व का जानने वाला है ॥ २७ ॥

यदि विद्वान् पुरुष, सर्वभूतों में समान और समभाव में स्थित ईश्वर रूप परमात्मा का दर्शन कर के आत्मा का हनन नहीं करता है, तो वह परमगति मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

सम्पूर्ण कार्यों को प्रकृति (माया) ही करती है, आत्मा नहीं करता है। ऐसा जो देखते हैं, वे ही यथार्थ द्रष्टा हैं ॥ २९ ॥

जिस समय साधक पुरुष सम्पूर्ण भूतों को भिन्न भिन्न रूप से एक आत्मा में स्थित और एक आत्मा ही से सम्पूर्ण भूतों के विस्तार को प्राप्त हुआ देखता है, उस समय वह ब्रह्म स्वरूप हो जाता है ॥ ३० ॥

हे अर्जुन! अनादि और निर्गुण होने के कारण वह परमात्मा निर्विकार है, वह शरीर में स्थित रह कर भी कुछ कर्म नहीं करता है और न कर्मफल में लिप्त होता है ॥ ३१ ॥

जिस प्रकार सर्वव्यापी आकाश सब पदार्थों में स्थित हो कर भी असङ्ग स्वभाव वाला होने के कारण किसी भी वस्तु के साथ लिप्त नहीं होता है, उसी प्रकार आत्मा भी देह में रह कर, देह के दोषों तथा गुणों में लिप्त नहीं होता है ॥ ३२ ॥

हे अर्जुन! जिस प्रकार सूर्य इस सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार क्षेत्रज्ञ आत्मा सम्पूर्ण क्षेत्र रूप शरीरों को प्रकाशित कर रहा है ॥ ३३ ॥

जो इस प्रकार ज्ञान रूप चक्षु से क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ को भिन्न रूप से जानते हैं और कारण रूप माया से सर्वभूतों के घटने के उपाय रूप ध्यानादि को जानते हैं, वे परमपद अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥ ३४ ॥

अड़तीसवाँ अध्याय

सत्त्व, रज, तम का वर्णन

भगवान् ने कहा—सम्पूर्ण मुनि, जिस ज्ञान को प्राप्त हो कर, इस

देह-बन्धन से छूट कर, मोक्ष रूपी परम सिद्धि को प्राप्त हो गये ; हे अर्जुन ! अब मैं तुमसे उस सर्वोत्तम ज्ञान के साधन का विषय कहता हूँ ॥ १ ॥

साधक पुरुष, इस ज्ञान का साधन कर के मेरे स्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं और वे सृष्टिकाल में जन्म तथा प्रलयकाल में मरण को नहीं प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥

हे अर्जुन ! *महद्-ब्रह्म मेरी योनि (गर्भाधान-स्थान) है और इसमें मैं गर्भ (जगत् विस्तार के हेतु स्वरूप चिदाभास) निक्षेप करता हूँ। उसमें ब्रह्मादि भूतों की उत्पत्ति होती है ॥ ३ ॥

हे अर्जुन ! देवादि सम्पूर्ण योनियों में जो शरीर उत्पन्न होते हैं, माया ही उन सब की माता रूप है और गर्भाधान करने वाला मैं उनका पिता रूप हूँ ॥ ४ ॥

हे अर्जुन ! सत्त्व रज और तम—ये प्रकृति से उत्पन्न होने वाले तीन गुण अविनाशी जीवात्मा को देह में बाँध रखते हैं ॥ ५ ॥

हे सब प्रकार के व्यसनों कर के रहित अर्जुन ! इन तीनों गुणों में निर्मल होने के कारण ज्ञान का प्रकाशक और शान्त सत्त्व गुण, सुख और ज्ञान के साथ से जीव को बाँध रखता है ॥ ६ ॥

रजोगुण अनुराग रूप है उससे अप्राप्त वस्तु की अभिलाषा और प्राप्त वस्तु में प्रीति उत्पन्न होती है। इसका कारण हे अर्जुन ! यह है कि, रजोगुण जीव को धन जन स्वर्गादि के निमित्त किये जाने वाले कर्मों में आसक्ति से जीव को बाँध रखता है ॥ ७ ॥

हे अर्जुन ! तमोगुण को अज्ञान से उत्पन्न होने वाला सम्पूर्ण शरीर-धारियों को भ्रान्ति में डालने वाला जानो, यह प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा जीव को बाँध रखता है ॥ ८ ॥

हे अर्जुन ! सत्त्वगुण जीव को सुख में आसक्त और रजोगुण कर्म में आसक्त तथा तमोगुण ज्ञान को ढक कर, प्रमाद-युक्त कर देता है ॥ ९ ॥

---

* महद्-ब्रह्म शब्द यहाँ पर प्रकृति वाचक है।

हे अर्जुन ! जिस समय रजोगुण और तमोगुण को दबा कर, सत्वगुण प्रबल होता है और जिस समय रजोगुण और सत्वगुण को दवा कर, तमोगुण प्रबल होता है तथा जिस समय तमोगुण और सत्वगुण को दबा कर, रजोगुण प्रबल होता है, उस समय यह सत्वादिगुण अपने अपने कार्य को करते हैं ॥ १० ॥

जिस समय इस देह के श्रोत्रादि इन्द्रिय रूप सब द्वारों में ज्ञान रूप प्रकाश उत्पन्न हो ; उस समय जाने कि सत्वगुण बढ़ा है ॥ ११ ॥

हे अर्जुन ! रजोगुण की वृद्धि होने से लोभ में प्रवृत्ति, कर्म का आरम्भ, सङ्कल्पों की परम्परा रूप अशान्ति और अन्य की वस्तु के लेने की इच्छा आदि लक्षण प्रकट होते हैं ॥ १२ ॥

हे कुरुनन्दन ! तमोगुण की वृद्धि होने पर विवेक-हीनता, उद्योग-हीनता, प्रमाद और मोह आदि लक्षण प्रकट होते हैं ॥ १३ ॥

यदि देहाभिमानी जीव, सत्वगुण की वृद्धि होने के समय मृत्यु को प्राप्त हो, तो वह हिरण्यगर्भादि के उपासकों के प्रकाशमय लोकों को प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

यदि रजोगुण की वृद्धि होने के समय देहाभिमानी जीव की मृत्यु हो जाय, तो वह कर्म की अधिकारिणी मनुष्य-योनि को प्राप्त होता है और यदि तमोगुण की वृद्धि के समय मरण हो, तो पशुआदि की योनियों में उत्पन्न होना पड़ता है ॥ १५ ॥

सात्विक कर्म का फल निर्मल सुख, रजोगुण प्रधान कर्म का फल दुःख और तामस कर्म का फल अज्ञान है, ऐसा प्राचीन महर्षि कहते हैं ॥ १६ ॥

सत्वगुण से ज्ञान, रजोगुण से लोभ और तमोगुण से प्रमाद तथा मोह उत्पन्न होता है ॥ १७ ॥

सत्वगुणी पुरुष ऊर्द्धलोक को जाते हैं, रजोगुणी पुरुष मनुष्यलोक में रहते हैं और तमोगुणी पुरुष अधोलोकों को प्राप्त होते हैं ॥ १८ ॥

जिस समय जीव विवेकी हो कर, सत्वादि गुणों से अन्य को कर्त्ता नहीं मानता है और आत्मा को सत्वादि गुणों से परे मानता है, उस समय वह ब्रह्म को प्राप्त होता है ॥ १९ ॥

देह की उत्पत्ति के बीज रूप सत्वादि तीनों गुणों को अतिक्रमण कर के जीव, जन्म, मरण, जरा तथा दुःखों से छूट कर परमानन्द रूप मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ २० ॥

यह सुन कर अर्जुन कहने लगे—हे प्रभो! जो इन तीनों गुणों को अतिक्रमण कर लेता है; उसके कौन चिन्ह हैं? अर्थात् किन किन लक्षणों को देख कर, निश्चय किया जाय कि, यह जीव त्रिगुणातीत है और उसका आचार कैसा होता है तथा वह किस प्रकार इन तीनों गुणों को अतिक्रमण करता है ॥ २१ ॥

यह सुन कर भगवान् बोले—हे अर्जुन! सत्वगुण के कार्य ज्ञान, रजोगुण के कार्य रूपी कर्मों में प्रवृत्ति और तमोगुण कार्य रूपी मोह के उदय होने पर, जो किसी समय द्वेष नहीं करता है और उनकी निवृत्ति के लिये इच्छा नहीं करता है, वही गुणातीत पुरुष है ॥ २२ ॥

जो उदासीन के समान स्थित रहता है; जिसको सत्वादि गुण चलायमान नहीं कर सकते हैं, सत्वादि गुण ही अपने कार्यों को कर रहे हैं, उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसा जान कर जो धीरता पूर्वक मौन रहता है, चलायमान नहीं होता है, वह गुणातीत कहलाता है ॥ २३ ॥

जिसको सुख दुःख दोनों एक समान हैं, जो आत्मस्वरूप में लवलीन है, जो मिट्टी का ढेला, पत्थर और सुवर्ण को एक समान जानता है, जो धैर्यवान् है, जो प्रिय और अप्रिय दोनों प्रकार के पदार्थों में एक सी दृष्टि रखता है और जो अपनी प्रशंसा से प्रसन्न और निन्दा से खिन्न न हो कर, एक समान रहता है, वह पुरुष ही गुणातीत है ॥ २४ ॥

जो मान और अपमान को समान जानता है, जो मित्र और शत्रु दोनों

में एक सी दृष्टि रखता है और जिसने सब प्रकार के कर्मों को त्याग दिया है, वही गुणातीत कहलाता है ॥ २५ ॥

जो अनन्य भक्ति से मेरी सेवा करता है वह मेरा भक्त ही तीनों गुणों को उल्लङ्घन कर के ब्रह्म को प्राप्त होने में समर्थ होता है ॥ २६ ॥

जिस प्रकार राशिभूत प्रकाश ही सूर्यमण्डल है, उसी प्रकार मैं ही घनीभूत ब्रह्म की प्रतिमा हूँ, नित्यमुक्त होने के कारण मैं ही अव्यय मोक्ष की प्रतिमा हूँ। शुद्धसत्व रूप होने के कारण मैं ही मोक्ष की, साधन रूपी सनातन धर्म की मूर्त्ति हूँ। परमानन्द स्वरूप होने के कारण मैं ही अखण्ड सुख की प्रतिमा हूँ। इस कारण मेरे सेवक निस्सन्देह मेरे स्वरूप को प्राप्त होते हैं ॥ २७ ॥

उनतालीसवाँ अध्याय

पुरुषोत्तम-योग

श्रीभगवान् कहने लगे—इस संसार को पीपल का वृक्ष समझो। उस वृक्ष की जड़ ऊपर (पुरुषोत्तम) और शाखा नीचे (हिरण्यगर्भादि) है, यह अविनाशी है और कर्म-काण्ड रूपी वेद इसके पत्ते हैं। इस संसार रूपी वृक्ष को जो जानता है—वह ही वेदवेत्ता है ॥ १ ॥

इस संसार रूपी वृक्ष की शाखा नीचे और ऊपर फैली हुई हैं, सत्वादि गुणों से यह वृक्ष बढ़ता है, शब्दादि विषय उस वृक्ष के नवीन पत्ते हैं, जिसकी वासना रूपी जड़ें नीचे और ऊपर फैली हुई हैं। यह वासना ही मनुष्य के शरीर में पुण्य पाप को उत्पन्न करती हैं ॥ २ ॥

इस संसार में वास करने वाले प्राणी, इस वृक्ष का रूप, आदि, मध्य, अन्त नहीं जानते। तीव्र वैराग्य रूपी शस्त्र से इस दृढ़-मूल वाले संसार रूपी अश्वत्थ वृक्ष को काट कर, इसके मूल रूपी उस वस्तु (ब्रह्म) को ढूँढ़ना

चाहिये—जिसको पा कर प्राणियों का पुनर्जन्म नहीं होता है; जिसके द्वारा इस संसार की प्रवृत्ति का फैलाव हो रहा है, मैं उसी आदिपुरुष के शरणागत हूँ—ऐसा कह कर उसको ढूँढना चाहिये ॥ ३ ॥ ४ ॥

जो अहङ्कार और भ्रान्ति रहित है, जो आसक्ति रहित और परमात्मा के विचार में तत्पर है, जिसको किसी कर्म का निषेध नहीं है, जो सुख, दुःख, शीत, उष्ण आदि द्वन्द्वों से रहित हो गये हैं, वे ज्ञानी पुरुष अव्ययपद (मक्ष) को प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

जिस पद के मिल जानें पर योगी पुरुष फिर नहीं लौटते हैं, उस पद को सूर्य चन्द्रमा और अग्नि प्रकाशित नहीं कर सकते हैं, वह स्वप्रकाश पद ही मेरा सर्वोत्तम धाम है ॥ ६ ॥

इस संसार में सनातन जीव मेरा ही अंश है, यह जीव सुषुप्ति और प्रलय काल में प्रकृति में लीन हो कर स्थित हुई पाँच इन्द्रियों और छठवें मन को खींचता है ॥ ७ ॥

जिस प्रकार वायु चलते समय पुष्पादि से गन्ध ले जाता है, उसी प्रकार जीवात्मा एक शरीर से निकल कर, दूसरे शरीर में जाते समय पाँचों इन्द्रियों सहित मन को साथ ले जाता है ॥ ८ ॥

जीवात्मा कर्ण, नेत्र, नासिका, जिह्वा और त्वचा—इन सहित मन का आश्रय कर के शब्दादि विषयों को भोगता है। एक शरीर से दूसरे शरीर में जाते हुए अथवा उसी शरीर में स्थित अथवा विषयों को भोगते हुए अथवा इन्द्रियादि युक्त आत्मा को मूढ़ पुरुष नहीं देख सकते हैं; ज्ञानचक्षु महात्मा ही उस आत्मा का दर्शन करते हैं ॥ ९ ॥ १० ॥

योगी पुरुष, ध्यानादि द्वारा प्रयत्न कर के अपने अपने शरीर में स्थित आत्मा का दर्शन करते हैं, परन्तु मलिन चित्त अविवेकी पुरुष, यत्न कर के भी उस आत्मा का दर्शन नहीं कर सकते हैं ॥ ११ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि का जो तेज सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है उस तेज को मेरा ही स्वरूप जानो ॥ १२ ॥

मैं अपने प्रभाव से पृथिवी को दृढ़ कर के सम्पूर्ण प्राणियों को धारण कर रहा हूँ और सब प्रकार के रस युक्त, सोम रूप हो कर औषधियों को मैं ही पुष्ट करता हूँ ॥ १३ ॥

मैं जठराग्नि रूप से सब प्राणियों के शरीरों में स्थित हो कर, प्राण, अपान वायु के द्वारा प्रज्वलित हो कर, चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय—चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ ॥ १४ ॥

मैं ही सब प्राणियों के हृदय में जीवात्मा रूप से प्रवेश करता हूँ, तब मुझसे स्मृति और ज्ञान का उदय होता है और फिर मेरे द्वारा ही उस स्मृति और ज्ञान का नाश भी होता है। सब वेदों के द्वारा उस उस देवता रूप से, मैं ही जाना जाता हूँ, सब लोकों को वेदान्त सम्बन्धी उपदेश व ज्ञान देने वाला और वेद के ठीक ठीक अर्थ को जानने वाला भी मैं ही हूँ ॥ १५ ॥

क्षर और अक्षर ये दो पुरुष इस लोक में प्रसिद्ध हैं ; कार्य रूप सकल भूत क्षर और कारण रूप माया अक्षर कहलाती है ॥ १६ ॥

और परमोत्तम चैतन्य रूप पुरुष, क्षर और अक्षर उन दोनों से भिन्न है ; उसको 'परमात्मा' कहते हैं। वह त्रिलोकी में प्रवेश कर के सब का प्रतिपालन करता है। वह निर्विकार ईश्वर है ॥ १७ ॥

मैं क्षर से और अक्षर से परमोत्तम हूँ, इस कारण ही लोक और वेद में मेरा पुरुषोत्तम नाम प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥

हे अर्जुन ! जो इस प्रकार मोह रहित चित्त वाला हो कर मुझे पुरुषोत्तम रूप जानता है ; वह ही सर्वज्ञ है और वह ही भक्तियोग के द्वारा यथार्थ रूप से मेरी सेवा करता है ॥ १९ ॥

हे अर्जुन ! यह मैंने तुमसे सब शास्त्रों का गुप्त रहस्य कहा—इसको जान कर विवेकी पुरुष, आत्मज्ञानी और कृतकृत्य हो जाता है ॥ २० ॥

चालीसवाँ अध्याय

दैवी और आसुरी सम्पत्ति

श्रीभगवान् बोले—अभय, चित्त की शुद्धि, ज्ञानयोग में स्थिति, दान, इन्द्रियों का दमन, यज्ञ, तप, स्वाध्याय, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, दीनता, त्याग, शान्ति, परोक्ष में पराई निन्दा न करना, सब प्राणियों पर दया करना ; कोमलता, लज्जा, चपल न होना, तेज, क्षमा, धैर्य्य, शौच, अद्रोह, अभिमान न करना ये छब्बीस लक्षण दैवी अथवा सत्वगुणमयी प्रकृति वाले पुरुषों में पाये जाते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

हे अर्जुन ! जिनका जन्म पूर्व अशुभ कृत्यों के फलों से होता है—वे रजोगुणी होते हैं, और दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कर्कशपन और अज्ञानता आदि ऐसे पुरुषों की पहचान है ॥ ४ ॥

दैवी सम्पत्ति मोक्ष देने वाली है और आसुरी सम्पत्ति में पड़ कर पुरुष संसार के बन्धनों में पड़ जाता है। हे पाण्डव ! तुमने दैवी सम्पत्ति के साथ जन्मधारण किया है। इस कारण तुम शोक मत करो ॥ ५ ॥

इस जगत् में दैवी सृष्टि और आसुरी सृष्टि—ये दो प्रकार की भूतों की सृष्टियाँ होती हैं। हे अर्जुन ! दैवी सृष्टि के विषय में, मैं विस्तार पूर्वक कह चुका हूँ और अब आसुरी सृष्टि का जो वर्णन किया जाता है उसे सुनो ॥ ६ ॥

जो आसुरी प्रकृति के पुरुष होते हैं, उनको धर्माधर्म का ज्ञान नहीं होता है। इस कारण उनमें शौच नहीं होता है। आचार नहीं होता है ॥ ७ ॥

इस आसुरी प्रकृति के मनुष्य इस जगत् को असत्य, स्वाभाविक और ईश्वर के बिना ही स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न होने वाला और स्त्रियों पुरुषों की कामना ही है कारण जिसका ऐसा कहते हैं ॥ ८ ॥

ऐसी दृष्टि रखते वाले, मलिन चित्त और घोर कर्म करने वाले, अल्प बुद्धि पुरुष, संसार के नाश के लिये शत्रु रूप उत्पन्न होते हैं ॥ ९ ॥

कठिनाई से पूरी होने वाली कामनाओं से भरे हुए हृदय वाले, दम्भ मान और मद-युक्त तथा दुराग्रही हो कर अज्ञान के कारण अशुभ सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए, वेदविरुद्ध कर्म करने में प्रवृत्त होते हैं ॥१०॥

जो मरण पर्य्यन्त नाना प्रकार की चिन्ताओं में मग्न हो कर और शब्दादि विषय भोग के सुख को निश्चय रूप से परम पुरुपार्थ जानते हैं, वा आशा रूपी पाश में बँधे हुए और काम क्रोधादि में लवलीन हो कर विषय भोग के लिये अन्याय से धन छीनने की प्रायः चेष्टा करते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

आज यह धन मिला, यह मनोरथ मेरा शीघ्र सिद्ध होगा, यह धन मेरे घर में इकट्ठा है, यह आगे के वर्ष में और भी अधिक बढ़ जायगा, मैंने इस शत्रु को मार डाला, दूसरे शत्रु का नाश करूँगा, मैं ही सुखी हूँ, मैं ही धनाढ्य और कुलीन हूँ; मेरे समान दूसरा कोई नहीं है, मैं यज्ञ करूँगा, दान करूँगा, मैं आनन्द पाऊँगा, इस प्रकार के अज्ञान से मोहित, नाना प्रकार के दूषित सङ्कल्पों से अत्यन्त विक्षिप्त से हुए, मोह जाल में फँसे हुए, विषय भोग में अति आसक्त, आसुरी प्रकृति वाले पुरुप, अशुद्ध नरक कुण्ड में गिरते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

अपनी प्रशंसा करने वाले, नम्रता रहित, धन-मान-मद-युक्त आसुरी प्रकृति के पुरुष, बिना विधि ही के नाममात्र के यज्ञों को कर के दम्भ फैलाते हैं ॥ १७ ॥

अहङ्कार, बल, घमण्ड, काम और क्रोधादि के वश में हो कर, पर गुणों में दोष लगाने वाले, आसुरी प्रकृति के मनुष्य, अपने तथा औरों के शरीर में स्थित आत्मरूप मुझसे जो द्वेष करते हैं ॥ १८ ॥

वे क्रूर, नित्य अशुभ कर्म करने वाले, मनुष्यों में नीच, आसुरी प्रकृति वाले पुरुषों को मैं जन्म मृत्यु के मार्गों में डाल कर, निरन्तर अति क्रूर व्याघ्र, सर्पादि की योनियों ही में डाल देता हूँ ॥ १९ ॥

मूढ़ पुरुष, जन्म जन्म में आसुरी योनि को पा कर अज्ञान के कारण, मुझे प्राप्त न हो कर और भी अधोगति में गिरते हैं ॥ २० ॥

जीव की अधोगति के कारण रूप काम, क्रोध और लोभ—ये तीन नरक के द्वार रूप हैं। इनसे अवश्य दूर रहना चाहिये ॥ २१ ॥

हे अर्जुन ! नरक के द्वार रूप काम, क्रोध, लोभ, इन तीनों का त्याग करने पर मनुष्य, अपने कल्याण का साधन करता हुआ, परम गति को पाता है ॥ २२ ॥

जो पुरुष, शास्त्रीय विधि को त्याग कर अपने इच्छानुसार काम करता है, उसे तत्वज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। उसको इस लोक में सुख और मोक्ष रूप परम गति नहीं मिलती है ॥ २३ ॥

कार्य और अकार्य की व्यवस्था के विषय में शास्त्र ही तुम्हारे लिये प्रमाण हैं। इस कारण शास्त्र के अनुसार अपने अधिकार के अनुकूल शास्त्र की व्यवस्था को जान कर, करने योग्य कर्म में प्रवृत्त हो जाओ ॥ २४ ॥

इकतालीसवाँ अध्याय

गुणत्रय-भेद वर्णन

अर्जुन बोले—हे कृष्ण ! जो लोग शास्त्र की विधि को छोड़ कर, श्रद्धा पूर्वक यज्ञादि करते हैं, उनकी निष्ठा कैसी है—अर्थात् सात्विकी राजसी या तामसी कौन सी है ? ॥ १ ॥

श्रीकृष्ण ने कहा—देहाभिमानी पुरुषों की पूर्व संस्कार के अनुसार, सात्विकी, राजसी और तामसी तीन प्रकार के भेदानुसार तीन प्रकार की श्रद्धा होती है—उनका वर्णन सुनो ॥ २ ॥

हे अर्जुन ! प्राणी मात्र की श्रद्धा अपने अपने अन्तःकरण की वृत्ति के अनुसार होती है। यह पुरुष, श्रद्धामय है, इस कारण जिस पुरुष की जैसी श्रद्धा होती है, वह वैसा ही श्रद्धायुक्त होता है ॥ ३ ॥

जो देवताओं की पूजा करते हैं, वे सात्विक, जो यक्ष राक्षसों की पूजा करते हैं वे राजस और जो भूतादि की पूजा करते हैं वे तामस श्रद्धा वाले कहलाते हैं ॥ ४ ॥

जो शास्त्र की विधि को त्याग कर, घोर तपस्या करते हैं और दम्भ, अहङ्कार, काम, राग तथा बल युक्त होते हैं, वे शरीरस्थित भूतों को और अन्तर्यामी रूप से शरीर में स्थित मुझको भी खींचते हैं। उन विवेकहीन पुरुषों को निस्सन्देह आसुर जानो ॥ ५ ॥ ६ ॥

सब प्राणियों को तीन प्रकार का आदर प्रिय लगता है। उनके यज्ञ, तप, दान भी तीन ही प्रकार के होते हैं, उनके इस भेद को मैं कहता हूँ, सुनो। आयु, उत्साह, बल, आरोग्यता, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले रसीले चिकने दीर्घ काल तक रहने वाले और हृदय को प्रिय लगने वाले आहार सात्विक पुरुषों को प्रिय होते हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥

अति तीखे, खारे, निमकीन, अति गरम, तेज़, रूखे और दाहकारी तथा दुःख शोक, रोगादि को उत्पन्न करने वाले आहार रजोगुणी पुरुषों को प्रिय होते हैं ॥ ९ ॥

पहर भर के ठंढे हुए, रसहीन, दुर्गन्धि-युक्त, बासी, जूठे, और अपवित्र आहार तमोगुणी पुरुषों को प्रिय होते हैं ॥ १० ॥

फल की इच्छा को त्याग कर और अवश्य कर्त्तव्य जान कर, एकाग्रमन से, शास्त्रीय विधि के अनुसार जो यज्ञ किया जाता है, वह सात्विक होता है ॥ ११ ॥

हे भरतश्रेष्ठ ! स्वर्गादि फल की इच्छा से और अपना महत्त्व प्रसिद्ध होने के लिये जो यज्ञ किया जाता है, उसको राजस जानो ॥ १२ ॥

जो यज्ञ शास्त्र की विधि और अन्न के दान से हीन होता है, जिस यज्ञ में शास्त्रोक्त मंत्रों का प्रयोग नहीं होता है, दक्षिणा नहीं दी जाती है और श्रद्धा नहीं होती है, उसको तामस कहते हैं ॥ १३ ॥

देवता, ब्राह्मण और तत्वज्ञानी का पूजन, शौच, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा—यह शारीरिक तप कहलाता है ॥ १४ ॥

दूसरे के मन को दुःख न देने वाला सम्भाषण, सत्य, प्रिय और हितकारी वाक्य तथा वेदाभ्यास ; वाचिक तप कहलाता है ॥ १५ ॥

चित्त की प्रसन्नता सौम्यता, मौन रहना, मन को वश करना और अन्तःकरण की शुद्धि—यह मानसिक तप कहलाता है ॥ १६ ॥

फल की इच्छा रहित एकाग्र-चित्त पुरुष परम श्रद्धा के साथ पूर्वोक्त तीन प्रकार की तपस्याओं में से जिसका अनुष्ठान करे—वह सात्विक तपस्या कहलाती है ॥ १७ ॥

जो तपस्या अपना सत्कार, मान और पुजवाने के अभिप्राय से पाखण्ड सहित की जाती है—वह राजस कहलाती है राजसी तपस्या केवल इस लोक ही में फल देने वाली, अनित्य और क्षणिक होती है ॥ १८ ॥

अज्ञान से अपने शरीरादि को पीड़ा दे कर, अन्य प्राणी का नाश करने के निमित्त जो तपस्या की जाती है—वह तामसिक कहलाती है ॥ १९ ॥

दान अवश्य करना चाहिये ऐसे विश्वास से देश, काल और पात्र की उत्तमता का विचार कर के और प्रत्युपकार की आशा न कर, के जो दान दिया जाता है, वह सात्विक दान कहलाता है ॥ २० ॥

जो दान प्रत्युपकार की आशा से अथवा स्वर्गादि फल की इच्छा से दिया जाता है और जो दान क्लेश सह कर दिया जाता है, उसको राजसिक दान कहते हैं ॥ २१ ॥

जो दान अयोग्य देश, काल और पात्र में दिया जाता है, जो दान सत्कार-रहित होता है और जो दान तिरस्कार के साथ दिया जाता है, उसको तामसिक दान कहते हैं ॥ २२ ॥

"ओं तत्सत्" ब्रह्म के इन तीनों अवयव वाले नाम का स्मरण कर के इस सृष्टि की आदि में प्रजापति ने ब्राह्मण, वेद और यज्ञों को रचा ॥ २३ ॥

इस कारण ओंकार का उच्चारण कर के ब्रह्मवादी पुरुष शास्त्रोक्त यज्ञ, दान, तपस्या आदि क्रिया में प्रवृत्त होते हैं ॥ २४ ॥

मुमुक्षु पुरुष "तत्" शब्द का उच्चारण कर, फल की इच्छा रहित चित्त से नाना प्रकार के यज्ञ तप दानादि करते हैं ॥ २५ ॥

हे पार्थ ! सद्भाव अर्थात् जिसके पुत्र नहीं है, उसके पुत्र का जन्म होने के विषय में; जिसके धनादि नहीं है, उसके धनादि होने के विषय में और साधुभाव अर्थात् कुचाल से सुचाल करने के निमित्त, तथा विवाहादि मङ्गल कार्यों ही में "सत्" शब्द का उच्चारण करते हैं ॥ २६ ॥

महात्मा पुरुष यज्ञ तप और दान रूप कार्यों के समय तथा भगवान् की प्रसन्नता के निमित्त अनुष्ठान करते समय "सत्" शब्द का उच्चारण करते हैं ॥ २७ ॥

हे अर्जुन ! विना श्रद्धा के जो यज्ञ, दान और तप अथवा अन्य कोई कर्म किया जाता है, वह सब असत् कहाता है, श्रद्धा के विना किया हुआ कार्य; इस लोक में अथवा परलोक में भी फल नहीं देता (इस कारण सारे सत्कर्म श्रद्धायुक्त करे ।) ॥ २८ ॥

बयालीसवाँ अध्याय

अर्जुन के अज्ञान का तिरोभाव

अर्जुन कहने लगे—हे महाबाहो ! संन्यास और त्याग का तत्व (भेद) जानने की मेरी इच्छा है, आप कृपा कर कहिये ॥ १ ॥

श्रीकृष्ण ने कहा—तत्वज्ञानी पुरुष काम्य कर्मों के त्याग को "संन्यास" और पण्डित पुरुष सम्पूर्ण कर्मों के फल के त्याग ही को "त्याग" कहते हैं ॥ २ ॥

कोई कोई पण्डित ऐसा कहते हैं कि द्वेष के त्याग के समान कर्म को

भी त्याग देना चाहिये और कोई कहते हैं कि यज्ञ दान और तपोरूप कर्म को कदापि न त्यागना चाहिये ॥ ३ ॥

हे अर्जुन ! उस कर्म त्याग के विषय में मेरा निश्चय सुनो, हे पुरुषव्याघ्र ! त्याग तीन प्रकार का है ॥ ४ ॥

यज्ञ, दान और तपोरूप कर्म को न त्यागे, किन्तु इनको करे। क्योंकि यज्ञ, दान और तप ये मुमुक्षु पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं ॥ ५ ॥

हे अर्जुन ! पूर्वोक्त यज्ञ दानादि कर्म करने के समय कर्त्ता अपने अभिमान को और स्वर्गादि फल की कामना को त्याग कर करे, यह मेरा निश्चित श्रेष्ठ मत है ॥ ६ ॥

नित्य कर्म का तो कदापि त्याग न करना चाहिये, यदि अज्ञता-वश त्याग दे तो उस पुरुष का त्याग तामस कहलाता है ॥ ७ ॥

कर्मानुष्ठान को कष्टसाध्य मान कर कायिक क्लेश के भय से जो नित्य कर्म को त्याग देता है, उसका त्याग राजस कहलाता है, राजस त्याग से त्याग का फल नहीं मिलता है ॥ ८ ॥

जो पुरुष "अवश्य करना चाहिये" ऐसा जान कर नित्य कर्म को करता है और उस कर्म में आसक्ति तथा कर्मफल की इच्छा नहीं रखता है, उस पुरुष का त्याग सात्विक कहलाता है ॥ ९ ॥

सात्विक त्याग वाला पुरुष सतोगुणी, तत्वज्ञान में निष्ठा रखने वाला, मेधावी और सब प्रकार के संशयों से रहित होता है। उसका दुःखदायक कार्यों में द्वेष और प्रीतिकारक कार्यों में अनुराग नहीं होता है ॥ १० ॥

देहाभिमानी पुरुष, किसी समय भी सम्पूर्ण कर्मों को एक साथ नहीं त्याग सकता, इस कारण जो कर्म का त्यागने वाला है, वही त्यागी कहलाता है ॥ ११ ॥

त्याग न करने वाले पुरुष, मरण के अनन्तर अनिष्ट (नरक प्राप्ति रूप) इष्ट (देवत्व प्राप्ति रूप) और मिश्र (मनुष्यत्व की प्राप्ति रूप)—इन

तीन प्रकार के कर्मफलों को भोगते हैं और त्यागियों को इस फल की प्राप्ति न हो कर मोक्ष की प्राप्ति होती है ॥ १२ ॥

हे महाबाहो ! सब कर्मों की सिद्धि के लिये तत्वज्ञान कराने वाले, वेदान्त के सिद्धान्त के अनुसार जो पाँच कारण वर्णन किये गये हैं, तुम उन्हें मेरे कहने के अनुसार जानो ॥ १३ ॥

अधिष्ठान, (शरीर) तथा कर्त्ता (अहङ्कार) नाना प्रकार के कारण (नेत्रादि), नाना प्रकार की भिन्न भिन्न चेष्टा (प्राण अपानादि के व्यापार) और पाँचवाँ दैव—यह कर्म के पञ्चकरण हैं ॥ १४ ॥

मनुष्य शरीर, वाणी और मन के द्वारा धर्म वा अधर्म रूप जो कुछ कार्य करता है, उसके ये उपरोक्त पाँच हेतु हैं ॥ १५ ॥

ऐसा होने पर जो मूढ़ पुरुष, असङ्ग उदासीनात्मा को कर्त्ता रूप से देखता है, वह दुर्मति कदापि सम्यक् दर्शी नहीं हो सकता है ॥ १६ ॥

जो "मैं करता हूँ"—ऐसा अभिमान नहीं करता है, जिसकी बुद्धि कर्मों में आसक्त नहीं होती है, वह इन लोकों का हनन कर के भी नहीं हनन करता है और ऐसा करने से उनके फल को नहीं भोगता है ॥ १७ ॥

ज्ञान, ज्ञेय और परिज्ञता—ये कर्म के प्रवर्त्तक हैं और कारण, कर्म और कर्त्ता ये तीन कर्म के आश्रय हैं ॥ १८ ॥

साँख्य शास्त्र में ज्ञान, कर्म और कर्त्ता को सत्वादि गुणों के भेद से तीन प्रकार का कहा है, उनको मैं कहता हूँ । सुनो ॥ १९ ॥

जिस ज्ञान के द्वारा भिन्न भिन्न सब भूतों में सर्वव्यापक एक अव्यय सत्ता मात्र भाव (ब्रह्म) की प्राप्ति होती है, वह सात्विक ज्ञान है ॥ २० ॥

जिस ज्ञान के द्वारा देहादि सकल भूतों में भिन्न भिन्न पदार्थों का अनुभव होता है, उसको राजस् ज्ञान जानो, जिस ज्ञान में किसी एक ही पदार्थ में आत्मा की पूर्ण रूप से विद्यमानता का अनुभव होता है, वह युक्तिहीन अवास्तविक ज्ञान तामस ज्ञान कहलाता है ॥ २१ ॥ २२ ॥

कामना रहित पुरुष आसक्ति शून्य और राग क्रोधादि रहित हो कर जिस नित्यकर्म का अनुष्ठान करता है—वह सात्विक कर्म है ॥ २३ ॥

कामना और अहङ्कार युक्त पुरुष जिस कष्टसाध्य काम्य-कर्मों को करता है—ये काम्यकर्म राजस् कहलाते हैं ॥ २४ ॥

पीछे होने वाला शुभ अशुभ धन का नाश, हिंसा, पौरुष आदि का विचार न कर के अज्ञान से जिस कर्म का आरम्भ किया जाता है, वह तामस कर्म है ॥ २५ ॥

फल की कामना न करने वाला, अहङ्कार न करने वाला और धैर्य्य और उत्साहवान् तथा कार्य की सिद्धि और असिद्धि में चित्त को एक समान रखने वाला—कर्त्ता सात्विक कहलाता है ॥ २६ ॥

जो पुरुष विषयासक्त कर्मफल की इच्छा करने वाला, लोभी, हिंसा करने वाला, अपवित्र और कार्य की सिद्धि, असिद्धि में हर्ष शोक मनाने वाला है, वह तामस कर्त्ता कहलाता है ॥ २७ ॥

और जो पुरुष असावधान, अविवेकी, उद्धत, शठ, अन्य पुरुषों का अपमान करने वाला, आलसी, विषादयुक्त और दीर्घसूत्री है, उसको शास्त्र में तामस-कर्त्ता कहा है ॥ २८ ॥

हे अर्जुन ! सत्वादि गुणों के भेद से बुद्धि और धृति के तीन तीन भेद हैं, मैं उनको पूर्ण रीति से अलग अलग कहता हूँ, तुम सुनो ॥ २९ ॥

हे पार्थ ! जिस बुद्धि से प्रवृत्ति और निवृत्ति, कार्य अकार्य, भय और अभय, बन्धन और मुक्त जाने जाते हैं, उसको सात्विकबुद्धि कहते हैं ॥३०॥

हे अर्जुन ! जिस बुद्धि से धर्म और अधर्म, कार्य और अकार्य सन्दिग्ध रूप से जाना जाता है उसे राजसी बुद्धि कहते हैं ॥ ३१ ॥

हे अर्जुन ! जो बुद्धि अहङ्कार युक्त हो कर धर्म को अधर्म तथा सब प्रकार के विषयों को उलटा जानती है, वह तामसी बुद्धि है ॥ ३२ ॥

हे पार्थ ! जिस अन्य विषय को धारण न करने वाली धृति से मन, प्राण और इन्द्रियों की क्रिया-शक्ति को रोका जाय, वह सात्विक धृति है ॥ ३३ ॥

"मैं कर्त्ता हूँ"—इत्यादि अभिमान रखता हुआ कल्याण की इच्छा रख के मनुष्य, जिस धृति के द्वारा धर्म, अर्थ और काम को धारण करता है, वह राजसी धृति है ॥ ३४ ॥

दुर्बुद्धि पुरुष जिस धृति की सहायता से स्वप्न, भय, शोक, विषाद और मद का कभी भी त्याग नहीं करता है अर्थात् सदा इनमें आसक्त रहता है उसका नाम तामसी धृति है ॥ ३५ ॥

हे भरतर्षभ ! अब तुम मुझसे तीन प्रकार का सुख सुनो। अभ्यास के कारण जिस सुख में आसक्ति बढ़ती है, जिस सुख के प्राप्त होने पर दुःख का नाश हो जाता है, जो सुख पहले विष, परिणाम में अमृत के समान जान पड़ता है, जिस सुख से आत्मविषयक बुद्धि में विशदता होती है, वह ही सात्विक सुख कहलाता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

विषय के और इन्द्रियों के संयोग से जो सुख उत्पन्न होता है और जो सुख अमृत के समान और परिमाण में विष तुल्य प्रतीत होता है, वह राजस् सुख है ॥ ३८ ॥

और जो सुख प्रारम्भ और परिणाम दोनों में बुद्धि को मोहयुक्त करता है और निद्रा आलस्य से उत्पन्न होता है वह तामस सुख है ॥ ३९ ॥

पृथिवी में, स्वर्ग में, अथवा देवताओं में, ऐसा कोई पदार्थ नहीं है जिसमें प्रकृति से उत्पन्न हुए तीन गुण न हों ॥ ४० ॥

हे अर्जुन ! पूर्व जन्मों के संस्कारों से प्रकट हुए गुणों के अनुसार ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के कर्म भिन्न भिन्न हुए हैं ॥ ४१ ॥

शम, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता ये नौ ब्राह्मण के स्वाभाविक धर्म हैं ॥ ४२ ॥

सूरता, तेज, धृति, प्रवीणता, युद्ध से पीठ न फेरना, दान, स्वामित्व—ये कई एक क्षत्रियों के स्वाभाविक कर्म हैं ॥ ४३ ॥

खेती करना, गौ पालना और व्यापार करना, वैश्यों के तथा द्विजों की सेवा करना, शूद्र का स्वाभाविक कर्म है ॥ ४४ ॥

मनुष्य, अपने अपने कर्म में निष्ठा रखने पर, जिस प्रकार की सिद्धि पाता है, सो सुनो ॥ ४५ ॥

जिस ईश्वर ने आकाशादि सकल भूतों को रचा है, जो ईश्वर विश्व में सर्वत्र विद्यमान है, मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा उसका अर्चन कर के सिद्धि पाता है ॥ ४६ ॥

अच्छी तरह किये हुए परधर्म से, अपना धर्म कुछ कम भी हो सके तो भी वह श्रेष्ठ है, क्योंकि स्वाभाविक कर्म को करने से मनुष्य पाप का भागी नहीं होता है ॥ ४७ ॥

हे अर्जुन ! स्वाभाविक कर्म दोषयुक्त हो तो भी उसको न त्यागे, क्योंकि धुएँ से ढकी हुई अग्नि के समान साधारण रूप से सभी कर्म दोषयुक्त हैं ॥ ४८ ॥

जिसकी बुद्धि सर्वत्र आसक्त नहीं है, जिसने इन्द्रियों को जीत लिया है और जो स्पृहा रहित है वह पुरुष संन्यास के द्वारा परम नैष्कर्म्य सिद्धि को पाता है ॥ ४९ ॥

हे अर्जुन ! ऐसा सिद्ध पुरुष जिस प्रकार ब्रह्म का साक्षात्कार पाता है, उसको और उसकी परमज्ञान निष्ठा के विषय को मैं संक्षेप से कहता हूँ, सुनो ॥ ५० ॥

परमशुद्ध बुद्धि वाला, धैर्य्यपूर्वक मन को निश्चल कर के शब्दादि विषय और रागद्वेष को त्यागने वाला, एकान्त स्थान में निवास करने वाला, वाणी, मन और शरीर को वश में रखने वाला, नित्य ध्यान योग में तत्पर रहने वाला, वैराग्यवान्, अहङ्कार, बल, दर्प, काम, क्रोध और परिग्रह का त्यागने वाला, निर्मल और विक्षेप शून्य शान्त पुरुष ब्रह्म के साक्षात्कार का अधिकारी होता है ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

ब्रह्म में स्थित, प्रसन्नचित्त, शोक में न घबड़ाने वाला, स्पृहा शून्य और सब भूतों में समदृष्टि रखने वाला, पुरुष ही मेरी भक्ति को पाता है ॥५४॥

तदनन्तर उस भक्ति ही के भाव से मेरा सच्चिदानन्द स्वरूप तत्व रूप

से जाना जाता है और तदनन्तर वह भक्त पुरुष मुझ ही में प्रवेश करता है ॥ ५५ ॥

सम्पूर्ण कर्मों का अनुष्ठान कर के भी जो मेरी शरण में आता है, वह मेरे अनुग्रह से शाश्वत अव्यय पद को प्राप्त होता है ॥ ५६ ॥

हे अर्जुन ! तुम बुद्धि से सब कर्मों को मुझे समर्पण कर के मेरे विषय ही में चित्त लगाओ और बुद्धियोग से चित्त भी मुझ ही में समर्पण करो ॥ ५७ ॥

हे अर्जुन ! मुझे चित्त समर्पण करने पर मेरे अनुग्रह से दुस्तर सांसारिक दुःखादि से पार हो जाओगे और यदि अहङ्कार से मेरा कहना न मानोगे, तो तुम भ्रष्ट हो जाओगे ॥ ५८ ॥

यदि अहङ्कार के वशवर्त्ती हो कर "मैं किसी प्रकार भी युद्ध न करूँगा" ऐसा निश्चय करते हो, तो यह तुम्हारा विचार मिथ्या होगा—क्योंकि प्रकृति तुम्हें युद्ध में अवश्य ही प्रवृत्त करेगी ॥ ५९ ॥

हे अर्जुन ! मोहवश युद्ध करने में तुम प्रवृत्त नहीं होते हो ; किन्तु अन्त में स्वाभाविक क्षत्रिय प्रकृति के वशवर्ती हो तुम्हें अवश्य युद्ध करना ही पड़ेगा ॥ ६० ॥

भगवान् ! सब प्राणियों के हृदय में स्थित हो कर, यंत्र (कल) पर चढ़ी हुई कठपुतलियों के समान, उन सब को भ्रमाते हैं ॥ ६१ ॥

हे अर्जुन ! तुम सब प्रकार से उन भगवान् के शरणागत हो जाओ, उनके अनुग्रह से तुम्हें पूर्ण शान्ति और नित्य पद मिल जायगा ॥ ६२ ॥

हे अर्जुन ! मैंने तुमसे गुप्त आत्मज्ञान का विषय कहा—मेरी कही हुई इस गीता का आदि से अन्त तक विचार कर के जो इच्छा हो सो करो ॥ ६३ ॥

हे अर्जुन ! तुम मेरे परम प्रिय हो—इस कारण तुम्हारे हित के लिये फिर सब से अधिक गुप्त बात कहता हूँ, सुनो ॥ ६४ ॥

हे अर्जुन ! तुम मेरे में चित्त लगाने वाले भक्त और मेरे निमित्त यज्ञ करने वाले होओ और मुझे नमस्कार करो तो मुझे ही प्राप्त होओगे—यह मैं तुमसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ—क्योंकि तुम मेरे अत्यन्त प्रिय हो ॥ ६५ ॥

तुम सकल धर्मों को त्याग कर केवल मेरे ही शरण में आओ। कुछ शोक मत करो—मैं तुम्हें सब पापों से छुटा दूँगा ॥ ६६ ॥

हे अर्जुन ! तुम्हारे ही हित के लिये—यह गीता-शास्त्र मैंने कहा है। यह तपस्या भक्ति और शुश्रूषाहीन तथा मेरे में असूया करने वाले पुरुष को कदापि उपदेश न करना ॥ ६७ ॥

जो पुरुष मुझमें परम-भक्त युक्त हो कर, मेरे भक्तों को इस परमगुप्त शास्त्र का उपदेश करेगा—वह अवश्य ही मुझको प्राप्त होगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ॥ ६८ ॥

मनुष्यों को गीता-शास्त्र का उपदेश देने वाले के समान मुझे अति प्रिय न कोई है और न कोई होगा और पृथिवी में उसको भी मेरे सिवाय और कोई वस्तु प्रिय नहीं है ॥ ६९ ॥

जो पुरुष हमारे इस धर्मविषयक संवाद-रूप गीता-शास्त्र को पढ़ेगा निस्सन्देह वह पुरुष ज्ञानयज्ञ के द्वारा मेरा पूजन करने वाला होगा ॥ ७० ॥

जो पुरुष श्रद्धावान् और असूया-रहित केवल इस गीता-शास्त्र को सुनेगा वह भी सम्पूर्ण पापों से छूट कर पुण्यात्माओं के भोगने योग्य शुभ लोकों को प्राप्त होता है ॥ ७१ ॥

क्यों पार्थ ! तुमने इस गीता-शास्त्र को एकाग्रचित्त हो कर सुना न ? क्यों धनञ्जय ! तुम्हारा अज्ञान-मूलक मोह दूर हुआ या नहीं ? ॥ ७२ ॥

इतना सुन कर अर्जुन ने कहा—हे अच्युत ! मैंने आपकी कृपा से आत्मज्ञान रूप स्मृति पायी। मेरे सम्पूर्ण संशय नष्ट हो गये ॥ ७३ ॥

॥ गीतापर्व समाप्त ॥

भीष्मवधपर्व

प्रथम दिवस

तेंतालीसवाँ अध्याय

गुरुजन-पूजन

वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय! साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से निकले हुए गीता के उपदेश को भली भाँति पढ़ना चाहिये। क्योंकि एकमात्र गीता को पढ़ लेने से, फिर अन्य शास्त्रों के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती। जैसे मनुस्मृति समस्त वेदों का आशय है, गङ्गा सकल तीर्थमयी है और श्रीहरि समस्त देवमय हैं; वैसे ही श्रीमद्-भगवद्गीता समस्त शास्त्रमयी है। गीता, गङ्गा, गायत्री और गोविन्द—ये चार गकार युक्त नाम जिसके हृदय पटल पर अङ्कित हो जायँ, उसका पुनर्जन्म नहीं होता। छः सौ बीस श्लोकमयी गीता श्रीकृष्ण जी के मुखारविन्द से निकली है। गीता के सत्तावन श्लोक अर्जुन के मुख से, सड़सठ सञ्जय के मुख से और एक धृतराष्ट्र के मुख से निकला हुआ है। ये समस्त श्लोक महाभारत ग्रन्थ को मथ कर अमृत रूप से निकाले गये हैं। भारत का सार निकाल कर भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन के मुख में उसे हवन किया है।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर अर्जुन को बाण और गाण्डीव धनुष धारण किये हुए देख कर, महारथियों ने बड़ा चीत्कार किया। पाण्डवों, सोमकों तथा उनके समस्त साथियों ने समुद्रोद्भव शङ्ख हर्षित हो बजाये। भेरियों, पेशियों, क्रकचों और सींगों के आकार के बाजों के बजने से बड़ा शब्द हुआ। हे राजन्! गन्धर्वों के साथ देवता, पितर और चारणों के समूह उस संग्राम को देखने के लिये वहाँ एकत्रित हो गये। उस महासंग्राम को देखने के लिये बड़े बड़े ऋषि भी इन्द्र को आगे कर वहाँ आये। हे राजन्! फिर धर्मराज युधिष्ठिर ने सागर की तरह बारंबार चलायमान होने

वाली उन दोनों सेनाओं को युद्ध करने के लिये तैयार देख, अपना बढ़िया कवच उतार डाला और हथियार रख दिये। फिर वे रथ से नीचे आ, हाथ जोड़े चुपचाप पूर्व की ओर मुख कर उधर चल दिये जिधर भीष्म पितामह जी थे। इस प्रकार उनको जाते देख अर्जुन भी रथ छोड़ नीचे उतर आये और झट अपने भाइयों के साथ धर्मराज के पीछे हो लिये। तब भगवान श्रीकृष्ण भी उनके साथ हो लिये। इन सब को जाते देख, पाण्डव पक्षीय मुख्य मुख्य राजा भी धर्मराज के पीछे हो लिये।

अर्जुन ने धर्मराज से कहा—राजन्! आप शत्रु की सेना की ओर कहाँ जाते हैं? भीमसेन बोले—राजेन्द्र! कवच उतार और हथियार रख, तथा भाइयों को छोड़, कवचधारी शत्रुओं के सैन्य में आप क्यों जाते हैं? नकुल बोले—हे भारत! आप हमारे ज्येष्ठ भ्राता हैं। आपको इस प्रकार जाते देख हमारा हृदय भय के मारे धड़क रहा है। अतः आप यह तो बतलावें कि आप जा कहाँ रहे हैं? सहदेव बोले—इस समय जब दोनों सेनाओं में भयानक मार काट होने वाली है, हमको छोड़ आप शत्रु-सैन्य के सन्मुख कहाँ जा रहे हैं?

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! भाइयों के इस प्रकार कहने पर भी कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर न रुके और आगे बढ़ते ही चले गये। परन्तु परम चतुर महात्मा श्रीकृष्ण ने हँस कर, भीम आदि पाण्डवों से कहा—महाराज युधिष्ठिर अपने बड़े बूढ़ों अर्थात् भीष्म, द्रोण, कृप, शल्य आदि को प्रणाम कर तथा उनकी आज्ञा ले शत्रुओं के साथ युद्ध करेंगे। पूर्वकल्प से सुनते आते हैं कि, जो पुरुष अपने बड़े बूढ़ों से आज्ञा लिये बिना लड़ता है, उसे महात्मा पुरुष स्पष्टतः शाप देते हैं और जो पुरुष किसी महासमर में शास्त्राज्ञानुसार बड़े बूढ़ों को प्रणाम कर और उनकी स्वीकृति प्राप्त कर लड़ता है, उसकी युद्ध में निश्चय ही जीत होती है। इधर तो श्रीकृष्ण जी इस प्रकार उन लोगों को समझा रहे थे, उधर धृतराष्ट्र के पुत्र की सेना में हाहाकार और धिक्कारात्मक तुमुल चीत्कार सुन पड़ा। धृतराष्ट्र की सेना

के लोग युधिष्ठिर को दूर ही से आते देख, आपस में कहने लगे—आहा ! यही कुलाङ्गार है। भाइयों सहित युधिष्ठिर भयभीत हो गया है सो वह खुलंखुल्ला भीष्म पितामह के शरण में आ रहा है। जब अर्जुन, भीमसेन, नकुल और सहदेव जैसे वीर योद्धा उनके रक्षक हैं, तब भी न मालूम युधिष्ठिर क्यों भयभीत हुआ। भूमण्डल भर में प्रसिद्ध क्षत्रियकुल में ऐसे भीरु पुरुष को उत्पन्न होना उचित नहीं। अल्प-बल-सम्पन्न यह राजा युद्ध से भयभीत होता है। यह कह वे सब सैनिक कौरवों की प्रशंसा करते हुए प्रसन्न हो कर, अपनी पताकाएँ फहराने लगे।

हे राजन् ! आपके पक्ष के योद्धाओं ने इस प्रकार श्रीकृष्ण एवं भाइयों सहित धर्मराज की निन्दा की। कौरव सेना के सैनिक युधिष्ठिर को धिक्कारने के बाद चुप हो शान्त हो गये। धर्मराज युधिष्ठिर भीष्म पितामह से क्या कहेंगे और वे धर्मराज को क्या उत्तर देंगे, अभिमानी भीम, श्रीकृष्ण, अर्जुन क्या कहेंगे—यह जानने का कुतूहल दोनों पक्ष के सैनिकों को उत्सुक कर रहा था। इतने ही में पाण्डव, शत्रुपक्ष की धनुप शक्ति आदि अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित सेना के बीच में हो कर तुरन्त ही भीष्म जी के निकट जा पहुँचे। तदनन्तर लड़ने को तैयार खड़े शान्तनुनन्दन भीष्म जी के दोनों चरणों को दोनों हाथों से पकड़, धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा—हे दुर्धर्ष ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हमें आपसे लड़ना है। अतः हे तात ! आप हम लोगों को लड़ने की आज्ञा दें और साथ ही आशीर्वाद भी।

भीष्म जी ने कहा—राजन् ! यदि तुम इस समय मेरे निकट न आते; तो मैं तुम्हें यह शाप देता कि, तुम्हारा पराजय हो। किन्तु हे वत्स ! अब तो मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ और आशीर्वाद देता हूँ कि, इस युद्ध में तेरी जीत हो तथा तेरी अन्य जो मनोभिलाषा हो वह पूरी हो। हे कुन्ती-नन्दन ! इसके अतिरिक्त और जो कुछ वर माँगना हो, वह भी तुम माँग लो। राजन् ! पुरुष धन का दास है; परन्तु धन किसी का दास नहीं है। राजन् ! यह बात बिलकुल ठीक है। क्योंकि कौरवों ने मुझे धन से अपने

वश में कर लिया है। इसीसे हे कुरुनन्दन! नपुंसक की तरह मुझे यह बात कहनी पड़ती है। कौरवों ने धन से मुझे अपने बन्धन में डाल रखा है। मैं नितान्त बँधन में हूँ। अतः युद्ध को छोड़ और जो कुछ तुम चाहो—वह माँग लो।

युधिष्ठिर ने कहा—हे महाबाहो! आप तो मेरे सदा के हितैषी हैं। अतः इस युद्ध में मुझे तो आप सम्मति भर दें। आप भले ही कौरवों की ओर से लड़ें। मेरी तो केवल यही आपसे विनय है।

भीष्म ने कहा—हे कुरुनन्दन! इसमें मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ। बेटा! मुझे तो तुम्हारे बैरियों की ओर ही से युद्ध करना पड़ेगा। इसे छोड़ और जो कुछ तुम चाहते हो सो माँग लो।

युधिष्ठिर ने कहा—हे तात! यदि आप मेरा भला चाहते हैं, तो आप बतलावें कि संग्राम में अजेय आपको हम कैसे जीत सकते हैं?

भीष्म जी बोले—हे कुन्तीनन्दन! मैं जब रणक्षेत्र में लड़ने लगूँ तब साक्षात् रुद्र भी मुझे परास्त नहीं कर सकते और लोगों की तो बात ही क्या है?

युधिष्ठिर बोले—हे भगवन्! मैं आपसे हाथ जोड़ कर यह पूँछता हूँ कि, आप युद्ध में दूसरे के हाथ से क्योंकर मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं?

भीष्म जी ने उत्तर दिया—हे वत्स! संग्राम में मुझे जीतने वाला तो कोई पुरुष मुझे देख नहीं पड़ता। फिर अभी तो मेरे मरने का समय भी नहीं आया। अतः इस प्रश्न के उत्तर के लिये तुम मुझसे फिर कभी मिलना।

सञ्जय ने कहा—हे कुरुवंशी धृतराष्ट्र! धर्मराज ने युधिष्ठिर की इस आज्ञा को शिरोधार्य किया और बारंबार उनको प्रणाम कर, युधिष्ठिर भाइयों सहित, कौरवों की सेना को देखते देखते द्रोणाचार्य के रथ के निकट जा पहुँचे। वहाँ जा और आचार्य द्रोण को प्रणाम कर और उनकी परिक्रमा कर, धर्मराज ने अपने कल्याण के लिये उनसे इस प्रकार कहना

आरम्भ किया। हे भगवन्! मैं आपसे पूछता हूँ कि, मैं किस रीति से युद्ध करूँ; जिससे मुझे पाप का भागी न होना पड़े? हे गुरुदेव! आपके आदेशानुसार मैं क्योंकर अपने शत्रुओं को परास्त कर सकूँगा?

द्रोणाचार्य ने कहा—हे राजन्! लड़ने का निश्चय किये हुए तुम यदि मेरे निकट न आते, तो मैं तुम्हें शाप देता कि, तुम्हारा पराजय हो। हे निष्पाप युधिष्ठिर! मैं तुम्हारी विनम्रशीलता से तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ। तुमने मेरा सम्मान किया है, अतः मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि, तुम युद्ध करो और विजयी होओ। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। बतलाओ तुम क्या चाहते हो? इस समय युद्ध को छोड़ और जो चाहो सो माँग लो। पुरुष धन का दास है; किन्तु धन किसी का दास नहीं है। इसे तुम बिल्कुल सत्य समझो। मैं धन से कौरवों का हो चुका हूँ। इसीसे मुझे एक असमर्थ पुरुष की तरह ऐसी बातचीत करनी पड़ती है। मैं लड़ूँगा तो कौरवों ही की ओर से किन्तु हृदय से मैं जीत तुम्हारी ही चाहूँगा।

युधिष्ठिर ने कहा—हे ब्रह्मन्! आप मेरा विजय चाहें, जिससे मेरा कल्याण हो। साथ ही मेरी आपसे एक प्रार्थना और भी है। वह यह कि आप भले ही कौरवों की ओर से हमसे लड़ें; किन्तु हमें वे बातें बतलावें जिनसे हम लोगों का कल्याण हो।

द्रोण ने कहा—हे राजन्! जब श्रीकृष्ण जी जैसे आपके मंत्रदाता हैं, तब आपकी जीत निश्चय ही होगी। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, कि इस युद्ध में तुम अपने बैरियों का नाश करो। जहाँ धर्म है, वहाँ श्रीकृष्ण हैं तथा जहाँ श्रीकृष्ण हैं, वहाँ विजय है। अतएव हे युधिष्ठिर! जाओ और मज़े में युद्ध करो। अब और तुम मुझसे क्या सम्मति चाहते हो?

युधिष्ठिर ने कहा—हे द्विजवर्य! मेरी जो आन्तरिक अभिलाषा है—वह मैं अब आपको बतलाता हूँ। सुनिये, आपको तो कोई परास्त नहीं कर सकता। सो आपको मैं किस तरह जीत सकता हूँ। आप मुझे यह बतलावें।

द्रोणाचार्य ने कहा—मेरे हाथ में जब तक हथियार रहेगा, तब तक तुम कभी विजयी नहीं हो सकते। तुम अपने भाइयों सहित मेरे वध के लिये प्रयत्न करना।

युधिष्ठिर ने कहा—हे आचार्य! मैं आपसे हाथ जोड़ कर पूँछता हूँ कि आपका वध किस प्रकार हो सकेगा—सो आप मुझे बतलावें।

द्रोण ने कहा—हे तात! रथ पर सवार हो और बाणवृष्टि करता हुआ कोई शत्रु मुझे मारे—ऐसा तो कोई मनुष्य मुझे दिखलायी नहीं पड़ता, किन्तु जब मैं हथियार रखूँ और मूर्छित सा हो जाऊँ, तब भले ही कोई मुझे मार सकता है। यह बात मैं तुमसे ठीक ही ठीक कहता हूँ। हे राजन्! सत्यभाषी पुरुष के मुख से किसी बड़े ही अप्रिय वचन को सुन, मैं हथियार रख देता हूँ। इसे भी तुम सत्य मानना।

सञ्जय ने कहा—हे महाराज! द्रोणाचार्य के इन वचनों को सुन, राजा युधिष्ठिर ने उनको प्रणाम किया और तदनन्तर वे कृपाचार्य के निकट गये। वाग्विदाम्वर युधिष्ठिर ने तेजस्वी कृपाचार्य को प्रणाम कर तथा उनकी प्रदक्षिणा कर, इस प्रकार उनसे कहना आरम्भ किया। हे निर्दोष गुरुदेव! युद्ध करने के लिये मैं आपसे आज्ञा माँगने को आपके निकट आया हूँ। क्योंकि आपकी आज्ञा पा कर, मैं शत्रुओं को जीत लूँगा।

कृपाचार्य ने कहा—हे महाराज! युद्धाभिलाषी तुम यदि इस समय मेरे निकट न आये होते, तो मैं तुम्हें शाप देता कि, तुम्हारा पराजय हो। पुरुष धन का दास है, किन्तु धन किसी का दास नहीं है। इस बात को तुम सच मानो। कौरवों ने धन द्वारा मुझे बाँध रखा है। अतः हे युधिष्ठिर! तुम युद्ध करो। मैं युद्ध के लिये तुम्हें अपनी स्वीकृति देता हूँ। मुझे भी असमर्थ पुरुष की तरह कहना पड़ता है। तुम युद्ध को छोड़ और जो कुछ चाहो सो माँग लो।

युधिष्ठिर ने कहा—इसीसे तो मैं आपसे पूँछता हूँ। आप मेरी बात सुनें।

दुःख के कारण मूर्छित से राजा युधिष्ठिर, इसके आगे और कुछ न कह सके।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! महाराज युधिष्ठिर का आन्तरिक अभिप्राय जान, कृपाचार्य ने कहा—राजन्! युद्ध में तो मैं कभी मारा जा ही नहीं सकता। परन्तु तुम्हारे आगमन से हर्षित हो मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि, तुम युद्ध कर विजयी हो। मैं सदा तुम्हारे विजय ही की चिन्ता किया करूँगा। मेरी इस बात को तुम सत्य ही मानो।

हे राजन्! कृपाचार्य की इस बात को सुन और उनसे बिदा माँग, धर्मराज मद्रराज के निकट गये। उनको प्रणाम कर तथा उनकी प्रदक्षिणा कर धर्मराज ने शल्य से कहा—हे तेजस्वी! पाप से बचने के लिये, मैं आपके निकट, आपके साथ लड़ने की आज्ञा माँगने को आया हूँ, क्योंकि आपकी अनुमति प्राप्त कर लेने पर ही मैं शत्रुओं को हरा सकूँगा।

यह सुन मद्रराज शल्य ने कहा—यदि इस समय तुम मेरे निकट न आये होते तो मैं तुम्हें अकोसता कि, संग्राम में तुम्हारा नाश हो। किन्तु तुमने यहाँ आ कर मेरा सत्कार किया है। अतः मैं अब तुम पर प्रसन्न हूँ, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि, तुम्हारे अभीष्ट पूर्ण हों। तुम युद्ध करोगे तो तुम्हारी जीत होगी। हे वीर! मुझ से तुम और जो कुछ कहना चाहते हो, सानन्द कहो। बतलाओ, युद्ध को छोड़ और तुम्हें क्या चाहिये? मैं इस समय तुम्हें क्या दूँ? पुरुष तो अर्थ का दास है; किन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है। कौरवों द्वारा मैं अर्थ से बाँध लिया गया हूँ, इसीसे एक नपुंसक पुरुष की तरह मुझे तुमसे इस प्रकार कहना पड़ता है। मैं तुम्हारी मनोभिलाष पूर्ण करूँगा।

युधिष्ठिर ने कहा—हे महाराज! आप सदा मेरे हिताभिलाषी बने हुए मेरे शत्रुओं की ओर से मुझसे लड़ते रहें—मैं आपसे यही माँगता हूँ।

शल्य बोले—हे राजेन्द्र ! धन द्वारा मैं कौरवों का पक्ष ग्रहण करने के लिये विवश हूँ । अतः इसके अतिरिक्त मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ !

युधिष्ठिर बोले—हे महाराज ! अब आप मुझे यह वर दें कि, जब सूतपुत्र कर्ण हमसे लड़े, तब आप उसको हतोत्साह करें ।

शल्य बोले—हे कुन्तीनन्दन ! तुम्हारी इच्छानुसार ही तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी । तुमने जो वर माँगा है वह भी तुम्हें मिलेगा ।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! मद्रदेश के राजा और अपने मामा शल्य का इस प्रकार सम्मान कर, युधिष्ठिर अपनी सेना में लौट आये । उधर पाण्डवों का काम बनाने के लिये श्रीकृष्ण ने कर्ण के निकट जा कर कहा—हे कर्ण ! सुना है तुम भीष्म से द्वेष रखने के कारण, युद्ध में सम्मलित नहीं होगे । यदि यही बात है तो तुम यही प्रतिज्ञा करो कि, जब तक भीष्म जीवित हैं, तब तक तुम हथियार न उठाओगे । जब भीष्म मारे जाँय ; तब तुम यदि चाहो तो दुर्योधन की ओर से लड़ना ।

कर्ण ने कहा—हे केशव ! मैं दुर्योधन का हितैषी हूँ । अतः प्राण रहते मैं कोई भी ऐसा काम न करूँगा, जिसके करने से दुर्योधन का अहित हो ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! कर्ण के इन वचनों को सुन श्रीकृष्ण लौट आये और युधिष्ठिर सहित पाण्डवों से जा मिले । तदनन्तर युधिष्ठिर ने सेनाओं के बीच खड़े हो, सब को सम्बोधन कर यह कहा—हमें जो चाहता है, उसकी सहायता हम हृदय से चाहते हैं ।

युधिष्ठिर के इन वचनों को सुन युयुत्सु ने उनसे कहा—महाराज ! मुझ निरपराध को आप यदि प्रेमभाव से अपनाते हैं तो मैं आपकी ओर से दुर्योधन से लड़ने को तैयार हूँ ।

युधिष्ठिर ने कहा—हे युयुत्सु ! तुम मेरी ओर आ जाओ, श्रीकृष्ण तथा अन्य लोगों सहित हम सब तुम्हारे मूर्ख भाइयों से लड़ेंगे । मैं सचमुच

तुम्हें चाहता हूँ। अतः तुम मेरे पक्ष में आ कर हमारे शत्रुओं से लड़ो। मुझे तो जान पड़ता है धृतराष्ट्र का पिण्डदान तेरे ही हाथ से होगा और तेरे द्वारा ही उनका वंश भी चलेगा हे राजकुमार! तुम हम लोगों में आ कर सम्मिलित हो जाओ। अपने भाइयों की तरह तुम दुष्टबुद्धि अथवा अधर्मी मत बनो।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर आपके पुत्रों को त्याग, युयुत्सु अपने आगे नगाड़ा बजवाता हुआ पाण्डवों की सेना में जा मिला। फिर युधिष्ठिर ने अपने भाइयों सहित सोने जैसा चमकीला कवच पहिना। समस्त योद्धा अपने अपने रथों पर सवार हुए। फिर पूर्ववत् सेना को व्यूहबद्ध कर, सैकड़ों नगाड़े और नरसिंहा बजवाये। वीर लोगों ने सिंहनाद किया। पुरुषसिंह पाण्डवों को रथों पर सवार देख, धृष्टद्युम्नादि राजागण हर्षित हुए। मान्य पुरुषों का मान करने वाले पाण्डवों की गौरवगरिमा को देख, सब जन उनकी वारंवार प्रशंसा करने लगे। वे उनके सौहार्द्र, अनुग्रह और दया की अभिलाषा करते हुए तथा साधु साधु कह, उनकी स्तुति करने लगे। समरभूमि में समागत म्लेच्छ और आर्य्यपुरुष, कीर्तिशाली पाण्डवों की आनन्ददायिनी वाणियाँ सुन, हर्षित हुए और उनकी पूर्वकालीन दुःख कहानी को सुन गद्गद हो आँखों से आँसू बहाने लगे।

तदनन्तर उदारमना पाण्डवों के पक्ष के वीर सैनिक ने सैकड़ों हज़ारों बड़ी बड़ी भेरियाँ और गोदुग्ध सदृश श्वेत शङ्ख बजाये।

चौवालीसवाँ अध्याय

समर का आरम्भ

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! जब दोनों पक्षों की सेनाएँ व्यूहबद्ध हो लड़ने को तैयार खड़ी हो गयीं; तब उनमें से पहले किसने प्रहार किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपका पुत्र दुःशासन, भाइयों के साथ ले और भीष्म जी को आगे कर, ससैन्य आगे बढ़ा। उधर भीम को आगे कर, हर्षितमना पाण्डव और उनके पक्ष के योद्धागण भीष्म से लड़ने के लिये आगे बढ़े। उस समय दोनों सेनाओं में भेरी, मृदङ्ग आदि मारू बाजे बज रहे थे तथा हाथी, घोड़े चिंघार और हिनहिना रहे थे। इतने में जब पाण्डवों ने हम लोगों की सेना पर हमला किया, तब हमने भी सिंहनाद कर उनके ऊपर आक्रमण किया, तब तो दोनों सेनाओं में युद्ध होने लगा। आमने सामने खड़े और परस्पर उग्र प्रहार करने वाले कौरवों और पाण्डवों के बड़े बड़े सेनादल शङ्ख और मृदङ्गों के शब्द को करते हुए वैसे ही चलायमान हो रहे थे, जैसे वन के वृक्ष पवन के झोकों से कम्पित हुआ करते हैं। अश्वों एवं गजों से परिपूर्ण, दोनों सैन्यदल अशुभ मुहूर्त में आपस में भिड़े हुए थे। उन दोनों सैन्यदलों में वैसा ही शब्द हो रहा था, जैसा गर्जना युक्त शब्द उमड़ते हुए समुद्र में होता है। शङ्ख, दुन्दुभियों के शब्द, हाथियों के चिंघार का शब्द और सैनिकों के सिंहनाद, ये सब—भीम के सिंहनाद से दब गये। इन्द्र के वज्र के समान शब्द वाले और मेघ की तरह शब्दायमान भीम के सिंहनाद को सुन, आपके सैनिक भयभीत होने लगे। भीम के सिंहनाद को सुन, आपकी सेना के हाथी, घोड़ों ने वैसे ही मलमूत्र त्यागा, जैसे सिंह के दहाड़ को सुन, हिरन मलमूत्र त्याग देते हैं। अपना भयङ्कर रूप बना और मेघ की तरह गड़गड़ाता हुआ भीमसेन आगे को बढ़ने लगा। महाधनुर्धर भीम को आपके पुत्रों ने बाणों की वृष्टि कर वैसे ही ढक दिया जैसे मेघ, सूर्य को ढक देता है। आपके पुत्र दुर्योधन, दुर्मुख, दुःसह, शल्य, अतिरथी दुःशासन, राजा दुर्मर्षण, विविंशति, चित्रसेन, महारथी, विकर्ण, पुरुमित्र, जय भोग, वीर्यवान् सोमदत्त का पुत्र आदि—ये सब बिजली सहित मेघ की जलवृष्टि की तरह बाणवृष्टि करने लगे। इसी प्रकार द्रौपदी के पुत्र, सुभद्रानन्दन अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न—ये सब बड़े पैने बाणों से वैसे ही पीड़ित करते हुए, शत्रुओं

के सम्मुख गये, जैसे बड़े वेगवान् वज्र से पर्वत शिखरों को पीड़ित करते हुए, इन्द्र पर्वतों के सामने जावें। इस प्रथम संग्राम में बाणों से युद्ध हुआ और दोनों सेनाओं में से किसी भी सेना के वीर ने पीछे को पैर न रखा। हे भरतसत्तम! वारंवार बाण छोड़ कर निशाना बेधने वाले, द्रोण-शिष्यों का चातुर्य मैंने देखा है। उनके धनुषों का टंकार शब्द एक सा हो रहा था। आकाश जैसे तारे टूट कर गिरते हैं, वैसे ही धधकते हुए बाण गिरते थे। हे भारत! उस समय अन्य राजागण तो दर्शक की तरह अपने सम्बन्धियों के देखने योग्य भयानक युद्ध को केवल देख ही रहे थे। किन्तु जिन लोगों के हृदयों में क्रोध की आग जल रही थी, वे डाह में भर एक दूसरे से युद्ध कर रहे थे। हाथी, घोड़े और रथों से भरी हुई कौरवों और पाण्डवों की सेना, मानों कपड़े पर चित्रित सी समरभूमि में सुशोभित हो रही थी। फिर तुम्हारे पुत्रों की आज्ञा से समस्त राजागण धनुषों को ले, पाण्डवों की सेना पर टूट पड़े। उधर युधिष्ठिर के आदेशानुसार उनके पक्ष वाले हज़ारों राजा गर्जना करते हुए आपके पुत्रों की सेना पर टूट पड़े। दोनों सेनाओं के योद्धाओं की मुठभेड़ बड़ी भीषण हुई। दोनों ओर के सैनिकों के पैरों से उड़ी हुई धूल ने सूर्य को ढक दिया। युद्ध में घायल हुए और आगे पीछे युद्ध करने वाले योद्धाओं में यह पहचान न रह गयी कि, कौन अपना है और कौन पराया। इस महा विकट युद्ध में आपके पितामह भीष्म जी, समस्त सैनिकों को अतिक्रम कर, अद्वितीय शूरता दिखलाने लगे।

पैंतालीसवाँ अध्याय

द्वन्द-युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! उस भयानक दिन के प्रथम प्रहर में बड़ी विकट लड़ाई हुई, उसमें राजाओं के शरीर कटने लगे। उस समय एक

दूसरे को जीतने की इच्छा रखने वाले कौरवों, सृन्जयों एवं अन्य राजाओं के सिंह के गर्जन की तरह शब्द, पृथिवी और आकाश में गूँजने लगा। शङ्खों के शब्दों के साथ ही साथ, धनुषों के टंकार के शब्द और गरजने वाले वीर पुरुषों के सिंहनाद हो रहे थे। हे भरत सत्तम! हाथों में पहिने हुए चमड़े के दस्तानों में धनुषों के टंकारने के शब्द, पैदलों के चलने की आहट, घोड़ों की हिनहिनाहट, लाठियों और अङ्कुशों के प्रहार के तथा आयुधों की झङ्कार के शब्द चारों ओर सुनायी पड़ते थे। ऊँची ध्वजाओं से युक्त रथों पर सवार आपके पक्ष के राजा लोग अपने जीवन की आशा को त्याग और अपना मन कठोर कर, पाण्डवों के सैन्यदल पर टूट पड़े। हे राजन्! उस समय कालदण्ड के समान घोर धनुष को हाथ में ले, भीष्म जी ने अर्जुन के ऊपर आक्रमण किया। तेजस्वी अर्जुन भी रण में अपने प्रसिद्ध गाण्डीव धनुष को ले कर, भीष्म जी के ऊपर झपटे। इस प्रकार आपस में एक दूसरे का वध करने की इच्छा से भीष्म और अर्जुन भिड़ गये। यद्यपि भीष्म ने बाणों के प्रहार से अर्जुन को बेध डाला, तो भी अर्जुन ज़रा भी विचलित न हुए। हे राजन्! अर्जुन ने भी जब भीष्म को बाणों से घायल किया; तब वे भी ज़रा भी विचलित न हुए। सात्यकि कृतवर्मा के साथ लड़ने लगा। इन दोनों का महाघोर युद्ध हुआ। सात्यकि ने कृतवर्मा को और कृतवर्मा ने सात्यकि को घायल किया। बाणों से विद्ध सात्यकि और कृत-वर्मा, वसन्त कालीन पुष्पित ढाक वृक्ष की तरह शोभायमान हो रहे थे। विशाल धनुष ग्रहण कर खड़े हुए बृहद्बल के साथ अभिमन्यु लड़ रहे थे। इस मुठभेड़ में कोसलराज ने अभिमन्यु की ध्वजा काट डाली और सारथि को मार डाला, इस प्रकार अपनी ध्वजा और सारथि का नाश हुआ देख, अभिमन्यु क्रोध में भर गया और बृहद्बल को नौ बाणों से विद्ध कर डाला। शत्रुमर्दनकारी उस वीर ने दो पैने भल्ल बाणों से बृहद्बल की ध्वजा काटी और उसके सारथि एवं रथचक्र के रक्षकों का वध किया। इस प्रकार वे दोनों अभिमानी वीर एवं ऐश्वर्यशाली योद्धा पैने बाणों से एक दूसरे को

निर्बल कर रहे थे। भीम ने आपके पुत्र दुर्योधन के साथ युद्ध किया। दोनों ने दोनों पर बाणवृष्टि की। उन दोनों महावलियों को युद्ध करते देख, प्राणी-मात्र विस्मित हुए। दुःशासन महावली नकुल से लड़ने लगे। दुःशासन ने नकुल को मर्मभेदी बाणों से विद्ध किया। हे भारत! माद्रीकुमार ने हँसते हँसते उसकी ध्वजा को और बाणसहित धनुष को मारे बाणों के काट डाला। तदनन्तर छोटे छोटे पचीस बाण मारे, यह देखते ही किसी से पराजय न मानने वाले आपके पुत्र दुःशासन ने बाण छोड़, नकुल की ध्वजा काटी और उसके रथ के घोड़ों को मार डाला। महावली और युद्ध के उद्योग में रत सहदेव पर दुर्मुख ने आक्रमण किया और बाणवृष्टि कर उसे विद्ध किया। ऐसा होने पर महावीर सहदेव ने दुर्मुख के सारथि को बड़े पैने बाण से मार डाला। युद्ध में पीछे पग न रखने वाले और बदला लेने की अभिलाषा रखने वाले तथा आपस में आक्रमण करने वाले वे दोनों, बाण-प्रहारों से एक दूसरे को त्रस्त करने लगे।

हे राजन्! महाराज युधिष्ठिर का और मद्रराज का युद्ध हुआ। मद्रराज ने धर्मराज के धनुष के दो टुकड़े कर डाले। उस टूटे हुए धनुष को फेंक, कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर ने एक दूसरा दृढ़ और शीघ्र बाण छोड़ने वाला धनुष उठा लिया। फिर खड़ा रह, खड़ा रह, कह धर्मराज ने मद्रराज को बाणों से ढक दिया। हे भारत! धृष्टद्युम्न द्रोण के साथ लड़ने को आगे बढ़ा, तब क्रोध में भर द्रोण ने धृष्टद्युम्न के शत्रुसंहारकारी एवं अत्यन्त दृढ़ धनुष को काट डाला और कालदण्ड की तरह एक बड़ा भयानक बाण मारा, जो धृष्टद्युम्न के शरीर में घुस गया। धृष्टद्युम्न ने टूटे धनुष को एक ओर फेंक और दूसरा धनुष ले द्रोण के ऊपर चौदह बाण छोड़े। उन बाणों से उसने द्रोण को विद्ध किया। इस प्रकार वे दोनों वीर क्रोध में भर बड़ा विकट युद्ध करने लगे।

हे राजन्! सौमदत्ति से लड़ने के लिये शङ्ख बड़े वेग से आया और खड़ा रह, खड़ा रह, कह कर, वह उसे ललकारने लगा। इस रण में वीर शङ्ख

ने सोमदत्ति की दहिनी भुजा काट डाली। सौमदत्ति ने भी अपने शत्रु के कण्ठ की हँसली पर प्रहार किया। हे राजन्! पूर्वकाल में जैसे इन्द्र और वृत्रासुर का युद्ध हुआ था, वैसा ही दारुण युद्ध रणोन्मत्त इन दोनों का हुआ। कुपित बाल्हीक पर, साहसी धृष्टकेतु ने आक्रमण किया और शत्रु के तेज को न सह सकने वाले धृष्टकेतु ने सिंहनाद कर, उसके ऊपर बाण छोड़े। चेदिराज ने बाल्हीक के नौ बाण मार, उसे वैसे ही घायल किया जैसे एक हाथी दूसरे हाथी को दन्ताघात से घायल करता है। क्रोध में भर, ये दोनों वीर एक दूसरे के ऊपर मङ्गल और बुध की तरह आक्रमण करने लगे। जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर के साथ युद्ध किया था, वैसे ही घोरपराक्रमी घटोत्कच राक्षसराज अलम्बुष के साथ लड़ने लगा। क्रुद्ध हुए घटोत्कच ने महाबलवान राक्षसराज के नब्बे बाण मार; उसे विदीर्ण कर डाला। तब अलंबुष ने नतपर्व बाणों से घटोत्कच को घायल किया। इस प्रकार वे दोनों राक्षस समर में घायल हो, देवासुर संग्राम में घायल इन्द्र और वृत्रासुर की तरह जान पड़ने लगे। बलवान् शिखण्डी द्रोणपुत्र अश्वत्थामा से युद्ध करने गया। तब क्रुद्ध शिखण्डी को अपने समीप आया देख, अश्वत्थामा ने पैने बाण मार घायल कर डाला। तब शिखण्डी ने भी अश्वत्थामा को बाणप्रहार कर, घायल किया। इस प्रकार वे दोनों योद्धा परस्पर प्रहार करने लगे। एक विशाल वाहिनी के अधिपति राजा विराट ने भगदत्त का सामना किया। उन दोनों में घोर युद्ध हुआ। हे भारत! जैसे मेघ, पर्वत पर जलवृष्टि करता है, वैसे ही क्रोध में भर राजा विराट् ने भगदत्त के ऊपर बाणवृष्टि की। जैसे उदय हुए सूर्य को मेघ ढक लेता है, वैसे ही भगदत्त ने राजा विराट को बाणों से ढक लिया। शारद्वत के पुत्र कृपाचार्य ने जब राजा बृहत्क्षत्र का सामना किया और उसे बाणों से ढक दिया, तब बृहत्क्षत्र ने भी क्रोध में भर कृपाचार्य के ऊपर बाणों की वर्षा की। इन दोनों वीरों ने आपस में एक दूसरे के धनुषों तथा घोड़ों को नष्ट कर डाला। अन्त में दोनों ढाल तलवार ले युद्ध करने को आमने सामने खड़े हुए। उस समय उन दोनों का बड़ा विकट युद्ध हुआ।

राजा द्रुपद सिन्धुराज जयद्रथ के सामने आया ; तब शत्रुसन्तापकारी और युद्ध में उत्साह रखने वाले जयद्रथ ने तीन बाण राजा द्रुपद के ऊपर छोड़े और द्रुपद ने भी जयद्रथ को घायल किया। शुक्र और मङ्गल ग्रहों की तरह उन दोनों राजाओं का युद्ध बड़ा भयङ्कर और देखने के योग्य था।

हे राजन्! आपका पुत्र विकर्ण वेगवान् घोड़ों से युक्त रथ पर बैठ, महाबली सुतसोम के सामने लड़ने को गया। तब वे दोनों भी लड़ने लगे। दोनों ने एक दूसरे को बाणों से घायल कर डाला। किन्तु दोनों में से एक भी विचलित न हुआ, यह देख कर सब लोग विस्मित हुए। पाण्डवपक्षी महारथी चेकितान कोप में भर राजा सुशर्मा के सामने गया। सुशर्मा ने महारथी राजा चेकितान को मारे बाणों के आगे बढ़ने से रोक दिया। तदनन्तर जैसे महामेघ वर्षा से पहाड़ को छा देता है, वैसे ही कोप में भर चेकितान ने बाणों से सुशर्मा को ढक दिया। पराक्रमी शकुनि ने प्रसिद्ध पराक्रमी प्रतिविन्ध्य के सामने जा उस पर आक्रमण किया। तब युधिष्ठिर—नन्दन प्रतिविन्ध्य ने मारे बाणों के शकुनि को वैसे ही घायल कर डाला, जैसे इन्द्र दानवों को घायल करते हैं। किन्तु महाबुद्धिमान् शकुनि ने अपने ऊपर बाण छोड़ते हुए प्रतिविन्ध्य को नतपर्व बाणों से घायल किया। कम्बोज के महारथी राजा सुदक्षिण ने श्रुतकर्मा पर आक्रमण किया। सुदक्षिण ने सहदेव के महारथी पुत्र श्रुतकर्मा को घायल किया, किन्तु वह मैनाक पर्वत की तरह दृढ़ता से खड़ा ही रहा और तिलभर भी कम्पायमान नहीं हुआ ; किन्तु कोप में भरे हुए श्रुतकर्मा ने कम्बोजराज को अनेक बाण मार कर उनका समस्त शरीर विदीर्ण कर डाला। शत्रु-सन्ताप-कारी तथा रणभूमि में सावधानी के साथ शत्रु के साथ लड़ने वाला, इरावान्, समान पराक्रमी श्रुतायु के सामने लड़ने को गया। महारथी अर्जुन के पुत्र ने श्रुतायु के घोड़ों को मार डाला। फिर सिंह की तरह गरज कर, उसने अपने सिंहनाद से समस्त दिशाएँ प्रतिध्वनित कर दीं। तब श्रुतायु ने क्रोध में भर, गदा से अर्जुन के पुत्र के घोड़े मार डाले। उन दोनों में बड़ा भयानक युद्ध होने

लगा। महारथी राजा कुन्तिभोज के सामने अवन्ती के राजकुमार विन्द और अनुविन्द की लड़ाई छिड़ी। ससैन्य व दोनों दृढ़ता से खड़े हो कुन्तिभोज का सामना करने लगे। इन दोनों राजकुमारों ने बड़ा अद्भुत पराक्रम दिखलाया। अनुविन्द ने गदा ले कर कुन्तिभोज के ऊपर प्रहार किया; तब तुरन्त ही कुन्तिभोज ने उसको बाणों से ढक दिया। कुन्तिभोज के पुत्र ने विन्द को बाणों से बींध दिया; तब उसने भी कुन्तिभोज के पुत्र के ऊपर वैसे ही बाण छोड़े। इस प्रकार इन दोनों का बड़ा अद्भुत युद्ध हुआ।

हे राजन्! केकयराज के पाँचों पुत्र, गान्धारराज के पाँचों पुत्रों के साथ अपनी सेना को ले कर युद्ध करने लगे। आपका पुत्र वीरबाहु विराटकुमार उत्तर के साथ युद्ध करने को आया और उसने पैने बाण छोड़े। तब विराटपुत्र उत्तर ने भी उसके ऊपर बाणवृष्टि की। चेदिराज ने उलूक के साथ युद्ध किया और उसके बाण मारे। तब उलूक ने भी उस पर सुन्दर पुंख वाले बाण छोड़ने आरम्भ किये। इस प्रकार क्रोध में भर, वे दोनों एक दूसरे को घायल करने लगे।

हे राजन्! इस प्रकार समरक्षेत्र में आपकी सेना और पाण्डवों की सेना के गजारोहियों के साथ गजारोहियों का, अश्वारोहियों के साथ अश्वारोहियों का और पैदल सिपाहियों के साथ, पैदल सिपाहियों का द्वन्द्व युद्ध होने लगा। आरम्भ में मन्दगति से होता हुआ यह युद्ध धीरे धीरे भीषण होता गया। परस्पर लड़ने वाले योद्धा यहाँ तक रणोन्मत्त हो गये कि, कोई किसी को पहचान नहीं सकता था। देव दानव भूमि पर होने वाले इस दारुण युद्ध को देखने के लिये आकाश में देवता, देवर्षि, सिद्ध और चारण एकत्रित हो गये थे।

हे राजन्! अन्त में इस युद्ध में हज़ारों हाथी हज़ारों घोड़े और पैदल विपरीत क्रम से लड़ने लगे। वे वहीं पर खड़े खड़े बार बार युद्ध करते थे।

छियालीसवाँ अध्याय

घोर-प्रलय

सञ्जय ने कहा—हे भारत ! वहाँ लाखों पैदलों ने मर्यादा छोड़ कर, युद्ध किया। उसका वर्णन अब मैं आपको सुनाता हूँ।

इस युद्ध में पिता ने पुत्र को, पुत्र ने पिता को, भाई ने भाई को, मामा ने भाञ्जे को, भान्जे ने मामा को और मित्र ने मित्र को नहीं गिना। पाण्डवों ने कुरुओं के साथ ऐसा युद्ध किया, मानों उन पर (युद्ध का) भूत सवार हो। हे भरतसत्तम ! रथों से रथियों की सेना पर चढ़ाई करने वाले कितने ही नरवीरों ने रथों के धुरे तोड़ डाले। आमने सामने उपस्थित रथों के जुओं से जुए और कूबरों से कूबर उलझ उलझ कर टूट गये। एक दूसरे को मार डालने की इच्छा रखने वाले दौड़ते हुए योद्धा एक दूसरे के अति निकट आ जाते थे, आमने सामने आये हुए रथ भी न आगे जा सकते थे और न पीछे को हट सकते थे। मदमाते बड़े बड़े डीलडौल के हाथी अपने सामने पड़े हुए हाथियों के अपने मूसल जैसे लंबे लंबे दाँतों से एक दूसरे को चीर रहे थे। अंबारियों और पताकाओं से युक्त कितने ही हाथी महावेगवान एवं उन्मत्त हाथियों के दाँतों की मार से दुःखी हो, महाभयङ्कर चिंघार शब्द कर रहे थे। रणशिक्षा पाये हुए बहुत से छोटे छोटे हाथी, मस्तकों पर भालों और अङ्कुशों का प्रहार खा, बड़े बड़े मतवाले हाथियों का सामना कर रहे थे। मदमाते हाथियों के साथ युद्ध करते हुए बड़े बड़े हाथी, घायल हो क्रौञ्चपक्षी की तरह चिंघार रहे थे। एक ओर कितने ही रणशिक्षा प्राप्त मदमाते हाथी मर्मस्थलों में बाणों और तोमरों के लगने से भूमि पर निर्जीव हो पड़े थे और कितने ही चिंघारते हुए इधर उधर भाग रहे थे। हाथियों के रक्षक और विशाल वक्षःस्थल वाले पैदल सैनिक क्रुद्ध हो एक दूसरे के प्राण लेने की इच्छा से चमचमाते फरसों, गदाओं, मूसलों, भिंदिपालों, तोमरों, लोहे के डंडों, ऋष्टियों, बाणों, तलवारों

के प्रहार कर रहे थे। इन परस्पर भिड़े हुए शूरों की रक्त-रञ्जित तलवारें बड़ी शोभायमान जान पड़ती थीं। वीर पुरुषों के हाथों से खिच कर हिलती तथा शत्रुओं के मर्मस्थानों में प्रहार करती हुई तलवारों की बड़ी भयानक झनझनाहट हो रही थी।

हे राजन्! गदा, मूसल आदि से तोड़े हुए, तलवारों के प्रहार से कटे हुए, दाँतों के प्रहार से घायल, हाथियों के रूँदे हुए और आपस में एक दूसरे को पुकारते हुए और यत्र तत्र पड़े हुए, सैनिकों के प्रेतों जैसे डकराने के घोर शब्द सुनायी पड़ते थे, चोटियों और कलँगियों से सजे हुए वेगवान् घोड़ों पर बैठे हुए सवार अपने हंसों जैसे सफेद घोड़ों को एक दूसरे के सामने दौड़ाते थे। सुवर्णभूषित, चमचमाते हुए तथा अति तीक्ष्ण बाण आदि आयुध ज़हरीले साँपों की तरह बड़े वेग से आ कर गिरते थे। बड़े बड़े घोड़ों पर चढ़े हुए कितने ही वीर घुड़सवार बड़े बड़े रथियों के ऊपर उछल कर, उनके सिर काट रहे थे। बाण की तरह वेगवान् घुड़सवार और रथी, नतपर्व भल्ल बाणों से एक दूसरे का संहार कर रहे थे। आभूषणों से भूषित, नवीन जलधर जैसे रङ्ग वाले मतवाले हाथी—घोड़ों को पटक पटक कर पैरों से कुचल रहे थे। जिन गजों के गण्डस्थलों अथवा अन्य अंगों पर प्रास पड़ते थे, वे हाथी बुरी तरह से चिंघारें मारते थे। थोड़ी ही देर में युद्ध की भयङ्करता बढ़ गयी। बड़े बड़े हाथी एक साथ घुड़सवारों को मय उनके घोड़ों को भूमि पर पटकने लगे। घोड़ों और घुड़सवारों को अपने दाँतों की नोंकों से भूमि पर गिरा कर और उनके ऊपर दौड़ते हुए हाथी, ध्वजाओं सहित रथों को चूर करने लगे। मदमाते कितने ही हाथी, सवारों सहित घोड़ों को विदीर्ण कर, उन्हें सूँड़ों और पैरों से कुचलने लगे। गजों और घोड़ों पर बैठे हुए योद्धाओं के छोड़े हुए तीक्ष्ण एवं सर्पों की तरह सरसर करते हुए बाण हाथी और घोड़ों के मस्तकों में तथा अन्य अंगों में घुस रहे थे। वीर पुरुषों की छोड़ी हुई शक्तियाँ योद्धाओं और घोड़ों के शरीरों के लोहे के कवचों तथा उनके

शरीरों को फोड़ कर, धूमकेतु की तरह इधर उधर गिर रही थीं। बाघ और चीतों के चर्म से मढ़ी हुई म्यानों से तलवारें खींच उनसे, योद्धा जो उनके सामने आता उसीको काट रहे थे। जिन योद्धाओं की एक एक भुजा कट गयी थी, वे क्रोध में भर, सामने आते हुए सैनिकों के ऊपर ढाल, तलवार, फरसा, आदि हथियारों से आक्रमण कर रहे थे। कितने ही हाथी अपनी सूँड़ों में लपेट घोड़ों और रथों को घसीट रहे थे। जो योद्धा उन गजों के पीछे हो हल्ला मचाते, उसे सुन वे गज चारों ओर दौड़ रहे थे। कोई शङ्कु, फरसे आदि से घायल हुए। कोई हाथियों के मसले हुए, कोई घोड़ों के कुचले हुए, कोई रथों के पहियों से कुचले हुए, कोई फरसों से कटे हुए सैनिक अपने बन्धु समान सेवकों को, कोई अपने अपने पिताओं को, कोई कोई अपने पुत्रों को, कोई कुटुम्बियों को और कोई कोई भाइयों को पुकारने लगे। उस संग्राम में कोई कोई मामाओं को, कोई भाँजों को, तथा कोई शत्रुओं ही को पुकारने लगे। हे राजन्! कितने ही सैनिकों के पेट से अँतड़ियाँ निकल पड़ीं, कितनों ही की जाँघें टूट गयीं, कितनों ही की भुजाएँ कट गयीं; वे सब प्यास से विकल हो, जीने के लिये हाय हाय कर रहे थे। जो अधमरे थे वे रणभूमि में पड़े पड़े प्यास के कारण पानी पानी पुकार रहे थे।

हे राजन्! रुधिर की कीचड़ में सने हुए और पीड़ित कितने ही सैनिक अपनी ज्ञाति की और रणक्षेत्र में समवेत आपके पुत्रों की निन्दा करने लगे। हे राजन्! अन्य कितने ही शूर क्षत्रिय आपस में एक दूसरे को घायल कर, हथियार को हाथ से नहीं छोड़ते थे और न विलाप ही करते थे। किन्तु जहाँ वह गिर पड़े थे, वहाँ ही वे पड़े हुए सहर्ष परस्पर तिरस्कार कर रहे थे। जब उन्हें क्रोध चढ़ता, तब वे दाँतों से ओठों को चबाते थे। त्योरी चढ़ा एक दूसरे को घुड़कते थे। कितने ही योद्धा बाणों से घायल हो मुँह से कुछ भी न कह शान्त भाव से पड़े थे। युद्धक्षेत्र में रथों से गिरे हुए और हाथियों के पैरों तले कुचले हुए कितने ही योद्धा अपने रथों पर

चिठा देने के लिये दूसरों से प्रार्थना कर रहे थे। हे महाराज! इस प्रकार रणभूमि में गिरे हुए योद्धा ढाक के फूल की तरह लाल लाल देख पड़ते थे। इस प्रकार उभयपक्ष की सेनाओं में बड़ा भयानक कोलाहल हो रहा था। ज्यों ज्यों दिन चढ़ता जाता था, त्यों त्यों युद्ध की भीषणता बढ़ती जाती थी। सहस्रों वीर योद्धा मारे गये। पिता पुत्र को, पुत्र पिता को, मामा भांजे को, भांजे मामा को, मित्र मित्र को और सम्बन्धी सम्बन्धियों को मारने लगे। हे महाराज! इस प्रकार कौरव और पाण्डव परस्पर युद्ध कर रहे थे। जब होते होते यह युद्ध अति भयानक और मर्यादा हीन होने लगा, तब पाण्डवों की वह सेना जो भीष्म जी के सम्मुख खड़ी थी, भयभीत हो थरथर काँपने लगी। चाँदी की एवं पाँच ताराओं वाले चिन्ह वाली भीष्म जी के रथ की ध्वजा की उस समय वैसी ही शोभा हो रही थी-जैसी शोभा मेरु पर्वत पर चन्द्रमा की होती है।

सैंतालीसवाँ अध्याय

विराटकुमार उत्तर का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—इस घोर संग्राम के दिन के प्रथम भाग में बहुत से नामी नामी वीर मारे गये। तदनन्तर आपके पुत्र दुर्योधन के आदेशानुसार दुर्मुख, कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य और विविंशति भीष्म जी के निकट जा, उनकी रक्षा करने लगे। इन पाँच महारथियों से रक्षित भीष्म ने धीरे धीरे आगे बढ़ पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया, भीष्म पितामह की फहराती हुई तालकेतु ध्वजा, चेदि, काशी, करूप और पाञ्चालों की सेना में फरफराने लगी। भीष्म जी ने भल्ल बाणों से शत्रुओं की ध्वजा और सिर तथा घोड़ों सहित रथों को नष्ट करना आरम्भ किया। हे भरतसत्तम! फुर्तीले भीष्म के बाणों के प्रहार से घायल बहुत से हाथी भयानक चिंघारें मारते हुए दौड़ने लगे। जब इस प्रकार युद्ध हो रहा था; तब कोप में भर अभिमन्यु

पीत रंग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, भीष्म जी के सामने जा पहुँचा। कनेर के वृक्ष की तरह सुशोभित और सुवर्णचित्रित रथ पर सवार हो, अभिमन्यु, भीष्म एवं उनके रक्षक पाँच महारथियों के सामने जा डटा। ताड़ के चिन्ह से चिन्हित ध्वजा को काट, अभिमन्यु भीष्म और उनके रक्षक पाचों महारथियों से युद्ध करने लगा। उसने कृतवर्मा के एक, शल्य के पाँच और भीष्म जी के नौ पैने बाण मारे। फिर कान तक धनुष के रोदे को खींच, अभिमन्यु ने एक बाण छोड़ा और उससे सोने से मढ़ी हुई भीष्म के रथ की ध्वजा काट डाली। फिर हर प्रकार के कवच को फोड़ने वाले भल्ल बाण के प्रहार से उसने दुर्मुख के सारथि का सिर काट डाला। फिर सुवर्ण से मढ़ा कृपाचार्य का धनुष उसने काटा। महारथी अभिमन्यु उस समय बड़ा कुपित हो रहा था। उसने उन सब के ऊपर बाण प्रहार किये। उसके रणकौशल को देख, मनुष्य तो मनुष्य देवता भी वाह वाह कहने लगे। उसके लक्ष्यवेध का कौशल देख, भीष्म आदि बड़े बड़े महारथी उसको दूसरा अर्जुन कहने लगे। गाण्डीव जैसे टंकार वाले अपने धनुष को अभिमन्यु जब जब तान कर बाण छोड़ता, तब तब धधकती हुई बनेटी की तरह वह चारों ओर घूमता था।

जब अभिमन्यु इस प्रकार युद्ध करने लगा, तब शत्रुविनाशक भीष्म जी ने नौ बाण मार कर, अभिमन्यु को घायल किया। फिर तीन भल्ल बाण मार उन्होंने अभिमन्यु के सारथि को मार डाला। मैनाक पर्वत की तरह अटल अचल अभिमन्यु को कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य आदि बड़े बड़े वीर बाण मार कर कँपाने लगे। किन्तु कौरवों के इन पाँच महारथियों द्वारा अपने को घिरा हुआ देख, अभिमन्यु घबड़ाया नहीं, प्रत्युत उसने उन पाँचों पर बाण छोड़ने आरम्भ किये। अपनी बाण वृष्टि से शत्रुयोद्धाओं के चलाये बाणों को पीछे लौटा, वह गर्जा और उसने भीष्म पितामह पर बाणवृष्टि की। उस समय बाणवृष्टि कर, भीष्म को घबड़ा देने वाले अभिमन्यु ने अपना भुजबल विशेष रूप से प्रदर्शित किया। अभिमन्यु को

इस प्रकार पराक्रम प्रदर्शित करते देख, भीष्म ने भी उसके ऊपर बाण वृष्टि की। किन्तु अभिमन्यु ने भीष्म के छोड़े समस्त बाणों को अपने बाणों से काट कर, उन्हें व्यर्थ कर डाला। अभिमन्यु का एक भी बाण-व्यर्थ नहीं जाता था। जब अभिमन्यु ने नौ बाण मार कर, भीष्म जी के रथ की ध्वजा काट डाली; तब तो कौरवों की सेना में बड़ा हाहाकर मचा। सुवर्ण से मढ़ी भीष्म जी की चाँदी की ताड़ वृक्ष के चिन्ह से चिन्हित ध्वजा अभिमन्यु के बाणों से कट कर भूमि पर गिर पड़ी। यह देख, भीम ने प्रसन्न हो सिंहनाद किया, मानों शत्रुओं के घाव पर निमक छिड़का। इस पर भीष्म जी ने अनेक दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया और असंख्य बाणों से अभिमन्यु को ढक दिया। भीष्म का यह कार्य बड़ा ही विस्मयोत्पादक था। यह देख अभिमन्यु की रक्षा करने को पाण्डव पक्षीय दस महारथी अभिमन्यु के निकट जा पहुँचे। इन दस महारथियों में सपुत्र राजा विराट, धृष्टद्युम्न, राजा द्रुपद, भीम, केकय देशीय पाँच राजकुमार और सात्यकि मुख्य थे। जब इन महारथियों ने भीष्म पर आक्रमण किया, तब भीष्म ने पाञ्चालराज के तीन, सात्यकि के नौ बाण मारे। तदनन्तर एक बाण मार भीष्म ने भीम के रथ की ध्वजा काट डाली। ज्योंहीं सिंह के चिन्ह से चिन्हित भीम के रथ की ध्वजा को भीष्म जी ने काटा, त्योंहीं भीम ने शान्तनुनन्दन भीष्म के तीन, कृपाचार्य के एक और कृतवर्मा के आठ बाण मार उन सब को विद्ध किया। राजा विराट के राजकुमार उत्तर ने सूँड़ उठाये हुए एक हाथी पर सवार हो मद्रराज शल्य पर आक्रमण किया। जब वह हाथी मद्रराज के रथ से भिड़ने ही को था, तब मद्रराज ने एक बाण मार कर, उसको आगे बढ़ने से रोकना चाहा; किन्तु तिस पर भी वह हाथी पीछे न लौटा, प्रत्युत क्रोध में भर उसने मद्रराज के रथ के अग्रभाग पर अपना पैर रख, रथ के घोड़ों को मार डाला। तब अश्वहीन रथ पर सवार मद्रराज ने, सर्प जैसी विषैली एक शक्ति उठा कर, उत्तर के ऊपर फेंकी। उस शक्ति के प्रहार से उत्तर का कवच टूट गया और उसके बड़ा

भारी घाव लगा। वह अचेत हो हाथी की पीठ से भूमि पर गिर पड़ा और उसके हाथ का तोमर और अङ्कुश छूट पड़ा। इतने में शल्य हाथ में तलवार ले रथ से उतर पड़ा और उत्तर के हाथी की सूँड़ तलवार से काट डाली। मर्मस्थल में घायल उत्तर का हाथी मारे पीड़ा के चिंघारता चिंघारता मर गया। इतना कर शल्य झट कृतवर्मा के रथ पर जा बैठा। इस प्रकार अपने भाई उत्तर का मारा जाना देख और मद्रराज शल्य को कृतवर्मा के रथ पर सवार देख, विराटपुत्र श्वेत अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। वह घृताहुति पड़े हुए अग्नि की तरह मारे क्रोध के भभक उठा। उसने इन्द्र-धनुष की तरह एक दृढ़ धनुष को तान कर एवं मद्रराज का वध करने की इच्छा से उस पर आक्रमण किया। श्वेत के साथ इस धावे में बहुत से योद्धा भी थे। श्वेत शल्य के रथ पर बाणवृष्टि करता हुआ आगे बढ़ता चला गया। मदमत्त हाथी की तरह बलवान श्वेत को आते देख, हे राजन्! आपके पक्ष के सात रथी राजा शल्य को मृत्यु के मुख से बचाने के लिये उसे आगे पीछे से अपने रथों द्वारा घेर, खड़े हो गये। कौशलराज बृहद्बल, मगधराज, जयत्सेन, शल्य का प्रतापी पुत्र रुक्मरथ, अवन्तीकुमार, विन्द और अनुविन्द, काम्बोजराज सुदक्षिण एवं बृहत्क्षत्र का नातेदार, सिन्धु-देशाधिपति जयद्रथ—घनघटा में दमकती हुई बिजली जैसे धनुषों को तान तान कर, खड़े हो गये। वर्षाकालीन मेघ जैसे पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही वे राजकुमार श्वेत पर बाणवृष्टि करने लगे। यह देख सेनापति श्वेत ने सात भल्ल बाणों से उन सब के उन धनुषों को काट डाला और उन सब को घायल कर पीड़ित किया।

हे राजन्! श्वेत ने हमारे पक्ष के सातों रथियों के धनुषों को मेरे सामने ही काटा था; किन्तु अर्ध निमेष ही में उन लोगों ने दूसरे धनुष ले, श्वेत पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। इस पर भी अप्रमेयात्मा श्वेत ने सात भल्ल बाण छोड़, पुनः उन सातों के धनुषों को काट डाला। तब तो उन महारथियों ने बरछियाँ उठायीं और सिंहनाद कर उन्हें श्वेत के ऊपर

फेंका। परमास्त्रवित् राजकुमार श्वेत ने इन्द्र वज्रवत् सरसराती हुई शक्तियों को आते देख, सात बाण मार उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर शरीर को विदीर्ण करने वाला एक बाण श्वेत ने रुक्मरथ के मारा। अतः वह रथ से नीचे गिर पड़ा और मूर्छित हो गया। तब उसका चतुर सारथी, उसे रथ में डाल वहाँ से रथ भगा कर दूर ले गया। तदनन्तर श्वेतकुमार ने और छः बाण ले कर अन्य छः महारथियों के रथों की ध्वजाओं को काट डाला। फिर उसने उनके घोड़ों को तथा सारथियों को मार डाला। फिर उन छहों को बाणों से घेर, वह राजा शल्य के रथ की ओर मुड़ा। हे राजन्! राजकुमार श्वेत को शल्य की ओर जाते देख, आपकी सेना में हाहाकार मचा। उस समय आपका महाबली पुत्र समस्त सेना को साथ ले और भीष्म को आगे कर, श्वेत पर झपटा। मृत्यु-मुख-पतित मद्रराज की रक्षा के लिये वह यत्नवान हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि, महारोमाञ्चकारी युद्ध हुआ। यहाँ तक कि, उभय पक्षों की सेनाओं के हाथी घोड़े सैनिक मिल कर गड्डमड्ड हो गये। कुरुवंश में वृद्ध भीष्म पितामह पुरुषों में सिंह के समान योद्धा, सुभद्रा का पुत्र, भीमसेन महारथी, सात्यकि, केकयराज, राजा विराट, धृष्टद्युम्न चेदि और मत्स्य देश के राजा के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगे।

अड़तालीसवाँ अध्याय

विराटकुमार श्वेत का वध

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! जब महाधनुर्धर राजकुमार श्वेत ने शल्य पर आक्रमण किया; तब कौरव और पाण्डव राजकुमारों ने क्या किया? शान्तनुनन्दन भीष्म ने क्या किया? ये ही सब मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! उस समय लाखों महारथी क्षत्रिय योद्धा सेनापति श्वेतकुमार और शिखण्डी को आगे कर, आपके पुत्र दुर्योधन को

अपना बल दिखलाते हुए, राजकुमार श्वेत की रक्षा करने लगे और योद्धाओं में श्रेष्ठ भीष्म पितामह के सुवर्ण से मढ़े हुए रथ को घेर लिया। उस समय महादारुण युद्ध हुआ। आपके पुत्र और पाण्डवों में जो घोर युद्ध हुआ, उसका हाल मैं आपको सुनाता हूँ। सुनिये! भीष्म पितामह ने रथों में बैठे हुए सहस्रों योद्धाओं को मार कर रथों को रथियों से शून्य कर दिया। उन्होंने अगणित बाण चला बड़े बड़े नामी रथियों के श्रेष्ठ रथों के सिर उड़ा कर, बड़ा अद्भुत कर्म किया। फिर अगणित बाण चला, भीष्म ने सूर्य को ढक दिया। जैसे सूर्य अपनी किरणों का प्रसार कर अन्धकार को दूर भगा देते हैं, वैसे ही भीष्म ने अगणित बाण चला कर, शत्रु-सैन्य को दूर भगा दिया। भीष्म की बाणवृष्टि से संग्रामभूमि में लड़ते हुए अगणित क्षत्रियों का नाश हुआ। भीष्म के बाणों के प्रहार से क्षत्रिय योद्धाओं के सिर और उनके कटीले कवचधारी हाथी कट कट कर, भूमि पर वैसे ही गिरे जैसे वज्राघात से टूटे हुए पर्वत शिखर टूट कर गिरते हैं।

हे राजन्! रथियों के साथ रथी भिड़े हुए थे। रथों से रथों के अटक जाने पर उनमें जुते घोड़े खिंचने लगे। कितने ही युवक योद्धाओं के सिर कट गये थे और उनके हाथों में धनुष रह गये थे। ऐसे योद्धाओं को उनके रथों सहित लिये हुए घोड़े इधर उधर भागने लगे। तलवारों और माथों सहित कितने ही शूर क्षत्रियों के धड़, रणक्षेत्र में यत्र तत्र पड़े हुए थे। अस्त्राघात से मूर्छित हो गिरे हुए और पीछे सचेत हुए कितने ही योद्धा एक दूसरे पर झपटते हुए आपस में भिड़ गये थे। फिर आपस में घायल और पीड़ित हो, कितने ही योद्धा रणभूमि में लुढ़क रहे थे। धनुषों और माथों से युक्त और सुवर्ण भूषणों से भूषित कितने ही योद्धा दोनों ओर के वीरों का नाश कर, पीड़ित हो रहे थे। मतवाले हाथी हाथियों को, सवारों से रहित घोड़े घोड़ों को और रथी रथियों को खदेड़ खदेड़ कर मारकाट कर रहे थे। बाणों के लगने से कितने ही योद्धा रथों से नीचे गिर रहे थे। सारथियों के मारे जाने से भागे हुए रथ, चकनाचूर हो समरभूमि में पड़े हुए थे।

अत्यन्त धूल उड़ने से समस्त रणभूमि अन्धकारमयी हो रही थी। केवल धनुष के टंकार ही से योद्धा समझते थे कि, हमारे सामने शत्रु आ पहुँचे। किन्तु जब शरीर से शरीर भिड़ता था, तब वे जानते कि, शत्रु निकट आ पहुँचा। अपने सामने धनुष के टंकार को सुन, योद्धा बाण छोड़ने लगते थे, कान के पर्दे फाड़ने वाले मारू बाजे बज रहे थे। योद्धा लोग अपने अपने नाम और गोत्र सुना रहे थे; किन्तु कोई किसी की बात समझ नहीं सकता था। भीष्म के बाणों से पीड़ित और शत्रुओं के साथ युद्ध करते हुए योद्धाओं के हृदय धड़क रहे थे। इस रोमाञ्चकारी दारुण युद्ध में, पिता अपने पुत्र को न गिन उससे भिड़ जाता था, भग्नचक्र, भग्नधुरी और मृत घोड़ों के रथों में बैठे हुए बहुत वीर योद्धा और उनके सारथि बाणों के आघात से निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ते थे। इस समय भीष्म द्वारा रथहीन किये गये रथी रणभूमि में इधर उधर भाग रहे थे।

हे राजन्! भीष्म जब इस प्रकार शत्रुओं का संहार करने लगे—तब कोई योद्धा भी घायल हुए बिना न बच पाया। सहस्रों गज कट मरे। अगणित तूणीर कट गये। अनेक योद्धाओं के मर्मस्थल विदीर्ण हो गये, रणक्षेत्र में अगणित मरे हुए घोड़े पड़े हुए थे। राजकुमार श्वेत ने भी इस युद्ध में कौरव सेना का बड़ा नाश किया। उसने बाणाघात से सहस्रों राजपुत्र मार डाले। सैकड़ों महारथी मार डाले और सैकड़ों रथियों के सिर काट डाले। श्वेत ने आभूषणों से भूषित सहस्रों कलाइयाँ काट डालीं, सहस्रों धनुष काट डाले, अगणित रथों के पहिये, माथे, रथों की धुरियाँ, बहुमूल्य छत्र, पताकाएँ, सहस्रों अश्वों, रथों और मनुष्यों को नष्ट कर डाला। मैं श्वेतकुमार से भयत्रस्त हो अपने श्रेष्ठ रथों को छोड़ भागा। इसीसे मैं जीवित बच कर आपसे मिल सका हूँ। भीष्म जी पर छोड़े हुए बाणों में से कोई बाण आ कर हम लोगों में से किसी के न लग जाय, इस लिये हम सब रणक्षेत्र में एक ओर खड़े थे। हम लोग शान्तनुनन्दन भीष्म को देख रहे थे। उस युद्ध में एक मात्र भीष्म ही थे, जो अटल भाव से रणभूमि में डटे हुए थे। वसन्त-

कालीन सूर्य की तरह शत्रुसैन्य को बाणाघात से उतप्त करते और उनके प्राण हरते हुए वे रणक्षेत्र में अचलभाव से डटे हुए थे। उस समय बहुत से बाण छोड़ते हुए भीष्म जी, बाण समूह के कारण सहस्त्ररश्मि सूर्य की तरह जान पड़ते थे। महाधनुर्धर भीष्म अगणित बाण छोड़ असंख्य शत्रुओं के प्राण वैसे ही हर रहे थे, जैसे चक्रपाणि विष्णु सुदर्शन चक्र से असुरों को नष्ट किया करते हैं। भीष्म द्वारा नष्ट होते हुए शत्रुपक्षी योद्धा अपने दलों से वैसे ही भाग रहे थे; जैसे अग्नि से उड़ी हुई अग्नि की चिनगारियाँ। इस युद्ध में एकमात्र भीष्म ही ऐसे थे जो उस समय हृष्ट पुष्ट अर्थात् हर्षित जान पड़ते थे। दुर्योधन का प्रिय करने में संलग्न भीष्म जी पाण्डव की सेना का नाश कर रहे थे। जब आपके पितामह भीष्म ने यह देखा कि, श्वेतकेतु पाण्डवों की सेना का नाश किये डालता है, तब उन्होंने श्वेतकेतु का सामना किया। तब राजकुमार श्वेत ने बाणवृष्टि कर उन्हें ढक लिया। तब भीष्म जी ने भी बाणवृष्टि की और श्वेत को ढक दिया। डौंकते हुए दो साँड़ों की तरह अथवा मतवाले दो गजों की तरह अथवा क्रोध में भरे दो व्याघ्रों की तरह—श्वेत और भीष्म आपस में लड़ने लगे। वे दोनों एक दूसरे के चलाये अस्त्रों को अस्त्रों ही से वापिस कर देते थे। यदि उस समय राजकुमार श्वेत, पाण्डवों की सेना की रक्षा न करता तो क्रुद्ध हुए भीष्म जी एक ही दिन में बाणों के प्रहार से पाण्डव सेना का संहार कर डालते। किन्तु श्वेत ने भीष्म को पीछे हटा दिया। यह देख पाण्डव अत्यन्त हर्षित हुए। साथ ही आपका पुत्र दुर्योधन उदास हो गया। तदनन्तर वह बहुत से राजाओं को अपनी सहायता के लिये साथ ले, भीष्म जी की सहायता को अग्रसर हुआ तथा पाण्डवों की सेना पर उसने आक्रमण किया। दुर्मुख, कृतवर्मा, कृपाचार्य, शल्य, आदि योद्धा, आपके पुत्र दुर्योधन के कथनानुसार भीष्म जी की रक्षा कर रहे थे। जब दुर्योधन के सहायक बन आये हुए ये राजा लोग पाण्डवों की सेना का नाश करने लगे, तब श्वेत भीष्म से लड़ना छोड़ आपके पुत्र की सहवर्तिनी सेना का नाश वैसे ही करने लगा, जैसे वायु वृक्षों का नाश

करता है। क्रोध में भरा हुआ राजा विराट का पुत्र राजकुमार श्वेत आपके पुत्र की सेना को भगा, फिर भीष्म जी से जा भिड़ा।

हे राजन्! महाबली भीष्म और विराटनन्दन श्वेतकेतु परस्पर प्राण लेने का निश्चय कर, इन्द्र और वृत्रासुर की तरह एक दूसरे से लड़ने लगे। श्वेतकेतु ने सात बाण मार भीष्म को विद्ध किया। इस पर भीष्म जी ने उसके बाणवेग को अपने बाणों से वैसे ही रोका जैसे एक हाथी दूसरे हाथी के वेग को रोकता है। तब श्वेतकेतु ने नतपर्व पचीस बाण मार कर, भीष्म जी को पुनः विद्ध किया। यह देख समस्त लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। तब भीष्म ने भी दस बाण मार श्वेतकेतु को घायल किया। यद्यपि ये बाण भीष्म जी ने श्वेतकेतु के कस कस कर मारे थे; तथापि वह पहाड़ की तरह अटल भाव से जहाँ का तहाँ खड़ा रहा। वह धनुष तान तान कर भीष्म जी के ऊपर बाण छोड़ने लगा। तदनन्तर श्वेत ने अट्टहास किया और मारे क्रोध के ओठ चबा नौ बाण चला, भीष्म जी के धनुष के दस खण्ड कर डाले। फिर उसने एक बाण ऐसा मारा कि, ताड़वृक्ष के चिन्ह से चिन्हित भीष्म जी की ध्वजा कट कर गिर पड़ी। भीष्म जी की ध्वजा के कटते ही हे राजन्! आपके पुत्रों ने समझ लिया कि, भीष्म जी अब मारे जाँयगे अथवा श्वेत उन्हें पकड़ लेगा। उस समय पाण्डवों ने हर्षित हो शङ्खनाद किया। भीष्म जी की ध्वजा को कटी हुई देख, आपके पुत्र दुर्योधनादि ने अपनी ओर के सैनिकों को सम्बोधन कर उनसे कहा—हे योद्धाओं! कहीं ऐसा न हो कि, हमारी आँखों के सामने ही श्वेतकेतु—शान्तनुनन्दन भीष्म को मार डाले। अतएव तुम सब सावधान हो कर, उनकी रक्षा करो। आज या तो भीष्म ही मारे जाँयगे अथवा श्वेत ही। यह बात मैं तुमसे सत्य ही सत्य कहता हूँ।

जब दुर्योधन ने इस प्रकार उनसे कहा, तब चतुरङ्गिणी सेना को ले कर बलवान एवं महारथी योद्धागण भीष्म जी की रक्षा करने को लपके। बाल्हीक, कृतवर्मा, शल, शल्य, जलसन्ध, विकर्ण, चित्रसेन, विविंशति,

आदि महारथियों ने झटपट पहुँच चारों ओर से भीष्म जी को अपने घेरे में कर लिया और वे श्वेतकेतु पर अस्त्रवृष्टि करने लगे। इस पर श्वेतकेतु ने अपने हाथ की सफाई दिखलाते हुए उन महारथियों के चलाये समस्त अस्त्रों को व्यर्थ कर दिया। जैसे सिंह गजों को भगावे, वैसे ही उसने उन समस्त महारथियों को पीछे हटा, भीष्म जी के हाथ का धनुष काट डाला। इस पर भीष्म जी ने दूसरा धनुष उठा लिया, और कङ्कपत्रयुक्त बाण छोड़ श्वेतकेतु को विद्ध किया। तब तो श्वेतकेतु और भी अधिक क्रुद्ध हुआ और उसने प्रतिपक्षी योद्धाओं के सामने ही भीष्म पितामह को पुनः बुरी तरह घायल किया। जब श्रेष्ठवीर भीष्म को श्वेतकेतु द्वारा घायल देखा, तब आपके पुत्र मन ही मन बड़े खिन्न हुए और आपकी सेना में हाहाकार मच गया। श्वेतकेतु के बाणों के प्रहार से घायल हो जब भीष्म पितामह पीछे हटे, तब सब ने समझ लिया कि, श्वेतकेतु ने भीष्म को परास्त किया और उन्हें मार डाला। भीष्म ने अपनी ध्वजा को कटी हुई देख और अपनी सेना को पीछे भागते देख, श्वेतकेतु पर बहुत से बाण छोड़े। किन्तु श्वेतकेतु ने भीष्म के छोड़े समस्त बाण व्यर्थ कर डाले। साथ ही भीष्म जी के हाथ का धनुष पुनः काट डाला। तब तो भीष्म जी अत्यन्त कुपित हुए और उन्होंने एक बड़ा दृढ़ धनुष हाथ में ले और सात भल्ल बाण छोड़, झट से श्वेतकेतु के रथ के चारों घोड़े मार डाले। दो से उसके रथ की ध्वजा काटी और एक बाण से उसके सारथि को मार डाला। तब श्वेतकेतु अपने रथ से कूद पड़ा और अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। इस बीच में रथहीन श्वेत पर भीष्म ने चारों ओर से बाणवृष्टि की। जब भीष्म के छोड़े बाण श्वेत का शरीर वेधने लगे; तब अपने हाथ का धनुष रथ में रख श्वेत ने सोने की बर्छी उठायी। वह बरछी मृत्युदेव की जिह्वा की तरह लपलपाती और कालदण्ड जैसी थी, उस शक्ति को हाथ में ले श्वेतकेतु ने भीष्म जी से कहा—भीष्म! खड़े रहो, खड़े रहो। ज़रा देर के लिये पुरुष बन जाओ और मेरा पराक्रम देखो। यह कह श्वेत ने सर्प के समान वह बर्छी भीष्म पर छोड़ी। पाण्डवों की ओर से लड़ते

हुए और आपका पराजय चाहने वाले श्वेतकेतु ने भीष्म के ऊपर जब वह शक्ति छोड़ी, तब आपके पुत्रों ने बड़ा हाहाकार मचाया। केंचुल से छूटे हुए सर्प की तरह वह शक्ति आकाश मार्ग से साँय साँय करती हुई भीष्म जी की ओर गयी। अग्नि की लपटों की तरह भभझाती उस शक्ति को अपनी ओर आते देख, भीष्म ज़रा भी न घबड़ाये और पैने बाणों से उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। तब आपके पुत्रों के जी में जी आया और जयजय कह कर वे चीत्कार करने लगे। अपनी शक्ति को निष्फल जाते देख श्वेतकेतु बड़ा क्रुद्ध हुआ। वह उस समय मानों कालद्वारा अंधा कर दिया गया था। अतः वह यह निश्चय न कर सका कि उस समय वह क्या करे। कुछ देर बाद मुसक्या कर भीष्म का वध करने के लिये उसने एक गदा उठा ली। जैसे जल की धार पहाड़ के नीचे बड़े वेग से गिरती है, वैसे ही दण्डधारी काल की तरह उस गदा को उठा, वह भीष्म जी के ऊपर लपका। गदा-प्रहार को बचाने के लिये भीष्म जी नीचे झुक गये। तब श्वेत ने साक्षात् कुबेर की तरह गदा घुमा कर भीष्म जी के रथ पर मारी। वह गदा भीष्म के न लग उनके रथ पर पड़ी और उनका रथ चकनाचूर हो बेकाम हो गया। जब भीष्म के रथ की ध्वजा टूट गयी, सारथि मारा गया, घोड़े चोटिले हो गये ; रथ का धुरा टूट गया तब भीष्म को रथहीन देख, शल्यादि महारथी अपने अपने रथों को ले उनके निकट गये। उन रथों में से एक रथ पर भीष्म सवार हो गये और अट्टहास कर हँसे। फिर वे हाथ में धनुष ले श्वेत की ओर धीरे धीरे बढ़ने लगे। उस समय भीष्म को यह हितैषिणी आकाशवाणी सुन पड़ी। हे भीष्म! हे भीष्म! अब तुम शीघ्र प्रयत्न करो। ब्रह्मा ने इसे जीतने के लिये यही समय निर्दिष्ट किया है। इस आकाशवाणी को सुन, भीष्म प्रसन्न हुए और श्वेत को मार डालने का अपने मन में निश्चय किया। उधर पाण्डवों के पक्ष वाले सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, केकय राजकुमार, धृष्टकेतु और अभिमन्यु आदि वीर योद्धा श्वेतकेतु को रथहीन हो पैदल खड़े देख, उसकी ओर दौड़े। यह देख, कृप, द्रोण

और शल्य की सहायता से भीष्म ने उन सब को वैसे ही रोक रखा, जैसे पर्वत जल के वेग को रोकता है। पाण्डवों के पक्ष वाले योद्धाओं को रुका हुआ देख, राजकुमार श्वेत ने खड्ग के प्रहार से भीष्म के हाथ का धनुष काट डाला। तब उस कटे धनुष को फेंक, भीष्म ने आकाशवाणी के अनुसार श्वेत को मार डालने ही का निश्चय किया।

हे राजन्! भीष्म जी ने झट पट दूसरा धनुष उठा लिया और तुरन्त उस पर रोदा चढ़ा उसे इन्द्रधनुष जैसा बना लिया, पुरुषसिंह भीमसेनादि वीर योद्धाओं से रक्षित श्वेतकुमार को देख आपके पितामह भीष्म ने, उस पर आक्रमण किया। यह देख भीम ने उनका सामना किया; किन्तु भीष्म ने भीम के आठ बाण मारे फिर अभिमन्यु एवं श्वेतकेतु पर नतपर्व तीन तीन बाण छोड़े। भीष्म ने सात्यकि के सौ, धृष्टद्युम्न के तीस; कैकय-राजकुमारों के पाँच पाँच बाण मारे। इनके अतिरिक्त वहाँ जो अन्य योद्धा थे, उनको बाणों से रोक, भीष्म जी, राजकुमार श्वेतकेतु ही की ओर बढ़ने लगे। तदनन्तर मृत्यु समान एक भयानक बाण भीष्म ने धनुष पर रखा। उस बाण में पर लगे थे। उसे ब्रह्मास्त्र के मंत्र से अभिमंत्रित किया। उस समय देवता, गन्धर्व, पिशाच, सर्प और राक्षस इस दृश्य को आकाश से देख रहे थे। जब भीष्म ने उस बाण को छोड़ा, तब वह आकाश में बिजली जैसा बड़ा प्रकाश कर, श्वेतकेतु के कवच को फोड़ और उसके वक्षःस्थल को विदीर्ण कर, पृथिवी में घुस गया, जैसे सूर्य अपने प्रकाश को खींच कर अस्त होते हैं, वैसे ही वह पुरुषसिंह श्वेतकेतु भीष्मद्वारा मारा गया; तब हे राजन्! मैंने उसे पहाड़ के शिखर की तरह पृथिवी पर गिरते देखा था। श्वेतकेतु के मारे जाने का पाण्डवों तथा उनके पक्ष वालों को बड़ा दुःख हुआ। इधर आपके पुत्र तथा अन्य कौरव अत्यन्त हर्षित हुए। श्वेत को मरा हुआ देख, दुःशासन बाजे बजवाता और स्वयं नाचता कूदता इधर उधर घूमने लगा। इस संग्राम के भूषण रूप भीष्म के हाथ से जब श्वेतकेतु मारा गया और रात होने लगी, तब अर्जुन और यादवकुल

के वीरों ने अपनी सेनाओं को धीरे धीरे रात होने के कारण रणक्षेत्र से हटा लिया। उस समय उभय पक्ष की सेनाओं में बड़ा कोलाहल हो रहा था। श्वेत के मारे जाने से चिन्तित पाण्डव अपने शिविर की ओर चले गये।

उनचासवाँ अध्याय

शङ्ख के साथ लड़ाई

धृतराष्ट्र ने पूँछा कि, जब शत्रुओं ने पाण्डवों के सेनापति श्वेतकेतु को मार डाला; तब महाधनुर्धर पाण्डवों और पाञ्चालों ने क्या किया? श्वेतकेतु के मारे जाने का समाचार पा, उसके लिये उद्योग करने वाले और भागते हुए योद्धाओं की क्या दशा हुई?

हे सञ्जय! तुम्हारे मुख से अपनी जीत का हाल सुन, मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। हम लोगों की ओर से पाण्डवों के प्रति जो अत्याचार किये गये हैं, उनके लिये इस समय मुझे लज्जा नहीं आती। जान पड़ता है भीष्म पितामह की प्रीति हम लोगों पर विशेष है। दुर्योधन तो सदा ही अपने चचेरे भाइयों से शत्रुता करता आया है। दुर्योधन से भयत्रस्त हो कर ही श्वेतकेतु ने पाण्डवों का पक्ष ग्रहण किया था। श्वेतकेतु समस्त सेना को त्याग एक दुर्ग में रहा करता था। पाण्डवों के प्रताप से वह दुर्ग में रह कर, अपने वैरियों को सताया करता था और सदाचारहीन था। पाण्डवों का पक्षपाती होने के कारण ही वह उनकी ओर से कौरवों से लड़ने आया था। युधिष्ठिरभक्त उस श्वेतकेतु को भीष्म जी क्योंकर मार पाये? भीष्म जी को तो पाण्डव अति प्रिय थे। फिर उन्होंने श्वेत को मार कर, पाण्डवों का जी क्यों दुखाया? निश्चय ही राजकुमार दुर्योधन नराधम एवं ओछा मनुष्य है और उसकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो गयी है। मैं जानता हूँ, यह युद्ध भीष्म एवं द्रोण को अच्छा नहीं लगता। ये ही दो क्यों, कृपाचार्य, गान्धारी, वृष्णिवंशी श्रीकृष्ण, पाण्डुनन्दन

युधिष्ठिर भी इस युद्ध को बुरा समझते हैं। मैं स्वयं भी इसे भला नहीं समझता। भीमसेन, अर्जुन, नरश्रेष्ठ नकुल एवं सहदेव भी इस युद्ध के पक्ष में नहीं हैं। गान्धारी, विदुर और मैंने सदा इसका विरोध किया और इसे रोकने का प्रयत्न भी किया। जमदग्निनन्दन परशुराम एवं व्यासदेव जी ने भी बहुत कुछ समझा बुझा कर इस युद्ध को रोकना चाहा। किन्तु दुर्योधन ने किसी की भी न मानी और वह सदा युद्ध ही के पक्ष में रहा। पापी दुर्योधन, कर्ण, शकुनि और दुःशासन की सम्मति में चल, पाण्डवों को कुछ गिनता ही न था। हे सञ्जय! श्वेत मारा गया और भीष्म की जीत हुई—यह बात पाण्डवों के क्रोधाग्नि को भड़काने का कारण हुई होगी। इससे दुर्योधन के ऊपर और भी अधिक सङ्कट आ पड़ेगा। हे सञ्जय! अब यह बतलाओ कि, कोप में भर श्रीकृष्ण और अर्जुन ने क्या किया? मैं अर्जुन से बहुत डरता हूँ। यह भय मेरे मन से हट नहीं सकता। क्योंकि अर्जुन बड़ा शूर और बाण छोड़ने में बड़ा फुर्तीला है। वह शत्रुओं के शरीरों को बाणों से विद्ध कर डालेगा। जो अर्जुन विष्णु के समान बलवान है, जिसका क्रोध कभी विफल नहीं जाता, जो सत्यसङ्कल्प है, उस इन्द्रपुत्र अर्जुन को देख तुम्हारे मन में क्या विचार उत्पन्न होते थे?

हे सञ्जय! वेदज्ञ, शूर, अग्नि एवं सूर्यतुल्य तेजस्वी, इन्द्रास्त्रवित्, महान् साहसी, शत्रुतापन, समरविजयी, वज्रवत् अस्त्रों का प्रहार करने वाले, शीघ्र बाण चलाने वाले, रणभूमि में विकलता उत्पन्न करने वाले, महाबुद्धिमान्, महारथी, बलवान् द्रुपदनन्दन ने श्वेतकेतु के मारे जाने का संवाद सुन क्या किया? पहले मैंने जो अपराध किये थे, उनको स्मरण कर और अब श्वेतकेतु के मारे जाने का हाल सुन, पाण्डव भभक उठेंगे। दुर्योधन के कारण उनके कुपित होने का स्मरण होने पर मुझे रातदिन शान्ति प्राप्त नहीं होती। हे सञ्जय! यह महायुद्ध किस प्रकार हुआ—सो सब तुम मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आप अपने मन को स्थिर कर सुनें।

आपको दुर्योधन पर इसका दोष लगाना उचित नहीं है। क्योंकि आपने भी तो बड़ा भारी अपराध किया है। जल निकल जाने पर बाँध बाँधने वाले की तरह आपकी भी तो बुद्धि है। अब ऐसी ये बातें कहना वैसा ही है, जैसे कोई घर में आग लगने पर उसे बुझाने को कूप खोदे। जब दो पहर के बाद बहुत सा समय बीत गया, तब उस दारुण दिन में आपके और पाण्डु के पुत्रों में पुनः युद्ध होने लगा। विराट का सेनापति श्वेतकेतु का मारा जाना देख और कृतवर्मा सहित शल्य को खड़ा देख, शङ्ख का क्रोध वैसे ही भड़क उठा जैसे घी की आहुति देने पर अग्नि भभक उठता है। शङ्ख इन्द्रधनुष की तरह अपना धनुष चढ़ा, मद्रराज शल्य का वध करने को आगे बढ़ा। उस समय रथियों की एक बड़ी सेना चारों ओर से शङ्ख की रक्षा कर रही थी। वह बाणों की वर्षा करता हुआ शल्य के रथ पर आ पहुँचा। मतवाले हाथी के समान उस पराक्रमी को अपने ऊपर आते हुए देख, अब शल्य मौत के मुख में आ पड़ा—यह विचार, आपके रथी उसके आस पास आ डटे। कौशलदेश का बृहद्बल, मगधदेश का जयत्सेन, हे राजन्! शल्य का प्रियपुत्र रुक्मरथ, विन्द और अनुविन्द, काम्बोजदेशाधिपति सुदक्षिण बृहत्क्षेमसुत राजा जयद्रथ के नाना प्रकार की धातुओं से चिन्हित देख पड़ने वाले तने हुए धनुष, मेघघटाओं में दमकती हुई बिजलियों की तरह देख पड़ते थे। जैसे वर्षाकाल के आरम्भ में वायुप्रेरित मेघ, पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही वे समस्त योद्धा शङ्ख के ऊपर बाणों की वृष्टि करने लगे। इस पर कुपित हो सेनापति शङ्ख ने इन सातों के धनुष, सात बाण मार कर काट डाले और धनुषों को काट उसने सिंहगर्जन किया। यह देख और ताड़ जैसा विशाल धनुष हाथ में ले, सिंहगर्जन करते हुए महाबाहु भीष्म जी शङ्ख के ऊपर चढ़ दौड़े। उनको आते देख, पाण्डवों की सेना वैसे ही थरथराने लगी, जैसे पवन के झोंके से नाँव डगमगा उठती है। भीष्म जी से शङ्ख की रक्षा करने के विचार से अर्जुन, शङ्ख के सामने आ खड़ा हुआ। रणभूमि में युद्ध करते हुए योद्धाओं में इस पर बड़ा कोलाहल

मचा। इतने में एक तेजस्वी योद्धा दूसरे तेजस्वी योद्धा से आ भिड़ा। यह देख सब लोग बड़े विस्मित हुए। शल्य हाथ में गदा ले, अपने रथ से उतर पड़ा और गदा प्रहार से उसने शङ्ख के रथ के घोड़ों को मार डाला। अश्वों से रहित रथ से उतर शङ्ख ने तलवार उठा ली और वह अर्जुन के रथ पर जा बैठा। उस समय उसे कुछ शान्ति मिली। फिर भीष्म जी ने बाणवृष्टि आरम्भ कर दी और उस बाणवृष्टि से रणक्षेत्र आच्छादित हो गया। भीष्म जी ने अपनी उस बाणवृष्टि से पाञ्चाल, मत्स्य, केकय, प्रभद्रक आदि योद्धाओं का नाश करना आरम्भ किया। भीष्म जी पाण्डुनन्दन अर्जुन के सामने से हट, अपनी सेना से रक्षित द्रुपद के सामने गये। जैसे ग्रीष्मऋतु में अग्नि वन को भस्म कर डालता है, वैसे ही भीष्म जी ने बाण-वृष्टि कर अपने नातेदार द्रुपद की सेना को भस्म करना आरम्भ किया। द्रुपद की सेना को नष्ट कर, धधकते हुए अग्नि की तरह भीष्म जी रणक्षेत्र में खड़े थे। मध्यान्हकालीन तपते हुए सूर्य की तरह भीष्म की ओर पाण्डव-पक्षीय योद्धा देख तक न सकते थे। शीत से पीड़ित बैलों की तरह पाण्डवों के योद्धा किसी रक्षक के न मिलने से भयत्रस्त हो चारों ओर ताकने लगे। सिंह का थप्पड़ पड़ते ही ग्वाले की सफेद गौ की जो दशा होती है, वही दशा भीष्म जी के बाणों के आघात से पाण्डवों की सेना की हो रही थी। उसमें से कोई तो मारे गये कोई उत्साहहीन हो गये और कोई कोई भाग खड़े हुए। सारांश यह कि पाण्डवों की सेना में भीष्म ने हाहाकार मचा दिया। इस पर भी वे अपने धनुष से सर्पवत् बाण छोड़ते ही जाते थे।

हे राजन्! बाणों से समस्त दिशाओं को आच्छादित कर भीष्म ने पाण्डवपक्षीय योद्धाओं को ललकार ललकार कर उनका संहार करना आरम्भ किया। इस प्रकार जब पाण्डवों की बहुत सी सेना मारी गयी और बहुत सी भाग गयी; तब सूर्यास्त हो चुका था और अन्धकार छा जाने से कुछ देख भी नहीं पड़ता था। हे राजन्! भीष्म को इस महासमर में प्रवृत्त देख, पाण्डव अपनी सेना पीछे हटा ले गये।

युद्ध का दूसरा दिन

पचासवाँ अध्याय

पाण्डवों की सेना का क्रौञ्चव्यूह

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! प्रथम दिवस की लड़ाई में जब पाण्डव अपनी सेना पीछे को हटा ले गये, तब उस समय भीष्म जी अत्यन्त कुपित हो रहे थे और दुर्योधन अत्यन्त हर्षित था। उस समय धर्मराज युधिष्ठिर अपने भाइयों को साथ लिये हुए तथा अन्य राजाओं सहित श्रीकृष्ण जी के निकट गये और अपने पराजय की चिन्ता से शोकान्वित एवं चिन्तित हो उनसे बोले—हे कृष्ण! इन भीषणकर्मा एवं महाधनुर्धर भीष्म को आपने देखा? जैसे ग्रीष्म काल में आग तृणों के ढेर को भस्म कर डालता है, वैसे ही भीष्म मेरी सेना का नाश कर रहे हैं। घृताहुति से प्रचण्ड हुए अग्नि की तरह मेरे सैनिकों को भस्म करते हुए भीष्म जी की ओर हम कैसे आँख उठा देख सकते हैं। युद्ध में भीष्म के बाणों से घायल हुए मेरे सैनिक, इन महाधनुर्धर भीष्म की सूरत देखते ही भागने लगते हैं। कुपित यम को, वज्रधारी इन्द्र को, पाशधारी वरुण को अथवा गदाधारी कुबेर को सम्भव है, युद्ध में कोई जीत भी ले; किन्तु इन महाबली एवं तेजस्वी भीष्म को जीतना सर्वथा असम्भव है। अतः मैं भीष्मरूपी अगाध जल में नाव बिना डूबा जाता हूँ। हे केशव! यदि भीष्म जी मेरे सामने लड़ने के लिये आये, तो मैं अपनी निर्बलता का अनुभव कर, वन में चला जाऊँगा। ऐसा करने ही से मेरे प्राण बच पावेंगे और मेरा कल्याण भी होगा। हे कृष्ण! इन राजाओं को मैं भीष्मरूपी काल के मुख में नहीं पटकना चाहता। परमास्त्रवित् भीष्म तो मेरी समस्त सेना को नष्ट कर डालेंगे। हे यादव! राज्यप्राप्ति के पीछे मेरे वीर भाई भी बाणों से पीड़ित हो दुबले हो गये हैं। भ्रातृप्रेम के कारण मेरे भाइयों ने राज्य एवं सुख से हाथ धो लिये हैं। मैं जिस जीवन की बड़ी आस लगाये हुए हूँ—वह जीवन आज मुझे दुर्लभ जान पड़ता है।

अब अवशेष जीवन में मैं तप करूँगा। मैं इस युद्ध में अपने मित्रों को मरवाना नहीं चाहता। महाबली भीष्म दिव्यास्त्रों से नित्य मेरे सहस्त्रों रथियों और प्रसिद्ध योद्धाओं का संहार कर रहे हैं। हे माधव! शीघ्र बतलाइये अब क्या करने से मेरा भला होगा। रहा अर्जुन—सो यह तो इस युद्ध में मध्यस्थ की तरह दिखलायी पड़ता है। महाबाहु भीमसेन अकेला ही—अपनी शक्ति के अनुसार शुद्ध मन से युद्ध करता है। यह क्षात्रधर्म को स्मरण कर अपने भुजबल के सहारे घूमा करता है। रथ, घोड़े और हाथियों की सेना में बड़े उत्साह के साथ यह महामना अकेला ही वीरों का नाश करने वाली गदा से असह्य पराक्रम दिखलाता है। कृष्ण! यह अकेला यदि सौ वर्षों तक भी युद्ध किया करे तो भी शत्रुसैन्य का नाश नहीं कर सकता, हमारी ओर आपका यह मित्र ही अस्त्रविद्या को उत्तम रूप से जानता है। किन्तु हमारी रक्षा की ओर यह मन ही नहीं लगाता। देखो, भीष्म और द्रोण हमको भस्म किये डालते हैं; किन्तु इसे कुछ भी इसकी परवाह नहीं है।

हे कृष्ण! भीष्म और महात्मा द्रोण के वारवार चलाये हुए दिव्यास्त्र समस्त क्षत्रियों को भस्म कर डालेंगे। भीष्म जी का जैसा पराक्रम है, उससे तो वर्तमान परिस्थिति में ये क्रोध में भर मेरे पक्ष के समस्त राजाओं का तथा मेरा नाश कर डालेंगे। हे महाभाग! हे कृष्ण! आप किसी ऐसे महारथी को बतलाइये, जो युद्ध में भीष्म का सामना कर सके और उन्हें वैसे ही शान्त कर दे, जैसे मेघ दावाग्नि को शान्त कर देता है। हे गोविन्द! आप ही अनुग्रह करेंगे, तो पाण्डवों के शत्रुओं का नाश होगा और ये राज्य प्राप्त कर, बान्धवों सहित आनन्द भोगेंगे। यह कह, फिर शोक से मूर्च्छित मनस्वी युधिष्ठिर बहुत देर तक चुपचाप रह मन ही मन न जाने क्या सोचते विचारते रहे। उनको शोकाकुल और मुग्ध देख, भगवान् श्रीकृष्ण उनको सम्बोधन कर और समस्त पाण्डवों को हर्षित कर, यह बोले—हे राजन्! आपके भाई बड़े शूरवीर और सारे संसार में प्रसिद्ध हो रहे हैं। फिर राजा विराट और द्रुपद, राजकुमार धृष्टद्युम्न तथा ससैन्य

अन्य राजा लोग, आपकी कृपा के अभिलाषी हैं और आपके प्रति भक्ति रखने वाले हैं। आपका सेनापति धृष्टद्युम्न आपका हितैषी और आपका प्रिय करने को उद्यत है। इस महाबाहु शिखण्डी को तो आप भीष्म का साक्षात् काल ही समझिये।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, युधिष्ठिर ने उस सभा में श्रीकृष्ण को सुनाते हुए महारथी धृष्टद्युम्न से यह कहा—हे राजकुमार! मैं तुमसे जो कुछ कहता हूँ, उसे तुम अब सुनो। साथ ही मेरे कथन को उलटना नहीं। इस समय श्रीकृष्ण ने तुमको मेरा सेनापति निर्वाचित किया है। तुम इस समय पाण्डवों की ओर के वैसे ही सेनापति हो, जैसे पूर्वकाल में कार्तिकेय देवसेना के सेनापति थे। अतः तुम निज पराक्रम प्रदर्शित कर कौरवों का संहार करो। मैं स्वयं, मेरा भीम, अर्जुन और आपस में प्रीति रखने वाले नकुल और सहदेव, द्रौपदी के पुत्र तथा अन्य प्रधान राजागण—तुम्हारी रक्षा करते हुए तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे।

युधिष्ठिर के इन वचनों को सुन, सब को हर्षित करता हुआ राजकुमार धृष्टद्युम्न कहने लगा—शिवजी ने मेरी सृष्टि द्रोण के वध के लिये तो की ही है; तिस पर भी मैं युद्ध में, भीष्म, शल्य और जयद्रथ के साथ युद्ध करूँगा। यही क्यों मैं तो शत्रुपक्ष के समस्त बलाभिमानी शूरों के साथ युद्ध करूँगा। शत्रुनाशक धृष्टद्युम्न के इन उत्साहवर्द्धक वाक्यों को सुन, युद्धोन्मत्त समस्त पाण्डव आनन्द में भर जयजयकार बोलते ज़ोर से चिल्लाये। जब राजकुमार धृष्टद्युम्न ने पाण्डवों की सेना का सेनापतित्व अङ्गीकार कर लिया, तब युधिष्ठिर ने उससे कहा—जिस समय देवासुर संग्राम हुआ था, उस समय बृहस्पति ने इन्द्र को क्रौंचारुण व्यूह की रचना का विधान बतलाया था। शत्रु-सैन्य-नाशी उसी व्यूह की मैं अब रचना करता हूँ। आज तक इस व्यूह को किसी ने नहीं देखा। किन्तु आज समस्त अपने पक्ष के राजा लोग तथा कौरव उसे देखेंगे। इन्द्र की आज्ञा पाये हुए विष्णु के समान पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने, धर्मराज के आदेशानुसार अगले दिन

सवेरा होते ही अर्जुन को सब के आगे किया। उस समय इन्द्र के आदेश से विश्वकर्मा द्वारा बनाया हुआ और आकाशस्पर्शी अर्जुन के रथ का ध्वजदण्ड बड़ा सुन्दर जान पड़ता था और उसे देख विस्मय होता था। आकाशस्पर्शी और इन्द्रधनुष की तरह रंग विरंगी पताकाओं से शोभायमान वह ध्वजारथ पृथिवी पर तो नाचता हुआ सा और आकाश में गन्धर्व नगर जैसा जान पड़ता था। उस रत्नजटित ध्वजा से और गाण्डीव धनुष से अर्जुन की वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी शोभा सूर्ययुक्त मेरु पर्वत की होती है। राजा द्रुपद विशाल वाहिनी सहित व्यूह के अग्रभाग में आ खड़े हुए। राजा कुन्तिभोज और चेदिराज दोनों नेत्रों के स्थान पर खड़े हुए, उस व्यूह की ग्रीवा पर अनुचर वर्ग सहित दाशार्णक, प्रभद्रक, अनूपक और किरात खड़े हुए। उसके पृष्ठ भाग में पट्टचर, पौंड्र, पौरवक एवं निषादों को साथ ले धर्मराज आ खड़े हुए। भीमसेन और धृष्टद्युम्न उसके दोनों पार्श्व बन गये। द्रुपदनन्दन, अभिमन्यु, सात्यकि तथा पिशाच, दरद, पुण्ड्र, कुण्ड, विप, मारुत, धेनुक, तङ्गण, परतङ्गण, वाल्हीक, तित्तर, चोल और पाण्डव उस व्यूह की दाहिनी ओर खड़े हो, उस व्यूह के रक्षक बन गये। अग्निवेश, हुण्ड, मालव, दानभारी, शवर, उद्भार, वत्स और नाकुल देश के राजे और नकुल सहदेव ने उस सैन्य व्यूह के वामभाग की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया। उस व्यूह के उभय पार्श्वों में सब मिला कर दस हज़ार रथ थे। उसके शिरोभाग में एक लक्ष, पृष्ठ भाग में एक अब्ज बीस सहस्र रथ, ग्रीवा के स्थान पर एक लाख सत्तर हज़ार रथ खड़े थे। उसके पार्श्वों के आगे और पीछे सचल पर्वतों जैसे अगणित गज खड़े किये गये थे। उस सैन्य व्यूह के जघन देश की रक्षा का भार राजा विराट, केकय, काशिराज, चेदिराज तीस हज़ार रथों को साथ ले कर, कर रहे थे।

हे राजन्! इस प्रकार व्यूहरचना कर के पाण्डव लड़ने को तैयार हो गये और सूर्योदय की प्रतीक्षा करते हुए खड़े रहे। उस समय हाथियों और

रथों पर सूर्य की तरह सफेद रंग के साफ सुथरे तने हुए छत्र बड़े शोभायमान देख पड़ते थे।

इक्यावनवाँ अध्याय

कौरवों के सैन्यव्यूह का वर्णन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! पाण्डवों के अभेद्य एवं अर्जुन द्वारा रचित क्रौञ्चव्यूह को देख, आपका पुत्र दुर्योधन, द्रोणाचार्य के निकट गया और कृप, शल्य, सौमदत्ति, विकर्ण, अश्वत्थामा, दुःशासनादि अपने भाइयों एवं युद्धार्थ समागत अनेक वीर राजाओं को हर्षित करता हुआ कहने लगा—हे राजाओं! विविध प्रकार के आयुधों के चलाने में प्रवीण एवं रणचतुर तुममें से प्रत्येक योद्धा, ससैन्य पाण्डवों का संहार कर सकता है। फिर यदि तुम सब एकत्र हो जाओ तो फिर कहना ही क्या है। पितामह भीष्म जी से रक्षित हमारी सेना अजेय है और भीम द्वारा रक्षित पाण्डवों की सेना पराजित होने योग्य है। अतः संस्थान, शूर, विकर्ण, शूरसेन, कुकुट, रेचक, त्रिगर्त्त, मद्रक, यवन, शत्रुञ्जय, दुःशासन, वीरवर विकर्ण, नन्द, उपनन्द एवं मणिभद्रकों सहित चित्रसेन आदि महारथी अपनी अपनी अधीनस्थ सेनाओं को साथ ले—भीष्म पितामह की रक्षा करें।

हे राजन्! जब आपके पुत्र दुर्योधन ने इस प्रकार आज्ञा दी, तब आपके पुत्र, द्रोणाचार्य एवं भीष्म पितामह ने पाण्डवों का सामना करने के लिये अपनी सेना को व्यूहबद्ध किया। विशाल वाहिनी से रक्षित भीष्म जी के पीछे कुन्तल, दशार्ण, मागध, विदर्भ, मेकल, कर्ण, प्रावरण एवं उनकी सेनाओं के साथ प्रतापी द्रोणाचार्य चले। गान्धार, सिन्धु, सौवीर, शिवी, वसाती और अपनी सेना सहित शकुनि, द्रोणाचार्य की रक्षा करने लगे। अपने सहोदरों सहित दुर्योधन, अश्वातक, विकर्ण, अम्बष्ठ, कोसल,

दरद, शक, चुद्रक और मालव आदि शकुनि की सेना की रक्षा करते थे। भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त, उज्जैन के विन्द, अनुविन्द कौरव सेना के वाम भाग की रक्षा करने के निमित्त नियुक्त किये गये थे। इसी प्रकार सौमदत्त, सुशर्मा, काम्बोजराज सुदक्षिण, श्रुतायु और अच्युतायु दक्षिण भाग की रक्षा कर रहे थे। अश्वत्थामा, कृपाचार्य, कृतवर्मा आदि बड़ी भारी सेना को ले कर, व्यूह के पृष्ठ भाग की रक्षा करते थे। अन्य देशीय राजागण केतुमान, वसुदान तथा काशिराजसुत उनके पृष्ठ भाग में खड़े हो, उनकी रक्षा करते थे। इस क्रम से खड़े हुए आपकी ओर के योद्धा लड़ने को तैयार हो गये और शङ्खध्वनि तथा सिंहगर्जन करने लगे। उन सब हर्षित योद्धाओं के सिंहनाद को सुन कर, प्रतापी कुरुवृद्ध पितामह जी ने सिंहनाद कर अपना शङ्ख बड़े ज़ोर से बजाया। उनकी शङ्खध्वनि को सुन उनके विपक्षी दल वालों ने भी बहुत से शङ्ख, भेरी, पेशी तथा आनक बजाये। इससे समरक्षेत्र में उस समय तुमुल शङ्खध्वनि होने लगी। सफ़ेद घोड़ों के रथ पर सवार श्रीकृष्ण और अर्जुन ने सुवर्ण एवं रत्नों से भूषित पाञ्चजन्य और देवदत्त नामक शङ्खों को बजाया। कुन्तीसुत धर्मराज ने अपना अनन्तविजय नाम का, नकुल तथा सहदेव ने सुघोष और मणिपुष्पक नामक शङ्ख बजाये। काशिराज, शैव्य, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, विराट, सात्यकि, पाञ्चाल और द्रौपदी के पाँचों पुत्र, बड़े बड़े शङ्खों को बजाते हुए सिंह समान गर्जन करने लगे। उन वीर योद्धाओं का किया हुआ, वह घोर शब्द, अन्तरिक्ष में व्याप्त हो, प्रतिध्वनित हुआ।

हे राजन्! इस प्रकार अत्यन्त हर्षित कौरव और पाण्डव एक दूसरे को सन्तप्त करते हुए लड़ने के लिये आमने सामने खड़े हो गये।

बावनवाँ अध्याय

भीष्म-अर्जुन-युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय ! जब मेरी और पाण्डवों की सेनाएँ व्यूहबद्ध हो खड़ी हो गयीं ; तब प्रहार करने वाले योद्धाओं ने एक दूसरे पर किस प्रकार प्रहार किया ?

सञ्जय ने कहा—व्यूहबद्ध और कवचधारी सेनाओं को ध्वजा पताकाओं से भूषित एवं अपार सागर के समान देख कर, उन सेनाओं के बीच खड़े आपके पुत्र दुर्योधन ने आपके पक्ष के योद्धाओं से कहा—तुम सब अपने मन में वैरभाव को स्मरण कर युद्ध करो। दुर्योधन की इस बात को सुनते ही वे सब योद्धा अपनी ध्वजाएँ ऊँची कर और क्रूरता धारण कर और अपने प्राणों की कुछ भी परवाह न कर, पाण्डवों पर आक्रमण करने के लिये दौड़े। उस समय आपके पुत्रों और पाण्डवों में ऐसा घोर युद्ध हुआ कि, दर्शकों के रोंगटे खड़े हो गये। रथों से रथ और गजों से गज भिड़ गये। रथियों के तेज़ और सुन्दर पुंखों से युक्त बाण गजों और अश्वों के शरीरों में घुसने लगे। इस प्रकार युद्धारम्भ होने पर, मन ही मन वैर को स्मरण कर, महाभीम पराक्रमी भीष्म, सौभद्र, भीमसेन, सात्यकि, केकय, विराट, धृष्टद्युम्न आदि नरवीरों के ऊपर तथा चेदि और मत्स्यदेश के राजाओं के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। भीष्म पितामह के युद्ध करते ही पाण्डवों का सैन्यव्यूह भङ्ग हो गया। अश्वारोही, ध्वजाधारी उत्तमोत्तम अश्व मर मर कर धड़ाम धड़ाम गिरने लगे।

तब पुरुषसिंह अर्जुन, महारथी भीष्म को देख, अत्यन्त क्रुद्ध हुए और श्रीकृष्ण से कहने लगे—मेरा रथ भीष्म पितामह के निकट ले चलो। हे कृष्ण ! निश्चय ही क्रोध में भरे भीष्म जी मेरी सेना का नाश कर डालेंगे। हे जनार्दन ! द्रोण, कृप, शल्य, विकर्ण आदि धृतराष्ट्रपुत्रों को साथ ले

और दुर्योधन को आगे कर तथा महाधनुर्धरों से रक्षित भीष्म पितामह पाञ्चालों का संहार कर डालेंगे। अतः हे कृष्ण ! अपनी सेना के हितार्थ मैं भीष्म का वध करूँगा। अर्जुन की इस बात को सुन कर, श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—हे धनञ्जय ! मैं तुम्हें अब भीष्म के रथ के निकट लिये चलता हूँ। तुम अब सावधान हो जाओ। यह कह श्रीकृष्ण ने अर्जुन के जगत्प्रसिद्ध रथ को भीष्म की ओर बढ़ाया। अर्जुन के रथ में बक समान श्वेतवर्ण के घोड़े जुते हुए थे, उस पर बहुत सी पताकाएँ फहरा रही थीं। उसकी उच्च ध्वजा के ऊपर स्थित वानर भीम गर्जन कर रहा था। उसके चलते समय घनघोर घनघटा के गर्जन जैसा शब्द होता था। वह रथ बड़ी तेज़ी से दौड़ता था। मित्रों को हर्षित करने वाला अर्जुन अपने इसी रथ पर सवार हो एवं कौरवों और उनकी सेना का संहार करता हुआ आगे को बढ़ने लगा। शूरों को अस्त कर बाणप्रहारों से उनका नाश करते हुए अर्जुन को आते देख, सैन्धव आदि प्राच्य, सौवीर, केकय आदि से रक्षित भीष्म जी ने अर्जुन का सामना किया। क्योंकि अर्जुन का सामना भीष्म, द्रोण और कर्ण को छोड़ और कोई कर भी तो नहीं सकता। तदनन्तर जगत्प्रसिद्ध महारथी भीष्म ने सत्तर, द्रोण ने पचीस, कृपाचार्य ने पचास, दुर्योधन ने चौंसठ, शल्य ने नौ, सैन्धव ने नौ, शकुनि ने पाँच और विकर्ण ने दस भल्ल बाण छोड़ अर्जुन को विद्ध किया। इतने बाणों से विद्ध हो कर भी पर्वत समान अटल अचल अर्जुन यत्किञ्चित भी विचलित न हुआ। अर्जुन ने भीष्म के पचीस, कृप के नौ, द्रोण के आठ, विकर्ण और शल्य के तीन तीन तथा दुर्योधन के पाँच बाण मारे और उन सब को विद्ध किया। तदनन्तर सात्यकि, विराट, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पाँचों पुत्र एवं अभिमन्यु चारों ओर से अर्जुन को घेर उसकी रक्षा करने लगे। सोमकों सहित पाञ्चालराज ने, भीष्महितैषी द्रोण पर आक्रमण किया। रथियों में श्रेष्ठ भीष्म ने अस्सी पैने बाण छोड़, अर्जुन को विद्ध किया। तब आपके पक्ष के योद्धा जयजयकार पुकार चीत्कार करने लगे। उन हर्षित योद्धाओं के जयजयकार के चीत्कार को सुन, पुरुषसिंह

अर्जुन हर्षित होता हुआ उनके बीच जा पहुँचा। अर्जुन ने उनके मध्य में पहुँच, बीन बीन कर शत्रुपक्ष के वीरों को मारना आरम्भ किया। अर्जुन को इस प्रकार अपनी ओर की सेना को पीड़ित करते देख, दुर्योधन ने भीष्म से कहा—पाण्डुनन्दन महाबली अर्जुन श्रीकृष्ण को साथ ले हमारी सेना का जड़ मूल से नाश किये डालता है। हे गङ्गानन्दन! आप और महारथी द्रोण के जीवित रहते यह अनर्थ हो रहा है। कर्ण आपके कारण अस्त्र शस्त्र रख युद्ध ही नहीं करता। अतः आप ऐसा करें, जिससे अर्जुन मारा जाय।

हे राजन्! जब दुर्योधन ने इस प्रकार भीष्म पितामह से कहा, तब क्षत्रिय धर्म को धिक्कारते हुए भीष्म, अर्जुन के रथ की ओर बढ़े। श्वेत घोड़ों से युक्त रथों पर सवार दोनों योद्धा जिस समय आमने सामने खड़े हो गये, उस समय अन्य राजाओं ने सिंहनाद कर, शङ्ख बजाया। हे राजन्! अश्वत्थामा, दुर्योधन तथा आपका पुत्र विकर्ण—भीष्म को चारों ओर से घेर कर लड़ने को तैयार हुए। उधर पाण्डव भी अर्जुन को चारों ओर से घेर कर, घोर युद्ध करने को खड़े हो गये। युद्ध होने लगा। भीष्म ने अर्जुन के नौ बाण मारे। अर्जुन ने भीष्म पर मर्मभेदी दस बाण छोड़े। फिर रणकुशल अर्जुन ने ताक ताक कर सहस्रों बाण चला, शान्तनुनन्दन भीष्म को चारों ओर से घेर लिया; किन्तु हे राजन्! भीष्म ने अपने बाणों से अर्जुन के समस्त बाण नष्ट कर डाले। वे दोनों योद्धा हर्षित हो रहे थे और एक दूसरे की घात में लगे हुए समान रूप से युद्ध कर रहे थे। भीष्म के बाणों को अर्जुन बराबर काट रहा था और अर्जुन के चलाये असंख्य बाणों को भीष्म पितामह काट रहे थे। इतने में अर्जुन ने बड़े तीक्ष्ण पचीस बाण छोड़ भीष्म को विद्ध किया। इस पर भीष्म ने भी बड़े तेज़ बाणों के प्रहारों से अर्जुन को विद्ध किया। शत्रुञ्जय दोनों महाबली योद्धा एक दूसरे के घोड़ों, ध्वजाओं, रथों की ईषाओं और पहियों को नष्ट करते हुए लड़ रहे थे। क्रुद्ध एवं प्रहार करने वालों में उत्तम भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण जी के वक्षस्थल में तीन बाण मारे। उन बाणों के छाती में लगने से श्रीकृष्ण की

वैसी ही शोभा हुई, जैसी शोभा—पुष्पित पलाश वृक्ष की होती है। श्रीकृष्ण को घायल देख अर्जुन के क्रोध की सीमा न रही। अर्जुन ने तीन बाण मार कर भीष्म के सारथि को घायल किया। फिर ये दोनों योद्धा एक दूसरे की जान के गाहक हो गये। किन्तु यह होने पर भी दोनों में से कोई भी अपने प्रतिपक्षी का वध करने की घात न पा सका। अपने अपने सारथियों के चातुर्य से ये दोनों योद्धा—भाँति भाँति की मण्डलाकार गतियों से घूमते थे। कभी उनमें से कोई आगे बढ़ जाता था, कभी कोई पीछे हट जाता था। इस प्रकार ये दोनों रणचातुर्य प्रदर्शित कर रहे थे और एक दूसरे पर प्राणघातक प्रहार करने की घात में थे। अतः वे दोनों क्षण क्षण में अपने स्थान बदलते थे, अपने धनुषों को समान रूप से टंकोरते थे और सिंहनाद कर रहे थे। उनके शङ्खों की ध्वनि को सुन, रथों के पहियों से विदीर्ण होती हुई भूमि काँपती थी तथा शब्द भी करती थी। हे भरतसत्तम! इन दोनों योद्धाओं में किसी को किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं जान पड़ता था। दोनों जन बलवान थे और रण में अजेय थे। अतः दोनों ही आपस में लड़ने के योग्य थे। भीष्म को उनके रथ की ध्वजा देख कौरव और अर्जुन को उनके रथ की ध्वजा देख पाण्डव, पहचान पाते थे। इन दोनों नरवीरों के पराक्रम को देख कर, समस्त प्राणिमात्र विस्मित थे। जैसे धर्मारूढ़ पुरुष का छिद्र किसी भी दुष्ट पुरुष को नहीं देख पड़ता, वैसे ही इन दोनों के रणकौशल में किसी को कोई त्रुटि नहीं देख पड़ती थी। दोनों जन रण में बाणजाल से छिप जाते थे और क्षणभर में शीघ्र ही फिर देख पड़ते थे। उनके ऐसे पराक्रम को देख कर, देवता, गन्धर्व, चारण और ऋषि आदि आपस में कहने लगे कि, कोप में भरे हुए इन दोनों महारथियों को देवता, असुर, गन्धर्व या सब लोक भी नहीं जीत सकते। इनका यह युद्ध लोक में बड़ा विस्मयोत्पादक था। ऐसा युद्ध कभी नहीं होगा। बुद्धिमान् धनञ्जय भीष्म जी को नहीं जीत सकता। क्योंकि घोड़ों सहित रथ पर सवार भीष्म जी बड़ी शीघ्रता से बाण छोड़ सकते हैं। धनुष

के खड़े हुए तेजस्वी अर्जुन को भी भीष्म नहीं जीत सकते। इससे जान पड़ता है कि, प्रलयकाल तक यह युद्ध इसी प्रकार जारी रहेगा। हे भारत! आपके पक्ष के तथा पाण्डवों के पक्ष के योद्धा उन दोनों के पराक्रम वाले इस युद्ध में परस्पर एक दूसरे का प्राण नाश करते थे। तेज़ तलवारें, चमचमाते फरसे, बाण तथा अनेक प्रकार के बहुत से शस्त्रों से दोनों सेनाओं के शूर आपस में मारकाट मचाने लगे।

जिस समय भीष्म और अर्जुन का ऐसा घोर संग्राम हो रहा था—उस समय द्रोण के साथ राजा द्रुपद का भी बड़ा भारी युद्ध होने लगा था।

तिरपनवाँ अध्याय

धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य की लड़ाई

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! अपनी शक्ति भर सावधान रह, द्रोण एवं धृष्टद्युम्न का युद्ध किस प्रकार का हुआ? मुझे अब तुम यह सुनाओ। हे सञ्जय! मेरी समझ में रण में भीष्म द्वारा अर्जुन न जीता गया—इसका कारण दैव ही है। अतः कहना पड़ेगा कि, पुरुषार्थ की अपेक्षा दैव बलवत्तर है। यदि भीष्म कहीं कुपित हो जाँय, तो वे निश्चय ही चराचर को नष्ट कर सकते हैं। सो भीष्म जी अपना पूरा पराक्रम लगा कर भी अर्जुन को क्यों न जीत सके?

सञ्जय ने कहा—आप सावधान हो कर, इस दारुण युद्ध का वृत्तान्त सुनें। इन्द्र सहित समस्त देवता भी अर्जुन को नहीं जीत सकते। उधर द्रोण ने पैने बाणों से धृष्टद्युम्न को विद्ध किया और भल्ल बाण मार धृष्टद्युम्न के सारथि को रथ के नीचे गिरा दिया। फिर कुपित द्रोणाचार्य ने चार बाण मार धृष्टद्युम्न के रथ के चारों घोड़ों को घायल कर डाला। इस पर

वीर धृष्टद्युम्न ने नतपर्व बाणों से द्रोण को विद्ध किया और हँस कर बोला —खड़े रहो, खड़े रहो। इस पर परम प्रतापी और साहसी द्रोणाचार्य ने पुनः बाणजाल से धृष्टद्युम्न को ढक दिया और उसका वध करने की इच्छा से इन्द्रवज्र जैसा अथवा कालदण्ड सम एक भयानक बाण हाथ में लिया। उस बाण को धनुष पर चढ़ाते देख, समस्त सैनिक हाहाकार करने लगे। उस समय धृष्टद्युम्न ने बड़ा विचित्र साहसपूर्ण काम किया। वह यह कि, धृष्टद्युम्न अकेला ही रणक्षेत्र में पर्वत की तरह अचल अटल भाव से खड़ा रहा और उस घोर बाण को रास्ते ही में बाण मार कर काट डाला। फिर उसने द्रोण पर बाण वृष्टि की। धृष्टद्युम्न के इस महादुष्कर कार्य को देख, पाण्डवों और समस्त पाञ्चालों ने जयजयकार किया। इतने में धृष्टद्युम्न ने द्रोण का वध करने की इच्छा से उन पर एक ऐसी शक्ति फेंकी जो सुवर्ण और वैदूर्य से भूषित थी। बड़े वेग से आती हुई शक्ति को द्रोण ने बात की बात में काट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। प्रतापी धृष्टद्युम्न ने जब देखा कि उसकी चलाई शक्ति व्यर्थ हो गयी, तब उसने द्रोण पर बाण वृष्टि की। तब बड़े यशस्वी द्रोण ने बाणवृष्टि को निवारित करने के लिये उसके धनुष को काट डाला। धनुष के कट जाने पर धृष्टद्युम्न ने पर्वत तुल्य एक बड़ी भारी गदा उठा कर द्रोण पर फेंकी। उस समय द्रोण ने बड़ा अद्भुत पराक्रम प्रदर्शित किया। वे उस सुवर्णभूषित गदा के प्रहार को बचा गये। यही नहीं, किन्तु उन्होंने लौटा कर वह गदा धृष्टद्युम्न पर ही फेंकी। साथ ही अति पैने भल्ल बाण भी धृष्टद्युम्न पर चलाये। उन बाणों ने धृष्टद्युम्न के कवच को फोड़ और शरीर में घुस, उसका रुधिर पान किया। तब तो धृष्टद्युम्न ने दूसरा धनुष उठा और पाँच बाण मार द्रोण को विद्ध किया। घायल द्रोणाचार्य उस समय वसन्तकालीन पुष्पित पलाश वृक्ष की तरह देख पड़ते थे। द्रोण ने पुनः द्रुपदनन्दन धृष्टद्युम्न का धनुष काट डाला और अपना पराक्रम प्रदर्शित किया। धृष्टद्युम्न को धनुष-हीन देख, द्रोण ने उस पर दृढ़पर्व बाणों की ऐसी वृष्टि की, मानों मेघ

पर्वत पर जलवृष्टि करता हो। फिर द्रोण ने बाण मार, धृष्टद्युम्न के सारथि को रथ के नीचे गिरा दिया और उसके रथ के घोड़ों को मार डाला। इतना कर द्रोण ने सिंहनाद किया और धृष्टद्युम्न के हाथों के दस्ताने भी काट डाले। इस प्रकार अपने वाहन और धनुष को नष्ट हुआ देख, धृष्टद्युम्न हाथ में गदा ले रथ से उतर पड़ा और अपना पराक्रम दिखाने लगा। धृष्टद्युम्न ने ज्योंहीं द्रोण पर गदा का प्रहार करना चाहा, त्योंहीं द्रोण ने बाण मार कर, उसके हाथ से गदा गिरा दी। यह देख सब लोग बड़े विस्मित हुए। तदनन्तर धृष्टद्युम्न ने ढाल तलवार उठायी और वह द्रोण का वध करने को उन पर वैसे ही झपटा, जैसे माँसलोलुप सिंह मतवाले गज पर झपटता है। उस समय द्रोण ने बड़ी फुर्ती दिखलायी। उस समय द्रोण की फुर्ती, भुजबल और चातुर्य देखते ही बन आता था। द्रोण ने बाणों से धृष्टद्युम्न को ऐसा घेरा कि, वह आगे बढ़ ही न सका। इस पर धृष्टद्युम्न ने ढाल से समस्त बाणों को पीछे ठेल दिया। इतने में महाबली भीम, धृष्टद्युम्न की सहायता के लिये वहाँ जा पहुँचे। भीम ने पैने सात बाण मार द्रोण को घायल किया और बड़ी फुर्ती से धृष्टद्युम्न को अपने रथ पर बिठा लिया।

हे राजन्! उस समय द्रोण की रक्षा करने को आपके पुत्र दुर्योधन ने कलिङ्गराज भानुमान् को एक विशाल सेना सहित भेजा। आपके पुत्र के आदेशानुसार उस विशाल सेना ने भीम पर आक्रमण किया। इतने में द्रोण भी धृष्टद्युम्न को छोड़, वृद्ध विराट और राजा द्रुपद के सामने जा डटे। इस पर धृष्टद्युम्न वहाँ से युधिष्ठिर के निकट जा, उनकी सहायता करने लगा। उस समय रोमाञ्चकारी महाभयङ्कर युद्ध होने लगा। उस समय कलिङ्ग सैनिकों और भीमसेन में लोकक्षयकारी एवं भयप्रद घोर संग्राम हुआ।

चौवनवाँ अध्याय

कलिङ्गराज भानुमान् का वध

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! इस प्रकार दुर्योधन के आदेशानुसार कलिङ्गराज भानुमान् ने ससैन्य जब भीम पर आक्रमण किया और जब वह हाथ में गदा लिये हुए दण्डधारी साक्षात् काल की तरह जान पड़ता था; तब उसने बलवान भीम के साथ किस प्रकार युद्ध किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपके पुत्र की आज्ञा होते ही, कलिङ्गराज ने तुरन्त अपने साथ एक बड़ी भारी सेना ले, भीमसेन के रथ पर आक्रमण किया। गजारोहियों और अश्वारोहियों से युक्त कलिङ्गदेश की सेना को अपने ऊपर आक्रमण करने को आते देख, चेदियों को साथ ले भीमसेन निषादपति केतुमान के सम्मुख जा उपस्थित हुआ। इस पर क्रोध में भर श्रुतायु अपने साथ केतुमान को ले वहाँ गया जहाँ चेदिदेशीय सेना व्यूह बना भीमसेन के निकट खड़ी थी। कलिङ्गराज के साथ कई सहस्र रथ और केतुमान के साथ एक लक्ष हाथी और निषाद थे। इन लोगों ने चारों ओर से भीम को घेर लिया, तब तो भीम के अधीनस्थ करूपदेशाधिपति तथा अन्य देशों के राजाओं ने उनका सामना किया। उस समय बड़ी विकट लड़ाई हुई। उस समय उन योद्धाओं को अपने विराने का ज्ञान तक न रह गया था। उस समय भीम का और शत्रुओं का बड़ा विकट युद्ध हुआ। यह युद्ध वैसा ही था जैसा असुरों के साथ देवताओं का युद्ध हुआ था। उस समय समुद्र गर्जनवत् दोनों सेनाओं में बड़ा भारी शब्द हो रहा था। योद्धाओं में आपस में खींचातानी हो रही थी। रणभूमि रक्त मांस से परिपूर्ण हो गयी थी। उस समय सैनिक रणोन्मत्त हो उठे थे। यहाँ तक कि दुर्धर्ष वीर योद्धा अपने ही लोगों को पकड़ लेते थे। अल्प संख्यक चेदियों के साथ बहुसंख्यक कलिङ्गों और निषादों का यह युद्ध बड़ा भीषण हुआ। इतने में चेदियों के पैर उखड़े और वे भीम को छोड़ पीछे

हटे। चेदियों को पीछे हटते देख, भीम आगे बढ़ कलिङ्गों के अति निकट आ खड़े हुए और अपने रथ पर अटल अचल भाव से बैठे रहे। फिर बैठे ही बैठे भीम ने कलिङ्ग सैनिकों को बाण जाल से ढक दिया। इस पर महाधनुर्धर कलिङ्गराज ने एवं शक्रदेव नामक उसके महारथी पुत्र ने भीमसेन के बाण मारना आरम्भ किया। इस पर अपने भुजबल पर निर्भर भीम ने धनुष तान, कलिङ्गराज का सामना किया। शक्रदेव ने संग्राम में अनेक बाण छोड़ भीमसेन के रथ के घोड़े मार डाले। रथहीन भीम को देख, शक्रदेव बाण छोड़ता हुआ भीमसेन के ऊपर दौड़ा।

हे राजन्! जैसे ग्रीष्म ऋतु समाप्त होने पर मेघ जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही शक्रदेव ने भीम पर बाणवृष्टि की। हत अश्वों वाले रथ पर बैठे हुए भीम ने तान कर लोहे की एक गदा शक्रदेव के मारी। उस गदा की चोट से अचेत हो शक्रदेव रथ के नीचे गिर पड़ा। उसके सारथि की भी यही दशा हुई। अपने पुत्र का मारा जाना देख, कलिङ्गराज ने अपने साथ सहस्रों रथियों को ले भीमसेन को चारों ओर से घेर लिया। यह देख भीम ने गदा को रख हाथ में बड़ी पैनी एक तलवार ले ली। साथ ही अर्द्ध-चन्द्राकार, गेंडे की खाल की बनी सौ फुल्लियों से शोभित ढाल भी उठा ली। यह देख कलिङ्गराज अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और भीम का वध करने की इच्छा से अपना धनुष टंकोरा और सर्प की तरह विषैला एक बाण भीमसेन पर छोड़ा। बड़े वेग से अपनी ओर उस बाण को आते देख, भीमसेन ने अपनी विशाल तलवार से उसके दो खण्ड कर डाले। फिर भीम शत्रुसैन्य को त्रस्त करता हुआ सिंहनाद करने लगा। इस पर क्रुद्ध कलिङ्गराज ने तुरन्त भीमसेन पर, पैने चौदह तोमर फेंके। इससे भीमसेन ज़रा भी विचलित न हुआ और अपनी तलवार से उन चौदहों तोमरों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। फिर भीमसेन ने भानुमान् पर आक्रमण किया। इस पर भानुमान् ने बाणजाल से भीम को ढक दिया। फिर वह ऐसा गर्जा कि, उसकी गूँज आकाश में छा गयी। भानुमान् का यह सिंहनाद, भीम न सह सका

और भीम ने भी ज़ोर से सिंहनाद किया। भीम के सिंहनाद से त्रस्त कलिङ्गदेशीय सेना ने समझा कि, भीम मनुष्य नहीं है, वह कोई देवता है। इतने में हाथ में तलवार लिये हुए महाबली भीम अपने रथ से कूद पड़ा और हाथी के दोनों दाँतों को पकड़ वह बड़ी फुर्ती के साथ भानुमान् के हाथी की पीठ पर चढ़ गया। इस पर भानुमान् ने भीम के एक शक्ति मारी; किन्तु भीम ने उस शक्ति के दो टुकड़े कर डाले। तदनन्तर तलवार के एक ही हाथ से भानुमान् के शरीर के भी दो टुकड़े कर डाले। गज पर सवार भानुमान् का इस प्रकार वध कर, भीमसेन ने बड़ा भारी बोझ सम्हारने वाले खड्ग से हाथी की गर्दन काट डाली। इस पर हाथी चिंघार मार भूमि पर वैसे ही गिर पड़ा जैसे समुद्री लहरों के चपेटों से शिखरों सहित पर्वत बड़े वेग से समुद्र में गिर पड़ता है। तदनन्तर भीम हाथ में तलवार ले रणभूमि में खड़ा हो गया। वह अगणित हाथियों को अपनी तलवार से काटता और रास्ता करता हुआ अश्वारोहियों की, गजारोहियों की सेना और रथसैन्य के बीच घूमने लगा। बलोत्कट भीमसेन शत्रु-सैन्य के सैनिकों के सिरों को काटता हुआ, बाजपक्षी की तरह शत्रुओं पर झपटता था। वह झपट कर गजों पर जा पहुँचता और उनकी पीठ पर बैठ लड़ने वाले योद्धाओं के सिरों को काट डालता था। यद्यपि इस समय भीम अकेला और पैदल ही लड़ रहा था, तो भी वह अत्यन्त कुपित होने के कारण प्रलयकालीन यमराज की तरह, समस्त शत्रुओं को अत्यन्त भयभीत कर रहा था। उस समय सिंहनाद कर इधर उधर भ्रमण करने वाले भीम के सामने मूढ़ शत्रु गरजते हुए जाते थे; किन्तु वे तुरन्त ही भीम के हाथ से मारे जाते थे। भीम ने शत्रुओं के अगणित रथों की ईषाओं को और धुरियों को तोड़ डाला और शत्रुओं का वध किया। भीमसेन इस युद्ध में घूम फिर कर पैतरेबाज़ी दिखला रहा था। कभी वह ऊपर को उछलता था, कभी शत्रु की बग़ल से साफ़ निकल जाता था। कभी शत्रुओं की टोली में घुस जाता था, कभी उन्हें कतरा कर दूर चला जाता था, कभी आगे

बढ़ आता था और कभी शत्रुओं पर आक्रमण करता था। इस युद्ध में भीम ने अच्छी पैतरेबाज़ी दिखलायी थी। पाण्डवों की जो सेना आगे थी उसके अनेक योद्धा घायल हो मृतप्राय हो भूमि पर पड़े हाय हाय कर रहे थे। वे निरङ्कुश हाथी जिनके दाँत टूट गये थे, सूँड़ें कट गयी थीं, कनपटियाँ विदीर्ण हो गयी थीं और जिनके महावत मारे गये थे, सेना में दौड़ते हुए, अपने सैनिकों ही को कुचल कुचल कर मार रहे थे। अनेक हाथी चिंघारते हुए भूमि पर गिर रहे थे। इनके अतिरिक्त रणभूमि में बहुत से कटे हुए घुड़सवार, तोमर, कटे हुए सिर, घोड़े, हाथियों की बढ़िया झूलें, बढ़िया रासें, फंडे, शक्ति, पताकाएँ, मुग्दर, माथे, विविध सामरिक यंत्र, विचित्र धनुष, चमचमाते भिन्दिपाल, अङ्कुश, तरह तरह के अनेक घंटे, सोने के म्यान वाली तलवारें—दिखलायी पड़ती थीं। कटी हुई सूँड़ों वाले अनेक सुन्दर हाथी रणभूमि में पड़े ऐसे जान पड़ते थे, मानों पहाड़ हों।

इस प्रकार महासैन्य को नष्ट कर भीमसेन ने बहुत से घोड़े और घुड़सवार भी नष्ट किये। इस महायुद्ध में तलवारों की कटी हुई मूठें, रथों के जोत, चमचमाती पेटियाँ, बहुमूल्य झूलें, प्रास, ऋष्टि, कवच, ढालें, रथों की रंग बिरंगी गद्दियाँ रणभूमि में पड़ी थीं। टूटे हुए प्रासों तथा अन्य अनेक प्रकार के युद्धोपयोगी यंत्रों से एवं चमचमाती तलवारों से पूर्ण रण-भूमि ऐसी जान पड़ती थी, मानों भीमसेन द्वारा वहाँ रंग बिरंगे फूल छितरा दिये गये हों। महाबली भीम उछलता कूदता और काटता कुचलता ध्वजाओं सहित कितने ही रथियों को भूमि पर गिरा रहा था। उसको फुर्ती के साथ उछलते कूदते और वार करते देख, देखने वालों को बड़ा विस्मय होता था। भीम ने कितनों ही को तो पैरों से कुचल कर, कितनों ही को पटक कर मार डाला था। भीम द्वारा कितने ही योद्धा तलवार-घाट उतारे गये थे और कितने ही उसके भीमगर्जन से त्रस्त हो, भाग गये थे तथा कितने ही उसकी झपट में आ भूशायी हो गये थे। इतना ही नहीं, कितने ही योद्धा तो उसे देखते ही मारे भय के निर्जीव हो

भूमि पर गिर पड़े थे। ये सब होने पर भी कलिङ्गों की वेगवान् सेना ने भीम पर आक्रमण किया और उसे घेर लिया। कलिङ्गसेना के आगे खड़े श्रुतायु को देख, भीमसेन उसकी ओर झपटा। यह देख श्रुतायु ने नौ बाण मार, भीमसेन की छाती घायल कर दी। इस पर भीम वैसे ही बिगड़ा जैसे अङ्कुश के प्रहार से हाथी बिगड़ता है और क्रोध से अग्नि की तरह प्रज्ज्वलित हो उठा। उस समय अशोक ने भीम की सवारी के लिये एक रथ दिया। उस पर सवार हो शत्रुनाशकारी कुन्तीसुत भीम कलिङ्गों का सामना करने को उनके सामने गया। श्रुतायु को सम्बोधन कर भीम ने कहा—खड़ा रह! खड़ा रह!! इस पर फुर्तीले श्रुतायु ने अपना हस्तलाघव दिखलाते हुए एवं कुपित हो भीम पर बाण छोड़ना आरम्भ किया। श्रुतायु के नौ बाणों से घायल भीम, लाठी से कुचले हुए सर्प की तरह फुँसकारने लगा। फिर क्रोध में भर और धनुष उठा उसने श्रुतायु के सात बाण मार उसे घायल किया। फिर दो बाण मार उसके रथ के पहियों के रक्षकों को तथा सत्य एवं सत्यदेव को मार डाला। परम साहसी भीम ने तीन बाण मार केतुमान को यमालय भेजा। यह देख कलिङ्गदेशीय समस्त योद्धागण सतर्क हो गये और चारों ओर से भीम को घेर लिया। फिर उस पर वे लोग बर्छियों, तलवारों, तोमरों, ऋष्टियों और फरसों की वृष्टि करने लगे। तब भीमसेन इस शस्त्रवृष्टि को निवारण कर और हाथ में गदा ले आगे बढ़ा और आगे बढ़ एक ही झपाटे में सात सौ वीरों को यमालय भेज दिया। फिर गदाप्रहार से उसने दो हज़ार कलिङ्गों को मार डाला। उसके ऐसे विक्रम को देख, लोगों को बड़ा आश्चर्य होता था। भीमसेन लगातार कलिङ्गसेना का संहार कर रहा था। जिन हाथियों के महावतों को भीमसेन ने घायल कर दिया था वे हाथी—भीमसेन को देख पवनप्रेरित मेघ की तरह अपनी सेना में गिरते हुए भाग रहे थे। भागते हुए वे बड़े ज़ोर से घावों की पीड़ा के कारण चिंघारते थे और अपने सैनिकों को कुचलते थे। फिर महाबाहु परमबली भीमसेन ने बड़े

हर्ष में भर और हाथ में तलवार ले, अपना शङ्ख बजाया। उसकी शङ्ख ध्वनि को सुन कलिङ्गराज के योद्धाओं के कलेजे दहल गये और वे मुग्ध हो गये। समस्त सैनिक और वाहन थर्रा उठे। अनेक रीति से युद्ध करने वाले भीम को मतवाले गजराज की तरह रणभूमि में इधर उधर भ्रमण करते और उछलते कूदते देख, शत्रु की सेना के सैनिक विमूढ़ हो गये। जिस प्रकार विशालकाय नक्र के दौड़ने से सरोवर के जल में खलबली मचती है, उसी प्रकार भीम के भय से शत्रुसैन्य खलबला उठा। समस्त सैनिक काँपने लगे। अद्भुत पराक्रमी भीम से त्रस्त कलिङ्गराज के सैनिकों के दल के दल रण छोड़ भागने लगे। उस समय पाण्डवों के सेनापति धृष्टद्युम्न ने अपने सैनिकों को ढाँढ़स बँधा—शत्रुसैन्य पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। अपने सेनापति के आदेश को सुन शिखण्डी आदि अनेक योद्धा और रथसैन्य के कई दल भीम के निकट उनकी सहायता के लिये जा पहुँचे। धर्मराज युधिष्ठिर अपने साथ मेघतुल्य वर्ण वाले गजों की एक सेना ले भीम के पीछे हो लिये थे। अपनी सेना को एकत्र कर धृष्टद्युम्न ने भीमसेन के पार्श्व में खड़े हो उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर लिया और जो श्रेष्ठ योद्धा थे उन्हें अपने निकट रखा। क्योंकि धृष्टद्युम्न भीमसेन और सात्यकि को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मानता था। भीम के निकट पहुँचते ही धृष्टद्युम्न ने देखा कि, भीम कलिङ्ग सेना में घूम घूम कर उसका नाश कर रहा है। उस समय हर्षित हो भीम बड़ा सिंहनाद कर रहा था और सिंहनाद की तरह बीच बीच में अपना शङ्ख भी बजाता जाता था। इसी बीच में सुवर्णभूषित और कपोतवर्ण अश्वों से युक्त धृष्टद्युम्न के रथ की ध्वजा को देख, भीमसेन स्वस्थ हुआ। भीम को कलिङ्गसेना से घिरा देख, धृष्टद्युम्न ने उसकी रक्षा करने को आगे बढ़ शत्रुसैन्य पर आक्रमण किया। भीम और धृष्टद्युम्न ने दूर ही से सात्यकि को अपनी ओर आते देख, शत्रुसैन्य पर नवीन उत्साह से आक्रमण किया। इतने में सात्यकि वहाँ पहुँच गया और वह भीम तथा धृष्टद्युम्न के पार्श्व

की रक्षा करने लगा। साथ ही अति उग्र रूप धारण कर सात्यकि ने कलिङ्गों की सेना का नाश करना आरम्भ किया। भीमसेन ने कलिङ्गराज के सैनिकों का वध कर रणभूमि में माँस की कीचड़ से युक्त रुधिर की नदियाँ बहा दीं। पाण्डवों और कलिङ्गों के बीच बहती हुई रुधिर की नदी को भीमसेन ने पार किया। भीमसेन के ऐसे अद्भुत पराक्रम को देख, आपके योद्धा पुकारने लगे कि यह भीम नहीं है; किन्तु भीम के रूप में साक्षात् काल हम लोगों से युद्ध कर रहा है। अपने योद्धाओं के इस कथन को सुन शान्तनुनन्दन भीष्म अपनी सेना को व्यूहबद्ध कर, भीमसेन से लड़ने को उसके सामने गये। यह देख, भीम, धृष्टद्युम्न और सात्यकि ने भीष्म के सुवर्णमण्डित रथ पर आक्रमण किया और उनको घेर प्रत्येक ने भीष्म जी पर तीन तीन बाण छोड़े।

हे राजन्! उस समय आपके पिता देवव्रत ने सीधे जाने वाले तीन बाण छोड़, उनके बाणों को नष्ट कर डाला। फिर अगणित बाण छोड़ भीष्म ने उन तीनों का आगे बढ़ना रोक दिया। फिर सुवर्ण-साज से भूषित भीम के घोड़ों को मार डाला। हत-अश्व-रथ पर सवार भीम ने भीष्म के रथ की ओर एक शक्ति फेंकी; किन्तु भीष्म ने बीच ही में उस शक्ति को बाणों से काट कर भूमि पर गिरा दिया। यह देख भीम हाथ में एक बड़ी भारी लोहे की गदा ले रथ से कूद पड़ा। इतने में भीम का काम सरल करने के लिये सात्यकि ने भीष्म के सारथि को मार डाला। सारथिहीन घोड़े भीष्म के रथ को ले पवन वेग से दौड़े और रणभूमि के बाहर चले गये। उस समय घास के ढेर में लगे हुए अग्नि की तरह भीम मारे क्रोध के प्रज्वलित हो उठा। वह शत्रुसैन्य का संहार कर रणभूमि में खड़ा हुआ था; किन्तु आपके पक्ष के किसी भी वीर का यह साहस न हुआ कि उस पर कोई प्रहार करे। तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न, यशस्वी भीम को अपने रथ में बिठा शत्रुसैन्य की आँखों के सामने ही ले गया। पाञ्चाल और मत्स्यों से सम्मानित भीम, धृष्टद्युम्न से मिल कर, सात्यकि के निकट

गया। उस समय नरव्याघ्र सात्यकि ने धृष्टद्युम्न के आगे भीम से यह कहा —यह बड़े सौभाग्य की बात है कि कलिङ्गराज राजकुमार केतुमान, वहाँ के शक्रदेव और अन्य कलिङ्ग वीरों को तुमने युद्ध में नष्ट कर डाला। अश्वों, गजों से युक्त कलिङ्गदेशीय सैन्यव्यूह को तुमने आज अकेले ही निज बाहु-बल से नष्ट किया है। यह कह सात्यकि ने रथ से उतर और दौड़ कर भीम को बड़ी प्रीति के साथ अपनी छाती से लगा लिया। फिर भीम को अपने ही रथ पर सवार करा और भीम को उत्साहित कर, हे राजन्! सात्यकि आपके सैनिकों का संहार करने लगा।

पचपनवाँ अध्याय

अभिमन्यु और लक्ष्मण की लड़ाई

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब उस दिन का प्रथम भाग समाप्त होने पर हुआ और जब बहुत से हाथी, घोड़े, पैदल तथा अश्वारोही सैनिक मारे जा चुके, तब द्रोणसुत अश्वत्थामा, शल्य और महाबली कृपाचार्य; धृष्टद्युम्न के साथ लड़ने को आये। धृष्टद्युम्न ने अश्वत्थामा के विख्यात घोड़ों को दस बाण मार कर मार डाला। तब अश्वत्थामा—शल्य के रथ पर सवार हो गया और पाञ्चालराज के पुत्र पर बाणवृष्टि करने लगा। धृष्टद्युम्न को अश्वत्थामा के साथ युद्ध करते देख, अभिमन्यु तीक्ष्ण बाणों की वृष्टि करता हुआ आगे बढ़ा। पुरुषश्रेष्ठ अभिमन्यु ने शल्य को पाँच, कृप को नौ, और अश्वत्थामा को नौ बाणों से विद्ध किया। अश्वत्थामा ने अभिमन्यु को एक बाण से विद्ध किया था।

हे राजन्! आपके पौत्र लक्ष्मण ने जब देखा कि, अभिमन्यु लड़ रहा है, तब वह अभिमन्यु की ओर दौड़ा और उससे लड़ने लगा। शत्रुपक्ष के वीरों का संहार करने वाले दुर्योधन-नन्दन लक्ष्मण ने कुपित हो—अभिमन्यु

पर बाण छोड़े। उस समय लक्ष्मण ने अद्भुत पराक्रम प्रदर्शित किया। हे भरतसत्तम! इस पर रोष में भर अभिमन्यु ने अपना हस्तलाघव दिखला पचास बाण मार अपने चचेरे भाई लक्ष्मण को वेध डाला। तब लक्ष्मण ने एक बाण मार अभिमन्यु के धनुष की मुठिया काट उसे निकम्मा कर डाला। इस पर आपकी ओर के सेनानायकों ने बड़ा हर्षनाद किया। उधर अभिमन्यु ने टूटे हुए धनुष को फेंक, एक बड़ा मज़बूत धनुष हाथ में लिया। वे दोनों अब एक दूसरे का दाँव चुकाते तीक्ष्ण बाणों के प्रहार करने लगे। अपने पुत्र को आपके पौत्र अभिमन्यु द्वारा अत्यन्त पीड़ित होते देख, दुर्योधन स्वयं अपने पुत्र की सहायता के लिये दौड़ कर उसके निकट गया। यह देख पाण्डवपक्षीय राजागण अपने रथों को दौड़ा अभिमन्यु की रक्षा के लिये उसे घेर खड़े हो गये। श्रीकृष्ण के समान पराक्रमी अभिमन्यु यह सब होने पर भी तिलभर भी विचलित न हुआ। तथापि अपने पुत्र को जोखें में देख, अर्जुन उसकी रक्षा करने को स्वयं उसके निकट जा पहुँचे। उस समय रथों, गजों और घोड़ों से युक्त सैन्य ले भीष्म, द्रोण आदि अर्जुन की ओर लपके। गजों, अश्वों और रथों तथा पैदल सैनिकों के दौड़ने से इतनी धूल उड़ी कि, वह सूर्य के रथ तक जा पहुँची और आकाश को उसने ढक दिया। सहस्रों गजारोही और सैकड़ों राजा लोग अर्जुन के बाणों की मार के भीतर पहुँच न आगे बढ़ सके और न पीछे ही हट सके।

हे राजन्! उस समय समस्त प्राणी कोलाहल करने लगे। दिशाएँ अन्धकारमयी हो गयीं। कौरवों के अविनय ने बड़ा भीषण काण्ड उपस्थित कर दिया। अर्जुन के बाणजाल से अन्तरिक्ष, दिशाएँ, भूमि तथा सूर्य ढक गये। इस युद्ध में बहुत से हाथी मारे गये; बहुत से रथों के घोड़े मारे गये। रथी सेना के सेनानायक अपने रथों से कूद कर और रण छोड़ कर भाग गये। कितने ही रथी रथहीन हो गये। बाजूबंद विभूषित भुजाओं वाले वीर हाथों में तलवारें लिये हुए भागे जा रहे थे। अर्जुन की मार से भयत्रस्त हो, गजारोही गजों को और अश्वारोही सैनिक घोड़ों को छोड़, चारों

ओर भागने लगे। अर्जुन के बाण-प्रहार से गजों और अश्वों पर चढ़ कर लड़ने वाले योद्धा धड़ाम धड़ाम भूमि पर गिर रहे थे। उग्ररूपधारी अर्जुन बड़ी फुर्त्ती से शत्रुपक्षीय राजाओं के हाथों को जिनमें प्रास, तलवारें और शक्तियां थी—काटते चले जाते थे। हे राजन्! इस प्रकार अर्जुन द्वारा काटे गये चमचमाते परिघ, मुद्गर, प्रास, भिन्दिपाल, खड्ग, पैने फरसे, तोमर, सुवर्णकवच, ध्वजा, ढाल, चँवर, सोने की डंडियों के छत्र, चाबुक, लोहे के अङ्कुश और रास के ढेर लगे हुए थे। आपकी सेना में मुझे एक भी ऐसा वीर न देख पड़ा जो यत्न कर के भी अर्जुन के सामने खड़ा तो रहता। मैंने देखा कि, जो योद्धा अर्जुन से लड़ने को उसके सामने जाता, वह बाण-प्रहार से निर्जीव हो यमालय को रवाना हो जाता था।

हे राजन्! जब आपके पक्ष के योद्धा भाग कर तितर बितर हो गये; तब श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपने अपने शङ्खों को बजाया। आपकी सेना को इस प्रकार पलायन करते देख, आपके पितृस्थानीय देवव्रत मुसक्यां कर द्रोणाचार्य से बोले—देखो, महाबली पाण्डुनन्दन धनञ्जय अकेला ही अपने शक्त्यानुसार हमारी ओर की सेना का संहार कर रहा है। युगान्तकालीन यमराज के समान धनञ्जय के रूप को देख कर, ऐसा जान पड़ता है कि, इसे रण में जीतना असम्भव है। एक दूसरे की ओर निहारते हुए और पलायन करते हुए इन सैनिकों को लौटा कर लाना भी सम्भव नहीं है। फिर समस्त लोगों के नेत्रों की शक्ति को मानों अपहृत करते हुए भगवान् सूर्य भी अब अस्ताचलगामी हो रहे हैं। अतः इस समय यही उचित जान पड़ता है कि, हम अपनी सेना को पीछे लौटा लें। क्योंकि इस समय ये समस्त योद्धा भयग्रस्त और थके हुए हैं। इस समय हम लोग इन्हें चाहे कैसे समझावें, पर ये अब युद्ध न करेंगे। द्रोण से यह कह, हे राजन्! भीष्म ने आपकी सेना को पीछे हटा लिया और युद्ध बंद किया। उधर सन्ध्याकाल उपस्थित हुआ, सूर्यअस्त हो गये। पाण्डवों और कौरवों की सेनाएँ रणक्षेत्र त्याग कर अपने अपने शिविरों को गयीं—युद्ध बंद हुआ।

तीसरा दिन

छप्पनवाँ अध्याय

गरुड़व्यूह और अर्धचन्द्राकार व्यूह

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब रात बीती और सबेरा होने को हुआ ; तब भीष्म जी ने कौरवों की सेनाओं को रणभूमि में उपस्थित होने की आज्ञा दी। आज के दिन भीष्म ने अपनी सेना गरुड़व्यूह-बद्ध खड़ी की। क्योंकि वह आपके पुत्रों के लिये विजयाभिलाषी थे। उस गरुड़व्यूह के चोंच के अगले भाग में भीष्म जी स्वयं थे। दोनों नेत्रों की जगह द्रोण और कृतवर्मा थे। त्रैगर्त, केकय और वाटधानों सहित यशस्वी अश्वत्थामा एवं कृपाचार्य मस्तक स्थान पर खड़े हुए भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त, भद्रक, तथा पञ्चनद देश के नामों से विख्यात सिन्धु, सौवीर सैनिकों के साथ जयद्रथ गरुड़व्यूह के कण्ठ स्थान पर थे। पीछे के भाग में अपने भाइयों एवं अपने सदा साथ रहने वाले लोगों सहित दुर्योधन खड़ा था। पूँछ के स्थान पर उज्जैन के विन्दु, अनुविन्द थे। इन दोनों के साथ काम्बोज, शक, और शूरसेनी सैनिक थे। अपने अनुचरवर्ग एवं ऊँटों के रसाले को साथ ले मगधराज इस व्यूह के दक्षिण पार्श्व की रक्षा कर रहे थे। बृहद्बल, कारूप, विकुञ्ज, मुण्ड और कुण्डि वृषव्यूह के वाम पार्श्व के रक्षक थे।

कौरवों के व्यूह की इस प्रकार की रचना देख, अर्जुन अपने साथ धृष्टद्युम्न को ले, अपनी सेना को व्यूहबद्ध करने लगे। उन्होंने अपनी सेना का अर्धचन्द्राकार व्यूह रचा। इस व्यूह के दक्षिण भाग में सब के आगे भीम थे, भीम के आस पास विविध अस्त्रधारी विविध देशों के राजा थे। उनके पीछे राजा विराट् और राजा जयद्रथ थे। इनके पीछे विष में बुझे बाण तथा अन्य शस्त्रों को लिये हुए नील खड़ा था और नील के पीछे धृष्टकेतु था। उसके आस पास चेदि, काशी, करूप और पौरव थे। इस व्यूह के बीचों बीच धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, पाञ्चाल, प्रभद्रक आदि खड़े थे। गज-

सैन्य को ले कर महाराज युधिष्ठिर भी पास ही खड़े थे। धर्मराज के पीछे सात्यकि और द्रौपदी के पाँचों पुत्र थे। उनके पीछे अभिमन्यु और अभिमन्यु के पीछे इरावान् खड़ा था। इरावान् के पीछे भीमपुत्र घटोत्कच महारथी केकयों के साथ खड़ा था। अर्धचन्द्राकार व्यूह के वामभाग में श्रीकृष्ण से रक्षित पुरुषश्रेष्ठ अर्जुन थे।

आपके पुत्रों और उनके सहायकों का संहार करने के लिये इस प्रकार पाण्डवों ने अपना व्यूह रचा था। दोनों ओर व्यूहरचना हो चुकते ही दोनों ओर से परस्पर प्रहार होने लगा। दोनों ओर की गजसेनाएँ और रथसेनाएँ आपस में भिड़ गयीं। मारकाट मचाते अश्वारोही और रथी एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे थे। दौड़ते हुए एवं आक्रमण करते हुए रथों के पहियों की घरघराहट का शब्द दुन्दुभियों के शब्द से मिल गया था। हे राजन्! इस समय युद्ध की भीषणता बहुत कुछ बढ़ गयी थी। आपस में मारकाट करते हुए उभय पक्ष के वीरों का कोलाहल आकाश तक पहुँच गया था।

सत्तावनवाँ अध्याय

तुमुल संग्राम

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! उभय पक्ष के सैनिकों के व्यूहबद्ध हो खड़े होते ही जब युद्धारम्भ हुआ, तब अर्जुन ने आपकी ओर की रथसेना को नष्ट करना आरम्भ किया। युगान्तकाल की तरह आपकी रथसेना का अर्जुन संहार करने लगा। तिस पर भी पाण्डवपक्षीय अतिरथियों द्वारा घायल किये जाने पर भी आपके सेनापतियों ने पाण्डवों के साथ युद्ध किया। वे लोग अपनी जान को हथेली पर रख निष्कलङ्क यश प्राप्ति के लिये लड़ रहे थे। हे राजन्! आपके पक्ष वाले सेनापति मन को एकाग्र कर, युद्ध कर रहे थे। अतः वे पाण्डवों के साथ बहुत देर तक लड़ते रहे। यहाँ तक

कि उन्होंने पाण्डवों के सैनिकों को भगाया और स्वयं भी तितर बितर हो गये। जब आपकी और पाण्डवों की सेनाओं के सैनिक व्यूह भङ्ग कर भागने लगे; तब यह जान लेना कठिन हो गया कि, कौन सैनिक किस पक्ष का है। पलायन करते हुए सैनिकों और उनके वाहनों के पैरों से उड़ी हुई धूलि ने सूर्यमण्डल को ढक दिया। इससे दिशाओं और उपदिशाओं का ज्ञान भी न हो सका। फिर भला सैनिक एक दूसरे को कैसे पहचान सकते थे। अतः वे लोग अटकलपच्चू तथा नामों एवं गोत्रों को सुन जहाँ तहाँ आपस में भिड़ जाया करते थे। यह होने पर भी द्रोण की अधीनस्थ सेना जहाँ थी वहाँ के व्यूह का भाग छिन्न भिन्न न हुआ। इसी प्रकार भीम और अर्जुन द्वारा रचित पाण्डवों का सैन्यव्यूह भी ज्यों का त्यों बना रहा। दोनों पक्षों के रथी एवं हाथी आपस में भिड़ रहे थे और व्यूह के अग्रभाग में स्थित सैनिक पंक्तियों से निकल कर लड़ रहे थे। इस महाभीषण संग्राम में सवार सवारों को, चमचमाती ऋष्टियों तथा प्रासों से एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। रथी रथियों के सामने जा सुवर्णभूषित बाणों से परस्पर प्रहार करते थे। गजारोही योद्धा शत्रुओं पर बाण, तोमर और नाराचों से प्रहार कर रहे थे। कोई कोई वीर उछल कर हाथी के सिर पर जा चढ़ता था और गजारोही शत्रु की चोटी पकड़ तलवार से उसका सिर काट डालता था। अनेक योद्धा गजों के दन्तप्रहारों से घायल हो, रुधिर की वमन कर अन्तिम श्वाँस ले रहे थे। कोई कोई योद्धा कूद कर आक्रमणकारी हाथी के दाँतों पर जा बैठते थे और शत्रु की बर्छी से घायल हो तड़पने लगते थे। परस्पर वैर-भाव रख और रोष में भरे हुए पैदल सैनिक हर्षित हो, भिन्दिपालों और फरसों से परस्पर संहार कर रहे थे। इस युद्ध में रथी योद्धा गजारोही योद्धा के सामने जा और गजारोही योद्धा रथी के सामने जा और उनका वध कर, उन्हें पृथिवी पर गिरा रहे थे। जब लड़ते लड़ते सैनिक बहुत निकट आ जाते; तब वे एक दूसरे पर प्रासों से प्रहार करते थे। पैदल सैनिक रथियों को और रथी पैदल सैनिकों पर बड़े पैने तीर छोड़ते थे। अश्वारोही गजा-

रोहियों को और गजारोही अश्वारोहियों पर प्रहार कर रहे थे। यह युद्ध बड़ा ही अद्भुत था। महावतों ने पैदल सैनिकों को और पैदल सैनिकों ने महावतों का वध किया। पैदल सैनिकों ने अश्वारोहियों को और अश्वारोहियों ने सैकड़ों सहस्त्रों पैदलों को मार मार कर भूमि पर गिरा दिया।

हे राजन्! रणभूमि में आज के दिन कटी हुई ध्वजाओं, तोमरों, प्रासों, गदाओं, परिघों, कंपनों, शक्तियों, रंग बिरंगे कवचों, मुद्गरों, अङ्कुशों, चमचमाती तलवारों, सोने के हौदों, बहुमूल्य झूलों से परिपूर्ण थी और ऐसा जान पड़ता था मानों भूमि पर रंग बिरंगे फूल बिखरे पड़े हों। युद्ध में मारे गये सैनिकों और घोड़े, हाथियों के इतने शव पड़े थे कि, रणभूमि में चलना कठिन था। चलने का रास्ता ही नहीं मिलता था। जिधर देखो उधर रक्त मांस की कीचड़ दिखलायी पड़ती थी। रणक्षेत्र में बहते हुए रक्त से वहाँ की धूल दब गयी थी। अतः धूल का उड़ना बंद हो गया था। अतः समस्त दिशाएँ निर्मल—धूलरहित हो गयी थीं। बिना सिर के अगणित रुण्ड रणभूमि में लुढ़क रहे थे। मानों वे जगत् के नाश की सूचना दे रहे हों। इस युद्ध की दारुणता बहुत बढ़ गयी थी। रथी इधर उधर दौड़ते हुए देख पड़ते थे। भीष्म, द्रोण, सिन्धुदेश का राजा जयद्रथ, पुरुमित्र, जय, भोज, शल्य, शकुनि आदि दुर्धर्ष योद्धाओं ने पाण्डवों की सेना के पैर उखाड़ दिये। पाण्डव पक्ष के भीम, घटोत्कच, सात्यकि, चेकितान्, द्रौपदी के पुत्र सेना सहित आपके पुत्रों को वैसे ही भगाने लगे, जैसे देवताओं ने दानवों को भगाया था। एक दूसरे का संहार करते हुए रक्तरञ्जित वे योद्धा-गण दानवों की तरह भयङ्कर रूपधारी जान पड़ते थे। अपने अपने शत्रुओं का तिरस्कार करते हुए उभय पक्षीय योद्धा—आकाशस्थित ग्रहों की तरह शोभायमान जान पड़ते थे।

जब इस प्रकार दोनों ओर से युद्ध हो रहा था, तब एक हज़ार रथों को साथ ले आपका पुत्र दुर्योधन, पाण्डवों से लड़ने के लिये उनके सामने गया। उधर विशाल वाहिनी साथ ले पाण्डवों ने द्रोणाचार्य और भीष्म पर

आक्रमण किया। अत्यन्त क्रुद्ध अर्जुन ने चीन चीन कर शत्रुपक्षीय वीरश्रेष्ठ राजाओं का सामना किया। अर्जुननन्दन अभिमन्यु और सात्यकि ने शकुनि और उसकी सेना का सामना किया। इस समय विजयाभिलाषी आपके और पाण्डु के पुत्रों में शरीर को कम्पित करने वाला घोर युद्ध हो रहा था।

अट्ठावनवाँ अध्याय

भीष्मप्रतिज्ञा

सञ्जय बोले—राजन्! क्रोध में भरे आपके पक्ष के राजाओं ने अर्जुन को रणक्षेत्र में उपस्थित देख, और सहस्रों रथों को साथ ले, अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया फिर वे अर्जुन पर चारों ओर से अगणित बाणवृष्टि करने लगे। वे लोग केवल बाण ही नहीं किन्तु शक्तियाँ, गदाएँ, परिघ, प्रास, फरसे, मूसल आदि विविध शस्त्रों को अर्जुन के रथ पर फेंकते थे। किन्तु अर्जुन टीढ़ी के दल जैसी उस शस्त्रवृष्टि को अपने सुवर्णभूषित बाणों से बराबर काटता चला जाता था। अर्जुन के इस अमानुषिक युद्धचातुर्य को देख, देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, सर्प, राक्षस, "धन्य! धन्य!!" कह अर्जुन की प्रशंसा करने लगे।

सात्यकि और अभिमन्यु ने मिल कर, कंधारी और सौवल सैनिकों पर आक्रमण किया। सौवलों ने सात्यकि के रथ के टूँक टूँक कर डाले। युद्ध की भीषणता को बढ़ते देख, सात्यकि अपने रथ से कूद अभिमन्यु के रथ पर जा बैठा। तब तो एक ही रथ पर सवार अभिमन्यु और सात्यकि ने सौवलों का संहार करना आरम्भ किया। द्रोण और भीष्म कङ्कपत्र युक्त बाणों की वृष्टि कर युधिष्ठिर की सेना का संहार करने लगे। यह देख युधिष्ठिरनन्दन तथा नकुल सहदेव ने द्रोणाचार्य की सेना पर आक्रमण किया। पूर्वकाल में जैसा देवदानव युद्ध हुआ था, वैसा ही रोमाञ्चकारी यह युद्ध भी

होने लगा। दूसरी ओर भीम और उसके पुत्र घटोत्कच का पराक्रम देख, दुर्योधन घबड़ा गया और उन दोनों का सामना करने को वह उनके सामने गया। उस समय यह देख सब लोग विस्मित हो गये कि, घटोत्कच युद्ध में अपने पिता से बढ़ कर पराक्रम प्रदर्शित कर रहा था। अत्यन्त कुपित भीम ने एक बड़ा पैना बाण दुर्योधन की छाती में मारा। भीमसेन के इस घोर बाणप्रहार से दुर्योधन मूर्छित हो रथ के खटोले में गिर पड़ा। दुर्योधन को मूर्छित देख, उसका सारथी रथ को भगा कर रणभूमि के बाहिर ले गया। इससे दुर्योधन की सेना भाग खड़ी हुई। कौरव सैन्य को भागते देख, भीमसेन पैने बाण मारता हुआ, उसका पीछा करने लगा।

धृष्टद्युम्न और युधिष्ठिर ने द्रोण और भीष्म के सामने ही उनकी सेना का तीव्र बाणों से संहार करना आरम्भ किया। उस समय कौरव की पलायन करती हुई सेना को महारथी द्रोण भी न रोक सके। द्रोण जैसे जैसे उसे रोकते थे वैसे ही वैसे वह और भी भागती थी। जिस समय सहस्रों रथ रणभूमि से भागने लगे, उस समय एक ही रथ पर सवार अभिमन्यु और सात्यकि सौबलों का संहार कर रहे थे। एक ही रथ पर सवार वे दोनों आकाश में एकत्रित हुए सूर्य और चन्द्र जैसे जान पड़ते थे। उधर परम-रोषान्वित अर्जुन आपकी सेना के ऊपर बाणवृष्टि वैसे ही कर रहा था जैसे मेघ जलवृष्टि करते हैं, अर्जुन की मार से कौरवों की सेना विषादित और भयभीत हो, इधर उधर भाग खड़ी हुई। तब सेना को भागते देख, क्रुद्ध एवं दुर्योधन के हितैषी भीष्म और द्रोण उसे रोकने लगे। उधर दुर्योधन ने सचेत होने पर भागती हुई सेना को रोका और पीछे लौटाया। दुर्योधन को देखते ही पलायन करते हुए महारथी क्षत्रिय योद्धा खड़े हो गये और लौट कर रणभूमि में आने लगे। इन योद्धाओं को पीछे लौटते देख, अन्य कितने ही योद्धा लज्जावश और ईर्ष्यावश रणभूमि में आ खड़े हुए। उस समय लौटती हुई कौरव सेना का वेग वैसा ही था जैसा कि, चन्द्रोदय के समय उमड़ते हुए समुद्र का वेग होता है। सैनिकों को पीछे लौटा, दुर्योधन दौड़

कर, भीष्म के निकट गया और उनसे यह बोला—हे पितामह! सुनिये। जब तक आप और अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य, उनका पुत्र तथा मेरी मित्र मण्डली और महाधनुर्धर कृपाचार्य जीते जागते मौजूद हैं, तब तक मेरी सेना का इस प्रकार भागना, आपके लिये गौरवप्रद नहीं है। मेरी जान में तो आपके, द्रोणाचार्य के, अश्वत्थामा एवं कृपाचार्य के सामने पाण्डव खड़े नहीं रह सकते। किन्तु जान पड़ता है पाण्डवों पर आपकी कृपादृष्टि है। तभी तो आपके सामने ही मेरी सेना का नाश हो रहा है, और आपसे कुछ भी करते धरते नहीं बन आता। यदि ऐसा ही था, तो आपको यह बात मुझसे पहिले ही कह देनी थी कि, आप पाण्डवों, धृष्टद्युम्न और सात्यकि के साथ नहीं लड़ेंगे। यदि आप यह कह देते तो मैं आपका और कृपाचार्य का अभिप्राय जान और कर्ण से परामर्श कर मुझे जो कुछ सूझ पड़ता—सो मैं करता। किन्तु अब ठीक युद्ध के समय आप जो मेरा परित्याग करते हैं, यह आपके लिये उचित नहीं। आपको तो अपना समस्त बल लगा कर युद्ध करना चाहिये।

दुर्योधन के इन वचनों को सुन कर, मन्द मन्द मुसक्या भीष्म ने आँखें तरेर कर आपके पुत्र से यह कहा—दुर्योधन! मैं तुम्हारे हित की सत्य बात अनेक बार तुमसे कह चुका हूँ। वह यह कि इन्द्र सहित देवता भी युद्ध में पाण्डवों को परास्त नहीं कर सकते। फिर मुझ जैसे वृद्ध पुरुष से जो कुछ होना सम्भव है, वह मैं शक्त्यानुसार कर के दिखाता हूँ। तुम अपने बान्धवों सहित अब देखो। आज मैं सब के देखते देखते, अकेले ही समस्त पाण्डवों को ससैन्य एवं बन्धुजनों सहित पीछे हटा दूँगा।

हे धृतराष्ट्र! भीष्म के इन बचनों को सुन, आपके समस्त पुत्रों ने शङ्ख-ध्वनि की और भेरियाँ बजायीं। आपके पुत्रों की की हुई शङ्ख-भेरी-ध्वनि को सुन, पाण्डवों ने भी शङ्खों और भेरियों और ढोलों की ध्वनि की।

उनसठवाँ अध्याय

श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र ग्रहण

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जब मेरे अति दुःखी पुत्रों ने भीष्म पितामह को उत्तेजित किया, तब भीष्म पितामह ने पाण्डवों के साथ किस प्रकार युद्ध किया? और पाञ्चालगण भीष्म पितामह से कैसे लड़े—सो सब तुम मुझको सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! दिन का प्रथम प्रहर बड़ी अच्छी तरह व्यतीत हुआ। किन्तु जिस समय विश्रामार्थ सूर्यदेव पश्चिम दिशा की ओर जा रहे थे और पाण्डव विजयी होने के लिये हर्षित हो रहे थे, उस समय भीष्म पितामह ने तथा आपके पुत्रों ने एक बड़ी सेना ले और वेगवान उत्तम घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, पाण्डवों की सेना पर आक्रमण किया। आपकी कपट नीति के कारण कौरवों और पाण्डवों में महादारुण युद्ध होने लगा। उस समय रणक्षेत्र में धनुषों के टंकार और चमड़े के दस्तानों से युक्त हाथों से धनुष के रोदों के खींचे जाने का शब्द वैसा ही सुन पड़ता था जैसा कि, विदीर्ण होते हुए पर्वतों का हुआ करता है। सोने के कवचों, कुण्डलों, मुकुटों, ध्वजाओं के गिरने का वैसा ही शब्द हो रहा था; जैसा पथरीली भूमि पर शिला के गिरने का हुआ करता है। रणभूमि में पृथिवी पर पड़े हुए कटे सिर तथा आभूषणों से युक्त सहस्रों हाथ यत्र तत्र तड़प रहे थे। वीरों के सिरकटे कबंध धनुष ताने हुए तथा अन्य हथियार लिये हुए इधर उधर दौड़ रहे थे। माँस के कर्दम से युक्त रक्त की नदी बहने लगी। उसमें भीतर ही भीतर बहते हुए हाथियों के शव, भयानक शिला रूप थे। यह नदी बड़े वेग से बह रही थी। सुन्दर घोड़ों, सैनिकों और गजों के रुधिर से बनी हुई यह नदी परलोक रूपी समुद्र की ओर बही चली जाती थी। गिद्ध, गीदड़ आदि माँसलोलुप जीव जन्तु इस नदी को देख हर्षित हो रहे थे। आपके पुत्र और पाण्डवों में

होते हुए इस युद्ध के समान अन्य युद्ध न तो कभी देखा गया और न सुना ही गया। जिनको योद्धाओं ने रण में मार डाला था उन वीरों और गजों के पड़े हुए शवों से रणभूमि वैसी ही जान पड़ती थी, जैसी कि काले काले पर्वत शिखरों से भूमि जान पड़ती है। इसीसे रणभूमि में रथों को चलाने के लिये रास्ता ही नहीं रह गया था। हे राजन्! चित्र विचित्र कवचों और मुकुटों से पूर्ण वहाँ की समरभूमि ताराओं से युक्त शरद्कालीन आकाश की तरह शोभायमान जान पड़ती थी। बाणों के भीषण प्रहारों के कारण अत्यन्त घायल हुए वीर योद्धा तिल भर भी भयभीत न हो, दाँत कटकटाते शत्रुओं पर आक्रमण कर रहे थे। अधमरे योद्धा रणभूमि में पड़े पड़े कह रहे थे कि,—हा तात! हा भ्राता! हा मित्र! हा मामा! मुझे त्याग कर मत जाओ। "इधर आ", "तू आ", "तू क्यों डराता है"? "तू कहाँ भागा जाता है।" "मैं तो यहीं खड़ा हूँ", "तू युद्ध से मत डर" आदि बातें कह कह कर योद्धा पुकार रहे थे। उस समय शान्तनुनन्दन भीष्म धनुष तान कर विषधर सर्पों जैसे भयङ्कर और धधकते हुए बाण शत्रुओं पर बरसा रहे थे। भीष्म जी ने बाणों से समस्त दिशाएँ भर दीं और वे पाण्डवों के चुने चुने वीरों को ललकार ललकार उन्हें मारने लगे। रथ पर सवार और बड़ी फुर्ती से चारों ओर बाण फेंकते हुए भीष्म पितामह बरेटी की तरह चारों ओर नाचते हुए से देख पड़ते थे। बाण छोड़ने की फुर्ती के कारण अकेले भीष्म पितामह—सञ्जय और पाण्डवों को सहस्र मूर्तिधारी जैसे जान पड़े। लोगों ने समझा कि माया द्वारा भीष्म ने अपने सहस्रों रूप धारण कर लिये हैं। क्षण में वे पूर्व दिशा में और क्षण में वे पश्चिम दिशा में दिखलायी पड़ते थे।

हे राजन्! वे दूसरे ही क्षण उत्तर दिशा में और दूसरे ही क्षण दक्षिण दिशा में खड़े दिखलायी पड़ते थे। सारांश यह कि, समरभूमि में भीष्म सर्वव्यापी हो गये थे। जिधर देखो उधर भीष्म के छोड़े हुए बाण ही बाण दिखलायी पड़ते थे। पाण्डवों के छोड़े बाणों का तो कहीं पता भी

न था। भीष्म के पराक्रम से पाण्डवों की सेना का संहार होते देख, बहुत से लोग हाहाकार करने लगे। अदृष्ट प्रेरित अनेक राजा लोग—अग्नि में गिरते हुए पतंगों की तरह, समरभूमि में अमानुषिक रूप से विचरणशील आपके पितामह के सम्मुख जाते और अपनी इस धृष्टता के कारण मारे जाते थे। भीष्म का छोड़ा एक बाण भी खाली नहीं जाता था। उसके प्रहार से कोई न कोई सैनिक, गज या घोड़ा अवश्य मारा जाता था। जैसे इन्द्र वज्रप्रहार से पर्वतों को चूर करते हैं, वैसे ही भीष्म एक ही बाण से गज समूहों को विद्ध करते थे। कभी दो, कभी तीन कवचधारी हाथी उनके एक एक बाण से विद्ध होते थे। जो योद्धा लड़ने के लिये भीष्म जी के सामने जाता, वह बात की बात में निर्जीव हो भूमि पर पड़ा देख पड़ता था। इस प्रकार अतुल पराक्रमी भीष्म जी के हाथ से नष्ट होती हुई धर्मराज की विशाल वाहिनी चारों ओर भागने लगी। श्रीकृष्ण अर्जुन और शिखण्डी की आँखों के सामने ही भीष्म के बाणों से सन्तप्त पाण्डवों की सेना थरथरा उठी। उसे वापिस लाने के लिये अनेक प्रयत्न किये गये, किन्तु भीष्म जी के बाणों से पीड़ित उन लोगों को कोई भी महारथी लौटाने में सफल न हो पाया। इन्द्रतुल्य पराक्रमी भीष्म के बाणों से नष्ट होती हुई ऐसी भगदड़ पड़ी कि, दो सैनिक भी साथ साथ नहीं भाग सके। समरभूमि में अगणित मरे हुए सैनिक, गज और घोड़े पड़े थे। रथों के कूबर और ध्वजाएँ कट गयी थीं। एक प्रकार से पाण्डवों की सेना अचेत सी हो गयी थी। सैनिक जहाँ तहाँ हाय हाय कर रहे थे। इस युद्ध में पिता ने पुत्र का, पुत्र ने पिता का, विचार न कर, एक दूसरे का वध किया। दैव की प्रेरणा ने मित्र हो कर मित्र का वध किया। पाण्डवों की सेना के सैनिकों की उस समय बड़ी दुर्दशा हुई। भागने के समय उनके कवच खुल पड़े, सिर के बाल बिखर गये। विकल हो और हाय हाय कर भागते हुए रथियों के अधिपतियों और सैनिकों के कारण पाण्डवों की सेना—भड़क कर भागी हुई गौओं जैसी जान पड़ती थी। पाण्डवों

की सेना को इस प्रकार अस्त व्यस्त देख, श्रीकृष्ण ने रथ खड़ा कर दिया और अर्जुन से कहा—

हे पार्थ ! तुम जिस समय की प्रतीक्षा में थे, वह समय अब आ उपस्थित हुआ है। यदि तुमने अब भी प्रहार न किया तो मोह आकर तुम्हें दबा लेगा। हे वीर ! तुम राजाओं के सामने पहले ही कह चुके हो कि भीष्म, द्रोण आदि विपक्षी योद्धाओं सहित धृतराष्ट्र के पुत्रों में से जो कोई भी मेरे साथ युद्ध करेगा—उसको मैं मार डालूँगा। हे शत्रुदमन अर्जुन ! इस अपने वचन को तुम अब सत्य कर के दिखलाओ। हे मित्र ! इधर उधर भागती हुई अपनी सेना की ओर तो ज़रा देखो। मुख खोले कालदेव की तरह भीष्म पितामह को देख, धर्मराज की सेना के राजा लोग भागे जा रहे हैं। ज़रा उन राजाओं की ओर तो देखो। तुम्हारे योद्धा इस समय वैसे ही भागे जा रहे हैं, जैसे सिंह को देख छोटे छोटे जीवजन्तु भागते हैं।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, उत्तर में अर्जुन ने यह कहा—जिधर भीष्म हैं, उधर आप मेरे रथ को ले चलिये। शत्रु-सैन्य-रूपी महासागर में घुस चलिये। मैं आज वृद्ध भीष्म पितामह को मार कर गिराऊँगा।

सञ्जय ने कहा—हे कुरुराज ! इसके बाद श्रीकृष्ण जी चाँदी की तरह श्वेत रङ्ग के घोड़ों को बढ़ा अर्जुन के रथ को वहाँ ले गये जहाँ, दुर्निरीक्ष्य भीष्म जी का रथ था। जब धर्मराज की सेना के सैनिकों ने अर्जुन को भीष्म से लड़ने के लिये जाते हुए देखा, तब वे सब लौट पड़े। उधर सिंहवत् नाद करते हुए भीष्म ने बाणजाल से अर्जुन के रथ को ढक दिया। क्षण भर में अर्जुन का रथ, सारथि और घोड़ों सहित अदृश्य सा हो गया। किन्तु इससे श्रीकृष्ण तिल भर भी न घबड़ाये और धैर्य धारण कर, बाणों से आच्छादित घोड़ों को बराबर आगे बढ़ाते ही गये। तब अर्जुन ने मेघ समान गर्जन करने वाले अपने धनुष पर रख तीन बाण छोड़े, जिनके लगते ही भीष्म पितामह का धनुष कट कर भूमि पर गिर पड़ा। इस पर पलक मारते

ही भीष्म जी ने झट दूसरा धनुष तैयार कर लिया। मेघ की तरह गड़-गड़ाता वह धनुष ज्योंही भीष्म जी ने ताना त्योंही कुपित हुए अर्जुन ने उसको भी काट कर गिरा दिया। इस पर भीष्म ने अर्जुन के हाथ की सफ़ाई की सराहना करते हुए उससे कहा—साधु ! साधु !! हे धनञ्जय ! यह पराक्रम तेरे अनुरूप ही है। हे वत्स ! मैं तेरे इस पराक्रम को देख तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हूँ। आ मेरे साथ युद्ध कर।

यह कह वीर शिरोमणि भीष्म ने दूसरा धनुष हाथ में लिया और अर्जुन पर बाणवृष्टि करने लगे। श्रीकृष्ण ने रथ को चक्कर देते हुए ऐसे हाँका कि, भीष्म के चलाये बाणों में से एक भी बाण अर्जुन के शरीर को छू तक न पाया। श्रीकृष्ण ने आज सारथिपने का विलक्षण चातुर्य प्रदर्शित किया। अन्त में भीष्म ने श्रीकृष्ण और अर्जुन के अङ्गों प्रत्यङ्गों को बाणों से विद्ध कर, बुरी तरह घायल किया। उस समय वे दोनों वैसे ही जान पड़ते थे जैसे दो वृषभ सींगों से घायल हुए हों। तदनन्तर अत्यन्त कुपित हो भीष्म जी ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को बाणजाल से चारों ओर से बंद कर दिया। भीष्म तीक्ष्ण बाणप्रहार कर श्रीकृष्ण को कम्पित करते थे और बारंबार अट्टहास कर उनको चिढ़ाते थे। श्रीकृष्ण भीष्म जी के इस अद्भुत पराक्रम को और अर्जुन की शिथिलता को देख रहे थे। साथ ही वे यह भी देख रहे थे कि, भीष्म जी की बाणवृष्टि से युधिष्ठिर के बड़े बड़े योद्धा सुरपुर को चले जा रहे हैं। शत्रुसंहारकारी भगवान् मधुसूदन से ये सब न देखा गया। उनको निश्चय हो गया कि, अब युधिष्ठिर की सेना में एक भी सैनिक जीता जागता नहीं बचने पावेगा। जब अकेले भीष्म एक ही दिन में समस्त देवताओं और दानवों का नाश कर सकते हैं, तब उनके लिये पाण्डवों की सेना है ही क्या ? महाबली पाण्डवों की सेना के पुनः पैर उखड़े और वह भाग खड़ी हुई। सोमकों को भागते देख, कौरव हर्षित हो भीष्म पितामह की ओर दौड़े। यह देख, श्रीकृष्ण जी ने मन ही मन कहा कि, आज मैं पाण्डवों के हित के लिये, प्रणपूर्वक भीष्म का वध करूँगा। भीष्म का वध कर मैं

पाण्डवों के सिर का भार हलका कर दूँगा। क्योंकि अर्जुन भीष्म को मान्य दृष्टि से देखता है। अतः अर्जुन उनके पैने बाणों से विद्ध हो कर भी अपने कर्त्तव्य से च्युत हो रहा है। श्रीकृष्ण का विचार पूरा होने न पाया था कि, भीष्म ने पुनः अर्जुन के रथ पर बाण वृष्टि की। भीष्म जी के छोड़े असंख्य बाणों से दिशाएँ विदिशाएँ ढक गयीं। आकाश, भूमि, सूर्य अथवा दिशाएँ—कुछ भी तो नहीं देख पड़ता था—धूममिश्रित उग्र पवन चलने लगा। दिशाएँ थर्रा उठीं। भीष्म जी के आदेशानुसार, द्रोण, विकर्ण, जयद्रथ, भूरिश्रवा, कृतवर्मा, कृप, श्रुतायु, राजा अम्बष्ठपति, विंद, अनुविन्द, सुदक्षिण, सौवीरक, वसाति, शूद्रक और मालवराज आदि ने बड़ी फुर्ती से अर्जुन पर आक्रमण किया और पैदल सैनिकों, रथों, गजों तथा अश्वारोहियों से अर्जुन के रथ को चारों ओर से घेर लिया। अर्जुन और श्रीकृष्ण को शत्रुद्वारा घिरा हुआ देख, उनकी सहायता के लिये सात्यकि झट वहाँ जा पहुँचा। जैसे विष्णु, इन्द्र की सहायता को दौड़े आवे, वैसे ही सात्यकि भी अर्जुन की सहायता के लिये बड़ा भारी धनुष ले दौड़ कर आ गया। भीष्म जी द्वारा भयभीत किये हुए युधिष्ठिर के पक्ष के योद्धाओं को गजों, रथों और अश्वों सहित भागते देख उसने कहा—क्षत्रियों! कहाँ भागे जा रहे हो। तुम जिस मार्ग का अनुसरण कर रहे हो, वह तुम्हारे पूर्वपुरुषों का अनुसरित नहीं है। हे वीरो! अपनी पूर्वप्रतिज्ञा का त्याग न कर, आज तुम लोग वीरधर्म पालो।

रणभूमि से अपने पक्ष के प्रधान राजाओं को भागते हुए देख, साथ ही अर्जुन का रण में शैथिल्य एवं भीष्म के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए पराक्रम को देख, श्रीकृष्ण से न रहा गया। अतः कुरुओं को अपने ऊपर चढ़ाई करते देख और सात्यकि की प्रशंसा कर श्रीकृष्ण ने कहा—हे शिनिवंशीवीर! जो भाग रहे हैं, उन्हें भाग जाने दो। जो खड़े हैं—यदि वे भी भागना चाहें तो उन्हें भी भाग जाने दो। मैं अब भीष्म को रथ के नीचे गिराता हूँ। मैं साथियों सहित द्रोण को भी मारूँगा। तुम यह सब देखते रहो। मैं अब

रोष में भर समर में उतरूँगा, तब कौरव सेना में तो ऐसा कोई भी नहीं जो मेरे सामने पड़ कर भाग कर बच जाय। मैं अपने सुदर्शन चक्र से भीष्म का वध करता हूँ। मैं आज भीष्म और साथियों सहित द्रोण का वध करूँगा। मैं इन दोनों महारथियों को मार कर, धर्मराज युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव को हर्षित करूँगा। फिर धृतराष्ट्र के समस्त पुत्रों तथा उनके पक्ष के मुख्य मुख्य राजाओं को मार कर, मैं प्रसन्न होऊँगा। मैं अजातशत्रु युधिष्ठिर को उनका राज्य दिलवाऊँगा।

यह कह श्रीकृष्ण ने घोड़ों की रास छोड़ दी और वे रथ से कूद कर पृथिवी पर जा खड़े हुए। फिर उन्होंने तेज़ आरों वाले, सूर्य की तरह चम-चमाते, वज्र के समान प्रभावशाली और छुरे की तरह तेज़ धार वाले सुदर्शन चक्र को अपने हाथ में लिया। जैसे सिंह अत्यन्त मदान्ध और दर्प-पूर्ण गज को मारने के लिये झपटे, वैसे ही चरणों की धमक से पृथिवी को कम्पायमान करते हुए श्रीकृष्ण जी भीष्म की ओर लपके, रोष में भरे श्रीकृष्ण सेना के बीच में जा खड़े हुए। उस समय इन्द्रानुज श्रीकृष्ण के पीत पट का छोर लटक रहा था और वे वैसे ही सुशोभित हो रहे थे, जैसे विद्युत् युक्त मेघ आकाश में सुशोभित होता है। उनके सुदर्शन चक्र की भी वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी शोभा सूर्यतुल्य कान्तिमान् विष्णु के नाभकमल की होती है। श्रीकृष्ण के क्रोधरूपी सूर्य से चक्ररूपी कमल खिला हुआ था। तेज़ आरे उसके पत्र थे। वह ऐसा जान पड़ता था, मानों श्रीकृष्ण के शरीररूपी तालाब में वह उगा हो और उनका दहिना हाथ उस कमल की नाल सा जान पड़ता था। जिस समय इन्द्रानुज श्रीकृष्ण हाथ में चक्र ले सिंहनाद कर रहे थे, उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानों अब कौरवों का सर्वनाश होने ही वाला है। उस समय समस्त प्राणी भयभीत हो हाहाकार करने लगे। चक्रधारी श्रीकृष्ण, युगान्तकाल में सर्वभूतक्षयकारी संवर्त्तक अग्नि जैसे जान पड़ते थे। उस समय लोकगुरु भगवान् श्रीकृष्ण प्राणिमात्र का नाश करने के लिये उदय हुए धूमकेतु जैसे

जान पड़ते थे। हाथ में सुदर्शन चक्र लिये हुए श्रीकृष्ण जी के आते देख, भीष्म ने गाण्डीव जैसा शब्द करने वाला अपना धनुष ताना और सावधान हो, अनन्त पुरुषार्थी श्रीकृष्ण से बोले—हे चक्रपाणि ! हे माधव ! हे जगन्निवास ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप आवें। हे सर्वलोकशरण्य ! आप मुझे इस सर्वोत्तम रथ से नीचे गिराइये। इस युद्ध में आपके हाथ से मारे जाने पर, मेरा इसलोक और परलोक—उभय लोकों में कल्याण होगा। हे अन्धक तथा वृष्णियों के नाथ ! आपका मुझसे युद्ध करने के लिये मेरे सामने आ कर खड़ा होना—मेरे गौरव को बढ़ा रहा है।

भीष्म पितामह के इन वचनों को सुन और श्रीकृष्ण को आगे बढ़ते देख, अर्जुन रथ से उतर पड़ा और दौड़ कर यदुवीर श्रीकृष्ण को पकड़ा। किन्तु उस समय श्रीकृष्ण के क्रोध का आरपार न था। अतः वे अर्जुन को घसीटते वैसे ही वेगपूर्वक आगे बढ़े, जैसे पवन वृक्ष को उड़ाता हुआ आगे बढ़ता है। तब तो अर्जुन ने बरजोरी श्रीकृष्ण के चरण पकड़ लिये और दसवें पग पर उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया। जब श्रीकृष्ण का आगे बढ़ना रुका और वे खड़े हो गये, उस समय रङ्ग बिरङ्गी पुष्पमालाएँ धारण किये हुए अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे कृष्ण ! आप अपने क्रोध को शान्त करें। हे केशव ! आप पाण्डवों के एकमात्र सहारे हैं। मैं आज अपने पुत्रों और भाइयों की शपथ खा कर कहता हूँ कि, रण में मेरा पैर कभी पीछे न पड़ेगा। हे इन्द्रानुज ! मैं आज निश्चय ही आपके आदेशानुसार कौरवों का संहार करूँगा।

जब श्रीकृष्ण ने अर्जुन की यह प्रतिज्ञा सुनी, तब वे अत्यन्त हर्षित हुए। श्रीकृष्ण तो अर्जुन के हितैषी थे, अतः हाथ में सुदर्शन चक्र लिये हुए ही रथ पर सवार हो वे रथ हाँकने लगे। शत्रु-नाश-कारी श्रीकृष्ण ने पुनः घोड़ों की रासें हाथ में ली और अपना पाञ्चजन्य शङ्ख बजा दिशाएँ प्रतिध्वनित कर दीं। जो श्रीकृष्ण खरे सोने के बाजूबंद तथा कुण्डल पहिने हुए थे, जिनके शरीर पर धूल ही धूल पड़ी हुई थी, जिनके स्वच्छ सफेद दाँत थे, उन

कमलनयन श्रीकृष्ण ने जब अपना शङ्ख बजाया, तब कौरवों की सेना में हाहाकार मच गया। मृदङ्गों, भेरियों, पणों और दुन्दुभियों का शब्द तथा पहियों की घरघराहट और वीरों के सिंहनाद से सारा रणक्षेत्र गूँजने लगा। मेघगर्जन की तरह अर्जुन के गाण्डीव धनुष का टंकार शब्द समस्त दिशाओं एवं विदिशाओं में व्याप्त हो गया और उससे छूटे हुए चमचमाते बाणों से दसों दिशाएँ परिपूर्ण हो गयीं। भूरिश्रवा तथा भीष्म सहित दुर्योधन धूमकेतु की तरह अर्जुन के सामने जा खड़ा हुआ। भूरिश्रवा ने अर्जुन पर, सुवर्ण पुंख सात भङ्ग बाण, दुर्योधन ने तोमर, शल्य ने गदा और भीष्म ने शक्ति छोड़ी, इस पर अर्जुन ने सात बाण मार भूरिश्रवा के सातो बाण नष्ट कर डाले। फिर एक पैने बाण से दुर्योधन का तोमर काट कर फेंक दिया। तदनन्तर दो बाण छोड़ अर्जुन ने शल्य की गदा और भीष्म की फेंकी शक्ति को खण्ड खण्ड कर भूमि पर गिरा दिया। फिर अर्जुन ने अपने दृढ़ और अप्रमेय गाण्डीव धनुष को तान, महेन्द्र नामक महाभयानक एवं अद्भुत अस्त्र मंत्र पढ़ कर, आकाश में प्रकट किया। महाधनुर्धर एवं महाबलवान अर्जुन ने महेन्द्रास्त्र चला, कौरवों पर अगणित अग्नि की तरह चमचमाते बाण छोड़े। उनकी समस्त सेनाओं की गति स्तम्भित कर दीं। अर्जुन के छोड़े हुए बाण रथों, ध्वजाओं के अग्रभागों, धनुषों एवं वीरों की भुजाओं को काट, शत्रुसैन्य के गजों और सैनिकों के शरीरों में घुस गये। इस प्रकार अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों की वृष्टि कर दिशाएँ और उपदिशाएँ परिपूर्ण कर दीं। अर्जुन के गाण्डीव धनुष की टंकारें सुन शत्रुसेना सन्तप्त हो गयीं।

इस समय बड़ी विकट लड़ाई हुई। उस समय शङ्खों और दुन्दुभियों तथा रथों के पहियों की घरघराहट, गाण्डीव धनुष के टंकार शब्द से दब गयी। गाण्डीव धनुष के टंकार शब्द को पहचान, उदारमना एवं बलवान राजा विराट, राजा द्रुपद आदि वीरपुङ्गव वहाँ जा उपस्थित हुए। गाण्डीव धनुष के टंकोरने का शब्द जहाँ कहीं सुन पड़ता, वहाँ वहाँ की सेनाओं के सेनापति शिथिल पड़ जाते थे। उस समय कोई भी शत्रुपक्षीय योद्धा का

हियाव न पड़ा कि, वह अर्जुन के सामने जावे। इस भयङ्कर युद्ध में नामी योद्धा मारे गये। हज़ारों रथ बेकाम हो गये और हज़ारों घोड़े और सारथि मारे गये। बड़ी बड़ी पताकाएँ, सोने के हौदे, अथवा अंबारियों से युक्त गजों के शरीर अर्जुन के बाण प्रहारों से क्षतविक्षत हो गये और वे निर्जीव हो भूमि पर धड़ाम धड़ाम गिरने लगे। उस समय सेनाओं के आगे चलने वाली के ध्वजाओं तथा इन्द्रकील नामक अस्त्रों के टूँक टूँक हो भूमि पर गिर रहे थे। अर्जुन के बाणप्रहार से क्षतविक्षत सैनिक, भग्नरथ, घोड़े, गज, निर्जीव हो भूमि पर गिर रहे थे। हे राजन्! इस महासमर में पैने बाणों की मार से अगणित सैनिकों के कवच टुकड़े टुकड़े हो गये। अर्जुन के तेज़ बाणों की मार से घायल सैनिकों के शरीर से निकले हुए रक्त की नदी बहने लगीं, जिसमें मनुष्यों की चर्बी रूपी झाग देख पड़ते थे। बड़े वेग से बहने वाली इस नदी के तट रूप थे—मृत गज और अश्व। मज्जा और माँस की उसमें कीच हो रही थी। उसके उभय तटों पर भ्रमण करने वाले राक्षस प्रेत उस नदी के तटवर्ती वृक्ष जान पड़ते थे। उसमें खुले हुए केशों से युक्त कटे हुए नरमुण्डों के बहने से—नदी के सिवार का भ्रम होता था। उस नदी में हज़ारों शव उतरा रहे थे। कटे हुए कवच उसकी तरंगों जैसे जान पड़ते थे। सैनिकों गजों और अश्वों की हड्डियों के टुकड़े उसमें कङ्कड़ियों की जगह थे। उस नदी के तटों पर कुत्ते, कङ्क, स्यार, गिद्ध, काक आदि पशु पक्षी तथा राक्षस घूम रहे थे। अर्जुन के बाण-प्रहारों से मरे हुए सैनिकों और अश्वगजादि के रक्त, मेदा, वसा, के प्रवाह वाली वह नदी महाभयङ्कर वैतरणी नदी जैसी जान पड़ती थी। उस नदी का दर्शन उन लोगों को हो रहा था, जो मारे जाने से बच रहे थे।

अर्जुन ने कौरवों की सेना के एक बहुत बड़े भाग का नाश कर डाला है—यह देख भयत्रस्त चेदि, पाञ्चाल, करूष तथा मत्स्य आदि देशों के महावीर योद्धा सिंहनाद कर, शत्रुपक्षीय योद्धाओं को डरा रहे थे। शत्रुओं को भयभीत करने वाला अर्जुन, शत्रुपक्षीय सेना के बड़े बड़े अधिपतियों को वैसे

ही त्रस्त कर रहा था, जैसे सिंह मृगों को भयत्रस्त करता है। गाण्डीवधारी अर्जुन तथा श्रीकृष्ण भी हर्षित हो रहे थे। जब सूर्यास्त होने का समय उपस्थित हुआ, तब क्षतविक्षत द्रोण, दुर्योधन, वाल्हीक तथा भीष्म आदि कौरव सरदारों ने अस्तोन्मुख सूर्य की सन्ध्याकालीन लालिमा को देख, तथा प्रलयकालीन इन्द्रास्त्र का सर्वत्र प्रभाव देख, अपनी अधीनस्थ सेनाओं को विश्राम देने के लिये पीछे हटा लिया। अर्जुन भी यश एवं कीर्ति सम्पादन कर शत्रुओं को जीत कर तथा इस प्रकार अपना कार्य पूरा कर, अपने सम्बन्धियों और सहायक राजाओं को साथ लिये हुए, रात हो जाने के कारण अपनी छावनी में चला गया। जब रात का अन्धकार चारों ओर फैल गया, तब उसने कौरवों के शिविर में बड़ी खलबली मचा दी। क्योंकि आज के युद्ध में अर्जुन के हाथ से दस हज़ार रथी, सात सौ गज, पूर्व देशस्थ राजा सौवीर, क्षुद्रक और मालव देशीय सैनिक मारे गये थे। धनञ्जय ने आज बड़ा पराक्रम प्रदर्शित किया था। ऐसा पराक्रम और कोई नहीं दिखा सकता था। महाक्रोध में भर परमश्रेष्ठ महारथी अर्जुन ने निज बाहुबल से अम्बष्ठपति श्रुतायु, दुर्मर्षण, चित्रसेन, द्रोण, कृपाचार्य, सैन्धव, वाल्हीक, भूरिश्रवा, शल्य, शल, भीष्म तथा अन्य अनेक वीर योद्धाओं के छक्के छुड़ा दिये।

हे राजन्! इस प्रकार आपके सैनिक आपस में कहते सुनते अपनी छावनी की ओर चले जाते थे।

साठवाँ अध्याय

अर्जुन और भीष्म का संग्राम

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब रात बीती और चतुर्थ दिवस का प्रातःकाल हुआ; तब कौरव सेना के सेनापति भीष्म जी, रोष में भरे हुए अपने दल बल सहित, रणक्षेत्र में जा उपस्थित हुए। द्रोण, दुर्योधन,

बाल्हीक, दुर्मर्षण, चित्रसेन, जयद्रथ तथा अन्य अनेक वीर राजा लोग, अपनी अपनी अधीनस्थ सेनाओं को साथ लिये हुए भीष्म के पीछे हो लिये। इन तेजस्वी एवं मुख्य मुख्य राजाओं से घिरे हुए भीष्म, देवताओं से घिरे हुए इन्द्र जैसे जान पड़ते थे। उनकी सेनाओं के आगे, गजों की पीठों पर फहराती हुई लाल, पीली, धौली और भूरी पताकाएँ बड़ी अच्छी लगती थीं। सहस्रों गजों और सहस्रों विशाल रथों से युक्त भीष्म की सेना, विद्युत् युक्त वर्षाकालीन मेघों से आच्छादित आकाश जैसी जान पड़ती थी। युद्ध करने को उद्यत और भीष्म द्वारा रक्षित वह विशाल सेना, बड़े वेग से अर्जुन की ओर वैसे ही झपटी जैसे प्रखर प्रवाह वाली गङ्गा, समुद्र की ओर दौड़ती है। कपिध्वज अर्जुन ने दूर से देखा कि, अनेक राजाओं की अधीनस्थ सेनाओं का दल अपनी ओर घनघोर घटा की तरह उमड़ा हुआ चला आ रहा है। उस विशाल सेना के उभय पार्श्वों में गज, अश्व और पैदल थे। उस समय कपिध्वज रथ पर, जिसमें सफ़ेद घोड़े जुते हुए थे, अर्जुन सवार हो गये और अपनी सेना को साथ ले और शत्रु का संहार करने का निश्चय कर, महाबली अर्जुन, शत्रुसैन्य के सामने गये। अर्जुन के रथ की ईषा चमड़े से मढ़ी हुई थी और उसके पहिये बड़े सुन्दर थे। उस रथ पर सवार हो श्रीकृष्ण सहित अर्जुन जब लड़ने के लिये जाने लगे, तब आपके पुत्रों सहित समस्त कौरव घबड़ाये। आज अर्जुन ने अपनी सेना की रक्षा के लिये चार चार हज़ार गजों की पंक्तियों से युक्त सैन्यव्यूह रचा था। आपके पुत्र इस व्यूह को देखने लगे। धर्मराज युधिष्ठिर का प्रथम दिवस का व्यूह ऐसा था, जो मनुष्यों ने कभी देखा ही नहीं था। आज पाञ्चाल सेना के चुने हुए योद्धा चेदियों सहित निर्दिष्ट स्थानों पर आ डटे। फिर आज्ञा होते ही भेरी दुन्दुभी आदि मारू बाजे बजने लगे। रथों की घरघराहट और योद्धाओं का सिंहनाद सुनायी पड़ने लगा। धनुषों के टंकार शब्द से और बाण चढ़ाये वीरों के सिंहनाद से मारू बाजों का शब्द दब गया। फिर वीरों की शङ्खध्वनि से आकाश गूँज

उठा। उड़ी हुई धूलि से आकाश ढक गया। उस समय ऐसा जान पड़ा मानों ऊपर बड़ा भारी चँदोवा तना हो। ऐसा दृश्य उपस्थित होते ही उभय पक्षों के योद्धाओं में मार काट होने लगी। बड़े बड़े रथी घायल हो अपने सारथियों, घोड़ों, रथों और पताकाओं सहित समरभूमि में गिरने लगे। गजों के घायल किये हुए गज और पैदलों के घायल किये हुए पैदल धड़ाम धड़ाम गिरने लगे। घुड़सवारों के धावे से एवं प्रासों और तलवारों के प्रहार से घुड़सवार भयानक रूप से घायल हो समरभूमि में लोटने लगे। ढालों तलवारों से लड़ने वाले वीर, प्रासों फरसों और तलवारों से घायल हो, भूमि पर गिरते जाते थे। यह देख लोग बड़े विस्मित हो रहे थे। महारथियों के बाणों से विद्ध बड़े डील डौल वाले गज समरभूमि में गिरे पड़े थे। दौड़ते हुए गजों के पैरों से कुचले हुए पैदल सैनिकों तथा गजों के दाँतों की टक्करों से भग्न कवच एवं घायल अश्वारोही सैनिकों के चीत्कार को सुन साधारण जन भयभीत हो जाते थे। जिस समय क्षुब्ध हो, गज, घोड़े और रथ दौड़ने लगे, अश्वारोहियों और पैदल सैनिकों की लड़ाई होने लगी, उस समय बहुत से महारथियों से घिरे हुए भीष्म पितामह ने कपिध्वज अर्जुन को देखा। भीष्म जिस रथ पर सवार थे, उस पर पाँच ताड़ के वृक्षों के चिन्ह से चिन्हित ध्वजा लगी हुई थी और बड़े बलवान एवं शीघ्रगामी घोड़े उसमें जुते हुए थे। भीष्म ने चमचमाते बाणों और अस्त्रों को चला अर्जुन पर आक्रमण किया। साथ ही इन्द्र तुल्य पराक्रमी इन्द्रपुत्र अर्जुन के ऊपर द्रोण, कृप, शल्य, विविंशति, दुर्योधन और सोमदत्त ने भी आक्रमण किया। उसी समय रथियों की पंक्ति से निकल और आगे बढ़ सुवर्ण कवचधारी अर्जुननन्दन अभिमन्यु ने उन सब पर आक्रमण किया। उस समय अभिमन्यु ने उन समस्त महारथियों के चलाये अस्त्रों को नष्ट कर डाला और वह मंत्रयुक्त आहुतियों से प्रज्वलित अग्नि की तरह उस रणमण्डली में दिखलायी पड़ने लगा। उसने ऐसा विषम पराक्रम प्रदर्शित किया कि, थोड़ी ही देर में समरभूमि में रक्त की नदी बह निकली।

उधर उदारमना भीष्म ने अभिमन्यु की ओर ध्यान न दे, अर्जुन का सामना किया। तब अर्जुन ने मुसक्या कर विपाट बाणों से भीष्म के छोड़े हुए बाणों के आवरण को नष्ट कर डाला और भल्ल बाणों से भीष्म पर सहसा प्रहार करना आरम्भ किया। किन्तु भीष्म के बाणों से अर्जुन के बाणों की बाढ़ वैसे ही नष्ट हो गयी जैसे सूर्य की किरणों से अन्धकार नष्ट हो जाता है। यह देख आपके पुत्र परमानन्दित हुए। पुरुषश्रेष्ठ भीष्म और अर्जुन के भयङ्कर धनुषों के टंकार शब्द से युक्त, उनका द्वन्द्व युद्ध कुरुओं और सृञ्जयों ने देखा।

इकसठवाँ अध्याय

सायंमनि-नन्दन का वध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! द्रोणपुत्र अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, शल्य, चित्रसेन और सायंमनि के पुत्र ने अभिमन्यु को घेरा। इन पाँच पुरुषसिंहों के साथ अकेला अभिमन्यु वैसे ही लड़ने लगा, जैसे अकेला सिंह पाँच गजों से लड़ता हो। लक्ष्यवेध में, शूरवीरता में, पराक्रम में तथा बाण चलाने की फुर्ती में सुभद्रानन्दन अभिमन्यु की बराबरी उन पाचों में से कोई भी नहीं कर सकता था। अपने पुत्र अभिमन्यु का पराक्रम देख, अर्जुन ने सिंहनाद किया।

हे राजन्! आपके पुत्रों ने अपनी सेना को अभिमन्यु से पीड़ित होते देख, उसे चारों ओर से घेरना चाहा। किन्तु इससे अभिमन्यु ज़रा भी न घबड़ाया और उसने दुर्योधन की सेना का सामना किया। जिस समय अभिमन्यु लड़ रहा था उस समय उसका धनुष सूर्य की तरह चमक रहा था। उसने एक बाण से अश्वत्थामा को, पाँच बाणों से शल्य को विद्ध कर आठ बाण मार संयमनी के पुत्र के रथ की ध्वजा काट डाली। सुवर्ण-दण्ड-युक्त सोमदत्त की चलायी महाशक्ति को अपनी ओर आते देख, अभिमन्यु ने तेज़ बाणों से उसे काट कर भूमि पर गिरा दिया। शल्य बड़ी तेज़ी से बाण

छोड़ रहा था ; किन्तु अभिमन्यु ने उसके समस्त बाणों को व्यर्थ कर उसके रथ के चारों घोड़े मार डाले। अभिमन्यु को इस प्रकार बाणप्रहार करते देख विमूढ़ भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, साँयमनी का पुत्र और शल में से कोई भी उसके सामने न ठहर सके। तब हे राजन् ! आपके पुत्र के आदेशानुसार त्रिगर्त्त, मद्र, केकय आदि पचीस हज़ार धनुर्वेद के पारङ्गत तथा किसी से पराजित न होने वाले योद्धाओं ने शत्रु-संहार-कारी अर्जुन और अभिमन्यु को आगे और पीछे से आ कर घेरा। पाण्डव-सैन्य के नायक अर्जुन और अभिमन्यु के रथों को शत्रु-सैन्य द्वारा घिरा देख, पाञ्चालराज-द्रुपद हज़ारों गजारोही, अश्वारोही और लाखों पैदल सिपाहियों को साथ ले और क्रोध में भर तथा धनुष तान, मद्र तथा केकय सैनिकों के ऊपर झपटे। दृढ़धन्वा राजा द्रुपद से रक्षित गजों, अश्वों और पैदल सैनिकों से युक्त उस सेना के रणभूमि में धावा बोलते समय उसकी बड़ी शोभा हुई। पाञ्चाल कुल की वृद्धि करने वाले राजा द्रुपद ने जब देखा कि, द्रोणाचार्य भी अर्जुन पर आक्रमण करने को आ रहे हैं, तब उसने तीन बाण मार आचार्य की हँसली की हड्डी पर चोट की। फिर दस बाण चला मद्रकों का नाश किया और भल्ल बाण से कृतवर्मा के पृष्ठरक्षक को समाप्त कर डाला। शत्रुतापन राजा द्रुपद ने पौरववंशी दमनक को पैनी नोंक वाले बाणों से घायल कर डाला। युद्ध में अत्यन्त मतवाले पाञ्चालराज को साँयमनि के पुत्र ने तीस बाणों से तथा उसके सारथि को दस बाणों से विद्ध किया। तब घायल एवं अपने जाबड़े चाटते हुए राजा द्रुपद ने अपने शत्रु का धनुष काट डाला और फिर पचीस बाण छोड़ उसके घोड़ों तथा उसके सारथि को मार डाला। हे भरतसत्तम ! मृत घोड़ों के रथ पर खड़े हो कर कुछ देर तक साँयमनि का पुत्र पाञ्चालराज के पुत्र को देखता रहा। अनन्तर वह हाथ में ढाल, तलवार ले दौड़ा और रथ पर सवार अपने वैरी के निकट जा पहुँचा। उमड़ते हुए समुद्र की लहर की तरह बड़े वेग से आये हुए और आकाशच्युत सूर्य की तरह हाथ की तलवार को उठाये हुए, कालप्रेरित यम की तरह प्रचण्ड,

सूर्य की तरह प्रकाशमान, मत्तगज की तरह पराक्रमी सॉंयमनि के पुत्र को धृष्टद्युम्न तथा पाण्डवों ने आते देखा। तब धृष्टद्युम्न ने क्रोध में भर एक विशाल गदा से प्रहार कर सॉंयमनि के पुत्र का सिर चूर चूर कर डाला। वह हाथ में ढाल तलवार लिये हुए ही निर्जीव हो, भूमि पर गिर पड़ा। यह देख, धृष्टद्युम्न को बड़ी प्रसन्नता हुई।

हे राजन्! जब वह महारथी राजकुमार इस प्रकार रण में मारा गया, तब आपके सैनिक हाहाकार करने लगे। धृष्टद्युम्न द्वारा अपने पुत्र का मारा जाना देख, सॉंयमनि के क्रोध की सीमा न रही। वह लड़ने के लिये स्वयं धृष्टद्युम्न के सामने गया। उस समय उन दोनों दर्प में भरे वीरों का घोर युद्ध होने लगा और कौरव तथा पाण्डव—उभय पक्ष के वीर राजा लोग उनके युद्ध को देखने लगे। इतने में शत्रुविजयी सॉंयमनि ने क्रोध में भर तीन बाण मार धृष्टद्युम्न को वैसे ही घायल किया, जैसे महावत अङ्कुश आदि से विशाल गज को घायल करता है। फिर रण के आभूषण रूप शल्य ने भी क्रोध में भर धृष्टद्युम्न की छाती घायल की। तदनन्तर पुनः महाभयङ्कर युद्ध होने लगा।

बासठवाँ अध्याय

भीमसेन द्वारा गजसेना का संहार

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! जब मेरे पुत्र की सेना पाण्डवों की सेना द्वारा मारी जाती है, तब मैं दैव को पुरुषार्थ से बड़ा मानता हूँ। हे तात! तू सदा यही कहा करता है कि, मेरे वीर पुत्र मार खाते हैं और पाण्डव अछूते बच जाते हैं। इतना ही नहीं—इससे तुझे प्रसन्नता भी होती है। मेरे पुत्र शक्त्यानुसार बल का प्रयोग कर, विजय पाने की आशा से लड़ते हैं। तिस पर भी तू मुझसे सदा यही कहता है कि, मेरे पुत्र रण में मार

आते हुए गिरते हैं। पाण्डव जीतते हैं और मेरे पुत्रों की हार होती है। हे सञ्जय! दुर्योधन की करतूतों से उत्पन्न बहुत से दुःखदायी और मर्मान्तक समाचार मुझे सुनने पड़ते हैं। यह मुझे बड़ा बुरा जान पड़ता है। हे सञ्जय! मुझे ऐसा कोई उपाय नहीं देख पड़ता, जिससे रण में पाण्डवों की हार हो और मेरे पुत्र जीतें।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस महासमर में महाजनसंहार हो रहा है और सहस्रों हाथी और घोड़े मारे जाते हैं तथा हज़ारों रथ नष्ट किये जा रहे हैं। इसका कारण आप ध्यान लगा कर सुनें। उस संहार का कारण आपका अन्याय है।

हे राजन्! शल्य के नौ बाणों के प्रहार से व्यथित धृष्टद्युम्न बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने मद्रराज के ऊपर फ़ौलादी तीरों की वृष्टि की। उस समय हमने उसका परम विस्मयोत्पादक पराक्रम यह देखा कि, धृष्टद्युम्न ने समर के आभूषण रूप शल्य के चलाये समस्त बाण पीछे लौटा दिये। इस प्रकार उन दोनों महारथियों का घोर समर होता रहा। उन दोनों में कौन न्यून है और कौन विशेष—यह किसी की समझ में न आ सका। कुछ देर बाद शल्य ने भल्ल बाण छोड़ धृष्टद्युम्न के हाथ का धनुष काट डाला। वह धृष्टद्युम्न पर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगा जैसे वर्षाऋतु के मेघ, पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं।

शल्य द्वारा धृष्टद्युम्न के पीड़ित किये जाने पर, धृष्टद्युम्न क्रोध में भर शल्य के रथ की ओर दौड़ा और पैने बाणों से शल्य को विद्ध करने लगा। हे राजन्! उस समय अभिमन्यु के साथ युद्ध करने की इच्छा रखने वाले आपके पुत्र दौड़ आये और शल्य के रथ को घेर उसकी रक्षा करने लगे। जब दुर्योधन, दुःशासन, विविंशति, दुर्मर्षण, दुःसह, चित्रसेन, दुर्मुख, सत्यव्रत एवं पुरुमित्र आदि योद्धा आ, शल्य को घेर उसकी रक्षा करने लगे, तब कोप में भर भीमसेन, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, सुभद्रानन्दन अभिमन्यु, नकुल तथा सहदेव ने विविध भाँति के बाण चला आपके पक्ष

के दसों योद्धाओं को रोका। वे अति हर्षित हो बाण चला परस्पर युद्ध करने लगे। हे राजन्! यह सब आपकी दुरभिसन्धि का फल है। जब पाण्डवों के और आपके पक्ष के दस दस रथी आपस में भिड़ गये, तब उभय पक्ष के अन्य रथी दर्शक बन उनके महाविकट युद्ध को खड़े खड़े देखने लगे। वे महारथी विविध प्रकार के अस्त्रों के प्रहार कर, एक दूसरे के सामने सिंहनाद करने लगे। परस्पर मार डालने की कामना रखने वाले वे योद्धा ईर्ष्या में भर युद्ध कर रहे थे। इतने में रोष में भर आपके पुत्र दुर्योधन ने चार पैने बाण मार धृष्टद्युम्न को घायल किया। दुर्मर्षण ने बीस, चित्रसेन ने पाँच, दुर्मुख ने नौ, दुःसंह ने सात, विविंशति ने पाँच तथा दुःशासन ने तीन बाण धृष्टद्युम्न के मारे। तब तो धृष्टद्युम्न ने हाथ की फुर्ती दिखा आपके पक्ष के दसों योद्धाओं में से प्रत्येक योद्धा के पच्चीस पच्चीस बाण मारे। उधर अभिमन्यु ने दस दस बाण मार भीष्म और पुरमित्र को घायल किया। उभय माद्रीनन्दनों ने भी अपने मामा शल्य के ऊपर पैने बाणों की वृष्टि की। यह देख सब दर्शक विस्मित हो रहे थे। शल्य ने भी अपने भाँजों पर बहुत से बाण छोड़े; किन्तु शल्य के बाणों से घिर जाने पर भी माद्रीसुत विचलित न हुए। महाबली भीम ने दुर्योधन को झपटते देख, इस युद्ध का निपटारा करने के उद्देश्य से एक बड़ी भारी गदा उठा ली। कैलास पर्वत के समान विशालकाय भीम को गदा उठा अपनी ओर आते देख आपके पुत्र डर कर रणक्षेत्र से भाग गये। यह देख, दुर्योधन बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने मगधराज को आगे कर तथा उनकी दस सहस्र गजसेना को साथ ले, भीमसेन पर आक्रमण किया। मगधराज की गजसेना को आते देख, भीम हाथ में गदा ले रथ से उतर पड़ा और सिंहनाद करने लगा। मुख खोले काल की तरह और हाथ में गदा ले, भीम ने मगधराज की गजसेना पर आक्रमण किया। इन्द्र जैसे दानवों का वज्र से संहार करते हैं, वैसे ही भीम गदा से गजसैन्य का नाश करता हुआ आगे बढ़ता चला गया। हृदय को दहलाने वाली भीम की सिंह

गर्जना को सुन हाथी—डर कर एक जगह जमा हो गये और थरथर काँपने लगे। उस समय द्रौपदी के पाँचों पुत्र, अभिमन्यु, नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्नादि पाण्डव पक्षीय योद्धा भीमसेन के पीछे पीछे लगे हुए उसकी रक्षा करते थे। मेघ गरज गरज कर पर्वतों पर जैसे जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही वे भी सिंहनाद कर गजों पर बाणवृष्टि कर रहे थे। पाण्डवपक्षीय योद्धा, क्षुरप्र, भल्ल और अञ्जलिक बाणों के प्रहार कर, गजारोही आपके सैनिकों के सिर धड़ाधड़ उड़ा रहे थे। उनके कटे हुए सिरों, अङ्कुशों सहित सजाये हुए गज भी रणक्षेत्र में इधर उधर गिर रहे थे। यह देख, कुछ काल तक तो यह जान पड़ने लगा कि, मानों आकाश से पत्थरों की वर्षा हो रही है। सिर कटे हाथियों की पीठ पर सवार योद्धा ऐसे जान पड़ते थे, मानों पर्वतशृङ्गों पर टूटी हुई डालियों वाले वृक्ष हिल रहे हों। धृष्टद्युम्न के बाणप्रहारों से मारे गये कितने ही हाथियों को मैंने अपनी आँखों से देखा है। अपनी गजसेना का इस प्रकार संहार होते देख, मगधराज ने अपना ऐरावत के समान गज, धृष्टद्युम्न के रथ की ओर लपकाया। यह देख शत्रु-संहारकारी धृष्टद्युम्न ने एक ही बाण मार, उस हाथी को मार डाला। शत्रुपुरञ्जय अभिमन्यु ने रुपहले परों से युक्त एक बाण और चला गजहीन मगधराज का सिर काट डाला। उधर भीम गजसेना में घुस गजसेना का वैसे ही नाश कर रहे थे जैसे इन्द्र पर्वतों का नाश करते हों। जैसे वज्रप्रहार से पर्वतों के टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं, वैसे ही भीम की गदा के एक ही प्रहार से मुझे कितने ही गज निर्जीव हो भूमि पर गिरते हुए देख पड़ते थे। कितने ही हाथियों के दाँत टूट गये थे, कितनों ही के गण्डस्थल विदीर्ण हो गये थे, कितनों ही की गरदनों की हड्डियाँ चूरचूर हो गयी थीं। इस प्रकार पर्वत जैसे विशालकाय अनेक गज मारे गये। उस समय कितने ही हाथी चिघार रहे थे, कितने ही दबे पड़े थे, कितने ही इधर उधर दौड़ रहे थे, कितने ही भयभीत हो रणक्षेत्र से भागे जा रहे थे; कितने ही हाथी निर्जीव हो पहाड़ की तरह भीम का रास्ता रोके भूमि पर पड़े थे।

कितने ही गजों के मुखों से झाग निकल रहे थे। कितने ही गज कनपुटियों के विदीर्ण हो जाने से रक्त वमन करते हुए पहाड़ों की तरह भूमि पर पड़े जगह जगह तड़फ रहे थे। हाथियों की मेदा, वसा, मज्जा और उनके रुधिर से लस्त पस्त भीम, दण्डधर यमराज की तरह अथवा रक्तरञ्जित गदा हाथ में होने से पिनाकधारी शिव की तरह रणक्षेत्र में घूमते हुए महाभयानक जान पड़ते थे। रोष में भरे भीम के हाथ से मारे हुए हाथी सहसा इधर उधर भागते हुए आपके पक्ष के सैनिकों को पैरों से कुचल रहे थे। जैसे युद्ध में देवगण इन्द्र की रक्षा करते हैं, वैसे ही अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेन की रक्षा कर रहे थे। मारे गये गजों के रक्त में सनी हुई गदा को हाथ में ले भीमसेन बड़े भयङ्कर मालूम पड़ते थे। उस समय रणक्षेत्र में इधर उधर घूमते हुए भीमसेन ऐसे जान पड़ते मानों प्रलयकाल उपस्थित होने पर शङ्कर ताण्डव नृत्य कर रहे हों। इन्द्र के वज्र की तरह प्रहार करते समय शब्द करने वाली भीम की गदा में मज्जा, केश, रक्त आदि लिपट गये थे। अतः भयानक देख पड़ने वाली वह गदा, सर्वभूत-नाशकारी पिनाकपाणि रुद्र के पिनाक की तरह भयानक जान पड़ती थी। जैसे गो चराने वाला ग्वाला लाठी से गौओं को मारता है, वैसे ही भीमसेन अपनी गदा से गजों पर प्रहार कर रहे थे। भीमसेन की गदा और अन्य महारथियों के बाणप्रहारों से घायल गज—हे राजन्! आपकी सेना के रथों को रूँदते हुए भाग रहे थे। जैसे प्रचण्ड पवन से बादल तितर बितर हो जाते हैं, वैसे ही भीम गजसैन्य में मार काट मचाते और उसे छितराते श्मशान में खड़े त्रिशूलधारी शिव की तरह महाभयानक जान पड़ते थे।

तिरसठवाँ अध्याय

सात्यकि और भीम की भेंट

सञ्जय ने कहा—जब हाथियों की सेना का भीमसेन ने नाश कर

डाला ; तब आपके पुत्र दुर्योधन ने चिल्ला कर अपने सैनिकों से कहा—भीमसेन को मार डालो। यह सुन हे राजन् ! आपके समस्त योद्धा भयङ्कर शब्द करते भीमसेन के ऊपर टूट पड़े।

पूर्णमासी के दिन उमड़ते हुए समुद्र की तरह देवताओं के लिये भी दुर्धर्ष—असंख्य रथों, घोड़ों, और पैदल-सैनिकों से युक्त तथा शङ्खों एवं दुन्दुभियों के शब्द से नादित कौरवों के सैन्य रूपी महासागर को, भीम ने तट रूप हो, रोक दिया। हे राजन् ! भीम के इस अद्भुत कृत्य को देख, मुझे तो बड़ा आश्चर्य मालुम पड़ा। घोड़ों, रथों, गजों सहित अपने ऊपर आक्रमण करने वाले राजाओं को देख भीम ज़रा सा भी न घबड़ाया—प्रत्युत उन सब को अपनी गदा से रोक दिया। रथिश्रेष्ठ भीम उस सैन्य-समूह को रोक मेरु पर्वत की तरह अटलभाव से खड़े हो गये। इस तुमुल युद्ध के महाभयङ्कर काल में भीम के भाई, पुत्र, धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, अभिमन्यु, अजेय शिखण्डी बराबर भीम के साथ साथ बने रहे और उसका साथ उन लोगों ने न छोड़ा। लोहे की बड़ी भारी गदा को ले, दौड़ते हुए यमराज की तरह भीम ने पुनः आपकी सेना पर आक्रमण किया। भीम गदाप्रहार से आपकी सेना के रथों को तथा अश्वारोहियों को नष्ट करने लगा। वह अपनी जंघाओं के वेग से अनेक रथों की पंक्तियों को आकर्षित करता हुआ और प्रलयकाल जैसा संहार करता हुआ, रणक्षेत्र में घूमने लगा। भीम आपके योद्धाओं को वैसे ही मसल रहा था, जैसे हाथी सेंटों के वन को कुचलता है। भीम ने रथों में से रथियों को, गजों की पीठ से गजारोही योद्धाओं को, अश्वों पर से अश्वारोही योद्धाओं को तथा पैदलों को मसल मसल कर मार डाला। जैसे वृक्ष वायु के वेग से उखड़ते हैं, वैसे ही महाबली भीम ने अपनी गदा से आपके पुत्र की सेना के समस्त योद्धाओं का संहार कर डाला। रक्त, आँते, चरबी और माँस में सनी गजों और अश्वों का नाश करने वाली भीम की गदा बड़ी भयङ्कर देख पड़ती थी। मार काट होने से उलटे सीधे पड़े हुए मनुष्य, हाथी और घोड़ों

से रणभूमि ऐसी जान पड़ती थी मानों मृत्यु का आवासस्थान हो। रोष से परिपूर्ण, प्राणियों का संहार करने वाले रुद्र के पिनाक, यमराज के दण्ड अथवा इन्द्र के वज्र की तरह प्राणनाशिनी भयङ्कर भीम की गदा पर सब लोगों की दृष्टि थी। उस समय चारों ओर गदा को घुमाने वाले भीमसेन का रूप युगान्त काल में कुपित काल जैसा देख पड़ता था। इस प्रकार उस विशाल वाहिनी को बारंबार भगाते हुए, काल जैसे भीमसेन को सम्मुख आते देख, सब लोग उदास हो गये। हे भारत! गदा को उठाये हुए भीमसेन जिस ओर ताकते थे, उसी ओर की सेना भाग जाती थी। इस प्रकार शत्रु की सेनाओं का नाश करते हुए तथा मुख खोले काल की तरह भीम ऐसे जान पड़ते थे मानों वह समस्त सेना को निगल जायँगे। भीमकर्मा एवं गदाधारी, अपार पराक्रमी, महाबली भीम को देख, भीष्म जी ने अचानक उस पर आक्रमण किया। जब भीम ने चमचमाते रथ पर सवार हो, वर्षाकालीन मेघ की तरह बाणवृष्टि करते हुए भीष्म पितामह को अपनी ओर आते देखा, तब मुख खोले काल की तरह बड़े दर्प के साथ भीम उन महाबली महात्मा की ओर बढ़ा। साथ ही सात्यकि हाथ में एक दृढ़ धनुष ले और मार्ग में आये हुए शत्रुओं का संहार करता हुआ तथा आपकी सेना को कम्पायमान करता हुआ, पितामह की ओर लपका। चाँदी जैसे सफेद वर्ण वाले अश्वों से युक्त रथ पर सवार और बड़े पैने एवं सुन्दर पुंखों से युक्त बाणों की वृष्टि करने वाले सात्यकि को आपके पक्ष के योद्धा न रोक सके। किन्तु राक्षस अलंबुष ने दस बाण छोड़ सात्यकि को घायल किया। इस पर सात्यकि ने चार बाण छोड़ अलंबुष पर प्रहार किया और अपना रथ आगे को बढ़वाया। वृष्णिवंशीय सात्यकि को अपने सामने आया हुआ देख और कुरुवंशीय योद्धाओं को बाणों के प्रहार से भगाते देख, आपके योद्धाओं ने सात्यकि पर वैसे ही बाणवृष्टि की जैसे मेघ पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं। किन्तु जिस प्रकार तपते हुए मध्याह्न-कालीन सूर्य को मेघ नहीं रोक सकते, वैसे ही योद्धा

उसको नहीं रोक सके। हे राजन्! सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा को छोड़; आपकी सेना में ऐसा एक भी योद्धा न था जो उस समय भयत्रस्त न हुआ हो। भूरिश्रवा हाथ में धनुष ले और अपने पक्ष के रथियों को पीछे हटते देख, सात्यकि से लड़ने को अग्रसर हुआ।

चौसठवाँ अध्याय

महाराज धृतराष्ट्र के आठ पुत्रों का संहार

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जैसे महावत अङ्कुश से गज को घायल करता है, वैसे ही भूरिश्रवा ने नौ बाण मार सात्यकि को घायल किया। सब के सामने ही सात्यकि ने भी नौ बाण छोड़ भूरिश्रवा को घायल किया। हे राजन्! उस समय अपने भाइयों सहित दुर्योधन ने भूरिश्रवा की रक्षा करने के लिये उसे चारों ओर से घेर लिया। यह काण्ड देख तेजस्वी पाण्डव भी दौड़ कर वहाँ आ उपस्थित हुए और सात्यकि की, चारों ओर से रक्षा करने लगे। इतने में कोप में भरे हुए भीम ने गदा उठा और उससे प्रहार कर दुर्योधनादि आपके पुत्रों को पीछे हटा दिया। उस समय सहस्रों रथों से घिरे, क्रोध से मूर्छित और वैरभाव से प्रेरित आपके पुत्र नन्दक ने महाबलवान भीम पर कङ्कपत्र युक्त बड़े पैने छः बाण छोड़े। दूसरी ओर से आपके दूसरे पुत्र दुर्योधन ने भीमसेन की छाती में नौ पैने बाण मारे। उस समय भीम रथ पर सवार था। उसने अपने सारथि विशोक से कहा—धृतराष्ट्र के ये महारथी एवं शूरवीर पुत्र क्रुद्ध हो मेरे प्राण लेने को समरभूमि में आ उपस्थित हुए हैं। सो आज बहुत दिनों की प्रतीक्षा के बाद मैं अपने इन भाइयों को अपने सामने देख रहा हूँ। अन्तःकरण में उगे हुए मनोरथ रूपी वृक्ष पर आज बहुत दिनों बाद फल लगे हैं। हे विशोक! जहाँ रथों के पहियों से उड़ी हुई धूल बाण समूह के साथ, दिशाओं में

व्याप्त हो रही है, वहीं पर मुझसे लड़ने के लिये दुर्योधन और उसके भाई तथा मदोन्मत्त अन्य कौरव खड़े हैं। अतः तुम सावधानी से मेरा रथ हाँक मुझे वहाँ ले चलो। मैं तेरी आँखों के सामने ही उन सब को मार डालूँगा। यह कह भीमसेन ने सुवर्णनिर्मित तीक्ष्ण बाणों को आपके पुत्रों पर छोड़ना आरम्भ कर दिया। भीम ने तीन बाण नन्दक की छाती में मारे। तब आपके पुत्र दुर्योधन ने भी साठ बाण छोड़ भीम को और तीन बाणों से भीम के सारथि विशोक को घायल किया। हे राजन्! आपके पुत्र ने खेल ही खेल में तीन भल्ल बाण छोड़ भीम का धनुष काट डाला। दुर्योधन द्वारा अपने सारथि विशोक का घायल किया जाना देख, भीमसेन से न सहा गया। उसने कोप में भर, आपके पुत्र के वध के लिये एक दृढ़ धनुष हाथ में ले उस पर रोदा चढ़ाया। फिर उस पर बड़ा पैना और सुन्दर पुंखों से युक्त एक बाण रखा। उस बाण से भीम ने दुर्योधन के हाथ का धनुष काट डाला, तब दुर्योधन ने कटे हुए धनुष को फेंक दूसरा धनुष ले लिया। दुर्योधन ने कुपित हो अपने धनुष में काल के भी काल जैसा भयानक बाण रख उसे भीम की छाती में मारा। उस बाण के प्रहार से भीम बहुत घायल और पीड़ित हुआ और रथ का डंडा पकड़ बैठ गया। उस समय वह मूर्छित हो गया था। भीम को मूर्छित देख, पाण्डवों के अभिमन्यु आदि महारथी महाधनुर्धरों ने आपके पुत्रों के सिरों पर बाणवृष्टि की। इतने में भीम सचेत हो गया और उसने दुर्योधन के तीन बाण मार, पुनः उसके पाँच बाण मारे। भीम ने शल्य को पचीस बाण मार घायल किया। तब शल्य तो घायल हो तुरन्त ही रणक्षेत्र से भाग गया। सेनापति सुषेण, जलसन्ध, सुलोचन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप, दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विवित्सु, विकट तथा सम—ये आपके पुत्र, भीम के ऊपर झपटे। क्रोध के मारे लाल लाल आँखें कर वे सब एक साथ भीम पर बाणवृष्टि कर उसे घायल करने लगे। आपके पुत्रों को अपने ऊपर प्रहार करते देख, जावड़ों को चाटते हुए

भीम ने गरुड़ समान वेग से आपकी सेना पर वैसे ही आक्रमण किया जैसे भेड़िया, क्षुद्र पशुओं पर आक्रमण करता है। मुसक्याते हुए भीम ने तीन बाण मार जलसन्ध को विद्ध किया और उसे जान से मार डाला। फिर भीम ने सुषेण का वध किया। उसका कुण्डलों से शोभित मस्तक मुकुट सहित, भल्लबाण से काट पृथिवी पर गिरा दिया। फिर सत्तर बाण मार कर, भीम ने वीरबाहु को, अश्वों, ध्वजा और सारथि सहित नष्ट कर डाला। फिर भीम ने हे राजन्! आपके भीम और भीमरथ नामक दो पुत्रों को भी जो बड़े वीर थे, यमालय भेज दिया। तदनन्तर समस्त सैनिकों के आगे घोड़े के नाल के आकार के एक बाण से भीम ने सुलोचन को मार डाला। अब आपके जो पुत्र बच रहे, वे भीम की मार को न सह सके और इधर उधर भाग गये। उस समय भीष्म ने अपने पक्ष के समस्त महारथियों को सम्बोधन कर यह कहा—क्रोध में भरा हुआ भीम, धृतराष्ट्र के पुत्रों को एक एक कर मारे डालता है। अतः अब विलम्ब न कर उसे पकड़ लो।

भीष्म जी के यह कहते ही क्रोध में भर समस्त योद्धा भीम की ओर झपटे। अपने मतवाले हाथी पर सवार हो भगदत्त भीम के निकट जा पहुँचा। पहुँचते ही उसने अपने बाणजाल से भीम को वैसे ही ढक दिया जैसे मेघ सूर्य को ढक देते हैं। भुजबल से दर्पित अभिमन्यु आदि पाण्डवपक्षीय वीर यह न सह सके। उन लोगों ने भी बाणवृष्टि कर भगदत्त को चारों ओर से घेरा और बाणों के प्रहार से उसका हाथी घायल कर डाला। इन महारथियों के भाँति भाँति के बाणों से घायल और रक्त से लथपथ भगदत्त का हाथी सूर्यरश्मियों से रञ्जित महामेघ की तरह बड़ा सुन्दर जान पड़ता था। जब भगदत्त ने अपने मतवाले हाथी को लपकाया, तब वह कालप्रेरित यमराज की तरह पाण्डवों के महारथियों की ओर दौड़ा। उस समय उसके पैरों के नीचे की भूमि धस धस जाती थी। उस हाथी के विकराल रूप और प्रबल वेग को देख, पाण्डवपक्षीय महारथियों

का जोश ठंडा पड़ गया। तब भगदत्त ने एक नतपर्व बाण भीमसेन की छाती में मारा। महारथी एवं महारथी महाधनुर्धर होने पर भी भीम को भगदत्त के इस बाणप्रहार से बुरी तरह घायल होना पड़ा। वह मूर्छित हो अपने रथ की ध्वजा से पीठ टेक सुस्ताने लगा। भीम को मूर्छित और शत्रुपक्षीय अन्य महारथियों को भयभीत देख, प्रतापी भगदत्त ने सिंहनाद किया। यह दशा देख भीमपुत्र घटोत्कच क्रुद्ध हो तुरन्त अन्तर्धान हो गया और उसने भीरुओं को भयभीत करने वाली माया विस्तारित की। अर्धनिमेष बाद ही घटोत्कच विकराल रूप धारण कर देख पड़ा। वह मायारचित ऐरावत हाथी पर सवार हो वहाँ आया। उसके पीछे पीछे अन्य दिग्गज चल रहे थे। अञ्जन, वामन और महापद्म नामक तीन दिग्गजों की पीठ पर राक्षस लोग सवार थे। ये हाथी बड़े डीलडौल के थे और उनके शरीरों से मद टपक रहा था। ये बड़े वीर्यवान, बलवान और बड़े पराक्रमी थे। उस समय घटोत्कच ने हाथी सहित भगदत्त का वध करना चाहा यह देख उसके साथी राक्षसों ने भी अपने अपने हाथियों को आगे बढ़ाया। वे चार चार दाँतों वाले हाथी क्रुद्ध हो चारों ओर सैनिकों को पीड़ित करने लगे। इन गजों से पीड़ित और बाणप्रहार से घायल भगदत्त का हाथी, इन्द्र के वज्रपात की तरह बड़े ज़ोर से चिंघारने लगा। बुरी तरह चिंघारते हुए उस गज की चिंघार को सुन, भीष्म ने द्रोण से कहा—घटोत्कच के साथ भगदत्त का युद्ध हो रहा है। भगदत्त इस समय बड़े सङ्कट में फँसा है। घटोत्कच विशालकाय है और भगदत्त बड़ा क्रोधी है। अतः ये दोनों वीर काल और मृत्यु की तरह आपस में भिड़ गये हैं। देखो, हर्षित पाण्डव कैसा कोलाहल कर रहे हैं। अब इसीमें भलाई है कि हम तुम चल कर भगदत्त की रक्षा करें। यदि उसकी शीघ्र रक्षा न की गयी तो वह अविलम्ब मार डाला जायगा। इस समय रोमाञ्चकारी महाभयङ्कर युद्ध हो रहा है। अतः हे वीरों! त्वरा करो। अब विलम्ब क्यों कर रहे हो, चलो चलें। हे द्रोण! भगदत्त हमारा बड़ा

प्रेमी, कुलीन, शूरवीर और सेनापति है। अतः हमें अवश्य ही उसकी रक्षा करनी चाहिये।

भीष्म के इन वचनों को सुन कर, कौरवों की सेना के समस्त महारथी भीष्म और द्रोण को आगे कर, बड़ी शीघ्रता से भगदत्त की रक्षा करने को उसकी ओर चल दिये। उन सब को जाते देख धर्मराज युधिष्ठिर के पीछे पाञ्चाल वीरों तथा अन्य योद्धाओं ने गमन कर, शत्रुओं का पीछा किया। उन सैनिकों को देख प्रतापी राक्षसराज घटोत्कच ने वज्रपात जैसा घोर नाद किया। उसके सिंहनाद को सुन तथा हाथियों को युद्ध करते देख, भीष्म जी ने पुनः द्रोण से कहा—इस दुष्ट घटोत्कच के साथ युद्ध करना मुझे पसन्द नहीं। यह वीरता और बल से पूर्ण है। साथ ही इसे सहायता भी मिल रही है। अतः इस समय वज्रधर इन्द्र भी नहीं जीत सकते। देखो इसका एक भी वार खाली नहीं जाता। वह बराबर वार पर वार करता ही चला जाता है। इधर हमारे वाहन थके हुए हैं और सारे दिन पाञ्चाल और पाण्डव वीर हमें घायल करते रहे हैं। अतः जिन पाण्डवों का विजय प्रत्यक्ष है, उनसे युद्ध करना, मेरी समझ में ठीक नहीं। अतः अब सैनिकों को युद्ध बंद करने की आज्ञा दो। अब कल फिर लड़ेंगे। भीष्म जी का अभिप्राय समझ और घटोत्कच से डर कर कौरवों ने अन्य बहाना बना लड़ाई बंद कर दी। जब कौरव सैनिक लौट गये तब प्रत्यक्ष समर-विजयी पाण्डवों ने सिंहनाद कर बड़े ज़ोर से अपने शङ्ख बजाये।

हे राजन्! उस दिन घटोत्कच की प्रधानता में पाण्डवों ने सारे दिन कौरवों से युद्ध किया था। तदनन्तर पाण्डवों से परास्त हुए कौरव लजाते हुए अपनी छावनी में गये। उधर बाणों से घायल पाण्डुनन्दन परम हर्षित होते हुए अपने शिविर में पहुँचे। जाते समय घटोत्कच सहित भीम सब के आगे चले जाते थे। सब लोग बड़े प्रसन्न थे। तुरही शङ्ख आदि बाज़े बजाये जा रहे थे। वे लोग सिंहनाद करते और भूमि को कंपायमान करते थे। वे ऐसे वचन कहते थे जिनसे आपके पुत्रों का जी दुखता था। इस

प्रकार गमन कर पाण्डव अपने शिविर में पहुँचे। राजा दुर्योधन, भाइयों के मारे जाने से बड़ा उदास हो गया। उसके आँखों में आँसू भर आये और शोक से विकल हो वह चिन्तित हो गया। फिर उसने अपनी ओर की सेना की भली प्रकार देखभाल की। भाई के वियोगजनित शोक से शोकान्वित दुर्योधन सोचने विचारने लगा।

[पञ्चम दिवस]

पैंसठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी की स्तुति

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! जैसा पराक्रम देवताओं के पक्ष में भी असम्भव है—वैसे पराक्रम से युक्त पाण्डवों के पराक्रम को सुन कर, मुझे केवल आश्चर्य ही नहीं होता; किन्तु भय भी लगता है। हे सञ्जय! हे सूत! जब मैं अपने पुत्रों के तिरस्कार की बात सुनता हूँ; तब मेरी चिन्ता बढ़ जाती है और मन ही मन मैं कहा करता हूँ कि, अब क्या होगा? निस्सन्देह विदुर की कही हुई बातों को जब मैं स्मरण करता हूँ, तब मेरे हृदय में दाह उत्पन्न हो जाता है। हे सञ्जय! मैं तो समझता हूँ कि, जो कुछ हो रहा है वह सब दैवाधीन है। पाण्डवों की सेना के वे शूरवीर जब उन योद्धाओं से युद्ध करते हैं, जिनके महाप्रतापी एवं शस्त्रवेत्ता भीष्म पितामह सेनापति हैं, तब वे क्यों मारे नहीं जाते? पाण्डवों को क्या इस सम्बन्ध में कोई वरदान विशेष मिला हुआ है? अथवा उन्हें कोई विद्या विशेष अवगत है? पाण्डवों की सेना की संख्या आज भी आकाशस्थित तारागण की तरह असंख्य है, उसमें ज़रा भी कमी नहीं हुई। पाण्डव योद्धा बारंबार मेरी सेना का संहार करते हैं, यह तो मुझसे सहन नहीं होता। सचमुच दैव का घोर दण्ड मुझको झेलना पड़ रहा है। हे सञ्जय! तुम मुझे इसका कारण विस्तार से बतलाओ कि, पाण्डव क्यों नहीं मारे

जाते और मेरे पुत्र क्यों मारे जाते हैं? मुझे अपने दुःख का ओर छोर वैसे नहीं देख पड़ता जैसे पार होने के लिये तैर कर पार जाने वाले पुरुष को समुद्र का आर पार नहीं देख पड़ता। इससे मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि, मेरे पुत्रों के ऊपर कोई महान् विपत्ति पड़ने वाली है। इसमें भी सन्देह नहीं है कि भीमसेन मेरे समस्त पुत्रों का संहार किये विना न मानेगा। मुझे तो अपनी ओर ऐसा एक भी शूरवीर नहीं दिखलायी पड़ता जो मेरे पुत्रों की रक्षा कर सके। हे सञ्जय! निश्चय ही मेरे पुत्रों के नाश का समय अब निकट ही है। अतः मैं तुमसे पूँछता हूँ कि, इसका कारण क्या है? पाण्डवों में ऐसी विशेष शक्ति कहाँ से आ गयी है? मुझे तुम इसका ठीक ठीक रहस्य बतलाओ। मुझे तुम यह भी बतलाओ कि, जब दुर्योधन ने अपने पक्ष के योद्धाओं को रणभूमि से लौटते देखा, तब उसने क्या किया? हे सञ्जय! जब मेरे पुत्र समरभूमि से लौट कर पीछे चले आये, तब भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, शकुनि, जयद्रथ, अश्वत्थामा, महाबली विकर्ण ने उस समय क्या निश्चय किया?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! मैं जो अब कहता हूँ, उसे आप सावधान हो कर सुनें और उस पर स्वयं विचारें भी करें। इस समय जो कुछ हो रहा है, वह न तो किसी मंत्र के प्रभाव से हो रहा है और न मायावश ही हो रहा है। हे राजन्! पाण्डव निःशङ्क हैं वे किसी से ज़रा भी नहीं डरते। वे लड़ते अवश्य हैं, किन्तु न्यायानुसार ही लड़ते हैं। हे राजन्! यशःप्रार्थी पाण्डव अपने भरण पोषण के लिये भी धर्म एवं न्यायसङ्गत उपायों से काम लेते हैं। पाण्डव सदा धर्मपथारूढ़ रहते हैं। इसीसे उन्हें समरक्षेत्र में कभी पीछे पग रखना नहीं पड़ता। क्योंकि जहाँ धर्म है वहीं विजय भी है। हे राजन्! यही कारण है कि पाण्डवों की सदा जीत होती है और वे रण में नहीं मारे जाते। इधर आपके पुत्र बड़े दुष्ट हैं और रात दिन पापकर्मों में प्रवृत्त रहते हैं। इसीसे इन दुश्चरित्रों का युद्ध में नित्य नाश हुआ करता है।

हे राजन्! क्षुद्र मनुष्यों जैसे आपके पुत्रों ने पाण्डवों के ऊपर बड़े बड़े अत्याचार किये हैं और अनेक बार उनको छला है। आपके पुत्रों के इन दुष्कर्मों का कुछ भी बदला न दे, पाण्डव उन सब को पिये बैठे हैं। यही कारण है कि, पाण्डवों की अपेक्षा आपके पुत्र लोगों की दृष्टि में नीच ठहरते हैं। हे राजन्! निरन्तर किये गये उन पापकर्मों का घोर फल अब मिलने ही वाला है। हे राजन्! आपके हितैषी और नतैत आपको रोकते ही रहे; किन्तु आपने किसी की एक भी बात न मानी। इसीसे हे महाराज! आप अब इष्ट मित्रों और पुत्र पौत्रों सहित उसका फल भोगो। विदुर, भीष्म, द्रोण तथा मैंने आपको समझाने बुझाने में कोई बात उठा नहीं रखी, किन्तु आप न समझे। जैसे मरणोन्मुख रोगी को दवा बुरी लगती है, वैसे ही आप हम लोगों के हितोपदेश को बुरा समझते रहे हैं। साथ ही पुत्रों की अनुचित बातों में आ, उनके अनुचित कर्मों का समर्थन करते रहे हैं। आपने अपने पुत्रों के इस कथन पर कि—पाण्डवों को हम अभी जीते लेते हैं,—आपने सदा सोलहों आने विश्वास किया।

हे राजन्! अब आप जब मुझसे पाण्डवों के विजयी होने का कारण पूँछते हैं, तब मैंने इस सम्बन्ध में जो कुछ सुन रखा है, वह आप से निवेदन करता हूँ। आप सुनें। महाराज! यही बात दुर्योधन ने भीष्म पितामह से भी पूँछी थी। दुर्योधन ने जब अपने समस्त भाइयों को रण में परास्त हुआ देखा, तब वह भीष्म पितामह के पास रात के समय एकान्त में गया। भाइयों की मृत्यु से विमूढ़चित्त दुर्योधन ने बड़े विनम्र-भाव से उस समय बुद्धिमान् भीष्म पितामह से जो प्रश्न किया था, उसे अब आप सुनें।

दुर्योधन ने पूँछा—आप, द्रोणाचार्य, शल्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कृतवर्मा, काम्बोजराज सुदक्षिण, भूरिश्रवा, विकर्मा और परमपराक्रमी भगदत्त आदि महारथी और प्राणों की ममता त्याग मेरे लिये लड़ने वाले अन्य बहुत से क्षत्रियगण ऐसे हैं कि वे त्रिलोक के साथ लड़ सकते हैं।

तिस पर भी वे पाण्डवों के सामने नहीं टिकते। इससे मेरे मन में बड़ा भारी खटका उत्पन्न हो गया है। पाण्डवों में ऐसी कौन सी विशेषता है, जिससे वे सदा हमसे जीता करते हैं और हमें उनसे हार खानी पड़ती है। इस पर भीष्म जी ने कहा—दुर्योधन! मैं तो इसका कारण तुझे कई बार बतला चुका हूँ, पर वह तो तेरे मन पर चढ़ता ही नहीं। मैं अब भी तुझसे यही कहूँगा कि, तू पाण्डवों के साथ मेल कर ले। ऐसा करने से केवल तेरा ही नहीं, प्रत्युत समस्त पृथिवी का कल्याण है। हे राजन्! तू अपने भाई बन्धुओं के साथ मेल रख और अन्य समस्त अपने शत्रुओं को सन्तप्त करता हुआ, सुखपूर्वक इस पृथिवी का सुख भोग। यह बात मैं पहिले भी तुझसे कई बार कह चुका हूँ; पर तू मेरी बात तो कभी मानता ही नहीं। तू ने पाण्डवों का जो तिरस्कार किया है, यह उसीका फल अब तेरे आगे आ रहा है। अब मैं तुझे यह भी बतलाता हूँ कि, उदारमना पाण्डव इस युद्ध में क्यों नहीं मारे जाते। परमात्मा की सृष्टि में न तो आज तक कभी कोई ऐसा उत्पन्न हुआ, न है और न आगे ही होगा, जो श्रीकृष्ण से सुरक्षित पाण्डवों का बाल भी बाँका कर सके। पवित्रात्मा मुनियों ने मुझे पुराणसम्मत एक इतिहास सुनाया था। वह इतिहास मैं तुझे सुनाता हूँ। सुन, पूर्वकाल की बात है। एक दिन गन्धमादन पर्वत पर, देवगण और मुनिगण, ब्रह्मा जी के निकट बैठे हुए उनकी सेवा कर रहे थे। उन सब के बीच में बैठे हुए ब्रह्मा जी ने आकाश में एक प्रकाशमान् विमान उड़ता हुआ देखा। जब उन्होंने मन को एकाग्र कर विचारा, तब उन्हें विदित हो गया कि उस विमान में घटघटवासी साक्षात् नारायण हैं। तदनन्तर ब्रह्मा जी ने हाथ जोड़ कर और हर्षित मन से भगवान को प्रणाम किया और वे खड़े हो गये। उनको खड़े देख, वहाँ उपस्थित समस्त देवगण और ऋषिगण भी हाथ जोड़े खड़े हो गये। वे लोग नारायण के अद्भुत रूप को देख चकित हुए। इतने में ब्रह्म-वेत्ताओं में श्रेष्ठ ब्रह्मा जी ने भगवान का यथाविधि पूजन किया।

फिर उन परमधर्मज्ञ तथा जगत्स्रष्टा ब्रह्मा जी ने नारायण की इस प्रकार स्तुति की।

ब्रह्मा जी बोले—आप विश्वावसु, विश्वमूर्ति, विश्वेश, विश्वक्सेन, विश्वकर्मा, वशी, विश्वेश्वर तथा वासुदेव हैं। इसीसे हे योगात्मन्! सकलदेव रूप आपको मैं प्रणाम करता हूँ। हे विश्वरूप! हे महादेव! हे लोक-हित-परायण! हे योगेश्वर! हे विभो! हे योगपारगामी! आपकी सदा जै हो। हे पद्मगर्भ! हे विशालाक्ष! हे लोकनाथों के नाथ! हे भूत, भविष्य एवं वर्त्तमान कालों के नाथ! हे सौम्य रूप! आपकी सदा जै हो। असंख्य गुणों के आधार, सर्वपरायण हे नारायण! हे कृष्ण! हे सुदुष्पार! हे शार्ङ्गधनुर्धर! आपकी सदा जै हो। हे सर्वगुणोपेत! हे विश्वमूर्ते! हे निरामय! हे महाबाहो! हे विश्वेश्वर! हे लोकार्थतत्पर! आपकी सदा जै हो। हे महोरग! हे महावराह! हे आदिकारण! हे हरिकेश! हे विभो! हे हरिवास! हे दिशाओं के अधिष्ठाता! हे विश्वनिवास! हे अमित! हे अव्यय! आपकी सदा जै हो। हे व्यक्त! हे जितेन्द्रिय! हे सत्क्रिय! हे असंख्येय! हे गम्भीर! हे आत्मभावज्ञ! हे कामद! आपकी सदा जै हो। हे अनन्त! हे विदित ब्रह्म! हे नित्य-भूत-विभान! हे कृतकार्य! हे कृतज्ञ! हे धर्मज्ञ! हे विजयदाता! हे गुह्यात्मन्! हे सकलयोगात्मन्! हे स्फुटसम्भूत! हे समस्त भूतों के आदि कारण! हे लोकों और तत्वों के ईश! हे भूतिविभूषण! आपकी सदा जै हो। हे आत्मयोने! हे महाभाग! हे कल्पान्त-संहार-कारी! हे उत्पादक! हे मन में उत्पन्न होने वाले! हे जनप्रिय-ब्रह्म! आपकी सदा जै हो। हे निसर्ग-सर्ग-निरत! हे कामेश! हे परमेश्वर! हे अमृतोद्भव! हे सद्भाव! हे मुक्ताग्र! हे विजयप्रद! हे प्रजापतिपते! हे देव! हे पद्मनाभ! हे महाबल! हे आत्मभूत! हे महाभूत! हे कर्मात्मन्! आपकी सदा जै हो। हे देव! यह पृथिवी आपके चरण है। दिशाएँ आपके हाथ हैं। आकाश आपका सिर है। अहङ्कार आपकी मूर्ति है। देवता आपका शरीर है और चन्द्रमा एवं सूर्य आपके

नेत्र हैं। आपका बल तप है, आपका रूप सत्यकर्म और धर्म हैं। आपका तेज अग्नि है और आपका श्वास पवन है। जल की उत्पत्ति आपके पसीने से हुई है। दोनों अश्विनीकुमार आपके दोनों कर्ण हैं। देवी सरस्वती आपकी जिह्वा है। वेद आपकी संस्कारनिष्ठा है। यह सारा जगत् आपके सहारे ही टिका हुआ है। हे योगयोगेश! हम न तो आपके रूपों को गिन सकते हैं, न आपका परिमाण ही जान सकते हैं। आपका बल, आपका पराक्रम और आपकी उत्पत्ति भी हमें विदित नहीं है और न हम उसे जान ही सकते हैं। आपकी भक्ति में हम सब देवगण यथानियम आपके शरण में आये हैं। हे सर्वव्यापिन्! आप महेश्वर और परमेश्वर हैं। हम आपका पूजन करते हैं। ऋषिगण, देवगण, गन्धर्वगण, यक्षगण, राक्षसगण, सर्पगण, पिशाचगण, मनुष्यगण तथा समस्त अन्य पशु पक्षीगण को आपके अनुग्रह ही से मैंने रचा है। हे पद्मनाभ! हे विशालाक्ष! हे कृष्ण! हे दुःखनाशन्! आप ही समस्त प्राणियों की एकमात्र परमगति हैं। आप सब के नियन्ता हैं और परम गुरु हैं। हे देवेश! आपके अनुग्रह से समस्त देवगण सुखी रहते हैं। हे देव! आपकी कृपा से पृथिवी निर्भय रहती है। अतएव हे विशालाक्ष! आप यदुवंश में जन्म धारण करें। हे विभो! धर्म-स्थापनार्थ, दैत्यविनाशनार्थ और जगत् धारणार्थ आप मेरी इस प्रार्थना को अङ्गीकार करें। हे विभो! हे वासुदेव! आपके इस परम गुह्य एवं स्तुत्य रूप का यह वर्णन मैं आपके अनुग्रह ही से कर सका हूँ। सङ्कर्षण की उत्पत्ति आपने अपने ही रूप से की है। आपने ही कृष्ण रूप धारण किया है। आपने ही आत्मसम्भव प्रद्युम्न को भी उत्पन्न किया है। आपने प्रद्युम्न से उन अनुरुद्ध को उत्पन्न किया है जिन्हें लोग अविनाशी विष्णु मानते हैं। अनिरुद्ध ही ने लोक धारण करने वाले मुझ ब्रह्मा को उत्पन्न किया है। इसीसे मैं वासुदेवमय हूँ। मुझे तो आपने ही उत्पन्न किया है। हे विभो! आप इस प्रकार विभक्त कर, मानव रूप धारण करें। फिर समस्त लोकों को सुखी करने के अर्थ, असुरों को मार कर, धर्म और यश को सम्पादन

करें। जिससे आपको तत्त्वयोग मिले। हे अमितपराक्रमी! ब्रह्मर्षिगण, देवगण, आपके इन नामों ही से आपका स्तव किया करते हैं। ये सब प्राणी आप ही के आश्रित हैं। हे वरद! हे सुन्दरबाहु! ब्राह्मणगण आपको आदि मध्य और अन्त से रहित, संसार सागर से जीवों को पार करने वाला सेतु रूप और अपार योगी मानते हैं।

छियासठवाँ अध्याय

ब्रह्मा के साथ देवगण का वार्त्तालाप

भीष्म जी बोले—हे दुर्योधन! तदनन्तर दिव्य रूपधारी भगवान्, लोकनाथों के भी नाथ परमात्मा ने स्निग्ध एवं गम्भीर वाणी से ब्रह्मा जी से इस प्रकार कहा—तुम जो चाहते हो वह मैंने योगबल से जान लिया है। तुम जो चाहते हो, वही होगा। यह कह भगवान् अन्तर्धान हो गये। यह देख वहाँ उपस्थित देवता, ऋषि गन्धर्व आदि परम विस्मित हुए और कौतूहलवश उन लोगों ने ब्रह्मा जी से पूँछा—आपने अभी जिनकी ऐसी उत्कृष्ट स्तुति की वे कौन हैं? हम लोग यह जानना चाहते हैं।

देवताओं के इस प्रश्न के उत्तर में ब्रह्मा जी ने मधुरवाणी से कहा—जो तत्त्वरूप और वर्तमान, भूत एवं भविष्य स्वरूप हैं; जो समस्त प्राणियों के आत्मा हैं। जो परमपद रूप हैं—ये वही परम प्रभु थे। हे देवगण! मैंने जगत् के कल्याण के लिये उन जगत्पति से यह प्रार्थना की है कि, वे वासुदेव नाम से मानव शरीर धारण करें। रण में जिन जिन राक्षसों का आप नाश कर चुके हैं वे सब अब नरदेहों में जा कर उत्पन्न हुए हैं। अतः उनको नाश करने के लिये आप मनुष्य शरीर में उत्पन्न हों। अपार-कान्ति-सम्पन्न जो पुरातन एवं श्रेष्ठ ऋषि नर और नारायण के नाम से प्रसिद्ध हैं—वे दोनों साथ ही साथ मर्त्यलोक में उत्पन्न होंगे।

यदि समस्त देवगण एकत्र हो उनसे लड़ें, तो भी उनको नहीं जीत सकते। जब नर और नारायण ऋषिद्वय इस लोक में मानव रूप धारण करेंगे, तब मूढ़ जन उनको न पहचान पावेंगे। मैं जिनके आत्मा से उत्पन्न होने वाला उनका पुत्र सब जगत् का पति हूँ, वे ही सर्वलोकमहेश्वर वासुदेव तुम्हारे सब के पूज्य हैं। वे महावीर्यवान, शङ्ख-चक्र-गदा-धारी भगवान् मानव रूप में प्रकट हुए हैं। उनका तिरस्कार कभी भी न करना चाहिये। ये ही परमगुह्य, परमपद और परमेश्वर हैं। ये ही अक्षर, ये ही अव्यक्त, ये ही सनातन तेज हैं। ये ही वे हैं जिन्हें लोग परम पुरुष के नाम से पुकारते और जानते हैं। ये ही परम तेज हैं। येही परम सुख हैं और विश्वकर्मा ने इन्हींको परम सत्य बतलाया है। अतएव इन अमित पराक्रमी वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण को मनुष्य समझ, क्या इन्द्रादि देवताओं को और क्या अन्य सब लोगों को कदापि तिरस्कार न करना चाहिये। जो मन्दमति हृषीकेश को मनुष्य समझ इनका अपमान करता है, उसे अधम पुरुष मानना चाहिये। मानव देहधारी महात्मा एवं योगी श्रीकृष्ण का जो मनुष्य, तिरस्कार करता है, वह तामसी मनुष्य कहलाता है। जो मनुष्य चराचरात्मक विश्व के आत्मा, लक्ष्मी के चिन्ह से चिन्हित, सुन्दर तथा तेजस्वी इन श्रीकृष्ण को नहीं पहचानता उसे विद्वज्जन तमोगुणी बतलाते हैं। जो किरीट, कुण्डल तथा कौस्तुभमणिधारी और अपने मित्रों को अभय देने वाले इन श्रीकृष्ण का तिरस्कार करेगा, वह महाभयङ्कर अन्धकार नामक नरक में डाला जायगा। हे देवगण! यह तत्व समझ लो और उन्हें लोकनाथों के भी नाथ और सर्वभूतप्रणम्य समझो।

भीष्म जी बोले—पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने इस प्रकार देवगण और ऋषिगण से कहा था। फिर उन समस्त प्राणियों के आत्मा ब्रह्मा जी उन समस्त देवताओं और ऋषियों को विदा कर स्वयं भी अपने भवन को चले गये। ब्रह्मा जी की इस उक्ति को सुन कर, समस्त देवता, गन्धर्व, मुनि तथा अप्सराएँ प्रसन्न हो स्वर्ग की ओर चल दिये। हे तात! पावन ऋषियों

के समुदाय में पुराणपुरुष श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में इस प्रकार का हाल मैंने सुना था। जमदग्निनन्दन परशुराम, धीमान् मार्कण्डेय, व्यास एवं नारद आदि ऋषियों के मुख से भी मैंने यही बात सुनी है। जिसके पुत्र समस्त लोकों के पिता हैं, उन लोकेश्वर के ईश्वर, महाबली एवं अविनाशी वासुदेव हैं—यह जान मनुष्यों को उनका पूजन और आराधन करना चाहिये। मैंने तथा वेदपारग मुनियों ने आपको पहले अनेक बार समझाया था कि, आप श्रीकृष्ण एवं धनुर्धर पाण्डवों के साथ युद्ध मत छेड़ो; किन्तु आप मोह से मुग्ध थे। अतः इस कथन के तत्व को आप ग्रहण न कर सके। आप श्रीकृष्ण और अर्जुन को धिक्कारते हैं। अतः मुझे कहना पड़ता है कि, आप एक निष्ठुर राक्षस के समान हैं और अज्ञान ने आपको घेर रखा है। जो साक्षात् नर नारायण के अवतार हैं, उन गोविन्द और धनञ्जय से आप द्वेष करते हैं। भला उनसे द्वेष राक्षस के सिवाय और कौन करेगा? हे राजन्! इसीसे मैं कहता हूँ कि, श्रीकृष्ण अविनाशी सनातन पुरुष, सर्वलोकमय, नित्य, प्राणिमात्र के प्रेरक, समस्त विश्व को धारण करने वाले और अपने सङ्कल्प में अटल हैं। जो चराचर के गुरु हैं तथा प्रभु हैं और तीनों लोक जिनकी शक्ति से स्थित हैं, वे ही युद्ध करने वाले हैं, वे ही विजय रूप हैं, वे ही जेता हैं और वे ही पूर्ण प्रकृतिमय ईश्वर हैं। वे सर्वलोकमय होने के कारण नित्य ही नहीं हैं, प्रत्युत तम और राग से शून्य भी हैं। जहाँ श्रीकृष्ण हैं, वहीं धर्म है और जहाँ धर्म है वहीं ही विजय है। उन्हींके प्रताप और आत्मिक बल से पाण्डवों की रक्षा हो रही है। अन्त में जीतेंगे भी पाण्डव ही, क्योंकि श्रीकृष्ण उन्हें सदा ऐसी सम्मति दिया करते हैं, जिससे उनका कल्याण हो। साथ ही वे युद्ध में और भयस्थान में सदा पाण्डवों की रक्षा भी किया करते हैं। आपने मुझसे जिनके विषय में प्रश्न किया, वे यही सनातन देव, सकल गुण एवं कल्याण-मय वासुदेव हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं कर्मद्वारा पहचाने जाने वाले शूद्र अपने अपने वर्णोचित कर्त्तव्य पालने में तत्पर रह कर एवं दृढ़ भक्ति के साथ

उनका पूजन करते हैं। भक्तों की बतलायी हुई विधि के अनुसार द्वापर के अन्त और कलियुग के आरम्भ में, सतोगुणी बुद्धि में स्थित हो सङ्कर्षण जी उनका यशोगान करते हैं। वे ही युग युग में देवलोक, मर्त्यलोक और समुद्रान्तरवर्तिनी द्वारकापुरी और मानवों के आवासस्थानों की वारंबार सृष्टि किया करते हैं।

सरसठवाँ अध्याय

भीष्म और दुर्योधन का कथोपकथन

दुर्योधन बोला—हे भीष्म पितामह जी! जो वासुदेव समस्त लोकों में महातत्व रूप माने जाते हैं, उन वासुदेव की उत्पत्ति और प्रतिष्ठा का वर्णन मैं सुनना चाहता हूँ।

भीष्म जी ने कहा—हे भरतसत्तम! वासुदेव परमतत्त्व हैं और समस्त देवताओं के भी देवता हैं। उन पुण्डरीकाक्ष से बढ़ कर अन्य कोई तत्त्व ही नहीं है। मार्कण्डेय जी का मत है कि, इन गोविन्द के बारे में सब को विस्मय है। क्योंकि ये तो समस्त प्राणधारियों के आत्मा एवं पुरुषोत्तम हैं। जल, वायु और तेज—ये तीनों तत्व इन्हींके द्वारा उत्पन्न किये गये हैं। इन सर्वलोकेश्वर ही ने इस पृथिवी को उत्पन्न किया है। इन महात्मा पुरुषोत्तम ने जल में शयन किया था और इन देव ने जल में निद्रा भी की। उन्होंने अपने मुख से अग्नि, श्वास से वायु तथा मन से सरस्वती देवी तथा वेदों की सृष्टि की है। पूर्वकाल में इन्होंने समस्त लोकों सहित देवगण और ऋषिगण उत्पन्न किये थे। जन्म, मरण और नाश रहित मृत्यु को उत्पन्न करने वाले भी ये ही हैं। ये ही धर्म का वास्तविक रूप जानने वाले हैं। ये ही वरद और समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाले हैं। ये ही कर्त्ता, कार्य, आदिदेव और स्वयं प्रभु हैं। भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान

भी इन्हींके बनाये हुए हैं। उभय सन्ध्याकाल, व्योम, और सृष्टि के समस्त नियम भी इन्हींकी रचनाएं हैं। तप सहित ऋषियों के रचयिता भी तो ये ही हैं। इन्हीं अविनाशी महात्मा ने सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा की रचना की है। इन्हींने सब के आदिभूत सङ्कर्षण जी को प्रकट किया है। इन्हींकी नाभि से कमल निकला। सब लोकों के उत्पत्ति स्थान उस कमल से ब्रह्मा जी प्रकट हुए और ब्रह्मा ने फिर ये सारी सृष्टि रची। इन्हींने अनन्त नाम वाले शेष जी को उत्पन्न किया। जो पर्वतों समेत पृथिवी को तथा चराचरात्मक विश्व को धारण किये हुए हैं। ब्राह्मण लोग इन्हें केवल ध्यान मात्र से जान सकते हैं। ब्रह्मा जी के कान के मल से मधु नामक दैत्य की उत्पत्ति हुई थी। जब वह उग्रकर्मा दुष्टबुद्धि मधु दैत्य ब्रह्मा जी का वध करने को उद्यत हुआ, तब ब्रह्मा जी द्वारा सम्मानित होने के अभिप्राय से इन्होंने मधुदैत्य का नाश किया था। तभी से समस्त देवता, दानव, मनुष्य और ऋषि, इन्हें मधुसूदन कहते हैं। महावराह का रूप धारण करने वाले, नृसिंह का रूप धारण करने वाले, वामन का रूप धारण करने वाले ये ही हैं, ये ही हरि हैं और ये ही प्राणिमात्र के माता पिता हैं। श्वेत कमल जैसे नेत्रों वाले इन भगवान से बढ़ कर श्रेष्ठ अन्य कुछ भी नहीं है। इन्हींके मुख से ब्राह्मणों की, भुजाओं से क्षत्रियों की, जंघाओं से वैश्यों की और पैरों से शूद्रों की उत्पत्ति हुई है। यह तप द्वारा समस्त प्राणियों को निश्चय ही आश्रय प्रदान करते हैं। अमावास्या और पूर्णिमा के दिन जो इनका पूजन करता है, वह इन केशव के परमपद को प्राप्त होता है। हे राजन्! श्रीकृष्ण यह परम तेज स्वरूप हैं तथा सब के पितामह हैं। मुनिगण इन्हींको हृषीकेश अर्थात् इन्द्रियों के प्रेरक बतलाते हैं। ये ही आचार्य, ये ही पितर और ये ही गुरु हैं। तू इन्हें ऐसा समझ। श्रीकृष्ण जिस पर प्रसन्न हैं, उसने मानों अक्षय्यलोक जीत लिया। भय उपस्थित होने पर जो इन श्रीकृष्ण के शरण में जाता है और इनका स्तव करता है, वह मनुष्य सदा सकुशल और सुखी रहता है। जो जीव भगवान् श्रीकृष्ण के शरणागत होते हैं,

उन्हें मोह कभी नहीं घेरता। विपत्ति में पड़े हुओं के उद्धारकर्त्ता ये श्रीकृष्ण ही हैं। हे राजन्! महात्मा श्रीकृष्ण, जगत् के मालिक तथा योगियों के स्वामी हैं। इसको निश्चय जान कर ही युधिष्ठिर ने उनकी शरण गही है।

अड़सठवाँ अध्याय

श्रीविष्णुस्तव

भीष्म जी ने कहा—हे राजन्! मैं इन परब्रह्म रूप भगवान की स्तुति करता हूँ। पूर्वकाल में ब्रह्मर्षियों और देवताओं ने मिल कर इनकी इस प्रकार स्तुति की थी।

नारद जी ने कहा—भगवन्! आप साध्यों और देवताओं के प्रभु हैं। आप लोकों की वृद्धि करने और सब के मन की बात जान लेने वाले भी आप ही हैं।

मार्कण्डेय का कहना है कि आप भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान रूप हैं। आप यज्ञों के यज्ञ और तप के भी तप हैं। भृगु जी का कथन है कि आप देवताओं के भी देवता और विष्णु के पुरातन परम रूप हैं।

द्वैपायन जी का कथन है कि, आप वसुओं के वासुदेव और इन्द्र को इन्द्रासन पर बैठाने वाले हैं। आप ही देवताओं में भी परमदेव हैं।

कहा जाता है कि प्रजा के सृष्टिकाल में आप दक्षप्रजापति थे। अङ्गिरा के मतानुसार आप समस्त लोकों के रचयिता हैं।

देवल का मत है कि, आपका शरीर और मन अव्यक्त और व्यक्त रूप है। देवताओं को उत्पन्न करने वाले आप ही हैं।

असित का मत है कि, आपके सिर से आकाश है; भुजाओं से पृथिवी व्याप्त है। तीनों लोक आपका उदर हैं, तपस्वियों के मतानुसार आप ही सनातन पुरुष हैं।

सेना को तितर बितर होते देख, अर्जुन आगे बढ़ भीष्म जी पर बड़ी फुर्ती से असंख्य बाणों की वर्षा करने लगे। अर्जुन ने भीष्म के छोड़े समस्त अस्त्रों को पीछे लौटा दिया और अपनी सेना को आगे बढ़ा लड़ने के लिये खड़ा किया। अपनी सेना के पहले किये गये संहार को स्मरण कर तथा अपने भाइयों के मारे जाने की याद कर बलवानश्रेष्ठ, महारथी दुर्योधन ने द्रोणाचार्य से कहा—हे आचार्यप्रवर! आप तो मेरे सदा के हितैषी हैं। हम आपका और पितामह भीष्म के भुजबल का आश्रय पा कर, देवताओं को भी युद्ध के लिये ललकार सकते हैं। फिर इन वीर्यहीन एवं हीनपराक्रमी पाण्डु के पुत्रों की तो बिसात ही क्या है? हे आचार्य-प्रवर! आपका मङ्गल हो। आप ऐसा प्रयत्न करें जिससे ये पाण्डव मारे जायँ।

हे राजन्! जब आपके पुत्र ने इस प्रकार कहा, तब द्रोण ने सात्यकि के सामने ही पाण्डवों के सैन्य व्यूह को भङ्ग करना आरम्भ कर दिया।

परन्तु हे भारत! सात्यकि ने भी द्रोणाचार्य को रोकना चाहा। अतः उन दोनों में भी घोर युद्ध होने लगा। इस बीच में द्रोणाचार्य ने मुसक्या कर, पैने बाण छोड़ सात्यकि की हँसली की हड्डी पर प्रहार किया। शस्त्र-धारियों में श्रेष्ठ द्रोण से सात्यकि की रक्षा करने के अभिप्राय से भीमसेन उनको (द्रोण को) विद्ध करने लगा। तब भीष्म, द्रोण और शल्य ने बाणवृष्टि कर भीम को ढक दिया। यह देख अभिमन्यु बहुत क्रुद्ध हुआ और अभिमन्यु तथा द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने मिल कर भीष्म को बाणों से विद्ध किया। क्रोध में भर भीष्म और द्रोण को आगे बढ़ते देख, मेघ-वत् गम्भीर शब्द करने वाले अपने धनुष को तान महाधनुर्धर शिखण्डी ने उन दोनों पर आक्रमण किया। उसने असंख्य बाण छोड़ आकाश पाट दिया, जिससे सूर्य ढक गये। शिखण्डी को सामने देख और (पूर्व जन्म की) उसे स्त्री समझ भीष्म पितामह ने उसके साथ लड़ना बंद कर दिया। तब हे राजन्! आपके पुत्र के आदेशानुसार भीष्म की रक्षा के लिये द्रोणाचार्य

आगे बढ़े। धधकते हुए प्रलयकालीन अग्नि की तरह द्रोण को सामने आते देख, शिखण्डी ने भयभीत हो वहाँ से भाग जाना चाहा। उस समय यशःप्रार्थी आपका पुत्र एक बड़ी सेना ले भीष्म की रक्षा कर रहा था। दूसरी ओर विजयाभिलाषी एवं दृढ़प्रतिज्ञ पाण्डव भी अर्जुन को आगे कर, भीमसेन की रक्षा कर रहे थे, इन दोनों यशःप्रार्थी दलों के योद्धाओं का वैसा ही घोर युद्ध हुआ, जैसा कि देवताओं और दानवों में हुआ था।

सत्तरवाँ अध्याय

तुमुलयुद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर आपके पुत्रों को भयभीत करने के लिये भीष्म जी ने उस समय बड़ा भयङ्कर युद्ध किया। जब दिन चढ़ आया, तब दोनों ओर से महाभयानक युद्ध होने लगा। परिणाम यह हुआ कि, दोनों ओर के चुने चुने वीर मारे जाने लगे। युद्ध बड़ा भयङ्कर था, दोनों दलों की सेनाएँ आपस में भिड़ गयी थीं। सैनिकों का सिंहनाद आकाश तक पहुँचा। हाथियों की चिंघार, घोड़ों की हिनहिनाहट तथा मारू बाजों के शब्द को छोड़ उस समय और कुछ सुन नहीं पड़ता था। विजय-प्राप्ति के अभिप्राय से घोर युद्ध करने में प्रवृत्त समस्त महाबलवान् योद्धा वैसे ही ढींक रहे थे जैसे गोष्ठों में बड़े बड़े बैल डँकारें। वीरों के सिर कट कट कर पृथिवी पर वैसे ही टपाटप गिर रहे थे, जैसे आकाश से ओले गिरते हों। कुण्डलों और पगड़ियों से शोभायमान हज़ारों सिर समरभूमि में इधर उधर पड़े हुए थे। रणभूमि में जिधर देखो उधर ही कटे हुए अंग, कटे हुए हाथ, जो भूषणों से सुशोभित और धनुषों की मुट्ठियों में थामे हुए थे—दिखलायी पड़ते थे। थोड़ी ही देर के युद्ध में कवचधारी भूषणों से भूषित, रक्तनेत्र एवं चन्द्रानन वीरों के शवों से तथा मृत हाथियों और घोड़ों

से समरक्षेत्र परिपूर्ण हो गया। धूलरूपी बादल के चारों ओर छा जाने से, शस्त्ररूपी विद्युत् की चमक के सहित आयुधों का पटापट शब्द मेघगर्जन जैसा जान पड़ता था। जल की तरह रुधिर को बहाता—कौरवों और पाण्डवों का घोर युद्ध हो रहा था। इसे देख, देखने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते थे। रणोन्मत्त क्षत्रिय उस समय एक दूसरे पर अगणित बाण छोड़ प्रहार कर रहे थे। बाणप्रहार से विकल आपकी और शत्रु की सेनाओं के हाथी चिंघार रहे थे, धैर्यवान् एवं बलवान वीर योद्धाओं के धनुषों के टंकार शब्द के मारे और कुछ भी नहीं सुन पड़ता था। रुधिरप्रवाह में सिररहित रुण्ड लुढ़क रहे थे। उस समय शत्रुवध करने में निरत राजा इधर उधर दौड़ रहे थे। लोहदण्ड जैसी भुजाओं वाले वे राजा लोग बाणों, शक्तियों, गदाओं और खड्ग आदि आयुधों से अपने अपने शत्रुओं का वध कर रहे थे। बाणों से विद्ध हाथी निरङ्कुश हो इधर उधर दौड़ रहे थे। पीठों में घायल हुए घोड़े चारों ओर दौड़ें लगा रहे थे। हे राजन्! बाणों से घायल और पीड़ित आपके और पाण्डवों के योद्धा उठना चाहते थे; किन्तु पछाड़ें खा कर गिर गिर पड़ते थे। भीष्म और भीम के इस भीषण संग्राम में जिधर देखो उधर ही कटे हुए सिरों के, मरे हुए हाथियों एवं घोड़ों के, गदा, परिघ आदि आयुधों के तथा कटी हुई जंघाओं, हाथों, पैरों के एवं बाजूबंद आदि आभूषणों के ढेर लगे हुए थे। मरे हुए हाथियों और घोड़ों के ढेरों के साथ ही साथ पीछे पग न रखने वाले मरे हुए रथियों के ढेर लगे हुए थे। घात पा वे क्षत्रिय योद्धा शत्रु पर गदा, प्रास, बाण आदि आयुधों से एक दूसरे पर प्रहार करते थे। वे बली योद्धा जब हाथापाई करते थे; तब ऐसा जान पड़ता था; मानों वे लोहदण्डों से लड़ रहे हों। हे राजन्! जब पाण्डवों के और आपके योद्धा हथियारों को छोड़ घूँसों घुटनों और थप्पड़ों से लड़ने लगे; तब गिरते हुए और घायल हो भूमि पर पड़े और तड़पते हुए योद्धाओं से समरभूमि ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। परस्पर प्रहार करने की अभिलाषा रखने वाले रथी योद्धा रथों को त्याग और तलवारें ले,

एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। इतने में दुर्योधन, कलिङ्गों को साथ ले और भीष्म पितामह को आगे कर, पाण्डवों की सेना के सामने जा खड़ा हुआ। उधर कोप में भरे पाण्डव भी भीमसेन को चारों ओर से घेर कर, भीष्म जी का सामना करने को आगे बढ़े, दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा।

इकहत्तरवाँ अध्याय

तुमुलयुद्ध

अपने भाइयों को तथा अन्य राजाओं को भीष्म से लड़ते देख, अर्जुन तलवार उठा भीष्म जी पर लपका। पाञ्चजन्य शङ्ख की ध्वनि एवं गाण्डीव धनुप के टंकार शब्द को सुन, और अर्जुन के रथ की कपिध्वजा को देख, हम सब लोग थर्रा उठे। उस समय हम लोगों ने देखा कि, सिंह की पूँछ की तरह ऊपर को उठी हुई, रंग बिरंगी, दिव्य कला कौशल से निर्मित कपिचिन्ह से चिन्हित अर्जुन के रथ की ध्वजा अन्तरिक्ष में फहरा रही है और वृक्षों की छाया से न रुकने वाले उदय होते हुए धूमकेतु की तरह वह ध्वजा जान पड़ती है। योद्धाओं ने देखा कि, आकाशस्थित घनघोर घटा में कौंधती हुई बिजली की तरह सुवर्णपुंख बाणों से युक्त अर्जुन का गाण्डीव धनुप सुशोभित है। जिस प्रकार प्रचण्ड वायु के वेग के साथ, गरजता और बिजली के कौंधे से युक्त मेघ जल की वृष्टि कर समस्त दिशाओं को जल से पूर्ण कर देता है; उसी प्रकार अर्जुन ने भी बाणों से समस्त दिशाएँ पूर्ण कर दीं। जब अर्जुन ने भयङ्कर अस्त्र हाथ में ले भीष्म पर आक्रमण किया; तब हम लोग तो यहाँ तक घबड़ा उठे कि, हमें पूर्व पश्चिम दिशाओं का ज्ञान भी न रहा। उस समय परिश्रान्त बाहनों वाले अथवा हताश्व रथों पर सवार आपके पक्ष के योद्धा हताश हो, पुत्रों सहित

भीष्म जी के निकट रक्षा पाने के लिये, आ कर एकत्र होने लगे। क्योंकि उस समय घबड़ाये हुए सैनिकों के लिये भीष्म जी को छोड़ और कोई आश्रयस्थल न था। इस युद्ध में डर कर रथी अपने रथों से कूद कूद कर भागने लगे। घुड़सवार घोड़ों की पीठों से भूमि पर गिर पड़े और पैदल सैनिक भी भयभीत हो पछाड़े खा खा कर भूमि पर गिरने लगे। बिजली की कड़क की तरह गाण्डीव के टंकार शब्द को सुन, शत्रुपक्ष के योद्धा भयभीत हो बगलें झांकने लगे। तदनन्तर राजा कलिङ्ग ने काम्बोज देशीय बड़े वेगवान घोड़ों द्वारा गोपायन नाम गोपों की अगणित सेना तथा मद्र, सौवीर, गान्धार, त्रिगर्त, कलिङ्ग आदि देशों की सेनाओं को साथ ले दुःशासन को आगे किया। फिर जयद्रथ आदि राजा आपके पुत्रों के कथनानुसार चौदह हज़ार घुड़सवारों को साथ ले, शकुनि की रक्षा के लिये उसे चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये। इन वीरों ने उस सेना के रथियों और अश्वारोही सेना के बराबर बराबर विभाग कर, अर्जुन पर प्रहार करना आरम्भ किया। रथियों के रथों, हाथियों, अश्वों और पैदलों के दौड़ने के कारण उड़ी हुई धूल घनघोर घटा की तरह आकाश में छा गयी। तोमरों, प्रासों तथा नाराचों को धारण करने वाले गजारोही और अश्वारोही सैनिकों को साथ ले भीष्म जी अर्जुन से लड़ने लगे। उज्जैन का राजकुमार काशिराज के साथ, सिन्धुराज भीम के साथ, और पुत्रों पौत्रों और मंत्रियों सहित धर्मराज युधिष्ठिर, मद्रराज शल्य के साथ लड़ रहे थे। विकर्ण का सहदेव के साथ और चित्रसेन का शिखण्डी के साथ युद्ध हो रहा था। मत्स्यराज का युद्ध दुर्योधन एवं शकुनि के साथ, द्रुपद का चेकितान के साथ और पुत्र सहित सात्यकि का द्रोणाचार्य के साथ, कृपाचार्य और कृतवर्मा का धृष्टद्युम्न के साथ युद्ध हो रहा था। इस युद्ध में दोनों पक्षों की गजारोही, अश्वारोही और रथी सेनाएँ आपस में लड़ते लड़ते भिड़ गयी थीं। मेघहीन आकाश में बिजली कड़क रही थी। धूल के कारण दिशाओं में अन्धकार छा गया था। बीच बीच में कड़ाके के शब्द के साथ उल्कापात हो रहे थे।

पवन प्रचण्ड वेग से बह रहा था, धूल की वृष्टि हो रही थी। उस समय उड़ी हुई धूल से सूर्य तक ढक गये थे। अस्त्रप्रहारों से पीड़ित और धूल से अंधे हुए समस्त योद्धाओं के हाथों से छूटे हुए बाणों की भरमार थी। बाणों के प्रहारों से सैनिकों के कवच टूट गये थे। चमचमाते अस्त्रों को, प्रहार करने के लिये ऊपर उठाने पर, उनकी चमक से अन्तरिक्ष प्रकाशित हो उठता था। उस समय गैंड़े के चर्म से निर्मित और सुवर्णपत्रों से जड़ी हुई ढालें योद्धाओं के हाथों से छूट छूट कर समरभूमि में चारों ओर गिर रही थीं। सूर्य जैसी चमकती हुई तलवारों से कटे हुए सिर और धड़ चारों ओर पड़े हुए देख पड़ते थे। रथों के पहियों, धुरों, रथों के टूटे हुए ढाँचों, कटे हुए अश्वों और ध्वजाओं तथा बड़े बड़े टूटे रथों से रणभूमि भरी हुई थी। जब रथी मारे जाते; तब उनके घोड़े इधर उधर भागने लगते थे और भागते भागते बाणों से घायल हो, ज़मीन पर गिर लोटपोट हो जाते थे। बाणों से बिंधे और घायल घोड़े टूटे जोतों को लथेरते हुए इधर उधर दौड़ रहे थे। यत्र तत्र गजों के पैरों से कुचले हुए रथी, सारथि और घोड़े रणभूमि में पड़े हुए देख पड़ते थे। इस युद्ध में मद चुआने वाले हाथियों के मद को अन्य गज सूँड़े लंबी कर के सूँघ रहे थे। नाराचों और तोमरों से मरे गजों के शवों से समरभूमि पटी पड़ी थी। महावतों द्वारा दौड़ाये गये हाथियों के पैरों से कुचले हुए अनेक गज, अपने महावतों एवं ध्वजाओं सहित भूमि पर गिरे पड़े थे। हाथियों की नागराज जैसी सूँड़ों के प्रहारों से टूटे रथ—एक दो नहीं सैकड़ों पड़े हुए थे। रथों से रहित योद्धाओं की चोटियाँ सूँड़ों में दाब, गज उन्हें ज़मीन पर वैसे ही पटक देते थे जैसे वे समूल उपाड़े हुए वृक्ष को सूँड़ों से पृथिवी पर दे पटकते हैं। भिड़े हुए रथों को खींचते और चिंघारते हुए हाथी इधर उधर भागे भागे फिर रहे थे। उस समय रथों को सूँड़ों में दबा घसीटते हुए हाथी वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे सरोवरों में उगे हुए कमलों को सूँड़ों में दबा बनैले हाथी देख पड़ते हैं। मरे हुए घुड़सवारों, पैदल सैनिकों, महारथियों और टूटी ध्वजाओं से, समरभूमि परिपूर्ण हो गयी थी।

बहत्तरवाँ अध्याय

तुमुल संग्राम

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! अपने साथ मत्स्यराज और राजा विराट को साथ ले शिखण्डी, महाधनुर्धर एवं तेजस्वी भीष्म पितामह के साथ लड़ने के लिये आ खड़ा हुआ। उधर द्रोण, कृप, विकर्ण आदि महाबली और महाधनुर्धर अन्य राजाओं के साथ लड़ने को अर्जुन आगे बढ़े और लड़ने लगे। भीम ने महाधनुर्धर एवं भाइयों और मंत्रियों सहित लड़ने वाले सिन्धुराज जयद्रथ से युद्ध किया। जयद्रथ के साथ पूर्व एवं दक्षिण-देशीय राजा लोग और आपका दुःसह दुर्योधन था। शकुनि और उसके पुत्र उलूक के साथ सहदेव ने युद्ध किया। आपके पुत्र दुर्योधन से तिरस्कृत धर्मराज युधिष्ठिर आपकी विशाल गजवाहिनी से लड़ने को आये। शूरों को भी रुला देने वाला माद्रीनन्दन नकुल, त्रिगर्तों की सेना से भिड़ गया। अत्यन्त क्रुद्ध सात्यकि का चेकितान के साथ और महारथि अभिमन्यु का शल्य एवं केकयों के साथ युद्ध आरम्भ हुआ। बड़ा उत्साही एवं महाबली धृष्टद्युम्न उस युद्ध में द्रोण के आगे आ खड़ा हुआ। आपके और पाण्डवों के महाधनुर्धर पुत्र और सैनिक आमने सामने खड़े हो, एक दूसरे पर शस्त्रप्रहार करने लगे। उस दिन मध्यान्हकाल हो गया और सूर्यदेव ठीक योद्धाओं के सिरों पर आ, जब अपनी किरणों का विस्तार कर रहे थे, तब आपके और पाण्डवों के योद्धाओं में घोर युद्ध हो रहा था। बड़ी ऊँची ध्वजाओं से युक्त, सुवर्ण पत्रों से मढ़े हुए और सिंहचर्म के परदों से युक्त बड़े बड़े रथ समरभूमि में इधर उधर दौड़ते हुए बड़े अच्छे जान पड़ते थे। उस समय विजयाभिलाषी योद्धा सिंहगर्जन कर रहे थे। कुरुओं के साथ भिड़े हुए सृञ्जयों के प्रहारों को देख, मुझे बड़ा विस्मय होता था। इस युद्ध में इतने बाण चले कि समस्त दिशाएँ और उपदिशाएँ छिप गयीं। पैनी धारों वाली शक्तियाँ, तोमर, नील कमल पुष्प की तरह ऊपर उठ

हुई तलवारें, चित्र विचित्र कवचों और आभूषणों की चमक से आकाश, दिशाएँ और उपदिशाएँ प्रकाशित हो रही थीं। आमने सामने खड़े रथों और पुरुषसिंह योद्धाओं की वैसी ही शोभा हो रही थी, जैसी आमने सामने स्थित ग्रहों से आकाश की होती है। रथियों में श्रेष्ठ भीष्म ने मारे बाणों के भीम की गति रोक दी। सुवर्णपुंखों से युक्त, सान पर पैनाये हुए तथा तेल से धोये हुए भीष्म के छोड़े पैने बाण भीम को घायल करने लगे। तब क्रोध में भर भीम ने नाग की तरह फनफनाती एक शक्ति भीष्म जी के ऊपर फेंकी। सुवर्णदण्ड से युक्त भीम की उस शक्ति को अपने ऊपर आते देख, भीष्म ने अपने बाणों से काट कर उसे नीचे गिरा दिया। फिर भल्ल बाण मार भीम के हाथ का धनुष काट डाला। यह देख सात्यकि ने चमचमाते पैने बाणों से भीष्म पितामह पर प्रहार किया। इस पर भीष्म ने सात्यकि के सारथि को मार कर भूमि पर गिरा दिया। सारथि के मारे जाने पर सात्यकि के रथ के घोड़े भड़के और रथ को ले कर बड़े वेग से भागे। यह देख सैनिकों ने बड़ा कोलाहल मचाया। युयुधान के आगे पीछे पाण्डवों के पक्ष के सैनिक चिल्ला रहे थे 'दौड़ो', 'पकड़ो', 'रोको'। उस समय भीष्म ने पाण्डवों की सेना का वैसे ही संहार करना आरम्भ किया, जैसे इन्द्र असुरसैन्य का संहार करते हैं। लड़ने का पक्का इरादा कर और भीष्म के प्रहारों की कुछ भी परवाह न कर, पाञ्चालों और सोमकों ने भीष्म का सामना किया। विजयाभिलाषी धृष्टद्युम्न आदि पाण्डवपक्षीय योद्धा भीष्म पितामह तथा आपके पुत्रों पर टूटे। साथ ही भीष्म पितामह और द्रोण को आगे कर, कौरव पाण्डवों पर टूटे और रोष में भर लड़ने लगे।

तिहत्तरवाँ अध्याय

भीषण मुठभेड़

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! महारथी विराट ने महारथी भीष्म पितामह के तीन बाण और उनके घोड़ों के तीन बाण मार, उन्हें घायल किया। तब अपने हाथ की सफ़ाई दिखलाते हुए भीष्म जी ने दस सुवर्ण पुंख बाण छोड़ महारथी विराट को विद्ध किया। इतने में महारथी अश्वत्थामा ने छः बाण अर्जुन की छाती में मारे। इस पर शत्रुञ्जय अर्जुन ने पैने बाण मार अश्वत्थामा के धनुष के टुक्ड़े टुकड़े कर डाले। यह बात अश्वत्थामा को सह्य न हुई। वह मारे क्रोध के लाल ताता हो गया और उसने एक दूसरा धनुष हाथ में ले अर्जुन के नव्वे और सत्तर बाण श्रीकृष्ण के ऊपर छोड़—दोनों को विद्ध किया। इस पर अर्जुन ने कुपित हो और श्रीकृष्ण से परामर्श कर वाम हाथ में धनुष ले प्राणनाशी भयङ्कर बाण धनुष पर चढ़ाये और तुरन्त अश्वत्थामा को विद्ध किया। अर्जुन के चलाये बाणों से अश्वत्थामा का कवच टूट गया और शरीर में घुस उन बाणों ने अश्वत्थामा का रक्त सोख लिया, किन्तु इससे अश्वत्थामा तिल भर भी पीड़ित न हुआ। न वह ज़रा भी घबड़ाया वह भीष्म की रक्षा करने के अभिप्राय से पूर्ववत् बाण छोड़ता हुआ पूर्ववत् खड़ा रहा। श्रीकृष्ण और अर्जुन के साथ वह बड़ी वीरता के साथ लड़ रहा था। यह देख कौरवों के श्रेष्ठ वीर अश्वत्थामा की सराहना कर रहे थे। अश्वत्थामा ने बाण फेंक कर उसे लौटा लेने की अति दुर्लभ विद्या अपने पिता द्रोणाचार्य से सीखी थी। अतः अश्वत्थामा जब कभी लड़ता; तब वह निर्भीक हो लड़ा करता था। उधर अश्वत्थामा को गुरुपुत्र, द्रोणाचार्य का प्रिय पुत्र एवं ब्राह्मण समझ तथा उसे अपने लिये विशेष मान्य समझ, रथिश्रेष्ठ अर्जुन ने उस पर अनुग्रह किया। अतः अश्वत्थामा को छोड़, श्वेतवाहन तथा प्रबल पराक्रान्त अर्जुन ने आपके पुत्रों पर आक्रमण किया और उनका वध करने के अभिप्राय से उनसे लड़ना शुरू किया।

दुर्योधन ने गिद्ध के परों से युक्त शान पर रखे सुवर्णपुंख दस बाण छोड़ भीमसेन को विद्ध किया। तब भीमसेन ने भी कुपित हो, शत्रुओं का संहार करने वाला अपना शत्रुघ्न धनुष उठा उस पर दस बाण चढ़ाये फिर रोदे को कान तक तान वे दसों बाण दुर्योधन के वक्षःस्थल में मारे। दुर्योधन की सोने के तार में पिरोयी मणि भीमसेन के बाणों से घिर वैसी ही जान पड़ती थी जैसे ग्रहों से घिरे सूर्य जान पड़ते हैं। मदोन्मत्त गज जैसे सामने बजायी हुई ताली के शब्द से चिढ़ जाता है, वैसे ही आपके तेजस्वी पुत्र भीम के इस प्रहार से बहुत चिढ़े। दुर्योधन ने कुपित हो सुवर्णपुंख पैने बाणों से भीमसेन को विद्ध किया। इस प्रकार युद्ध करते और पारस्परिक प्रहार से अत्यन्त घायल आपके महाबली पुत्र दुर्योधन और पाण्डुनन्दन भीम, रणक्षेत्रस्थित देवताओं की तरह शोभायमान जान पड़ते थे। वीरनाशक एवं पुरुषसिंह अभिमन्यु ने चित्रसेन के दस बाण और पुरुमित्र के सात बाण मार इन दोनों को घायल कर डाला। फिर सत्यव्रत भीष्म जी के सत्तर बाण मार इन्द्र-तुल्य-पराक्रमी सुभद्रा-नन्दन अभिमन्यु ने हम लोगों को पीड़ित किया। यह देख हमारे पक्ष के योद्धा बहुत कुपित हुए और कुपित हो चित्रसेन ने दस, भीष्म पितामह ने नौ और पुरुमित्र ने सात बाण चला, अभिमन्यु को घायल किया। अभिमन्यु के घावों से लोहू टपकने लगा, किन्तु इसकी कुछ भी परवाह न कर अभिमन्यु ने चित्रसेन का धनुष काट डाला। साथ ही उसके कवच को फोड़ उसकी छाती में बाणों से प्रहार किया। इस पर क्रोध में भर आपके वीर पुत्र तथा अन्य महारथी राजकुमारों ने पैने बाणों से अभिमन्यु को घायल करना शुरू किया; किन्तु परमास्त्रवित् अभिमन्यु ने बाणों के प्रहार से उन सब को घायल किया। अभिमन्यु के ऐसे पराक्रम को देख, आपके पुत्र उसकी चारों ओर से सराहना कर वाह! वाह!! करने लगे। उस समय जैसे शिशिर ऋतु के अन्त में दावाग्नि वन को जला कर भस्म करे, वैसे ही आपकी सेना का नाश करता हुआ अभिमन्यु

बड़ा शोभायमान जान पड़ता था। हे राजन्! आपके पौत्र लक्ष्मण ने सुभद्रानन्दन अभिमन्यु के अद्भुत पराक्रम को देख, उसके ऊपर आक्रमण किया। शुभ लक्षणों से सम्पन्न लक्ष्मण ने अभिमन्यु के छः और उसके सारथि के तीन बाण मारे। तब अभिमन्यु ने भी पैने बाणों को छोड़ लक्ष्मण पर बाणप्रहार करना आरम्भ किया। यह देख सब लोगों को बड़ा विस्मय हुआ। इतने में अभिमन्यु लक्ष्मण के रथ के चारों घोड़ों को मार लक्ष्मण के ऊपर लपका। तब अश्वहीन रथ पर सवार लक्ष्मण ने क्रुद्ध हो अभिमन्यु के रथ पर एक शक्ति फेंकी। सर्पवत् भयङ्कर उस शक्ति को अपनी ओर आते देख, अभिमन्यु ने पैने बाणों से उस शक्ति के खण्ड खण्ड कर डाले। तब कृपाचार्य सब के सामने लक्ष्मण को अपने रथ में बिठा, उसे रणक्षेत्र से बाहिर चले गये। इतने में युद्ध ने महाभयङ्कर रूप धारण किया। एक दूसरे का वध करने की इच्छा रखने वाले एवं विशाल धनुर्धर आपके और पाण्डवों के पुत्र समरानल में प्राणों की आहुति देते हुए एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे। लड़ते लड़ते सृञ्जयों के सिर के बाल खुल गये; उनके धनुष कट गये। तब वे लोग शत्रुओं से बिना हथियार ही के भिड़ गये। महाबलवान् भीष्म ने कुपित हो दिव्यास्त्रों से पाण्डव की सेना का संहार करना शुरू किया। उस समय बिना महावतों के गजों, पैदल सैनिकों, अश्वों, रथियों और अश्वारोही सैनिकों के गिरने से समरभूमि भर गयी।

चौहत्तरवाँ अध्याय

सात्यकि के पुत्रों का मारा जाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! पाँचवें दिन की लड़ाई में अपर पक्ष के विशालभुज एवं युद्ध में अजेय सात्यकि ने धनुष तान सर्प जैसे विषैले

तथा पुंखयुक्त बाण छोड़, अपने हाथ की सफाई दिखलायी। सात्यकि नाना प्रकार के बाण छोड़ रहा था। एक बाण छूटने नहीं पाता था कि वह दूसरे बाण का सन्धान कर लेता था। फिर वह तुरन्त ही तीसरा बाण छोड़ शत्रुओं का संहार करता था। वह अपने इस हस्तलाघव से ऐसा जान पड़ता था मानों मेघ जलवृष्टि कर रहा हो। युद्धक्षेत्र में सात्यकि की उत्तरोत्तर वृद्धि देख, दुर्योधन ने उसका सामना करने को दस हज़ार रथ भेजे। इस रथ-सैन्य में विशाल धनुर्धर सत्यपराक्रमी बहुत से योद्धा थे; किन्तु दिव्यास्त्रों से सात्यकि ने इन सब को भी मारा। लड़ता लड़ता सात्यकि भूरिश्रवा के सामने जा पहुँचा, सात्यकि ने आपकी सेना छितरा दी। यह देख कौरव-कीर्ति-वर्द्धन भूरिश्रवा ने सात्यकि पर आक्रमण किया। इन्द्र-वज्र-तुल्य अपने धनुष को तान उस पर सर्प जैसे विषैले और वज्रवत् कठोर बाण चढ़ाये। इन बाणों का प्रहार न सह कर, सात्यकि को छोड़ उसके साथी भाग खड़े हुए। तब कवचधारण किये तथा शस्त्रध्वजा आदि से लैस हो, सात्यकि के दस पुत्र भूरिश्रवा के सामने गये और कुपित हो भूपकेतु से बोले—राजन्! या तो तू हमारे सब के साथ लड़। नहीं तो हममें से प्रत्येक के साथ पृथक् पृथक् लड़। फिर हम सब को पराजित कर यश प्राप्त कर, अथवा हम लोग तुझे परास्त कर, अपने पिता को प्रसन्न करेंगे। इन योद्धाओं के इन वचनों को सुन, महाबली एवं पराक्रम-प्रेमी भूरिश्रवा ने उनसे कहा—वीरों! तुम्हारा कहना सत्य है। मैं तुम्हारे कथन को पुष्ट करता हूँ। तुम सब तैयार हो कर आओ। मैं आज युद्ध में तुम्हारा सब का संहार करूँगा। जब भूरिश्रवा ने यह कहा, तब उन वीरों ने बड़ी फुर्ती के साथ उस पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। जिस समय सात्यकि के दस पुत्र भूरिश्रवा के साथ घोर युद्ध कर रहे थे, उस समय दोपहर हो चुका था। वे दसों वीर अकेले भूरिश्रवा पर बाणवृष्टि वैसे ही कर रहे थे जैसे वर्षा ऋतु में मेरु पर्वत पर मेघ जलवृष्टि करते हैं; किन्तु उनके छोड़े यमदण्ड अथवा वज्रतुल्य बाणों को भूरिश्रवा अपने

निकट फटकने नहीं देता था। इतने ही में भूरिश्रवा ने तिल भर भी न घबड़ा कर, उनके चलाये समस्त बाण काट डाले, सोमदत्त-नन्दन भूरिश्रवा ज़रा सा भी विचलित न हुआ। वह उन दसों के साथ अकेला ही लड़ता रहा। उसके इस पराक्रम को देख मैं तो विस्मित हो गया। वे दसों भूरिश्रवा को चारो ओर से घेर और उस पर बाणवृष्टि कर उसका वध करना चाहते थे। इस पर क्रोध में भर भूरिश्रवा ने एक ही झपाटे में उन सब के धनुष काट डाले। फिर दृढ़ पर्व बाण छोड़ उन सब के मस्तक काट डाले। वज्र से टूटे हुए वृक्ष की तरह वे दसों योद्धा भूमि पर गिर पड़े। रण में अपने दसों पुत्रों का भूरिश्रवा द्वारा मारा जाना देख, सात्यकि ने सिंहनाद कर, भूरिश्रवा पर आक्रमण किया। दोनों के रथ आपस में सट गये और वे दोनों वीर एक दूसरे के रथ के घोड़ों का वध करने का प्रयत्न करने लगे। जब दोनों के रथ टूट गये, तब दोनों वीर हुँकारते हुए तथा ढालें तलवारें ले लड़ने के लिये एक दूसरे के सामने खड़े हुए। इतने में भीम ने सहसा वहाँ पहुँच तलवार ढाल ले कर खड़े हुए सात्यकि को अपने रथ पर सवार करा लिया। उधर आपके पुत्र दुर्योधन ने समस्त योद्धाओं के सामने भूरिश्रवा को अपने रथ पर बिठा लिया। उधर अत्यन्त कुपित हो पाण्डव, भीष्म पितामह से लड़ रहे थे। सन्ध्या होने पर जब अस्तोन्मुख सूर्य की लालिमा से आकाश रक्तरञ्जित सा जान पड़ने लगा, तब अर्जुन ने बड़ी फुर्ती के साथ पचीस हज़ार महारथियों का नाश कर डाला। आपके पुत्र ने अर्जुन का वध करने के लिये जिन योद्धाओं को उनके पास भेजा था, वे सब वहाँ जा वैसे ही नष्ट हो गये, जैसे दीपक में पड़ पतंगे नष्ट हो जाते हैं। धनुर्वेदज्ञ मत्स्य और केकय अर्जुन के तथा उसके पुत्र अभिमन्यु के पीछे जा कर जमा हो गये थे। उस समय समर भूमि में अन्धकार छाता जाता था और दोनों पक्षों की सेनाएँ दीवाल की तरह खड़ी थीं। हाथी घोड़े भी बहुत थक गये थे। अतः भीष्म जी ने अपनी सेनाओं को समरभूमि त्याग शिविरों में लौट जाने की आज्ञा दी।

आज के युद्ध से क्षुब्ध हुई उभयपक्ष की सेनाएँ अपने अपने शिविरों को लौट गयीं। सृञ्जयों के साथ पाण्डव अपने शिविर में गये। कौरव भी अपने शिविर में चले गये और दिन भर की थकावट मिटाने लगे।

[छठवाँ दिन]

पचहत्तरवाँ अध्याय

सैन्यव्यूहों की रचना

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! तदनन्तर कौरवों और पाण्डवों ने थकावट मिटा और रात बीत जाने पर पुनः युद्ध का आयोजन किया। वे लड़ने को अपनी अपनी छावनियों से निकले। उस समय आपके तथा पाण्डवों के सजाये जाते हुए रथों का, हाथियों का तथा पंक्तिबद्ध पैदल सैनिकों का तथा अश्वों का बड़ा शोर हुआ। शङ्खों की ध्वनि और भेरियों का शब्द भी बड़ा घोर था।

उस समय धर्मराज ने धृष्टद्युम्न से कहा—हे महाबाहो! तुम आज शत्रुनाशकारी मकरव्यूह की रचना करो। इस पर महारथी धृष्टद्युम्न ने अपनी ओर के रथियों को मकरव्यूह बनाने की आज्ञा दी। उस व्यूह के सिर स्थान पर राजा द्रुपद, और अर्जुन खड़े थे। सहदेव और नकुल उस मकर व्यूह के नेत्रस्थानीय बने, मुखस्थान पर महाबली भीम खड़े हुए। अभिमन्यु तथा द्रौपदी के पुत्र, घटोत्कच, सात्यकि और धर्मराज स्वयं मकर की ग्रीवा पर खड़े हुए। उनकी सहायता को धृष्टद्युम्न एक बड़ी भारी सेना ले कर खड़ा था। केकयराजकुमार, जो संख्या में पाँच थे वाम पार्श्व में खड़े थे। पुरुषव्याघ्र धृष्टकेतु और वीर्यवान चेकितान व्यूह की रक्षा करने को उसके दक्षिण पार्श्व में खड़े थे। महारथी कुन्तिभोज और एक विशाल सेना के साथ शतानीक मकर के दोनों चरणों के स्थान पर खड़े थे।

महाधनुर्धर शिखण्डी सोमकों सहित उसकी पूँछ पर थे। इरावान् इनके निकट ही था।

हे राजन्! पाण्डव इस प्रकार अपना व्यूह बना, सूर्योदय की प्रतीक्षा करते हुए युद्ध की घात में थे। पाण्डव अपने गजों, घोड़ों, रथों, पैदल सैनिकों, फहराती हुई उच्च ध्वजाओं, छत्रों और चमचमाते पैने शस्त्रों को ले बड़ी फुर्ती से कौरवों के सामने जा खड़े हुए। उधर पाण्डवों के मकर व्यूह को देख कौरवों ने क्रौञ्चव्यूह की रचना की। क्रौञ्च की चोंच के स्थान पर महाधनुर्धर भरद्वाजनन्दन द्रोणाचार्य थे। अश्वत्थामा और कृपाचार्य उसके नेत्र बने। काम्बोज तथा छट्टाछट्टा बाल्हीकों को साथ ले कृतवर्मा क्रौंच के शिरोभाग पर खड़ा हुआ था। शूरसेन तथा अनेक राजाओं को साथ लिये हुए आपका पुत्र दुर्योधन ग्रीवास्थन पर था। मद्र, सौवीर तथा केकयों को साथ ले प्राग्यजोतिषपुर का राजा ससैन्य क्रौंच की छाती के स्थान पर खड़ा था। प्रस्थलराज सुशर्मा अपनी विशाल वाहिनी ले और कवच धारण कर क्रौंचव्यूह के वाम पार्श्व में था। तुवार, यवन, शकदेश के राजागण चूचुपों के साथ दक्षिण पार्श्व में खड़े थे। श्रुतायु, शतायु और भूरिश्रवा पारस्परिक रक्षा का विधान कर, क्रौंचव्यूह की जंघा बने हुए थे।

हे राजन्! उभय पक्ष ने इस प्रकार व्यूहरचना कर, पाण्डवों और कौरवों ने एक दूसरे पर आक्रमण किया। गजारोहियों के साथ रथी और रथियों के साथ अश्वारोही लड़ने लगे। इस महासमर में रथी, गजारोहियों के साथ अश्वारोहियों पर और रथी अश्वारोहियों तथा पैदलों पर और अश्वारोही पैदल सैनिकों पर आक्रमण करने लगे। उस समय भीम, अर्जुन, नकुल सहदेव तथा अन्य महारथियों से रक्षित पाण्डवों की सेना, ताराओं से सुशोभित रात्रि जैसी जान पड़ती थी। भीष्म, कृप, द्रोण, शल्य तथा दुर्योधन आदि वीरों से रक्षित आपकी सेना भी ग्रहों से सम्पन्न आकाश जैसी देख पड़ती थी। द्रोणाचार्य को देख, प्रबल

पराक्रमी भीम ने उनकी सेना पर बड़े वेग से आक्रमण किया। तब वीर्यवान और रण में लब्धप्रतिष्ठ द्रोण ने क्रुद्ध हो और तक तक कर भीम के नौ बाण मार उन्हें घायल किया। तब भीम ने क्रोध में भर द्रोण के सारथि को मार डाला। तब तो द्रोण ने घोड़ों की रास स्वयं ले पाण्डव सैन्य को वैसे ही नष्ट किया, जैसे अग्नि रुई के ढेर को भस्म कर डालता है। भीष्म और द्रोण की मार के सामने केकय और सञ्जय न ठहर सके, वे भाग खड़े हुए। उधर भीम और अर्जुन द्वारा पीड़ित आपकी सेना वैसे ही भागी जैसे मदमाती सुन्दरी इधर उधर भागती है। दोनों ही पक्षों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध वीर इस युद्ध में मारे गये। उस समय दोनों सैन्यव्यूह भी छिन्न भिन्न हो गये। पाण्डवों और कौरवों की सेनाएँ मिल जुल गयीं।

हे राजन्! उस समय आपके पक्ष के योद्धा मरने की कुछ भी परवाह न कर, पाण्डवों से युद्ध कर रहे थे। हम बड़े विस्मय के साथ यह घटना देख रहे थे। महाबली पाण्डव और कौरव एक दूसरे पर अस्त्रों शस्त्रों का प्रहार कर लड़ रहे थे।

छिहत्तरवाँ अध्याय

चिन्तित धृतराष्ट्र

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! हमारी विशाल सेना है, उसमें भाँति भाँति के योद्धा हैं। युद्ध-शास्त्रानुसार व्यूहों की रचना की जाती है। हमारी सेना अपने कार्य में सदा सफल होने वाली है, क्योंकि हमारी सेना के सैनिक सर्वदा हर्षित रहा करते हैं। उनकी हममें प्रगाढ़ भक्ति है। वे सब हमारे प्रति नम्र रहते हैं। उनमें किसी भी प्रकार का दुर्व्यसन नहीं है और उनका पराक्रम अनुभूत है। हमारे सैनिक न तो बूढ़े हैं और न बालक ही हैं। वे न तो बहुत लटे दुबले हैं और न आवश्यकता से अधिक मोटे ही हैं।

वे तो बड़े फुर्तीले हैं, उनके शरीर ख़ूब लंबे हैं। वे सब बड़े बलवान और निरोग हैं। वे सब कवच पहिन कर लड़ते हैं और उनके पास युद्धोपयोगी अन्य समस्त पूरा पूरा सामान है। वे सब तलवार की लड़ाई में, कुश्ती लड़ने में और गदायुद्ध में पूर्णरीत्या शिक्षा प्राप्त होने से पूर्ण कुशल हैं। प्रास, ऋष्टि, तोमर, परिघ, गदा, भिन्दिपाल, शक्ति, मूसल, आदि द्वारा वे सब प्रकार की लड़ाइयाँ लड़ सकते हैं। कम्पन, चाप, कणप, गोफन और मुष्टियुद्ध आदि में भी वे पीछे पैर रखने वाले नहीं हैं। उन लोगों ने सब प्रकार के युद्धों की शिक्षा ग्रहण की है। कसरत करने में वे सब अच्छा परिश्रम किये हुए हैं। उनको सब प्रकार के शस्त्रों से लड़ने का अभ्यास है। वाहनों पर सवार होने का, वाहनों से उतरने का, नियमपूर्वक आगे बढ़ने का, पीछे हटने का तथा प्रहार करने का उन सब को अच्छा अभ्यास है। गजों, घोड़ों और रथों को हाँकने की परीक्षा में वे उत्तीर्ण हैं। उनकी इन सब विषयों में परीक्षा ले कर वे सेना में भर्त्ती किये गये हैं। किसी के कहने से, या किसी के ऊपर एहसान करने के लिये, या सम्बन्धी समझ कर अथवा मित्रों के आग्रह से अथवा कुल की जाँच किये बिना—एक भी सैनिक सेना में भर्ती नहीं किया गया। वे सब विश्वस्त और प्रतिष्ठित हैं। उनके जो निकट सम्बन्धी हैं उनका पालन पोषण कर हम उनको सन्तुष्ट रखते हैं। उनके ऊपर हमने बड़े बड़े एहसान कर रखे हैं। वे सब परम यशस्वी और स्वतंत्र विचार के लोग हैं। उनके जो प्रधान हैं—वे भी हमारे ही आदमी हैं। हमारी सेना के प्रधान लोग प्रसिद्ध पराक्रमी हैं और उनका पराक्रम लोकपालों जैसा है। हमारी सेना की रक्षा का भार उन्हीं लोगों के ऊपर है। वे लोग सर्वत्र प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। हमारी सेना उन सम्मानित क्षत्रियों के अधिकार में है जो भूमण्डल पर भली भाँति प्रसिद्ध हैं। जो क्षत्रिय हमारी ओर से लड़ रहे हैं, वे अपनी इच्छा ही से अपनी सेना और सामन्तों को साथ ले हमारे पक्ष में आ मिले हैं। निस्सन्देह हमारा सैन्यदल नदियों के जल से परिपूर्ण महासागर के समान है। यद्यपि पंखों से रहित

है तथापि गति में हमारा सैन्यदल पक्षियों जैसी गति वाले रथों और गजों से पूर्ण है। विविध प्रकार के योद्धा रूपी जल से पूर्ण तथा वाहन रूपी तरङ्गों से दिन रात तरङ्गित समुद्र जैसा देख पड़ता है। गोफन, तलवार, गदा, शक्ति, बाण और प्रास आदि आयुधों से हमारी सेना सम्पन्न है। ध्वजा, आभूषण, रत्नजटित कमरपेटियों और दौड़ते हुए अश्वों रूपी पवन से वह बारंबार हिलोरें लेता है। हमारा सैन्यदल तटरहित एवं नाद करते हुए अपार महासागर की तरह जान पड़ता है। द्रोण, भीष्म, कृतवर्मा इसके रक्षक हैं। द्रोण, भीष्म और कृतवर्मा, कृप, दुःशासन, जयद्रथ आदि अनेक योद्धाओं एवं भगदत्त, विकर्ण, अश्वत्थामा, शकुनि, बाल्हीक, आदि बड़े बड़े बलवान महात्मा वीर पुरुषों से हमारा सैन्यदल रक्षित है। ऐसा होने पर भी युद्ध में हमारी सेना का मारा जाना—हमारे पूर्वजन्म कृत किसी दुष्कृत का प्रतिफल है। पूर्वकाल में क्या मनुष्यों ने, क्या महाभाग ऋषियों ने, ऐसा विशाल युद्धायोजन तो कभी देखा ही न होगा। अस्त्र-शस्त्र-सम्पन्न हमारा इतना बड़ा सेनादल धन द्वारा पूर्णरीत्या हमारा वशवर्ती है। तिस पर भी वह लड़ाई में मार खाता है। तब इसे भाग्य का दोष न कहें तो क्या कहें? हे सञ्जय! यह तो हमारे पक्ष में दैव की प्रतिकूलता ही है कि, हमारा सैन्यदल इतना विशाल और पराक्रमशाली होने पर भी पाण्डवों को नहीं हरा पाया। अतः कहना पड़ता है कि, निश्चय ही पाण्डवों की सहायता समस्त देवगण किया करते हैं। इसीसे जब जब युद्ध होता है; तब तब मेरी सेना ही का संहार होता है। क्या कहूँ—विदुर ने तो अनेक बार मुझसे मेरे हित और लाभ की बातें कही थीं; किन्तु मेरे मन्दमति पुत्र दुर्योधन ने उन पर ध्यान ही न दिया। उस सर्वज्ञ महात्मा को यह बात पहले ही से अवगत हो गयी होगी, तभी तो उसने मुझे ऐसी शिक्षा दी थी अथवा हे सञ्जय! यह भी हो सकता है कि, विधना का विधान ही ऐसा हो। अब तो विधना ने जो रच रखा है, वह तो हो कर ही रहेगा। उसके विपरीत कुछ भी नहीं होगा।

सतहत्तरवाँ अध्याय

भीम और द्रोण की बहादुरी

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! आप पर यह विपत्ति आप ही के दोष से आ कर पड़ी है। आपने अधर्मनीति चली थी। उसका अन्तिम परिणाम यदि मन्दमति दुर्योधन नहीं समझ पाया था, तो कम से कम आप तो जानते थे। प्रथम द्यूतकाण्ड जो रचा गया उसका सारा दोष आपके ही मत्थे है। अब जो पाण्डवों के साथ लड़ाई हो रही है—सो इसमें भी आप ही का दोष है। यह सब आप ही की करतूत है, अतः अपनी करतूत का फल भी आप ही भोगें, क्योंकि जो जैसा कर्म करता है, उसे ही उसका फल इसलोक में अथवा मरने के बाद परलोक में भोगना पड़ता है। अतः आपको जो फल मिला है सो ठीक ही है।

हे राजन्! इस घोर सङ्कट के समय आपको अब धैर्य धारण करना चाहिये। अब मैं तुम्हें युद्ध के आगे का वृत्तान्त सुनाता हूँ, आप सुनें। वीर भीमसेन अपने पैने बाणों से आपके सैन्यव्यूह को छिन्न भिन्न कर, दुर्योधन के छोटे भाइयों के सामने पहुँचा। दुःशासन, दुर्विषह, दुःसह, दुर्मद, जय, जयत्सेन, विकर्ण, चित्रसेन, सुदर्शन, चारुमित्र, सुवर्मा, दुष्कर्ण, कर्ण आदि कौरवों के बहुत से क्रोधी महारथी वहाँ विद्यमान थे। तिस पर भी भीम, भीष्म द्वारा रक्षित आपकी सेना में घुस गया। उस समय उन समस्त योद्धाओं ने भीम से कहा—हम तुझे मार कर शिक्षा देंगे। उधर प्रजा का संहार करने के लिये, उपग्रहों सहित तपते हुए सूर्य की तरह दृढ़-प्रतिज्ञ एवं अपने भाइयों से घिरा हुआ भीम, कौरवों की सेना के बीच जा पहुँचा। पूर्वकाल में देवासुर संग्राम के समय दानवों से घिरे हुए इन्द्र की तरह भीमसेन को कौरवों ने घेर लिया था। इस पर भी भीम ज़रा भी न डरा।

हे राजन्! तदनन्तर सहस्रों गजारोहियों ने भीम पर आक्रमण किया

और उस पर पैने बाणों की वृष्टि की; किन्तु भीम ने आपकी सेना की रत्ती भर भी परवाह न कर, आपके पक्ष के उन बड़े बड़े योद्धाओं को मार डाला, जो अश्वों, गजों और रथों पर सवार हो, भीम से लड़ने आये थे। परमोत्साही भीमसेन को जब यह विदित हुआ कि, वे सब उसे घेर कर मार डालना चाहते हैं, तब उसने उन सब को नष्ट कर डालने का निश्चय किया। तदनन्तर वह गदा ले रथ से कूद पड़ा और आपके महासागर समान विशाल सैन्यदल का वह संहार करने लगा। जब भीम ने हमारी सेना में प्रवेश किया, तब धृष्टद्युम्न, द्रोण से लड़ना छोड़, शकुनि के सामने गया। वह उस विशाल सेना को हटा, वहाँ आ पहुँचा, जहाँ भीमसेन का खाली रथ खड़ा था। भीम के सारथि विशोक को खाली रथ ले कर समरभूमि में खड़ा देख, धृष्टद्युम्न घबड़ा गया। उसने लंबी साँस ले और आँसुओं को रोक विशोक से कहा—प्राणों से भी बढ़ कर प्रिय भीम कहाँ है? उसे रथ में न देख कर, मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। इस पर विशोक ने हाथ जोड़ कर धृष्टद्युम्न से कहा—परम पराक्रमी एवं बली भीम, मुझे यहाँ खड़ा कर, कौरवों के इस महासागर रूपी सैन्यदल में कूद पड़े हैं और जाने के पूर्व वे मुझसे प्रीतिपूर्वक यह कह गये हैं कि, घोड़ों को यहीं रोक कर, कुछ देर तक मेरे लौटने की प्रतीक्षा करना। प्राण लेने को आये हुए इन कौरवों का नाश कर मैं अभी आता हूँ। गदाधारी भीम को झपटते देख कौरव सैन्यदल बड़ा भयभीत हुआ। हे राजकुमार! रण की भीषणता बढ़ते ही आपके मित्र भीम, शत्रुसैन्य के व्यूह को भङ्ग कर, उसमें घुस गये हैं।

विशोक के इन वचनों को सुन, धृष्टद्युम्न ने उससे कहा—पाण्डवों के प्रति अपने स्नेह को भुला कर यदि आज मैं भीमसेन को सहायता देने के लिये उसके निकट न पहुँच सका तो मेरा जीवन ही व्यर्थ है। मैं यहाँ रहूँ और अकेला भीम शत्रुसैन्य में घूमें तो समस्त क्षत्रिय मुझसे क्या कहेंगे? जो पुरुष अपने साथियों को छोड़ और अपने घर में घुस कुशलपूर्वक रहता है, इन्द्रादि देवता उसका अनिष्ट करते हैं। महाबली भीमसेन मेरा मित्र है

नातेदार है और सदैव मेरे ऊपर वह स्नेह करता है। अतः मुझे भी उसके साथ तदनुरूप ही व्यवहार करना चाहिये। सो जहाँ भीम गया है वहीं मैं जाऊँगा। तू देखना, मैं इन समस्त योद्धाओं का वैसे ही नाश करूँगा, जैसे इन्द्र, दानवों का नाश करते हैं।

हे राजन्! यह कह वीरवर धृष्टद्युम्न उस मार्ग से आगे बढ़, शत्रुसैन्य में घुसा जिसे भीमसेन ने गजों को मार कर, बना लिया था। जैसे प्रचण्ड पवन वृक्षों को नष्ट कर डालता है, वैसे ही भीम को शत्रुपक्षीय योद्धाओं का नाश करते हुए शत्रुसैन्य में भ्रमण करते हुए धृष्टद्युम्न ने देखा। उस समय भीमसेन के गदप्रहारों से विकल हो, अश्वारोही, रथी, पैदल और घोड़े बुरी तरह चिल्ला रहे थे। उस समय विचित्र ढंग से लड़ने वाले भीमसेन के हाथ से नष्ट होती हुई आपकी सेना में हाहाकार मचा हुआ था और आपके पक्ष के राजा लोग निर्भय हो भीम पर बाणवृष्टि कर रहे थे। आपकी सेना द्वारा भीम को चारों ओर से घिरा हुआ देख, लोकप्रसिद्ध वीर धृष्टद्युम्न, अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हो; भीमसेन के निकट जा पहुँचा। उसने निकट जा कर देखा कि, भीमसेन बाणप्रहार से घायल हो गये हैं। वे रथ छोड़ पैदल घूम रहे हैं। वे क्रोधरूपी विष को उगल रहे हैं और प्रलयकालीन काल की तरह हाथ में गदा ले रणभूमि में विचर रहे हैं। धृष्टद्युम्न ने भीम के निकट पहुँच, उन्हें आश्वासन दिया। जब वह भयानक युद्ध होने लगा था, तब आपके पुत्र दुर्योधन ने अपने भाइयों से जा कर यह कहा—यह दुष्ट द्रुपद का बेटा धृष्टद्युम्न सहायता के लिये भीमसेन के पास आ पहुँचा है। अतः तुम सब मिल कर और एक बड़ी सेना को साथ ले, इस पर आक्रमण करो। ऐसा करो जिससे यह हमारी सेना पर न चढ़ आवे। दुर्योधन के इन वचनों को सुन आपके समस्त पुत्र रोष में भर गये। वे हाथों में बड़े बड़े शस्त्रों को ले, उसी प्रकार दोनों वीरों का संहार करने को अग्रसर हुए, जैसे युगान्तकाल में बड़े बड़े धूमकेतु जगत का नाश करने के लिये उदय होते हैं। वे लोग रोदों को टंकारते हुए और दिशाओं को कँपाते हुए जा रहे

थे। जैसे मेघ जलवृष्टि से पर्वत को तर कर देता है, वैसे ही आपके पुत्र धृष्टद्युम्न को बाणवृष्टि से आच्छादित करने लगे ; किन्तु रणकुशल धृष्टद्युम्न इनके आक्रमण से ज़रा भी विचलित न हुआ। उसने पैने बाण छोड़, उनकी बाणवृष्टि को निष्फल कर दिया। तदनन्तर निकट खड़े हुए आपके आक्रमणकारी पुत्रों तथा अन्य योद्धाओं का नाश करने के लिये धृष्टद्युम्न ने प्रमोहन नामक अस्त्र छोड़ा। हे राजन्! जैसे इन्द्र, दानवों पर क्रुद्ध होते हैं वैसे ही उसने आपके पुत्रों पर कोप किया। उसके प्रमोहन अस्त्र के प्रताप से आपके पक्ष के योद्धा बलहीन हो मूर्छित से हो गये। वे लोग हाथियों, घोड़ों और रथों को हाँक इधर उधर भागने लगे। जब द्रोण ने देखा कि, आपके पुत्र अचेत हैं, तब द्रोणाचार्य ने तीन बाण मार कर द्रुपद को घायल किया। द्रोण के बाणों से विद्ध राजा द्रुपद पूर्व वैर को स्मरण कर, पीछे हट गया। इस प्रकार राजा द्रुपद को हरा कर, द्रोण ने शङ्खध्वनि की। उसे सुन समस्त सोमक भयभीत हो गये। इतने में द्रोण ने सुना कि, प्रमोहनास्त्र से आपके पुत्र मूर्छित हो गये हैं। यह सुनते ही द्रोण झटपट वहाँ जा पहुँचे जहाँ आपके पुत्र मूर्छित पड़े हुए थे। वहाँ जा कर द्रोण ने आपके पुत्रों को मूर्छित और समरभूमि में भीम एवं धृष्टद्युम्न को विचरते देखा। इस पर द्रोण ने धृष्टद्युम्न के प्रमोहनास्त्र को प्रज्ञास्त्र चला कर नष्ट किया। तब तो आपके पुत्र मानों मर कर जी उठे। वे सब पुनः लड़ने के लिये भीम और धृष्टद्युम्न के सन्मुख गये। उस समय धर्मराज ने अपने सैनिकों को सम्बोधन कर के यह कहा—बारह बड़े प्रसिद्ध महारथी कवच पहिने और अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित हो तथा अभिमन्यु को आगे कर, भीम और धृष्टद्युम्न की सहायता के लिये जाँय और उन दोनों का समाचार लावें, क्योंकि उन दोनों का समाचार न मिलने से मेरा मन विकल हो रहा है।

धर्मराज के इन वचनों को सुन और बहुत अच्छा कह, आत्माभिमानी एवं परमपराक्रमी योद्धा, ठीक दो पहर के समय रवाना हुए। उनमें अभिमन्यु, केकय, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, धृष्टकेतु आदि योद्धा बड़ी भारी

सेना ले कर गये थे। इन लोगों ने आगे बढ़ कर सूची नामक सैन्यव्यूह की रचना की और युद्ध कर कौरवों की सेना को छिन्न भिन्न कर डाला।

हे राजन्! आपके सैनिक पहले भीमसेन से भयभीत हो, धृष्टद्युम्न के हाथ से मूर्छित हो चुके थे। अतः वे अभिमन्यु की अध्यक्षता में आयी हुई पाण्डवों की सेना को रोक न सके, क्योंकि भटकी हुई प्रमदा की तरह उनका जी ठिकाने न था। पाण्डवों के कुलीन योद्धा सुवर्णभूषित रंग विरंगी ध्वजाओं को उड़ाते भीमसेन एवं धृष्टद्युम्न को खोजते खोजते आगे बढ़ते चले गये। आपकी सेना का संहार करते हुए, भीमसेन और धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु आदि योद्धाओं को ससैन्य अपनी ओर आते देख अत्यन्त हर्षित हुए। अपने गुरु द्रोण को आते देख, धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्रों का वध करना स्थगित कर दिया। फिर भीम को केकय के रथ में बिठा और आवेश में भर धृष्टद्युम्न ने बाण विद्या-पारङ्गत द्रोण पर आक्रमण किया। उसे अपनी ओर आते देख, शत्रुनाशक प्रबल प्रतापी द्रोण ने एक बाण मार कर, उसका धनुष काट डाला। अपने मालिक का निमक हलाल करने को द्रोण ने धृष्टद्युम्न पर अगणित बाण छोड़े। इतने में धृष्टद्युम्न ने दूसरा धनुष उठा सुवर्णपुंख पैने बीस बाण छोड़, द्रोण को घायल किया। इस पर द्रोण ने धृष्टद्युम्न का दूसरा धनुष भी काट डाला। फिर चार बड़े बाण मार उसके रथ के घोड़ों को मार, भल्ल बाण से उसके सारथि को भी मार डाला। तब अश्वों और सारथि रहित रथ को छोड़ धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु के रथ पर जा बैठा। द्रोणाचार्य ने अपने इस अद्भुत पराक्रम से पाण्डवों को अश्वारोही गजारोही एवं रथ सैन्य को भयभीत कर डाला। अतः पाण्डवों की यह सेना, द्रोण की मँगायी नयी सेना का सामना न कर सकी। द्रोणाचार्य ने मारे बाणों के पाण्डवों की इस सेना को बिखेर दिया। पाण्डवों की सेना खलभलाते हुए महासागर की तरह क्षुब्ध हो गयी और इधर उधर भागने लगी। पाण्डवों की सेना को भागते तथा द्रोण के हाथ से नष्ट होते देख, आपके पक्ष के सैनिक बड़े हर्षित हुए और चारों ओर से वाह! वाह! कह द्रोणाचार्य की सराहना करने लगे।

अठहत्तरवाँ अध्याय

भीमसेन की वीरता

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब दुर्योधन की मूर्छा भङ्ग हुई, तब उसने बाणों की वर्षा कर हठीले भीम को आगे बढ़ने से रोका। उस समय आपके महारथी पुत्र मिल कर अकेले भीम से लड़ने लगे; किन्तु भीमसेन उन सब की कुछ भी परवाह न कर अपना रथ बढ़वा वहाँ पहुँचा, जहाँ आपका पुत्र दुर्योधन खड़ा था और बाण मार कर उसे घायल कर डाला। इस पर दुर्योधन ने पैने पैने बाण मार भीमसेन के मर्मस्थलों को विद्ध कर डाला। घायल होने के कारण भीम अत्यन्त कुपित हुआ, उसके नेत्र लाल हो गये। उसने धनुष तान एक बाण दुर्योधन की छाती में और दो बाण उसकी दोनों भुजाओं में मारे। भीम के तीनों बाण दुर्योधन के शरीर में घुस गये। उस समय वह वैसा ही जान पड़ा, जैसा शृङ्ग सहित अटल अचल पर्वत हो। जिस समय दुर्योधन और भीम का युद्ध हो रहा था, उस समय दुर्योधन के मृतक समान भाइयों ने अपने पूर्व निश्चय के अनुसार दृढ़ प्रतिज्ञा कर, भीमसेन को पकड़ने के लिये भीम पर आक्रमण किया। यह देख भीम ने उन पर वैसे ही आक्रमण किया जैसे हाथियों की धाँग पर हाथी आक्रमण करता है। क्रुद्ध, तेजस्वी एवं यशस्वी भीम ने एक नाराच बाण आपके पुत्र चित्रसेन पर फेंका। फिर सुवर्णपुंख पैने बाण भीम ने आपके अन्य समस्त आक्रमणकारी पुत्रों पर फेंके। इतने में भीम की सहायता के लिये धर्मराज के भेजे अभिमन्यु आदि बारह महारथी अपनी सेना सहित आपके पुत्रों के सामने जा पहुँचे। सूर्य अथवा अग्नि की तरह तेजस्वी, महाधनुर्धर तथा वीरश्री से शोभित एवं सुवर्ण मुकुटधारी बारह महारथियों को रथों पर सवार हो, अपनी ओर आते देख, आपके पुत्रों ने भीम के साथ लड़ना छोड़ दिया और इन महारथियों से लड़ने को वे आगे बढ़े। लड़ाई छोड़ कर, आपके पुत्रों का जीते जागते चला जाना भीम को सह्य न हुआ। उसने आपके पुत्रों

का पीछा किया और वह उनको मारने लगा। तदनन्तर भीम और धृष्टद्युम्न जा कर अभिमन्यु के दल से जा मिले। यह देख आपकी सेना के दुर्योधनादि महारथी शीघ्रगामी घोड़ों के रथों पर सवार हो, पाण्डवपक्षीय महारथियों के सामने गये।

हे राजन्! उस समय तीसरा पहर हो चुका था। अतः उस समय आपके पुत्रों के साथ पाण्डवों के इन बलवान वीरों का भयङ्कर युद्ध हुआ। अभिमन्यु ने इस महायुद्ध में विकर्ण के घोड़ों को मार डाला और छोटे पचीस बाण विकर्ण के मारे। घोड़ों के मारे जाने पर विकर्ण अपने रथ को छोड़ चित्रसेन के रथ पर जा बैठा। उन कुलवर्द्धन उभय भ्राताओं को एक रथ पर सवार देख, अभिमन्यु ने उन दोनों पर बाणवृष्टि की। तब चित्रसेन और विकर्ण ने भी पाँच बाण चला अभिमन्यु को घायल किया; किन्तु घायल होने पर भी अभिमन्यु ज़रा भी विचलित न हुआ। प्रत्युत मेरुपर्वत की तरह वह अटल अचल भाव से खड़ा रहा। उधर दुःशासन की लड़ाई पाँच केकयों के साथ हो रही थी। उसे देख बड़ा आश्चर्य सा जान पड़ता था। साथ ही द्रौपदी के पाँचों पुत्र रोष में भर, सर्पाकार बाणों को छोड़ते आपके पुत्र दुर्योधन को आगे बढ़ने ही नहीं देते थे। आपका दुर्धर्ष पुत्र दुर्योधन भी पैने बाण मार कर, द्रौपदी के प्रत्येक पुत्र को चोटिल कर रहा था। बाणप्रहार से घायल आपका पुत्र दुर्योधन घायल हो गया था, अतः उसके घायल शरीर से रक्त की धार बहने लगी थी। उससे वह वैसा ही सुशोभित जान पड़ता था, जैसे लाल रंग के जल से युक्त झरनों के प्रवाह से गिरिराज की शोभा होती है।

हे राजन्! दूसरी ओर, भीष्म पितामह पाण्डवों की सेना को वैसे ही मार रहे थे, जैसे कोई गोपाल अपने पशुओं को मारता हो। हे राजन्! इतने ही में शत्रुओं का नाश करते हुए अर्जुन के गाण्डीव धनुष के टङ्कार का शब्द सेना की दहिनी ओर सुन पड़ा। उस समय आपकी और पाण्डवों की सेनाओं में रुण्ड इधर उधर दौड़ रहे थे। रक्त रूपी जल से पूर्ण, बाण रूपी

भँवरों से युक्त, मृत गजरूपी द्वीप वाले, अश्वरूपी तरङ्गों से तरङ्गित सेनारूपी उस महासागर में पुरुषव्याघ्र योद्धा रथरूपी नौकाओं पर सवार हो, तैरते हुए से जान पड़ते थे। लड़ाई में कट कट कर गिरे हुए हाथों कवचों और शरीरों वाले लाखों योद्धा रणभूमि में यत्र तत्र पड़े हुए देख पड़ते थे। रुधिर के प्रवाह में लोहू से तर शरीरों वाले घायल गजों से समरभूमि ऐसी जान पड़ती थी, मानों पृथिवी पर्वतों से आच्छादित हो। यह सब होने पर भी आपकी और पाण्डवों की सेनाओं में एक भी ऐसा सैनिक न था, जिसकी इच्छा युद्ध करने की न हो। यह देख सब विस्मित थे। जय और यश को प्राप्त करने के प्रयासी आपके पुत्रों और पाण्डु के पुत्रों के साथ इस तरह युद्ध हो रहा था।

उनासीवाँ अध्याय

भीम दुर्योधन संवाद

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! सूर्यास्त के समय आकाश लाल देख पड़ने लगा। उस समय भीमसेन का वध करने की इच्छा से दुर्योधन दनदनाता आगे बढ़ा। पुरुषों में वीर एवं अपने कट्टर वैरी दुर्योधन को अपनी ओर आते देख, भीम ने क्रोध में भर दुर्योधन से कहा—मैं बहुत दिनों से जिस समय की प्रतीक्षा में था, वह समय आज उपस्थित हुआ है। यदि तू युद्ध से मुँह मोड़ भाग न गया, तो तू आज मुझसे बच कर जीता जागता लौट भी न सकेगा। आज मैं तेरा वध कर के, द्रौपदी और कुन्ती का दुःख दूर करूँगा और अपने वनवास के क्लेशों को भी समाप्त कर दूँगा। हे गान्धारीपुत्र! तू ईर्ष्यावश पाण्डवों का बड़ा अपमान कर चुका है। सो आज तेरे उन पापमय कृत्यों के प्रायश्चित्त का समय आ उपस्थित हुआ है। अतः तू इस ओर अब ध्यान दे। कर्ण और शकुनि की झाँसापट्टी

में आ और पाण्डवों को तृणवत् भी न समझ तूने पाण्डवों के ऊपर बड़े बड़े अत्याचार किये हैं। श्रीकृष्ण ने सन्धि कर लेने को तुझसे अनुरोध किया, किन्तु तूने उनकी बात पर भी ध्यान न दिया। साथ ही तुझ अज्ञानी ने हर्ष से कुप्पा बन मेरे पास सन्देसा दे कर उलूक को भेजा। अतः आज मैं तुझे तेरे साथियों और सगे नतैतों सहित मार डालूँगा। जो पाप तू प्रथम कर चुका है उसका फल मैं आज तुझे चखाऊँगा।

ये वचन कह भीम ने वज्र जैसा चमचमाता एक बाण अपने धनुष पर रख, धनुष को पूर्ण रीति से ताना। फिर उस समेत छब्बीस ऐसे बाण भीम ने दुर्योधन पर छोड़े, जो प्रज्वलित अग्नि की तरह अँगारे छोड़ रहे थे। तदनन्तर दो बाण छोड़ भीम ने दुर्योधन के हाथ का धनुष काट डाला। फिर दो बाण मार उसके सारथि का वध किया और चार बाण मार दुर्योधन के रथ के शीघ्रगामी चारों घोड़ों को मार डाला। शत्रुदमनक भीम ने दो बाण छोड़ दुर्योधन का छत्र काट कर गिरा दिया। फिर छः बाण मार उसके रथ की चमचमाती ध्वजा काट कर गिरा दी। तब भीमसेन ने सिंहगर्जन किया। ये सब काम भीम ने आपके पुत्र की आँखों के सामने किये और आपका पुत्र टकटकी बाँध सब देखा किया। नाना रत्नों से जड़ी हुई दुर्योधन के रथ की ध्वजा सहसा वैसे ही भूमि पर गिर पड़ी जैसे मेघ से विद्युत्पात होता है। चमकते हुए अग्नि की तरह मणिजटित दुर्योधन के रथ की नागाकार कटी हुई ध्वजा को समस्त राजाओं ने गिरते हुए देखा। साथ ही भीम नें हँस कर दुर्योधन के दस बाण वैसे ही मारे जैसे महावत् अङ्कुश से हाथी पर प्रहार करता है। इतने में सिन्धुराज प्रसिद्ध वीरों को अपने साथ लिये हुए दुर्योधन के पृष्ठभाग की रक्षा करने को दुर्योधन के पीछे जा खड़ा हुआ। रथिश्रेष्ठ कृपाचार्य ने परमतेजस्वी असह्य पराक्रमी कुरुवंशी दुर्योधन को अपने रथ पर बैठा लिया। इस युद्ध में दुर्योधन को भीम ने बाण मार मार कर बुरी तरह घायल कर डाला था—सो वह सुस्ताने के लिये रथ के पीछे के भाग में जा बैठा। इतने में भीमसेन को, जयाभिलाषी

जयद्रथ ने अपने साथ के सहस्रों रथियों की सैन्य सहित चारों ओर से घेर लिया। उस समय हे राजन्! धृष्टकेतु, अभिमन्यु, केकय, तथा द्रौपदी के पुत्रों ने आपके पुत्र पर आक्रमण किया। चित्रसेन, सुचित्र, चित्राङ्ग, चित्र-दर्शन, चारुचित्र, सुचारु, नन्दक, और उपनन्दक नामक आठ महाधनुर्धर, कीर्तिमान् एवं सुकुमार राजपुत्रों ने अभिमन्यु के रथ को चारों ओर से घेर लिया। उस समय अत्यन्त साहसी अभिमन्यु ने दृढ़पर्व वाले पाँच पाँच बाण उनमें से प्रत्येक के मारे। इस भीषण बाणप्रहार को न सह कर, उन लोगों ने अभिमन्यु पर वैसे ही बाणवृष्टि की जैसे मेघ सुमेरु पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं। जब उन समस्त वीरों ने अभिमन्यु को इस प्रकार पीड़ित किया, तब अस्त्र-विद्या-विशारद एवं युद्धदुर्मद अभिमन्यु ने आपके वीरों को बाणप्रहार से वैसे ही कम्पित किया, जैसे इन्द्र ने देवासुर संग्राम में असुरों को कम्पायमान किया था। अभिमन्यु ने सर्प की तरह विषैले १४ भल्ल बाण विकर्ण के मारे। फिर विकर्ण के रथ की ध्वजा तथा उसके सारथि को काट कर अभिमन्यु ने भूमि पर गिरा दिया और घोड़ों को भी मार गिराया। महाबली अभिमन्यु ने अत्यन्त कुपित हो विषैले बाण छोड़ विकर्ण का काम तमाम करना चाहा। ज्वालाएँ छोड़ते हुए विषधर सर्पों की तरह और कङ्कपत्र युक्त वे बाण विकर्ण के शरीर को फोड़ आरपार निकल पृथिवी में घुस गये। रणभूमि में पड़े हुए सुवर्णपुंख वे बाण विकर्ण के रक्त से रञ्जित होने के कारण, रक्त उगलते हुए से जान पड़ते थे। विकर्ण की यह दशा देख, उसके अन्य भाई अभिमन्यु की ओर झपटे। युद्धदुर्मद वे योद्धा आते ही मार काट मचाने लगे। दुर्मुख ने सात बाण मार कर, श्रुतकर्मा को घायल किया। एक बाण से उसके रथ की ध्वजा काट डाली। फिर सात बाण मार उसके सारथि को यमालय भेज दिया। तब मरे हुए घोड़ों वाले रथ पर बैठे ही बैठे महारथी श्रुतवर्मा ने क्रोध में भर, उल्का की तरह चम-चमाती एक शक्ति दुर्मुख के मारी। वह चमचमाती शक्ति दुर्मुख के कवच और शरीर को फोड़, पृथिवी में घुस गयी। रथहीन श्रुतकर्मा को देख,

महारथी सुतसोम ने समस्त सैनिकों के सामने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया। वीरवर श्रुतकीर्ति नामक आपके कीर्तिशाली पुत्र जयत्सेन को मारने की इच्छा से उसके सामने गया। जब श्रुतकीर्ति अपने विशाल धनुष को तान रहा था, तब आपके पुत्र जयत्सेन ने मुसक्या कर, उसका धनुष काट डाला। यह देख, उसका भाई शतानीक सिंह के समान बारंबार गर्जना हुआ सामने आया और बड़ी फुर्ती से दस शिलीमुख बाण मार, उसने जयत्सेन को घायल किया। साथ ही मतवाले हाथी की तरह वह बड़े ज़ोर से चिघारा। फिर उसने बड़ी बड़ी ढालें और तलवारों को काटने वाले तीक्ष्ण बाणों से जयत्सेन की छाती को घायल किया। तब जयत्सेन के निकट खड़े हुए उसके भाई दुष्कर्ण ने क्रोध में भर, शतानीक का धनुष काट डाला। तब उस निकम्मे धनुष को फेंक, महाबली शतानीक ने एक दूसरा मज़बूत धनुष हाथ में लिया। फिर उस पर बड़े भयङ्कर बाण चढ़ा उसने यह कहा कि, खड़ा रह! खड़ा रह! फिर उस पर सर्प जैसे भयङ्कर बाण छोड़े। फिर एक और तरह का बाण चला उसके धनुष को काट डाला। फिर दो बाण मार, उसका सारथि मार डाला तथा सात बाण मार उसके ऊपर पुनः प्रहार किया। फिर बारह बाण मार, मन की तरह वेगवान् तथा चितकबरे रङ्ग के उसके रथ के चारों घोड़े भी मार डाले। तदनन्तर भल्ल बाण छोड़ दुष्कर्ण की छाती में प्रहार किया। इस प्रहार से वह उखड़े हुए वृक्ष की तरह भूमि पर गिर पड़ा।

हे राजन्! दुष्कर्ण को घायल देख, अन्य पाँच महारथियों ने शतानीक का वध करने के लिये उसे चारों ओर से घेरा। यशस्वी शतानीक को बाण-जाल से आच्छादित देख, पाँच केकय राजकुमार क्रुद्ध हो लपके। उन्हें आते देख, आपके महारथी पुत्र उनकी ओर वैसे ही लपके जैसे हाथियों के सामने हाथी दौड़ते हैं। दुर्मुख, दुर्जय, दुर्मर्षण, शत्रुञ्जय, शत्रुसह आदि यशस्वी योद्धा क्रुद्ध हो और दलबंदी कर, केकयों की ओर झपटे। मन के समान वेगवान् घोड़ों से युक्त, नगर की तरह अनेक पताकाओं से सजे हुए रथों में बैठ कर बड़े बड़े धनुर्धारी एवं रंग बिरंगे कवच पहिने हुए तथा ध्वजाओं से

युक्त वे योद्धा वैसे ही शत्रुसैन्य में घुस गये, जैसे सिंह वन में घुसता है। एक दूसरे पर प्रहार करने वाले इन वीरों में बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ। रथों के सामने रथ, गजों के सामने गज भिड़े हुए थे। सूर्यास्त के बाद भी दो घड़ी तक इन योद्धाओं का दारुण युद्ध जारी रहा। वे सब आपस में एक दूसरे को अपना परमशत्रु मानते थे। इस युद्ध में बहुत से योद्धा मारे गये, जिन्होंने यमालय में जा वहाँ की आबादी बढ़ायी। रथों तथा हौदों में बैठे हुए हज़ारों योद्धा, यत्र तत्र गिर रहे थे। उस समय क्रोध में भर भीष्म ने पाण्डवों की तथा पाञ्चालों की सेना का नाश करना आरम्भ किया। पाण्डवों की सेना को छिन्न भिन्न कर, भीष्म अपनी सेना को लौटा कर सैन्यशिविर में पहुँचे। दूसरी ओर युधिष्ठिर ने भी धृष्टद्युम्न और भीम से मिल कर उनके मस्तक सूँघे और हर्षित होते हुए वे भी अपने सैन्यशिविर को ससैन्य लौट गये।

[सातवाँ दिन]

अस्सीवाँ अध्याय

भीष्म और दुर्योधन की बातचीत

सञ्जय बोले—हे महाराज! एक दूसरे के परमशत्रु और रक्त से तर बतर समस्त योद्धा अपने अपने शिविरों को लौट गये। नियमानुसार रात के समय सैनिकों ने थकावट दूर की और आपस में एक दूसरे का सम्मान किया। तदनन्तर अगले दिन वे लड़ने के लिये तैयार हो गये। उस समय घायल होने के कारण घावों से टपकते हुए रक्त वाले एवं चिन्ता तथा भय से दुर्योधन ने भीष्म पितामह से पूँछा—हे पितामह! आपकी सेना बड़ी भयङ्कर है, इसमें अनेक ध्वजाएँ हैं। इसकी व्यूहरचना भी बड़ी अच्छी तरह की गयी है; तिस पर भी इस व्यूह के भीतर घुस कर पाण्डवों के

चतुर महारथी इस सेना का संहार किये डालते हैं, और हम सब को मुग्ध कर, बड़ाई पाते हैं। हम लोगों के वज्रवत् दुर्भेद्य मकरव्यूह को भङ्ग कर वे हमारी सेना में घुस आये और कालदण्ड की तरह भयानक बाणों से भीमसेन ने मुझे घायल कर डाला। भीम को अत्यन्त कुपित देख, मेरा जी ठिकाने नहीं रहा और अभी तक मेरे मन को शान्ति नहीं मिली। अतः हे सत्यव्रतधारी! मैं उन पाण्डवों को आपकी सहायता से परास्त कर, मार डालना चाहता हूँ।

हे राजन्! जब आपके पुत्र ने ये वचन कहे और जब उसे क्रोध और चिन्ता से व्यग्र देखा, तब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महाबली भीष्म ने उससे यह कहा—हे वत्स! मुझसे जहाँ तक बन पड़ता है, मैं पाण्डवों की सेना में घुस कर और तुझे जिता कर, तुझे सुखी करना चाहता हूँ। तेरे पीछे मैं अपनी जान की भी कुछ परवाह नहीं करता; किन्तु सच बात तो यह है कि, पाण्डवों के पक्ष में लड़ने वाले योद्धा वास्तव में बड़े भयङ्कर वीर हैं। सभी अस्त्रविद्या में कुशल तथा युद्ध की विपत्तियों को सह लेने वाले हैं। तुझसे अप्रसन्न होने के कारण वे युद्ध के समय क्रोध रूपी विष को उगला करते हैं। वे लोग वीर और उद्धत होने के कारण सहज में जीते नहीं जा सकते; किन्तु हे वीर! मैं अपने प्राणों का दाँव लगा कर उनसे युद्ध करूँगा। तेरे पीछे मैं अपनी जान तक गँवाने को तैयार हूँ। तेरे लिये तो मैं क्या देवता और क्या असुर सब को भस्म कर डालूँगा। फिर इस शत्रु-सैन्य की तो बात ही क्या है? हे राजन्! मैं पाण्डवों के साथ लड़ूँगा, और सर्व प्रकार तेरा कल्याण करूँगा।

भीष्म जी के इन वचनों को सुन कर, दुर्योधन प्रसन्न हुआ और उसने अपनी समस्त सेना को समरभूमि में जाने की आज्ञा दी। उसकी आज्ञा होते ही हाथियों, घोड़ों और रथों से परिपूर्ण सेना विविध प्रकार के शस्त्रों से सुसज्जित हो रणभूमि की ओर प्रस्थानित हुई। जिस समय आपकी चतुरङ्गिणी सेना समरभूमि में जा खड़ी हुई, उस समय वह बहुत अच्छी

देख पड़ती थी। आपकी सेना के दल अस्त्र-शस्त्र-विशारद नरवीर योद्धाओं के अधीन थे। रथों, पैदल सैनिकों, गजों और अश्वारोहियों का ताँता बँधा हुआ था। उस समय लाल धूल इतनी उड़ी कि, बालसूर्य की किरणें ढक गयीं। गजों की पीठ पर पवन के झोकों से फहराती हुई रङ्ग बिरङ्गी ध्वजाएँ वैसी ही जान पड़ती थीं, जैसी मेघ में बिजली। पंक्तिबद्ध गजों की श्रेणियों से रणभूमि की शोभा बढ़ गयी थी। पूर्वकाल में देवताओं और दैत्यों द्वारा मथे गये महासागर के शब्द की तरह उस समय सैनिकों के धनुषों के टंकार जैसा शब्द हो रहा था। भयानक गजों, विविध रङ्गों एवं सैनिक विभागों से सम्पन्न एवं शत्रु संहार के लिये उद्यत आपकी सेना, युगान्त काल में छाये हुए मेघों जैसी जान पड़ती थी।

इक्यासीवाँ अध्याय

प्रथम धावा

सञ्जय ने कहा—विचारों में निमग्न एवं भरत-वंश-श्रेष्ठ दुर्योधन को हर्षित करने के लिये भीष्म जी उससे कहने लगे—मैं, द्रोणाचार्य, शल्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, विकर्ण, भगदत्त, शकुनि, विन्द, अनुविन्द, अपने योद्धाओं सहित बाल्हीकपति, त्रिगर्त्त देश का बलवान् राजा, अजेय मगधाधिपति, कोसलाधिपति, बृहद्बल, चित्रसेन, विविंशति आदि महारथियों तथा बड़ी बड़ी ध्वजाओं से युक्त सहस्त्रों रथियों, हमारे देश के सुरक्षित अश्वारोही सैनिकों, महोत्कट हाथियों नाना देशीय एवं विविध आयुधों को धारण करने वाले पैदल सैनिकों को जो मेरे पीछे जान देने को तैयार खड़े हैं, तथा अन्य समस्त योद्धाओं को यहाँ जो उपस्थित हैं; मेरी समझ में तो देवता भी नहीं जीत सकते। यद्यपि मैं तेरा हितैषी हूँ और इसी लिये मैं तुझसे तेरे हित की बातें कहता हूँ; तथापि साथ ही मुझे यह भी तुझे जता देना आवश्यक है कि,

मनुष्य तो है ही क्या, इन्द्रादि देवता भी पाण्डवों को नहीं जीत सकते। इसका प्रधान कारण यह है कि, पाण्डवों के सहायक श्रीकृष्णचन्द्र हैं। फिर पाण्डव स्वयं भी वासुदेव जैसे पराक्रमी हैं। यह सब होने पर भी मैं तेरे कथनानुसार ही काम करूँगा। मैं या तो पाण्डवों को जीत ही लूँगा अथवा पाण्डवों के हाथ से मुझे परास्त ही होना पड़ेगा।

भीष्म जी ने इन वचनों को कह, आश्वासन रूपी औषधि से दुर्योधन के हृदय का काँटा निकाला। इन वचनों से दुर्योधन के मन को कुछ कुछ शान्ति मिली। जब प्रभात हुआ; तब भीष्म जी ने सैन्यव्यूह रचना आरम्भ किया। मनुष्यश्रेष्ठ और व्यूहरचना में चतुर भीष्म ने स्वयं अपनी सेना का मण्डलव्यूह बनाया। फिर आवश्यकतानुसार सैनिकों को विविध शस्त्रों से सुसज्जित किया। प्रधान योद्धाओं, हाथियों और पैदल सैनिकों से वह व्यूह परिपूर्ण था। वह व्यूह कई सहस्र रथों से चारों ओर से घिरा हुआ था। ऋष्टि-तोमर-धारी अश्वारोहियों के बड़े बड़े दल, चारों ओर खड़े थे। प्रत्येक गज के निकट, सात सात रथी खड़े थे प्रत्येक रथ के पास सात सात घुड़सवार थे। फिर प्रत्येक अश्वारोही के पास दस दस धनुर्धर सिपाही खड़े थे। प्रत्येक धनुर्धर सैनिक के निकट दस दस ढाल-तलवार-धारी सैनिक थे। हे राजन्! इस प्रकार उस व्यूह में महारथियों से सुरक्षित आपका सैन्यदल, भीष्म जी की अधीनता में, लड़ने को समरक्षेत्र में जा उपस्थित हुआ। दस सहस्र अश्वारोही, दस सहस्र गजारोही तथा कवचधारी चित्रसेनादि आपके पुत्र भीष्म जी की रक्षा करने को उनके निकट खड़े थे। व्यूह बनाते समय ऐसा जान पड़ता था, मानों वे महाबली राजा लोग, भीष्म की रक्षा करने को खड़े हैं और भीष्म जी उनकी रक्षा कर रहे हैं। जब दुर्योधन कवच धारण कर, रथ पर सवार हुआ, तब उसकी वैसी ही शोभा हुई जैसी राजलक्ष्मी से युक्त इन्द्र की स्वर्ग में शोभा होती है। इतने में हे राजन्! आपके पुत्रों ने बड़ा कोलाहल मचाया। उधर रथों की घरघराहट तथा मारू बाजों का

शब्द होने लगा। भीष्म रचित मण्डलाकार व्यूह का मुख पश्चिम की ओर था। उसको भङ्ग करना शत्रुओं के लिये सरल काम न था। प्रत्युत वह शत्रुओं का संहार कर सकता था। हे राजन्! शत्रुओं के लिये दुर्भेद्य उस सैन्यव्यूह की समरभूमि में बड़ी शोभा हो रही थी। कौरवों के उस दुर्जेय मण्डलव्यूह को देख, धर्मराज युधिष्ठिर ने स्वयं अपनी सेना का वज्रव्यूह रचा। व्यूहबद्ध हो उभयपक्ष के सैन्यदल अपने निर्दिष्ट स्थानों पर आ डटे। उस समय समस्त अश्वारोहियों और रथियों ने एक साथ सिंहनाद किया। तदनन्तर एक दूसरे का व्यूह भङ्ग करने के उद्देश्य से शूरवीर योद्धा अपनी अपनी अधीनस्थ सेनाओं को साथ ले आगे बढ़े। द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद का और अश्वत्थामा ने शिखण्डी का सामना किया। दुर्योधन ने धृष्टद्युम्न का और मद्रराज ने नकुल और सहदेव का, उज्जैन के विन्द, अनुविन्द ने इरावान् का तथा अन्य समस्त कौरवपक्षीय राजाओं ने अर्जुन का सामना किया। दोनों ओर से युद्ध होने लगा। इस युद्ध में आगे बढ़ते हुए हृदीक के पुत्र को एवं चित्रसेन, विकर्ण तथा दुर्मर्षण को बलवान् भीम ने रोका। अभिमन्यु का और आपके पुत्रों का युद्ध आरम्भ हो गया। प्राग्ज्योतिष देश के राजा ने राक्षसोत्तम हिडिम्ब पर वैसे ही आक्रमण किया, जैसे एक हाथी दूसरे हाथी पर आक्रमण करता है। क्रुद्ध हो अलम्बुष ने ससैन्य खड़े हुए युद्ध दुर्मद सात्यकि पर आक्रमण किया। भूरिश्रवा की लड़ाई धृष्टकेतु के साथ होने लगी। धर्मराज युधिष्ठिर और शतायु का युद्ध हुआ। चेकितान के साथ कृपाचार्य की लड़ाई हुई। शेष अन्य समस्त राजा सावधान हो, महारथी भीष्म जी से जा भिड़े। शक्ति, तोमर, नाराच, गदा, परिघ आदि शस्त्रधारी कौरवपक्षीय योद्धा राजाओं ने चारों ओर से जब अर्जुन पर आक्रमण किया, तब क्रोध में भरे हुए अर्जुन ने श्रीकृष्ण से यह कहा—हे माधव! व्यूहरचना में निपुण पितामह भीष्म द्वारा व्यूहबद्ध खड़ी शत्रुसेना को तुम देखो। इन युद्धाभिलाषी बड़े भयङ्कर शूरों को भी तुम निहारो। देखो, भाइयों सहित त्रिगर्तराज खड़े हैं।

मुझसे लड़ने के लिये ये जो समस्त वीर मैदान में आ कर खड़े हुए हैं, मैं आज इन सब का संहार करूँगा। यह कह और धनुष की टंकार अर्जुन ने उन राजाओं पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की।

जैसे वर्षाकालीन मेघ जलवृष्टि कर तालाबों को जल से परिपूर्ण कर देते हैं, वैसे ही कौरव पक्षीय राजाओं ने भी बाणवृष्टि कर, अर्जुन को ढक दिया। जब उस बाणवृष्टि से श्रीकृष्ण और अर्जुन आच्छादित हो गये; तब आपकी सेना में बड़ा कोलाहल हुआ। श्रीकृष्ण और अर्जुन की इस दशा को देख, देवगण, देवर्षिगण, गन्धर्वगण और नागों को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस पर कुपित हुए अर्जुन ने इन्द्रास्त्र का प्रयोग किया। अर्जुन ने शत्रुओं की बाण-वृष्टि को अपने बाणों से निवृत्त किया। अर्जुन के इस पराक्रम को देख, सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। सामने खड़े हुए सहस्रों राजा, घोड़े और गजों में से एक भी ऐसा न था, जो अर्जुन के बाणप्रहार से घायल न हुआ हो। हे राजन्! धनञ्जय ने सामने खड़े हुए सहस्रों राजाओं, अश्वारोहियों और गजपतियों में से किसी को दो बाणों से, और किसी को तीन बाणों से घायल किया। जब अर्जुन ने उनका इस तरह संहार करना आरम्भ किया, तब वे सब भीष्म जी के शरण हुए। तब अथाह जल में डूबते हुए उन राजा योद्धाओं के लिये भीष्म जी नौका रूप हो गये। जब उन राजाओं में से एक एक कर बहुत राजे मारे गये और रणभूमि में लोट गये, तब आपका सैन्यव्यूह भङ्ग हो गया और सैन्यदल में बड़ी खलबली मची। उस समय ऐसा जान पड़ा, मानों पवन के झकोरों से समुद्र क्षुब्ध हो गया हो।

बयासीवाँ अध्याय

शङ्खवध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब इस प्रकार संग्राम चल रहा था—

और सुशर्मा रणक्षेत्र से हट गया था और अन्य वीर योद्धा भी अर्जुन के सामने से हट गये थे तथा समुद्र जैसी आपकी विशाल सेना में खलबली मची हुई थी, तब बड़ी फुर्ती से भीष्म जी ने अर्जुन के निकट जा उनका सामना किया। उधर अर्जुन का पराक्रम देख और बड़ी हड़बड़ी में समस्त राजाओं से मिल कर और उन सब के सामने सेना के बीच खड़े सुशर्मा को प्रसन्न करने के लिये, दुर्योधन कहने लगा—कौरवश्रेष्ठ भीष्म जी अपने प्राणों की कुछ भी परवाह न कर, बड़े उत्साह के साथ अर्जुन से लड़ने के लिये उसके सामने जा रहे हैं। अतः आप सब लोग भी अपनी अपनी सेनाओं सहित इनकी रक्षा के लिये इनके साथ गमन करो और इनकी रक्षा करो। यह सुन और "बहुत अच्छा" कह वे सब सेनाएँ भीष्म पितामह के निकट जा पहुँची। यह देख, भीष्म जी, अर्जुन से भिड़ गये। श्वेतवाहन युक्त एवं कपिध्वजा से शोभित विशाल रथ पर सवार धनञ्जय को लड़ने के लिये सामने आते देख, आपकी सेना भयभीत हो कोलाहल करने लगी। अपर सूर्य की तरह प्रकाशवान् श्रीकृष्णचन्द्र को हाथ में रासें थामें हुए देख, उनकी ओर आँख उठाने का भी किसी वीर योद्धा को साहस न हुआ। इस प्रकार श्वेतवाहन और श्वेत धनुषधारी भीष्म जी को शुक्र की तरह जाज्वल्यमान देख, पाण्डवपक्षीय किसी योद्धा को देखने का साहस न हुआ। भीष्म को घेरे हुए अपने बलवान भाइयों और पुत्रों सहित दुर्योधन के अतिरिक्त त्रिगर्त राजा तथा अन्य महाबली योद्धा भी खड़े हुए थे। इस समर में द्रोण ने राजा विराट को घायल किया। फिर उसके रथ की ध्वजा और उसके हाथ का धनुष भी काट कर नीचे गिरा दिया। तब राजा विराट ने दूसरा एक दृढ़ धनुष उठा बड़ी फुर्ती से विषधर सर्प जैसे अनेक बाण मारे। इन बाणों में से तीन बाणों से द्रोण को और चार से उनके चारों घोड़ों को घायल कर डाला। फिर एक बाण से द्रोण के रथ की ध्वजा को काट, पाँच बाण मार उनके सारथि को यमालय भेज दिया। तदनन्तर राजा विराट ने द्रोण के हाथ का धनुष भी काट कर गिरा दिया। इस पर द्रोण

बहुत क्रुद्ध हुए और दूसरा धनुष ले उन्होंने दृढ़ पर्व आठ बाण मार राजा विराट के घोड़ों को और एक बाण मार, उसके सारथि को मार डाला। तब तो राजा विराट अश्वों और सारथि से हीन रथ को छोड़, अपने पुत्र शङ्ख के रथ पर जा चढ़ा। तदनन्तर पिता और पुत्रों ने मिल कर घोर बाण-वृष्टि की और द्रोणाचार्य को रोकना चाहा। इतने में अत्यन्त कुपित द्रोण ने सर्पवत् विषैला एक बाण राजकुमार शङ्ख की छाती में मारा। वह बाण शङ्ख की छाती का रक्त पान कर, पृथिवी में घुस गया। उसका कवच रक्त से तर हो गया। पिता के आगे धनुष बाण पटक शङ्ख भूमि पर गिर पड़ा। इस पर मुख फाड़े काल की तरह द्रोणाचार्य को देख, राजा विराट झटपट समरभूमि से भाग गया। तब द्रोण ने पाण्डवों की सेना के सैकड़ों सहस्रों सैनिक वीरों का संहार कर, उसे छिन्न भिन्न कर डाला। हे राजन्! शिखण्डी ने फौलादी तीन बाण मार, अश्वत्थामा के भ्रूमध्य भाग को विदीर्ण कर डाला। रथियों में सिंह द्रोणनन्दन के माथे में चुभे हुए तीन बाणों से उसकी वैसी ही शोभा हुई, जैसी तीन शृङ्ग वाले सुमेरु की होती है। इस पर अत्यन्त कुपित हो अश्वत्थामा ने पल भर में शिखण्डी की ध्वजा काटी, शस्त्र काटे और उसके सारथि तथा घोड़ों को मार डाला। तब रथियों में श्रेष्ठ शिखण्डी रथ से कूद पड़ा और वह शत्रुतापन शिखण्डी हाथ में एक पैनी तलवार और ढाल ले, बाजपक्षी की तरह चारों ओर मड़राने लगा। अतः शिखण्डी को मारने का दाँव ही अश्वत्थामा को न मिला। इससे लोगों को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। तदनन्तर कोप में भर अश्वत्थामा ने अगणित बाण छोड़े। अश्वत्थामा की बाणवृष्टि को शिखण्डी ने अपनी पैनी तलवार से नष्ट कर डाला। इस पर अश्वत्थामा ने शिखण्डी की सौ फुल्लियों वाली चमचमाती ढाल और तलवार को काट डाला।

हे राजन्! तदनन्तर बहुत से पैने बाण छोड़ कर उसका शरीर भी क्षतविक्षत कर डाला। किन्तु अश्वत्थामा के बाण से कटी एवं प्रलयाग्नि की तरह कान्ति वाली, अग्निज्वाला निकालते हुए सर्प की तरह, वह तलवार

शिखण्डी ने बड़ी फुर्ती से उस पर फेंकी ; किन्तु अश्वत्थामा ने उस तलवार के टुकड़े टुकड़े कर डाले । अश्वत्थामा द्वारा पैने बाणों से घायल शिखण्डी दौड़ कर सात्यकि के रथ पर चढ़ गया । उस ओर अत्यन्त कोप में भरे महाबली सात्यकि ने अलम्बुप नामक राक्षस को पैने बाणों से घायल किया, तब अलम्बुप ने एक अर्धचन्द्राकार बाण मार सात्यकि का धनुप काट डाला और उसे बाणों से घायल किया । फिर राक्षसी माया रच सात्यकि को बाणों से ढक दिया । तब तो सात्यकि ने जो पराक्रम प्रदर्शित किया, उसे देख हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ । पैने बाणों से घायल होने पर भी सात्यकि विचलित नहीं हुआ और उसने अर्जुन से प्राप्त इन्द्रास्त्र अपने धनुप पर रखा। फिर उसका प्रयोग कर सात्यकि ने अलम्बुप की राक्षसी माया नष्ट कर डाली। जैसे वर्षाकाल में मेघ जल-धाराओं से पर्वत को ढक देते हैं, वैसे ही सात्यकि ने मारे बाणों के अलम्बुप को ढक दिया । इस प्रकार यशस्वी सात्यकि से पीड़ित अलम्बुप भयभीत हो रणक्षेत्र से भाग गया । इन्द्र से भी अजेय अलम्बुष को जीत कर, सात्यकि ने आपके योद्धाओं के सामने ही बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया । तदनन्तर सात्यकि ने आपके अन्य योद्धाओं पर प्रहार किया और वे भी भयभीत हो भाग खड़े हुए । इतने में धृष्टद्युम्न ने दृढ़ पर्वों वाले बाणों के प्रहार से दुर्योधन को चारों ओर से घेर लिया ; किन्तु हे राजेन्द्र ! दुर्योधन ज़रा भी न घबड़ाया, प्रत्युत उसने पहले साठ और फिर तीस बाण छोड़ धृष्टद्युम्न पर प्रहार किया । यह देख सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ । पाण्डवों के सेनापति धृष्टद्युम्न ने क्रुद्ध हो दुर्योधन के हाथ का धनुष काट डाला । साथ ही दुर्योधन के चारों घोड़ों को उसने मार डाला और बड़े पैने बाणों से दुर्योधन को भी घायल कर डाला । तब आपका पुत्र अश्वहीन रथ से कूद पड़ा और हाथ में नंगी तलवार ले धृष्टद्युम्न की ओर लपका ; किन्तु इस अवसर में राज्यकामुक महाबली शकुनि ने सब के सामने आपके पुत्र को झटपट अपने रथ में बिठा लिया । शत्रु के वीरों का नाश करने

वाला धृष्टद्युम्न दुर्योधन को परास्त कर, आपकी सेना को वैसे ही नष्ट करने लगा, जैसे इन्द्र, दैत्यों का संहार करते हैं।

इधर कृतवर्मा ने भीमसेन को बाणों से वैसे ही आच्छादित किया जैसे मेघ, सूर्य को आच्छादित कर देते हैं। इस पर भीम मुसक्याया और फिर क्रुद्ध हो अतिरथी भीम ने कृतवर्मा को बाणों से घायल किया; किन्तु घायल होने पर भी सात्वतवंशी एवं सत्यवादी कृतवर्मा विचलित न हुआ। वह भी भीम को बाणों से पीड़ित करने लगा। तब महाबली भीम ने कृतवर्मा के रथ की ध्वजा काट डाली। साथ ही स्वयं कृतवर्मा को, उसके रथ के घोड़ों को तथा उसके सारथि को भी घायल किया। कृतवर्मा के अङ्ग क्षत विक्षत हो गये। सब के सामने कृतवर्मा दौड़ कर, आपके साले वृषक के रथ पर जा बैठा। अतः वह मारा न जा सका और बच गया। तब दण्डधारी यमराज की तरह भीमसेन भी अत्यन्त रोष में भर, आपकी सेना का संहार करने लगा।

तिरासीवाँ अध्याय

शल्य की हार

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! पाण्डवों तथा मेरे पुत्रों में जो द्वन्द्वयुद्ध हुए थे, उनका वृत्तान्त तूने मुझे सुनाया; किन्तु तूने आज तक यह कभी न कहा कि, मेरे पक्ष के योद्धाओं को हर्ष हुआ, प्रत्युत तू तो सदा यही सुनाया करता है कि, पाण्डवों की जीत हुई और पाण्डव हर्षित हुए। हे सञ्जय! तू जो सदा मुझे मेरे पुत्रों के पराजय का वृत्तान्त सुनाया करता है और कहा करता है कि, वे घबड़ा गये उनका उत्साह भङ्ग हो गया सो यह सब निश्चय ही अवश्यंभावी बातें हैं।

सञ्जय ने कहा—यद्यपि आपके पक्ष के योद्धा अपनी शक्तिभर बड़े

उत्साह के साथ युद्ध करते हैं और अपना पौरुष प्रदर्शित करते हैं; तथापि जैसे सुरनदी गङ्गा का मधुर जल, लवण सागर के समागम से खारा हो जाता है। वैसे ही पाण्डवों के पुरुषार्थ से मिल आपके पक्ष के लोगों का पौरुष व्यर्थ हो जाता है। अतः अपनी शक्ति भर उद्योगपूर्वक निज पराक्रम प्रदर्शित करने वाले आपके पक्ष के योद्धाओं को दोष देना उचित नहीं। हे राजन्! आपके और आपके पुत्रों के अपराध ही से, यमराज के लोक की जनसंख्या बढ़ाने वाला पृथिवी का यह घोर नाशकाल उपस्थित हुआ है। आप ही के दोष का यह फल है। अतः इसके लिये शोक करने से लाभ ही क्या है? यह तो सम्भव नहीं कि राजा लोग, सर्वथा अपने प्राणों की रक्षा कर सकें। इस धराधाम के राजा लोग जो सदा शत्रुओं से लड़ा करते हैं, वे सत्कर्म द्वारा प्राप्त स्वर्गादि लोकों को प्राप्त करने की कामना से करते हैं। हे राजन्! मध्यान्हकाल उपस्थित होने के पूर्व ही जनक्षय होने लगा। अतः आप देवासुर संग्राम की तरह, इस युद्ध का विस्तृत वर्णन मन को एकाग्र कर, सुनिये। महाबली और युद्धदुर्मद उज्जैन के दोनों राजकुमारों ने आक्रमणकारी इरावान का सामना किया। उन दोनों पक्ष वालों का सामना होते ही रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। उन देवोपम सुन्दर उभय राजकुमारों को, इरावन ने पैने बाणों से घायल करना आरम्भ किया। शत्रुनाशकारी एवं परस्पर बदला लेने को उत्सुक इन दोनों पक्षों के योद्धाओं में कोई भी कम बढ़ नहीं जान पड़ता था। कुपित हो इरावान ने अनुविन्द के रथ के चारों घोड़े चार बाण मार, मार डाले। फिर भल्ल बाण मार उसके रथ की ध्वजा और हाथ का धनुष भी काट डाला। यह देख सब लोग विस्मित हुए। इतने में अनुविन्द अपना बेकाम रथ त्याग अपने भाई विन्द के रथ में जा बैठा, फिर एक अति दृढ़ धनुष हाथ में लिया। एक रथ पर सवार उन दोनों भाइयों ने इरावान पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की। उनके सुवर्णभूषित वेगवान बाणों से आकाश ढक गया और इरावान भी बाणजाल से आच्छादित हो गया। इस पर इरावान ने उज्जैन के राजकुमारों के सारथि को मार डाला

जब उनका सारथि निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा, तब उनके रथ के घोड़े भड़क गये और रथ को ले भाग गये।

हे राजन् ! इस प्रकार राजकुमार विन्द और अनुविन्द को, नागराज की पुत्री के पुत्र इरावान ने हरा दिया और वह अनन्त पराक्रम प्रदर्शित करता हुआ, आपकी सेना को बुरी तरह पीड़ित करने लगा। उस समय बाणप्रहारों से भयभीत आपकी सेना, विषपान किये हुए पुरुष की तरह इधर उधर भाग खड़ी हुई।

एक ओर रणक्षेत्र में सूर्यवत् चमचमाती ध्वजा से युक्त रथ पर सवार हो घटोत्कच भगदत्त से जूझ रहा था। तारकासुर को हराने के लिये जैसे देवराज इन्द्र अपने ऐरावत गज पर सवार हो समरभूमि में गये थे, वैसे ही प्राग्ज्योतिष-नरेश भगदत्त ने गज पर सवार हो हिडिम्ब पर आक्रमण किया। उस समय दर्शक देवताओं, गन्धर्वों और ऋषियों को घटोत्कच और भगदत्त में किसी प्रकार की कमी या विशेषता नहीं देख पड़ती थी। जिस प्रकार देवराज इन्द्र ने दानवों को भयभीत कर दिया था, वैसे ही भगदत्त ने पाण्डवों को त्रस्त कर डाला। भगदत्त की मार से घबड़ाये हुए पाण्डवों की सेना के योद्धागण रक्षक न पा कर इधर उधर भागने लगे। जब पाण्डवों के योद्धा हताश हो भागने लगे, तब अकेला घटोत्कच ही अपने रथ पर अटल भाव से आसीन देख पड़ता था। पाण्डवों के योद्धाओं में भगदड़ पड़ने पर, आपकी सेना में बड़ा कोलाहल हुआ। इतने में घटोत्कच ने भगदत्त को बाणों की वृष्टि कर वैसे ही ढक दिया, जैसे मेघों की जलवृष्टि से मेरु पर्वत आच्छादित हो जाता है; किन्तु भगदत्त ने घटोत्कच के बाणों को निवारण कर, उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग बाणों से छेद डाले। तिस पर भी घटोत्कच अटल अचल पर्वत की तरह अटल बना रहा और ज़रा भी विचलित न हुआ। यह देख भगदत्त ने एक साथ चौदह तोमर घटोत्कच पर फेंके; किन्तु घटोत्कच ने उन सब को काट कर फेंक दिया। फिर उसने भगदत्त के सत्तर बाण मारे। इस पर भगदत्त मुसक्याया और उसने बाण चला घटोत्कच के रथ के घोड़े मार डाले; किन्तु

मरे हुए घोड़ों के रथ पर बैठे ही बैठे घटोत्कच ने एक भयङ्कर शक्ति भगदत्त के हाथी पर छोड़ी ; किन्तु भगदत्त ने बीच ही में उस शक्ति के तीन टुकड़े कर डाले। वह शक्ति टुकड़े टुकड़े हो भूमि पर गिर पड़ी। यह देख, घटोत्कच रणक्षेत्र से वैसे ही भागा, जैसे देवासुर संग्राम में इन्द्र के सामने से महा-दैत्य नमुचि भागा था। प्रसिद्ध पुरुषार्थी एवं यम और वरुण से भी अजेय घटोत्कच को परास्त कर भगदत्त अपने हाथी पर बैठा बैठा पाण्डवों की सेना का संहार करने लगा। जैसे वनैला हाथी पद्मिनी को कुचल डाले, वैसे ही भगदत्त ने पाण्डवों की सेना को कुचला।

मद्रराज की लड़ाई, उनकी बहिन माद्री के उभय पुत्रों—नकुल और सहदेव से हो रही थी। मद्रराज ने नकुल और सहदेव को बाणों से आच्छा-दित कर दिया। तब सहदेव ने भी अपने मामा को बाणवृष्टि से वैसे ही ढक दिया, जैसे सूर्य को मेघ ढक देते हैं। अपने भाँजे के शरजाल से आच्छादित मद्रराज मन ही मन अत्यन्त हर्षित हुआ। साथ ही नकुल और सहदेव भी अपनी माता के सम्बन्धी की तरह स्वयं भी अत्यन्त हर्षित हुए। तदनन्तर मद्रराज ने चार बाण छोड़ नकुल के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। तब नकुल अपने रथ को छोड़ अपने भाई सहदेव के रथ पर जा बैठा। तदनन्तर एक ही रथ पर सवार उन युगल भ्राताओं ने धनुष तान तान कर मद्रराज पर बाणवृष्टि करनी आरम्भ की, किन्तु शरजाल से आच्छादित होने पर भी मद्रराज ज़रा भी विचलित न हुआ और पर्वत की तरह अटल अचल बना रहा। उसने हँसते हँसते अनायास उस शरवृष्टि को हटा दिया। इस पर कोप में भर पराक्रमी सहदेव ने एक बाण धनुष तान कर मद्रराज पर छोड़ा, वह गरुड़ अथवा पवन के वेग के समान वेगवान तीर मद्रराज के शरीर को फोड़ आरपार निकल भूमि पर गिर पड़ा। इस प्रकार बाण से पीड़ित मद्रराज मूर्छित हो अपने रथ में गिर पड़ा। यह देख उसका सारथि रथ को भगा, रणभूमि से उसे बाहिर ले गया। मद्रराज के रथ को पीछे लौटते देख, हे राजन् ! आपके अन्य समस्त योद्धाओं का उत्साह नष्ट

हो गया। वे मन ही मन कहने लगे—मद्रराज मारे गये। उधर मामा को परास्त कर नकुल और सहदेव हर्षित हो सिंहनाद और शङ्खध्वनि करने लगे। वे दोनों भाई, हे राजन्! आपकी सेना में वैसे ही घुसे, जैसे इन्द्र और उपेन्द्र दैत्यसैन्य में घुसते हैं।

चौरासीवाँ अध्याय

युधिष्ठिर का रोष

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर जब मध्यान्हकाल उपस्थित हुआ, तब युधिष्ठिर ने श्रुतायु को देख, अपना रथ उसकी ओर बढ़वाया। फिर नौ तीक्ष्ण बाण मार, उसे घायल कर दिया। शत्रुनाशी श्रुतायु पर धर्मराज ने बाण छोड़े। धर्मराज के बाणों को निवारण कर, महारथी श्रुतायु ने धर्मराज पर सात बाण फेंके। वे मर्मान्तक जीवापहारी बाण धर्मराज के शरीर में घुस गये और रुधिर पीने लगे। तब धर्मराज ने एक वराहकर्ण बाण तान कर राजा श्रुतायु की छाती में मारा, जिससे उसकी छाती विदीर्ण हो गयी। फिर एक दूसरा बाण मार, उसके रथ की ध्वजा काट कर फेंक दी। यह देख श्रुतायु ने पुनः सात बाण चला युधिष्ठिर को पुनः विद्ध किया। जैसे प्रलयकालीन अग्नि प्रज्वलित हो, समस्त प्राणियों को भस्म कर डालता है, वैसे ही धर्मराज भी अत्यन्त कुपित हुए।

हे राजन्! तब तो देवता, गन्धर्व और राक्षस आदि धर्मराज को कुपित देख घबड़ा गये। उस समय युधिष्ठिर ने प्रलयकालीन सूर्य की तरह उग्र रूप धारण किया। इस पर समस्त प्राणियों ने समझा कि, धर्मराज आज तीनों लोकों को भस्म कर डालेंगे। हे राजन्! आपकी सेना के समस्त योद्धा अपने जीवन की आशा से निराश हो गये, किन्तु धर्मराज ने धैर्य धारण कर अपना क्रोध शान्त किया और बाण छोड़ श्रुतायु के विशाल धनुष को काट डाला। फिर समस्त सैनिकों के सामने ही धर्मराज ने श्रुतायु की छाती बाणों से

विदीर्ण कर डाली। फिर बड़ी फुर्ती से उन्होंने श्रुतायु के घोड़े मारे और सारथि का वध किया। तब धर्मराज के पराक्रम से घबड़ा कर श्रुतायु अश्व-हीन रथ को छोड़ समरक्षेत्र से भाग गया। महाधनुर्धर श्रुतायु को भागते देख, दुर्योधन की समस्त सेना भाग खड़ी हुई, तब यमराज की तरह क्रुद्ध हो युधिष्ठिर ने आपकी सेना का संहार करना आरम्भ किया।

एक तरफ वृष्णिवंशी चेकितान ने कृपाचार्य को समस्त सैनिकों के सामने ही बाणजाल से ढक दिया। इस पर अपने बाणों से चेकितान के बाणजाल को निवारण कर कृपाचार्य ने उसको घायल किया। फिर एक बाण से आचार्य ने चेकितान के धनुष को काट दूसरे बाण से उसके सारथि को मार डाला। तदनन्तर कृप ने उसके घोड़ों को मार, उसके पृष्ठरक्षकों के दो सारथियों का वध किया, तब तो चेकितान गदा हाथ में ले रथ से कूद पड़ा। उसने झपट कर अपनी वीरनाशिनी गदा के प्रहार से कृपाचार्य के चारों घोड़ों को मार उनके सारथि का भी संहार कर डाला। तब कृप ने भूमि पर खड़े ही खड़े, सोलह बाण चेकितान पर छोड़े। वे सब बाण चेकितान के कवच को फोड़ पृथिवी में घुस गये, तब चेकितान ने कृपाचार्य का वध करने के लिये उन पर अपनी भयङ्कर गदा चलायी। उस चमचमाती गदा को कृपाचार्य ने सहस्रों बाण चला कर रोका। उस समय चेकितान ने म्यान से तलवार निकाली और हाथ में नंगी तलवार ले वह कृपाचार्य की ओर झपटा। अब उन दोनों पराक्रमी महारथियों में खड्गयुद्ध होने लगा। कुछ देर तक दोनों पैतरेबाज़ी करते रहे, अन्त में एक दूसरे के खड्ग प्रहार से सब के सामने मूर्च्छित हो दोनों योद्धा भूशायी हो गये। यह देख चेकितान का मित्र कर्कश दौड़ा और चेकितान के निकट जा, सब के सामने उसे अपने रथ पर बिठा लिया। इसी प्रकार हे राजन्! आपके साले शकुनि ने बड़ी फुर्ती से आचार्य कृप को अपने रथ पर चढ़ा लिया।

हे राजन्! धृष्टकेतु ने कोप में भर भूरिश्रवा की छाती में नौ बाण मारे। जैसे मध्यान्हकाल में सूर्य अपनी प्रखर रश्मियों से शोभायमान होते हैं, वैसे

ही भूरिश्रवा भी उन बाणों से शोभित हुआ। तब भूरिश्रवा ने बाण मार धृष्टकेतु के घोड़ों के तथा सारथि को मार, उसे रथहीन कर दिया और बाणजाल से उसे ढक दिया। तब महाबली धृष्टकेतु उस रथ को छोड़ शतानीक के रथ पर जा बैठा।

हे राजन्! आपके पुत्र चित्रसेन, विकर्ण और दुर्मर्षण ने सुभद्रानन्दन अभिमन्यु का सामना किया। आपके तीनों पुत्रों के साथ अभिमन्यु का युद्ध वैसे ही हुआ, जैसा युद्ध वात, पित्त और कफ का शरीर के साथ होता है। जब आपके तीनों पुत्रों को अभिमन्यु ने रथहीन कर डाला; तब उसे हठात् भीमसेन की प्रतिज्ञा का स्मरण हो आया। अतः अभिमन्यु ने आपके इन तीनों पुत्रों को जान से नहीं मारा। इतने में देवताओं से भी अजेय भीष्म पितामह को चतुरङ्गिणी सेना को साथ ले, आपके पुत्रों को बचाने के लिये अभिमन्यु की ओर जाते देख, अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि, जहाँ वे बहुत से रथी देख पड़ते हैं, वहीं तुम मेरे रथ को शीघ्र ले चलो, क्योंकि वे सब अस्त्र-विद्या-विशारद और युद्धाभिलाषी हैं। अतः जिस प्रकार वे मेरी सेना का संहार न कर पावें उसी प्रकार तुम मेरे रथ को ले चलो। जब परम पराक्रमी अर्जुन ने श्रीकृष्ण से ये वचन कहे, तब श्रीकृष्ण ने रथ के श्वेत रंग के घोड़ों को उसी ओर हाँका। क्रुद्ध अर्जुन को अपनी ओर आते देख, आपकी सेना ने बड़ा कोलाहल मचाया। अर्जुन ने भीष्म के रक्षक समस्त राजाओं के निकट पहुँच, उनके प्रधान योद्धा सुशर्मा से कहा—इस
के प्रधान हो और हम लोगों के चिरकालीन शत्रु हो। मैं तुम्हें भली भाँति जानता हूँ। तुम्हें आज अपनी अनीति का कड़ुआ फल चखना पड़ेगा। आज मैं तुम्हें तुम्हारे मृत पिता के निकट पठाऊँगा। अर्जुन के इन कठोर वचनों को सुन कर भी सुशर्मा चुप रहा—कुछ भी न बोला। उसने आपके पुत्रों को तथा अनेक राजाओं को साथ ले, अर्जुन पर चारों ओर से आक्रमण किया। मेघ जैसे सूर्य को ढक ले, वैसे ही सुशर्मा ने अर्जुन को शरजाल से छिपा दिया।

हे राजन् ! तदनन्तर आपके पुत्रों के साथ पाण्डवों का महाभयङ्कर युद्ध हुआ, जिसमें पानी की तरह रक्त प्रवाहित हुआ ।

पचासीवाँ अध्याय

चित्रसेन का रथभङ्ग

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब आपके पक्ष के योद्धाओं ने अर्जुन को इस प्रकार बाणों से पीड़ित किया, तब पैर से दबे हुए सर्प की तरह उसने लंबी लंबी साँसे ले बाण पर बाण छोड़े । उसने आक्रमणकारी उन महारथियों के धनुष काट डाले, एक क्षण में उन समस्त राजाओं के धनुषों को काट अर्जुन ने उन सब का संहार करने की इच्छा से, एक साथ उन सब को बाणों से विद्ध कर डाला । इससे यह हुआ कि किसी का शरीर तो क्षत विक्षत हो वह लोहूलुहान हो गया और बहुत से महारथियों के कवच टुकड़े टुकड़े हो गये । किसी का सिर कट कर भूमि पर गिर पड़ा और कोई कोई अर्जुन के बाणों से मारे जा कर, विचित्र ढंग से नष्ट हो गये । वे सब के सब एक साथ ही यमालय को सिधार गये । उन राजपुत्रों को संग्राम में नष्ट होते देख, उनके बत्तीस पृष्ठरक्षक योद्धा और त्रिगर्त्तराज सुशर्मा ने रथ पर सवार हो अर्जुन का सामना किया । उन लोगों ने अर्जुन के रथ को चारों ओर से घेर लिया । फिर वे धनुषों को टंकारते हुए अर्जुन के ऊपर चारों ओर से वैसे ही बाण वृष्टि करने लगे, जैसे मेघ पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं । यशस्वी अर्जुन ने उन लोगों के बाणप्रहार से पीड़ित और कुपित हो कर, शिला पर घिसे और तेल से साफ किये हुए साठ तीरों से पृष्ठरक्षक वीरों को मार डाला ।

हे राजन् ! इस प्रकार उन सब महारथी योद्धाओं को मार और आपकी समस्त सेना को परास्त कर, हर्षितमना अर्जुन भीष्म का वध करने को, उनकी ओर लपके । अपने बन्धु बान्धवों का अर्जुन द्वारा नाश किया जाना

देख, त्रिगर्त्तराज सुशर्मा ने पहले पराजित समस्त राजाओं को आगे कर अर्जुन का वध करने की इच्छा से उनके सामने गमन किया। त्रिगर्त्तराज तथा अन्य राजाओं को अर्जुन पर आक्रमण करते देख, शिखण्डी आदि पाण्डवपक्षीय वीरों ने अर्जुन की रक्षा के लिये, अस्त्र शस्त्र ले, अर्जुन के निकट गमन किया। भीष्म के निकट जाते हुए अर्जुन ने सुशर्मा आदि को पुनः अपने सामने आते देख, मारे बाणों के उन सब को भगा दिया। तदनन्तर अर्जुन पुनः बड़ी तेज़ी से भीष्म की ओर जाने लगे। इतने में दुर्योधन और सिन्धुराज जयद्रथ ने अर्जुन का सामना किया। तब मुहूर्त्त भर उन दोनों से भी लड़ और दोनों को परास्त कर, अर्जुन पुनः भीष्म की ओर जाने लगे।

हे राजन्! इसी समय मद्रराज के साथ लड़ना त्याग, धर्मराज युधिष्ठिर भी नकुल और सहदेव को अपने साथ ले, भीष्म से लड़ने के लिये आगे बढ़े। पाण्डवों और उनके साथी चुने हुए वीरों से आक्रान्त होने पर भी गङ्गानन्दन भीष्म ज़रा भी न घबड़ाये। इतने में महापराक्रमी जयद्रथ ने पाण्डव वीरों के धनुष काट डाले, महाबली दुर्योधन क्रोध रूपी विष से पूर्ण हो, युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव को अग्नितुल्य चमचमाते बाणों से विद्ध करने लगा। जैसे दैत्यों ने मिल कर देवताओं को विद्ध किया था, वैसे ही कृप, शल्य और चित्रसेन ने अत्यन्त क्रुद्ध हो, पाण्डवों को बाणों से विद्ध किया।

हे राजन्! अजातशत्रु, धर्मराज युधिष्ठिर ने जब देखा कि, भीष्म के बाण से शिखण्डी का धनुष कट गया है और वह समरभूमि से भागा जाता है, तब उन्हें बड़ा क्रोध चढ़ा और उन्होंने उससे यह कहा कि, हे महावीर द्रुपद के पुत्र! तूने तो अपने पिता के सामने मुझसे यह प्रतिज्ञा की थी कि, मैं सचमुच, सूर्य जैसे चमचमाते बाणों से भीष्म पितामह का संहार करूँगा। अतः इस समय भीष्म को रण में नष्ट किये बिना, तेरी वह प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं हो सकती। अतः तू वह काम कर, जिससे

तेरी प्रतिज्ञा झूठी न पड़े। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर तू अपने धर्म, यश और कुल की नामवरी की रक्षा कर। देख, सर्वभूत-क्षय-कारी यमराज की तरह भीष्म क्षण भर में मेरी सारी सेना का नाश किये डालते हैं। तू भीष्म द्वारा कटे हुए धनुष को ले और अपने सहोदर भ्राताओं को छोड़ कहाँ भागा जाता है? तुझे ऐसा कार्य करना शोभा नहीं देता। जान पड़ता है भीष्म को अत्यन्त बलवान समझ और अपनी सेना को तितर बितर होते देख, तू डर गया है, क्योंकि तेरा चेहरा उतर गया है; किन्तु इस समय तो अर्जुन, भीष्म से लड़ने जा रहा है। क्या तुझे अर्जुन का बल पराक्रम विदित नहीं है, फिर तू इस संसार में एक विख्यात वीर हो, तू भीष्म से डरता क्यों है?

हे राजन्! धर्मराज के इन रूखे और अर्थभरे वचनों को सुन और उसे अपने लिये हितकर उपदेश मान शिखण्डी लौटा और भीष्म की ओर उसने गमन किया। जब शल्य ने देखा कि, शिखण्डी बड़ी तेज़ी से भीष्म की ओर लपका हुआ जा रहा है, तब उसने शिखण्डी को अपने भयङ्कर अस्त्रों शस्त्रों से रोकना चाहा। किन्तु महाधनुर्धर इन्द्र के समान पराक्रमी शिखण्डी, प्रलयकालीन अग्नि की तरह चमचमाते उन अस्त्रों को देख कर, ज़रा भी न घबड़ाया; किन्तु वह अपने प्रचण्ड बाणों से उन अस्त्रों शस्त्रों को निवारण करने के लिये खड़ा हो गया। शिखण्डी ने शल्य के चलाये आग्नेयास्त्र को वारुणास्त्र चला कर व्यर्थ कर दिया। पृथिवी तल के समस्त वीर योद्धाओं ने तथा आकाशस्थित देवताओं ने आग्नेयास्त्र को वारुणास्त्र से तथा सैनिकों को विफल होते देखा।

हे राजन्! इतने में अत्यन्त पराक्रमी भीष्म ने, युधिष्ठिर के विचित्र धनुष को तथा उनकी ध्वजा को काट डाला और उन्होंने बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। तब धर्मराज को भयभीत देख कर, भीम हाथ में गदा ले, पाँव प्यादे ही जयद्रथ पर लपका। यह देख जयद्रथ ने यमदण्ड के समान भयङ्कर एवं अत्यन्त पैने बाणों से भीम को विद्ध किया; किन्तु

बड़े वेग से जाते हुए भीम ने उन बाणों के प्रहार को कुछ भी न गिना और क्रोध में भर भीम ने जयद्रथ के रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। यह देख, आपका पुत्र चित्रसेन क्रोध में भर, हाथ में धनुष ले और रथ पर सवार हो, भीम का वध करने को उस पर झपटा। तब गर्जते हुए भीम ने चित्रसेन के रथ के निकट पहुँच, उस पर गदा फेंकी। मानव-नाशिनी उस महाघोर गदा को देख, समस्त कौरव मारे डर के वहाँ से हट गये; किन्तु उस गदा को अपनी ओर आते देख, चित्रसेन ज़रा भी न डरा; वह हाथ में ढाल तलवार ले, झट अपने रथ से कूद पड़ा। इतने में भीम की फेंकी गदा चित्रसेन के रथ पर गिरी और चित्रसेन के सारथि तथा घोड़ों सहित उसके रथ को चकनाचूर कर पृथिवी पर वैसे ही जा गिरी जैसे आकाश से कोई बड़ी उल्का गिरे। आपके सैनिकों ने यह अद्भुत कर्म देख और हर्षित हो सिंहनाद किया और वे चित्रसेन की प्रशंसा करने लगे।

छियासीवाँ अध्याय

पाण्डवों का विजय

सञ्जय बोले—हे धृतराष्ट्र! जब आपके पुत्र विकर्ण ने चित्रसेन को रथहीन देखा, तब विकर्ण ने चित्रसेन को अपने रथ पर बिठा लिया। इस प्रकार के उस महाघोर एवं तुमुल संग्राम में भीष्म, धर्मराज की ओर लपके। उस समय सृञ्जयों की चतुरङ्गिणी सेना थरथरा उठी। उन लोगों ने समझ लिया कि, धर्मराज अब यमराज के हाथ में गये, किन्तु धर्मराज ज़रा भी न घबड़ाये और वे अपने साथ नकुल और सहदेव को लिये हुए, भीष्म की ओर बढ़े। इन लोगों ने भीष्म को मारे बाणों के वैसे ही ढक दिया जैसे मेघघटा सूर्य को छिपा देती है। भीष्म भी इनके सैकड़ों सहस्रों बाणों को अपने बाणों से काट काट कर गिराने लगे। उस समय बाण

आकाश में टिड्डी दल की तरह जान पड़ते थे। परम पराक्रमी भीष्म ने अर्ध निमेष में शरजाल से धर्मराज को छिपा दिया। तदनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर ने कुरु-कुल-भूषण भीष्म पर विषधर सर्प जैसा एक बाण फेंका; किन्तु भीष्म ने क्षुरप्र बाण छोड़ उस बाण को बीच ही में नष्ट कर डाला। फिर भीष्म ने धर्मराज के सुवर्णभूषित रथ के चारों घोड़े मार डाले। तब धर्मराज अश्वहीन अपने रथ को छोड़ झट नकुल के रथ पर जा बैठे। तब परपुरञ्जय भीष्म ने क्रोध में भर नकुल और सहदेव को शरवृष्टि से आच्छादित किया।

जब धर्मराज युधिष्ठिर ने देखा कि, भीष्म के बाणप्रहारों से नकुल और सहदेव पीड़ित हो रहे हैं, तब उन्हें भीष्म के वध की चिन्ता ने आ दबाया। उन्होंने अपने अनुगत एवं सुहृद वीरों से कहा कि, तुम लोग भीष्म को रण में मार डालो। यह सुन उन बहुत से रथियों ने भीष्म को चारों ओर से घेर लिया, तब तो भीष्म अनायास उन रथियों का बीन बीन कर वध करने लगे। पाण्डवों ने देखा कि, वन में जैसे सिंह, हिरनों के समूह में निर्भय हो विचरता है, वैसे ही भीष्म जी भी रणक्षेत्र में विचर रहे हैं। भीष्म को सिंहनाद कर समस्त वीरों को बाणप्रहार से पीड़ित करते देख, समस्त क्षत्रिय योद्धा वैसे ही भयभीत हो गये, जैसे सिंह को देख मृग सहम जाते हैं। वे लोग, वायु के वेग से प्रचण्ड रूप धारण किये हुए अग्नि की तरह उस पुरुषसिंह के तेज और पराक्रम को निहारने लगे। जैसे कोई चतुर जन पके हुए ताल फलों को टपटप गिरावे, वैसे ही परम पराक्रमी एवं बलवान भीष्म जी पाण्डवपक्षीय रथियों के सिरों को धड़ाधड़ काट काट कर गिराने लगे। वे सब कटे हुए सिर, भूमि पर गिर वैसा ही धड़ाके का शब्द करते थे जैसा शब्द भूमि पर शिलाखण्ड के गिरने का हुआ करता है। तब तो इस तुमुल संग्राम के समय सैनिकों ने महा-कोलाहल किया, सैन्यव्यूह भङ्ग हो गया। क्षत्रिय योद्धा आपस में एक दूसरे को लड़ने के लिये ललकारने लगे। शिखण्डी ने भीष्म के निकट जा

कर कहा—खड़ा रह ! खड़ा रह ! फिर उन पर शिखण्डी ने बड़े वेग से आक्रमण किया। शिखण्डी को पूर्वजन्म की स्त्री समझ, भीष्म ने उस पर हाथ न उठाया। वे क्रोध में भर सृञ्जयों की ओर बढ़े। महारथी योद्धा भीष्म को देख, प्रसन्न हुए और शङ्ख-ध्वनि कर, सिंहनाद करने लगे। उस समय सूर्य भगवान अस्ताचलगामी हो रहे थे। उसी समय रथियों और गजारोही सैनिकों में युद्ध आरम्भ हुआ। पाञ्चालराज द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न और सात्यकि, शक्तियों, तोमरों तथा विविध बाणों की वर्षा कर, आपके सैनिकों का वध करने लगे।

हे राजन् ! महारथो सात्यकि और धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित हो कर भी आपके पक्ष के योद्धाओं ने रण से मुँह न मोड़ा और बड़े उत्साह के साथ युद्ध करते रहे। यद्यपि वे सब धृष्टद्युम्न के बाणों से पीड़ित हो कर आर्त्तनाद कर रहे थे। आपके सैनिकों का आर्त्तनाद सुन, आपके पक्ष के अवन्ति के राजकुमार विन्द और अनुविन्द ने धृष्टद्युम्न पर बड़ी फुर्ती से आक्रमण किया और उसके रथ के चारों घोड़ों को मार, उन्हें शरजाल से ढक दिया। तब धृष्टद्युम्न अपने अश्वहीन रथ से कूद झट सात्यकि के रथ पर जा बैठा। यह देख धर्मराज बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने एक बड़ी सेना ले उन दोनों राजकुमारों पर आक्रमण किया। तब आपके पुत्रों ने अस्त्र शस्त्र ले उन दोनों राजकुमारों की रक्षा की।

उस समय अर्जुन आपके पक्ष के योद्धाओं से वैसे ही लड़ रहा था, जैसे इन्द्र ने असुरों के साथ युद्ध किया था। आपके पुत्रों के हितैषी आचार्य द्रोण क्रोध में भर पाण्डवों की सेना का वैसे ही नाश कर रहे थे, जैसे अग्नि रुई के ढेर को भस्म कर डालता है। हे राजन् ! आपके समस्त पुत्र दुर्योधन सहित भीम को घेर उसके साथ लड़ने लगे। पश्चिमाकाश में सूर्य की लालिमा देख, दुर्योधन ने अपने सैनिकों से कहा—शीघ्रता करो। अतः सन्ध्या होते होते संग्राम ने बड़ा भीषण रूप धारण कर लिया। क्षण भर में इतने योद्धा मारे गये कि, उनके रक्त से नदी बह चली। उस

नदी के इधर उधर सियार और गिद्ध देख पड़ते थे। उस समय शृगाल बड़ा भयङ्कर शब्द कर रहे थे। उस नदी के ऊपर सैकड़ों सहस्रों राक्षसों और पिशाचों के अतिरिक्त अनेक मांसभक्षी जीवजन्तु भी एकत्र हो गये थे। तदनन्तर अनुयायियों सहित सुशर्मा आदि राजाओं को परास्त कर, अर्जुन निज सैन्य शिविर की ओर प्रस्थानित हुए। उसी समय नकुल और सहदेव को साथ ले धर्मराज भी अपनी छावनी में गये। भीमसेन ने दुर्योधनादि को परास्त कर, शिविर में जाने को प्रस्थान किया। द्रोण, कृप, शल्य, और सात्वत कृतवर्मा भी अपनी अपनी सेनाओं सहित, अपने शिविरों को लौट गये। सात्यकि एवं धृष्टद्युम्न भी अपनी सेनाओं को लिये हुए शिविर में गये : हे राजन्! इस प्रकार आपके और पाण्डवों के पक्ष के समस्त योद्धा युद्ध बंद कर अपने अपने शिविरों को लौट गये। अपने अपने शिविरों में लौट कर योद्धाओं ने परस्पर अभिवादन किया और अपनी अपनी सेनाओं के सेनापतियों के दर्शन किये। फिर आत्मरक्षा का उपाय करते हुए उन लोगों ने शरीर में गड़े हुए बाणों को निकाल, विविध भाँति के (औषधियों से मिश्रित) जलों से स्नान किये। यशस्वी महारथियों का ब्राह्मणों ने स्वस्त्ययन किया। तदनन्तर वे सब वन्दियों की स्तुतियाँ सुनते हुए गान वाद्य से मुहूर्त्त भर अपना मन बहलाने लगे। यह मुहूर्त्त भर का समय उन्हें स्वर्गवास जैसा सुखदायी जान पड़ा। इसके बाद उन सब में फिर युद्ध सम्बन्धी कोई वार्तालाप न हुआ।

हे राजन्! दोनों ओर की घोड़ों, हाथियों और सैनिकों से पूर्ण सेनाएँ दिन भर लड़ते लड़ते बहुत थक गयी थीं। अतः दोनों सेनाओं के सैनिक सो गये। उस समय वे भरे पूरे सैन्यशिविर देखते ही बन आते थे।

[अष्टम दिवस]

सत्तासीवाँ अध्याय

महासागर व्यूह और शृङ्गारक व्यूह

सञ्जय बोले—हे कुरुराज! कौरवों और पाण्डवों के समस्त वीरों ने सो कर वह रात सुख से बितायी। जब रात बीती और सबेरा हुआ, तब वे फिर युद्ध के लिये शिविरों से बाहिर निकले। दोनों सेनाओं के छावनियों से बाहिर निकलने के समय बड़ा भीषण कोलाहल मचा। तदनन्तर दुर्योधन, चित्रसेन, विविंशति और वीरश्रेष्ठ भीष्म और द्विज-श्रेष्ठ द्रोणाचार्य ने वर्म धारण किये। फिर सब ने मिल कर युद्ध करने के लिये अपनी सेनाओं को व्यूहबद्ध किया। हे राजन्! भीष्म पितामह ने शर रूपी लहरों से युक्त, महासागर के समान विशाल सेना से, महावीर व्यूह रच, सब के आगे और मालव, दाक्षिणात्य और अवन्तिदेशीय योद्धाओं से रक्षित भीष्म जी चले। उनके पीछे पुलिन्द, पारद, क्षुद्रक और मालव देशीय योद्धा से रक्षित द्रोण थे। द्रोण के पीछे प्रबल प्रतापी भगदत्त था। वह मगध, कलिङ्ग देशीय योद्धाओं और पिशाच वीरों से रक्षित था। उसके पीछे कोशलराज बृहद्बल ने मेकल, त्रिपुर और चिलुक योद्धाओं से रक्षित हो रणयात्रा की। बृहद्बल के पीछे प्रस्थलराज, त्रिगर्त्त, काम्बोज और अन्य सहस्रों वीरों से रक्षित हो प्रस्थानित हुए। उनके पीछे अत्यन्त पराक्रमी अश्वत्थामा था। वह सिंहनाद कर पृथिवी को कँपाता हुआ चला जाता था। अश्वत्थामा के पीछे अपने समस्त भाइयों के साथ दुर्योधन अपनी समस्त सेना को साथ ले रवाना हुआ। महासागर के समान उस विशाल सेना सहित व्यूह-रचना-पूर्वक गमन करने के समय, श्वेत छत्र, पताकाएँ दृढ़ कवच और धनुपादि अस्त्र शस्त्र चमक रहे थे।

हे राजन्! जब धर्मराज ने इस प्रकार का आपकी ओर का सैन्यव्यूह देखा, तब उन्होंने अपनी ओर के सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा—हे महाधनुर्धर

धनुर्धर ! देखो शत्रुओं ने समुद्र के समान सैन्यव्यूह की रचना की है। तुम भी उनके जवाब का एक महासैन्यव्यूह रचो। इस पर परम प्रतापी धृष्टद्युम्न ने शत्रु-व्यूह-नाशक एवं महादारुण शृङ्गाटक व्यूह की रचना की। महारथी भीम और सात्यकि कई सहस्र रथियों, अश्वारोहियों और पैदल योद्धाओं को साथ ले शृङ्गाटक व्यूह के उभय शृङ्गस्थानों पर स्थित थे। पुरुषश्रेष्ठ एवं श्वेतवाहन अर्जुन, श्रीकृष्ण सहित उस व्यूह के नाभिदेश पर स्थित थे। धर्मराज युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव सहित उसके मध्य भाग में थे। व्यूह-रचना-कुशल अन्य महाधनुर्धरों ने शृङ्गाटक व्यूह के यथायोग्य स्थानों पर स्थित हो कर, उसे पूरा किया। तदनन्तर उन सब के पीछे महारथी अभिमन्यु, विराट, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और घटोत्कच थे। हे राजन् ! पराक्रमी पाण्डव इस प्रकार अपना व्यूह रच और जयाभिलाषी हो लड़ने को समरभूमि में पहुँचे, उस समय शङ्ख, भेरी, मृदङ्ग, बाँसुरी और नरसिंहा आदि मारू बाजे बजने लगे। उनकी ध्वनि से समस्त दिशाएँ प्रतिध्वनित हो उठीं। शूरवीर योद्धा आमने सामने खड़े हो, एक दूसरे को निहारने लगे। फिर उन लोगों ने एक दूसरे का नाम ले लड़ने के लिये ललकारा और वे लड़ने लगे। उस समय महाघोर संग्राम होने लगा। उभय पक्षों के योद्धा अस्त्रशस्त्रों के अघात से पीड़ित होने लगे। बड़े पैने बाण रण-भूमि में सर्पों की तरह देख पड़ने लगे। चमचमाती शक्तियाँ मानों बिजली की तरह बादलों से निकल, समरभूमि में चारों ओर गिरने लगीं। सुवर्ण युक्त दण्ड से भूषित और पर्वतशिखर सदृश गदाएँ तथा अन्य अस्त्र समर-भूमि में चलने लगे। अगणित ताराओं और चन्द्रमा से भूषित आकाश की तरह फुल्लीदार उत्तम ढालें, समरभूमि में शोभित हुईं। दोनों ओर की सेनाएँ रण में उत्साह दिखलाती हुईं देवता और दैत्यों की सेनाओं जैसी जान पड़ने लगीं। समरभूमि में जिधर आँख उठा कर कोई देखता, इधर ही उसे चारों ओर उभय पक्ष के योद्धा एक दूसरे पर आक्रमण करते हुए देख पड़ते थे। उस तुमुल युद्ध में क्षत्रियश्रेष्ठ रथियों ने शत्रुपक्षीय रथियों के

रथों से अपने रथ सटा, युद्ध करना आरम्भ किया। चारों ओर युद्ध करते हुए मतवाले गजों के दाँतों की रगड़ से सधूम अग्नि प्रकट हो गया। अनेक गजपति योद्धा प्रास आदि के प्रहारों से मारे जा कर वैसे ही भूमि पर गिर पड़े, जैसे पर्वत के ऊपर से बड़े बड़े पत्थर खण्ड खण्ड हो गिरते हैं। शूरवीर पैदल सैनिक गदाएँ, प्रासों, खड्गों से युद्ध कर, एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। उस समय उनका विचित्र रूप देख पड़ता था। उभयपक्ष के योद्धा नाना प्रकार के अस्त्रों से अपने शत्रुओं का वध कर, उन्हें यमालय भेजने लगे। तदनन्तर शान्तनुपुत्र भीष्म अपने रथ के घरघराहट से भूमि को प्रतिध्वनित करते और धनुष के टंकार से सब लोगों को विस्मित करते हुए पाण्डवों को सेना की ओर जाने लगे। पाण्डवों के धृष्टद्युम्न आदि महारथी योद्धाओं ने भी घरघराहट करते हुए रथों पर सवार हो भीष्म पर आक्रमण किया। तदनन्तर आपकी और शत्रुओं की ओर के मनुष्यों, घुड़सवारों गजपतियों और रथियों में घोर संग्राम होने लगा।

अट्ठासीवाँ अध्याय

भीम द्वारा धृतराष्ट्र के अष्ट पुत्रों का संहार

सञ्जय ने कहा—युद्धभूमि में कुपित हो, चारों ओर से शत्रुओं को सन्तप्त करते हुए भीष्म जी की ओर पाण्डवगण तीव्रता से प्रतप्त हुए सूर्य की तरह, देख भी न सके। तदनन्तर पाण्डवों की समस्त सेनाएँ धर्मराज के आदेशानुसार, सेना-नाशक भीष्म की ओर झपटीं। उधर भीष्म जी, महा-धनुर्धर सोमकों, सृञ्जयों और पाञ्चालों का एक ही साथ बाणों से नाश कर रहे थे। सोमकों के सहित पाञ्चाल योद्धा, भीष्म के बाणों की कुछ भी परवाह न कर, उनकी ओर बढ़ने लगे। महापराक्रमी भीष्म अनेक रथियों के सिरों को अपने बाणों से काटते हुए, कितनों को रथहीन करने लगे। उस समय

भीष्म जी के बाणों से बहुत से अश्वारोहियों के सिर कट कट कर भूमि पर गिरने लगे। तुषाराद्रि पर्वत की तरह मनुष्यों से हीन गज मुझे देख पड़े। रथियों में श्रेष्ठ भीम को छोड़ पाण्डवों की सेना में ऐसा कोई भी पुरुष न था, जो भीष्म को रोकता। भीम ने उनके निकट जा, उन्हें रोका। तब भीष्म और भीम का युद्ध देख, उभय सेनाओं में महाकोलाहल मचा। पाण्डवों के पक्ष के योद्धा हर्षित हो सिंहनाद करने लगे। उस महाभीषण युद्ध में अपने सहोदर भाइयों सहित दुर्योधन, भीष्म की रक्षा करता था। रथिश्रेष्ठ भीम ने भीष्म के सारथि का वध किया। इससे भीष्म के रथ के घोड़े भड़क गये और इधर उधर दौड़ने लगे। तब भीम ने क्षुरप्र बाण चला सुनाभ का सिर काटा। आपके पुत्र सुनाभ के मारे जाने पर, आदित्यकेतु बह्वाशी, कुण्डधार, महोदर, अपराजित, पण्डितक और दुर्जय एवं विचित्र कवच एवं शस्त्रधारी विशालाक्ष नामक दुर्योधन के सात भाई, क्रोध में भर लड़ने के लिये विचित्र कवचधारी भीम के आगे गये। महोदर ने वज्र के समान नौ बाण मार भीम को वैसे ही विद्ध किया, जैसे इन्द्र ने नमुचि को वज्र से घायल किया था। आदित्यकेतु ने सत्तर, बह्वाशी ने पाँच, कुण्डधार ने नौ, विशालाक्ष ने सात और शत्रुञ्जय एवं महारथी अपराजित ने अनेक बाण मार, भीम को विद्ध किया। फिर पण्डितक ने तीन बाणप्रहार भीम पर किये। इन बाणप्रहारों को न सह कर भीम ने धनुष उठा नतपर्व बाण से सुन्दर नासिका से शोभित अपराजित का सिर काट कर भूमि पर फेंक दिया। तदनन्तर सब सैनिकों के आगे भीम ने एक ही बाण से कुण्डधार का वध किया। फिर महाबलवान भीम ने एक बाण साध कर पण्डितक पर छोड़ा। भीमसेन का वह बाण पण्डितक का संहार कर, पृथिवी में वैसे ही घुस गया, जैसे कालप्रेरित सर्प, मनुष्यों का नाश कर बिल में घुस जाता है। तदनन्तर पराक्रमी भीम ने पूर्वकालीन कष्टों को स्मरण कर, तीन बाण मार, विशालाक्ष का सिर काट कर भूमि पर फेंक दिया। फिर भीम ने महाधनुर्धर महोदर की छाती में एक बाण मारा। उसके प्रहार से महोदर निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। तदनन्तर भीम ने आदित्यकेतु

का छत्र काट कर एक अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से उसका सिर भी काट डाला। तब क्रुद्ध हो कर भीम ने वह्लाशी को भी यमालय भेज दिया। हे राजन्! तब आपके अन्य पुत्र सभा में की हुई भीम की प्रतिज्ञा को स्मरण कर और उसे सत्य होते देख, वहाँ से भाग गये। इस पर भ्रातृवध के कारण कुपित हुए दुर्योधन ने अपने समस्त सैनिकों को भीमवध की आज्ञा दी।

हे राजन्! आपके महाधनुर्धर पुत्रों को, अपने सहोदरों का मारा जाना देख, विदुर के पूर्वकथित समस्त वचन स्मरण हो आये। हे प्रजानाथ! विदुर के उन पूर्वकथित यथार्थ हितकर वचनों को, जिन्हें तुम पुत्रस्नेहवश तथा लोभ एवं मोह में फँस समझ नहीं सके थे, वे अब प्रत्यक्ष कार्य रूप में परिणत हो रहे थे। महाबाहु एवं बलवान् भीमसेन जिस प्रकार कौरवों का नाश कर रहा है, उससे यह निश्चय बोध होता है कि, भीम का जन्म मानों आपके पुत्रों का नाश करने ही को हुआ है। इतने में रोता हुआ दुर्योधन, भीष्म पितामह के निकट गया और इस प्रकार विलाप कर उनसे कहने लगा—हे पितामह! मेरे बड़े बड़े बलवान् भाइयों को भीमसेन ने मार डाला है। मेरे जो अन्य सैनिक मेरे विजय के लिये यत्नवान हो युद्ध करते थे, वे भी भीम द्वारा नष्ट किये जा रहे हैं। यह मेरा अभाग्य है कि, मैं युद्ध में प्रवृत्त हो कर भी ठीक मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ।

हे राजन्! भीष्म पितामह आपके पुत्र के इन कठोर वचनों को सुन कर, नेत्रों में आँसू भर कर दुर्योधन से कहने लगे। हे वत्स! द्रोण, विदुर, यशस्विनी गान्धारी और मैंने तुम्हें बहुत समझाया, परन्तु तुमने हम लोगों का कहना न माना। मैं तो पहले ही से निश्चय किये बैठा हूँ कि मैं, द्रोणाचार्य तथा अन्य महावीर योद्धा—तुम्हारे पीछे इस युद्ध से मुक्त नहीं हो सकेंगे। मैं यह सत्य सत्य कहता हूँ कि, भीमसेन, धृतराष्ट्र के पक्ष के जिन वीरों की ओर देखेगा, उसीका कुशल मत समझना। अतः तुम स्वर्गप्राप्ति का निश्चय कर और दृढ़ता पूर्वक धैर्य धारण कर, पाण्डवों से लड़ो। देवताओं

सहित इन्द्र भी पाण्डवों को रण में परास्त नहीं कर सकते। अतः तुम स्थिर मति कर युद्ध करो।

नवासीवाँ अध्याय

विकट युद्ध

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जब अकेले भीमसेन ने युद्ध में मेरे बहुत से पुत्रों को मार डाला, तब भीष्म, द्रोण, कृप ने क्या किया? हे सूत! जब प्रतिदिन मेरे पुत्र मारे जाते हैं, तब मुझे तो यह सब दैव की इच्छा ही से होता हुआ ज्ञान पड़ता है, मैं देखता हूँ कि मेरे समस्त पुत्र पराजित हो रहे हैं। विशेष कर महाबली भीष्म, द्रोण, कृप, भूरिश्रवा, भगदत्त और अश्वत्थामा आदि शूर योद्धाओं तथा इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से वीर योद्धाओं के बीच रह कर भी जब मेरे पुत्र मारे जा रहे हैं, तब यह सब दुर्भाग्य को छोड़ और क्या कहा जाय? हे सूत! विदुर और भीष्म ने मन्दबुद्धि दुर्योधन को कितनी ही बार समझाया; किन्तु उसने इन लोगों की एक भी बात न मानी। गान्धारी ने भी नीचबुद्धि दुर्योधन के हित के लिये लड़ने की मनायी की थी; किन्तु मोह में फँसे हुए दुष्ट दुर्योधन ने माता की बात पर भी ध्यान न दिया। इस समय उसीका यह सब फल सामने आ रहा है। इसीसे तो भीमसेन क्रुद्ध हो मेरे पुत्रों ही को विशेष रूप से यमालय पठा रहा है।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! आपने उस समय विदुर कथित हितकर एवं यथार्थ वचनों को न माना, उसीका फल अब आपके आगे आ रहा है। क्या विदुर ने आपसे यह नहीं कहा था कि, आप अपने पुत्रों को वर्जो कि वे जुआ न खेलें। वे पाण्डवों का अनिष्ट करने का विचार त्याग दें। हे राजन्! मृत्यु के मुख में पतित रोगी को जैसे पथ्य और दवा अच्छी

नहीं लगती वैसे ही आपको भी अपने हितैषी सुहृदों की बातें न रुचीं। परिणाम यह हुआ कि वे जो कहते थे, वह आज आपके सामने है। विदुर, भीष्म, द्रोण तथा अन्य हितैपियों की बातें न सुनने से ही कौरवों का इस समय संहार हो रहा है। हे राजन्! पहले जब आपने अपने हितैषी सुहृदों की बातों पर ध्यान न दिया, तब ही से इस विपत्ति का सूत्रपात हुआ है। अब जो हुआ सो हुआ, अब आप आगे का युद्ध वृत्तान्त सुनें। मैं विस्तार पूर्वक सुनाता हूँ। दोपहर के समय जिस प्रकार वह घोर युद्ध हुआ, उसका वृत्तान्त मैं आपको सुनाता हूँ। आप मन को एकाग्र कर सुनें। तदनन्तर पाण्डवों की सेना धर्मराज युधिष्ठिर की आज्ञा से, भीष्म का वध करने की इच्छा से उनकी ओर लपकी। महारथी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सात्यकि की प्रधानता में वह सेना भीष्म की ओर बढ़ी। राजा विराट और राजा द्रुपद अपनी अपनी सेनाओं को साथ ले लड़ने के लिये आगे बढ़े। केकयराज, धृष्टकेतु और कुन्तिभोज कवच धारण कर सेनाओं सहित भीष्म से लड़ने को बड़ी फुर्ती के साथ आगे बढ़े। धनञ्जय, द्रौपदी के पाँचों पुत्र और चेकितान ने युधिष्ठिर के आदेशानुसार उस ओर गमन किया जिस ओर दुर्योधनपक्षीय समस्त राजा लोग थे। पराक्रमी अभिमन्यु, घटोत्कच और भीमसेन कौरवों से लड़ने के लिये युद्ध-क्षेत्र में जा उपस्थित हुए। पाण्डवों की सेना तीन भागों में विभक्त हो, कौरवों की सेना का संहार करने लगी। साथ ही कौरवों की सेना भी तीन भागों में विभक्त हो पाण्डवों की सेना को नष्ट करने लगी। रथिश्रेष्ठ द्रोण ने क्रोध में भर, सोमकों और सृञ्जयों के नाश का सङ्कल्प कर, उन पर आक्रमण किया। महाबली द्रोणाचार्य के बाणप्रहारों से पीड़ित हो, सृञ्जय घोर आर्त्तनाद करने लगे। मैंने स्वयं अपने नेत्रों से देखा कि, द्रोण के बाणप्रहार से पीड़ित बहुत से योद्धा, रोगी मनुष्य की तरह निकम्मे हो रहे हैं। भूख से विकल अनेक योद्धा समरभूमि में चिल्ला रहे थे। कितने ही योद्धा रो रहे थे और कितने ही सिंहनाद कर रहे थे। महाबली भीमसेन क्रोध में भर मानों

अपर यमराज की तरह कौरवों की सेना का नाश करने लगे। सम्पूर्ण सेना के वीरों के आपस में जूझ कर मारे जाने पर इनके रक्त से समरभूमि में एक महाभयङ्कर नदी बहने लगी। हे राजन्! पाण्डवों और कौरवों के इस युद्ध के कारण यमपुरी की आबादी बहुत बढ़ गयी। इतने में क्रोध में भर भीम ने गजसेना पर आक्रमण किया और गजों का संहार कर वे उन्हें यमालय भेजने लगे। वे सब हाथी भीम के बाणों के प्रहार से पीड़ित हो चिंघारने लगे और कितने ही मर कर भूमि पर गिर पड़े और कितने ही चारों ओर दौड़ने लगे। बड़े बड़े डीलडौल के हाथी, घायल होने पर क्रौञ्चपक्षी की तरह, चिंघारते हुए भूमि पर गिरने लगे।

नकुल और सहदेव ने शत्रु की घुड़सवार सेना पर आक्रमण किया। सुवर्णभूषणों से भूषित सैकड़ों घोड़े, नकुल और सहदेव के हाथों से मारे जा कर ज़मीन पर लोट गये। कितने ही घोड़ों की जीभें कटीं, कितने ही जान से मारे गये। मृत घोड़ों के शव नाना आकार के देख पड़ते थे। उस समय रणभूमि मृत घोड़ों से परिपूर्ण हो गयी। समरभूमि में अर्जुन द्वारा मारे गये राजा लोगों की लाशें देख भय मालूम पड़ता था। वसन्तऋतु में जैसी शोभा वन की फूलों से होती है, वैसी ही शोभा इस समय समर-भूमि की टूटे रथों, कटी ध्वजाओं, कटे शस्त्रों, चँवरों, चमचमाते छत्रों, टूटे हारों, निष्कों, केयूरों और कुण्डलों से शोभित कटे मस्तकों, वस्त्रों, पताकाओं, रथ के नीचे के काष्ठों, घोड़ों की रासों और चाबुकों से हुई। इन वस्तुओं से समरभूमि पटी पड़ी थी। शान्तनुनन्दन भीष्म, रथिश्रेष्ठ द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा के कुपित होने पर, पाण्डवों के पक्ष के वीरों का भी सर्वनाश हुआ। साथ ही पाण्डव वीरों के क्रुद्ध होने पर, आपकी सेना का भी ठीक ऐसा ही नाश हुआ।

नब्बे का अध्याय

आर्षशृङ्गि द्वारा इरावान् का वध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब चुने चुने वीर योद्धा मारे जाने लगे, तब सुबलनन्दन शकुनि ने पाण्डवों पर चढ़ाई की। साथ ही महाबली एवं शत्रु-नाशन कृतवर्मा ने भी पाण्डवों की सेना पर आक्रमण किया। तदनन्तर आपके पक्ष के कितने ही योद्धा अर्थात् काम्बोज, नदीज, आरट, मही, सिन्धुदेशीय एवं तित्तरदेशीय बहुत से योद्धाओं ने पवन के समान वेगगामी पार्वत्य एवं श्वेत रंग के अनेक घोड़ों पर सवार हो कर, पाण्डवों को चारों ओर से घेर लिया। सुवर्ण-भूषित कवच धारण कर और अपने साथ सुशिक्षित, वायु के समान वेगवान्, चुने हुए घुड़सवारों को लिये हुए, शत्रु-नाशन एवं पराक्रमी अर्जुनपुत्र इरावान् हर्षित हो शत्रुओं से युद्ध करने को समरभूमि में गया। हे राजन् ! वह बुद्धिमान् इरावान् नागराज ऐरावत के वंश में महाबली अर्जुन के औरस से उत्पन्न हुआ था। गरुड़ जी ने जब नागराज के जमाई को मार डाला, तब नागराज की पुत्री अत्यन्त दीन और दुःखी हो गयी। उसके कोई सन्तान भी न था। अतः नागराज ऐरावत ने उसे अर्जुन को दे डाला।* तब अर्जुन ने भी अभिलाषा विशेष रखने वाली उस नागराज की पुत्री को अपने यहाँ रख लिया और उसके साथ भार्या जैसा व्यवहार किया। इसीसे अर्जुन के औरस से इरावान् की उत्पत्ति अन्य क्षेत्र से हुई थी। इरावान् का पालन

---

* नागराज ने अपनी कन्या अर्जुन को दे दी थी। इसे कोई आज कल के सुधारक विधवा विवाह न समझ बैठे।

मूल श्लोक यह है--"ऐरावतेन सा दत्ता अनपत्या महात्मना।
पत्यौ हते सुपर्णेन कृपणा दीनचेतना।"

अ० ९०, श्लो० ८.

ऐरावण नागलोक में अपनी माता द्वारा हुआ था। उसके दुष्टात्मा चाचा ने अर्जुन से वैर होने के कारण, उसे त्याग दिया था। इरावान् सत्यपराक्रमी रूपवान्, बलवान् और गुणवान् था। जिस समय अर्जुन इन्द्रलोक में गये हुए थे, उस समय सत्यपराक्रमी महाबाहु इरावान् ने अपने पिता के निकट गमन किया था और मन को एकाग्र कर, इरावान् ने अपने पिता अर्जुन को प्रणाम किया और हाथ जोड़ अपना परिचय दे, निवेदन किया था—हे महाराज! आपका मङ्गल हो। मैं आपका पुत्र हूँ। मेरा नाम इरावान् है। साथ ही जिस प्रकार अपनी माता अर्जुन को दी गयी थी—सो भी कह सुनाया। तब बहुत पुरानी बात अर्जुन को स्मरण हो आई। वे इन्द्र-लोक में आत्म-सदृश अपने पुत्र इरावान् को पा कर परम प्रसन्न हुए। उस समय देवलोक में अर्जुन ने हर्षित हो इरावान् से कहा—तुम युद्धकाल में हमारी सहायता करना। इस पर इरावान् ने अर्जुन की आज्ञा शिरोधार्य की और जब युद्ध काल उपस्थित हुआ, तब वह वेगवान् सुन्दर घुड़सवारों की सेना साथ ले, रणभूमि में आ पहुँचा। सोने के आभूषणों से सजे हुए घोड़ों पर सवार हो इरावान् के रिसाले के सवार रणभूमि में गये। उस समय उनके श्वेत रंग के घोड़े ऐसे जान पड़ते थे, मानों समुद्र के बीच हंस हों। ये सब घोड़े आपकी सेना के वेगवान् घोड़ों के बीच पहुँच, आपस में नाक से नाक और सिर से सिर टकरा, रणभूमि में गिरने लगे। उन घोड़ों के गिरने से वैसा ही भयानक शब्द होता था, जैसा गरुड़ पक्षियों के अकस्मात् गिरने से हुआ करता है। इरावान् के घुड़सवार सैनिकों ने आपकी सेना पर आक्रमण कर, उनका घोर रूप से वध किया। उस घोर संग्राम में उभय सेनाओं के अश्वों का महाघोर शब्द सुनाई पड़ने लगा। शूर योद्धा बाणों से पीड़ित हो टपाटप भूमि पर गिरने लगे। साथ ही उनके घोड़े भी निर्जीव हो भूमि पर गिरने लगे।

अपनी ओर की घुड़सवार सेना को नष्ट हुआ देख और उनमें से थोड़ों को बचा हुआ देख, रणशिक्षा से शिक्षित और भयङ्कर गजों से युक्त महाबली

शकुनि के छः भाई १ गय, २ गवाक्ष, ३ वृषभ, ४ चर्मवान, ५ आर्जव और ६ शुक ने तथा स्वयं शकुनि ने अपनी सेना को साथ ले और वायु के समान वेगवान घोड़ों पर सवार हो, इरावान पर धावा बोला। युद्ध में पराक्रमी शकुनि के छः भाइयों ने हर्षित हो, स्वर्गप्राप्त करने और विजयाभिलाषी हो, इरावान् के रिसाले को भेद कर उस सेना में प्रवेश किया। जब इरावान् ने देखा कि वे लोग उसकी सेना में घुस आये, तब उसने अपने अधीनस्थ, विचित्र कवचों को धारण करने वाले तथा अस्त्रधारी योद्धाओं से यह बात कही—हे वीरों! तुम सब मिल कर ऐसा उपाय करो जिससे धृतराष्ट्र की सेना के ये समस्त योद्धा मारे जायँ। इरावान् की इस आज्ञा को सुनते ही उसके समस्त योद्धाओं ने वैरी की समस्त सेना नष्ट कर डाली। जब सुवलनन्दनों ने अपनी सेना को इरावान् की सेना द्वारा नष्ट होते हुए देखा, तब क्रोध में भर, उन लोगों ने निकट जा इरावान् को चारों ओर से घेर लिया और उस पर प्रास, बाण आदि के प्रहार कर उसे पीड़ित किया। उनके प्रास आदि अस्त्रों से विद्ध इरावान् वैसे ही अत्यन्त कुपित हुआ; जैसे अङ्कुश से कोंचा जा कर हाथी क्रुद्ध होता है। यद्यपि उनके अस्त्र-प्रहार से इरावान् का सारा शरीर क्षतविक्षत हो गया था; तथापि धैर्यवान् इरावान् तिल भर भी न घबड़ाया। शत्रु-नाशन इरावान् ने चोखे बाणों से उन सब को घायल कर लोगों को मुग्ध कर दिया। वह अपने शरीर में चुभे अस्त्र शस्त्रों को निकाल उन्हींसे वह शत्रुओं को घायल करने लगा। फिर वह ढाल तलवार ले, सुवलपुत्रों का वध करने के लिये उनकी ओर दौड़ा। तब सुवलपुत्रों ने सम्हल कर, इरावान् का सामना किया। तलवार के हाथ फेंकता इरावान् बड़ी फुर्ती के साथ शत्रुओं की ओर जाने लगा। यद्यपि इरावान् पैदल था और सुवलपुत्र घोड़ों पर सवार थे; तथापि वे इरावान् पर प्रहार करने का अवसर न पा सके। पाँव-प्यादे लड़ते हुए इरावान् को उन लोगों ने जीवित पकड़ना चाहा। इस अभिप्राय से जब सुवलनन्दन इरावान् के निकट पहुँचे, तब

इरावान् दोनों हाथों से तलवार पकड़, शत्रुओं के शरीरों, शस्त्रों और भूषण सहित उनकी भुजाओं को काटने लगे। वृषभ को छोड़ और सब इरावान् के हाथ से मारे गये। वृषभ भी बुरी तरह घायल तो हुआ; किन्तु जीवित बच गया।

हे राजन्! अपने मामाओं को मरा पड़ा देख, भयभीत दुर्योधन आर्ष्यशृङ्गी के पुत्र अलम्बुष के पास दौड़ कर गया। अलम्बुष बड़ा मायावी और शत्रु-संहार-कारी था। उसके भाई का नाम बक था, जिसे भीम ने एकचक्रा नगरी के वन में जान से मार डाला था। अतः वह भ्रातृनिहन्ता भीम से द्वेष रखता था। अलम्बुष के पास जा, दुर्योधन ने उससे कहा—हे वीर! देख, अर्जुन का मायावी पुत्र इरावान् मेरा घोर अनिष्ट कर रहा है, इसने मेरी अधिकांश सेना नष्ट कर डाली है। हे तात! तुममें इच्छानुसार सर्वत्र आने जाने की शक्ति है। तू माया रचने में निपुण और अस्त्रविद्या प्रवीण है। साथ ही भीम के साथ तेरा पुराना वैर भी चला आता है, अतएव तू जा कर, इरावान् को तुरन्त मार डाल। वह भयानक राक्षस अलम्बुष बहुत अच्छा कह कर और सिंहनाद करता हुआ वहाँ जा पहुँचा जहाँ अर्जुन का पुत्र इरावान् घूम रहा था। अलम्बुष अपने साथ पैने प्रासों से लड़ने वाले और गहरा घाव करने वाले अश्वारोही सैनिकों को भी लेता गया था। प्रथम युद्ध में मरने से बचे हुए दो सहस्र अश्वारोही सैनिक इरावान् का वध करने के लिये उसके निकट जा पहुँचे। शत्रु-नाशी इरावान् भी अत्यन्त कुपित हो, अलम्बुष का नाश करने के अभिप्राय से अग्रसर हुआ और सर्वप्रथम उसने उस राक्षस ही का सामना किया और उसे आगे बढ़ने से रोका। यह देख उस राक्षस ने तुरन्त अपनी माया का विस्तार करना चाहा उसने अपनी माया के प्रभाव से क्षण भर ही में शूल-पट्टिश-धारी भयानक अश्वारोही राक्षस और घोड़े पैदा कर डाले। वे माया द्वारा रचित दो सहस्र घुड़सवार क्रुद्ध हो इरावान् से लड़ने को अग्रसर हुए और आमने सामने युद्ध कर, एक दूसरे का वध कर यमालय भेजने

लगे। सेना का नाश हो जाने पर, वृत्रासुर और इन्द्र की तरह वे दोनों वीर द्वन्द्वयुद्ध करने को उद्यत हुए। युद्धदुर्मद अलम्बुष को अपने ऊपर आक्रमण करते देख, महाबली इरावान् ने भी उस पर आक्रमण किया। जब वह दुष्ट राक्षस निकट पहुँचा, तब इरावान् ने खड्गप्रहार से उसका धनुष और माथा काट डाला। अपने धनुष को कटा देख, वह राक्षस क्रोध में भर गया और इरावान् को धोखा देने के लिये ऊपर को उछला। मर्मज्ञ एवं इच्छानुरूप रूपधारी दुरासद इरावान् भी उस राक्षस को धोखे में डालने के लिये ऊपर की ओर उछला और उसके अंग तलवार से काट डाले; परन्तु अंगों के वारवार काटे जाने पर भी वह राक्षस पूर्ववत् ज्यों का त्यों युवा हो जाता था। क्योंकि राक्षसों का वास्तविक बल तो उनकी माया है। वय और रूप तो वे जैसा चाहे वैसा बना सकते हैं। इरावान् उस राक्षस के अंग ज्यों ज्यों काटता था, त्यों त्यों उसके वे अंग नये निकल आते थे। यह देख इरावान् को बड़ा क्रोध चढ़ आया और वह एक तेज़ फरसा ले उसके अंगों को काटने लगा। जब इरावान् बारंबार यही करने लगा, तब राक्षस के शरीर में लगे फरसों के घावों से बहुत सा रुधिर बहा। अपने शत्रु को प्रबल पड़ते देख राक्षस अलम्बुष अत्यन्त कुपित हुआ और द्वन्द्वयुद्ध में बड़ा पराक्रम प्रदर्शित करने लगा। वह महाभयङ्कर रूप धारण कर, समरभूमि के खुले मैदान में, समस्त सैनिकों के सामने अर्जुन के यशस्वी पुत्र इरावान् को पकड़ने के लिये झपटा। उस दुष्ट राक्षस की ऐसी माया देख, इरावान् ने भी अपनी माया फैलायी। युद्ध में कभी पीछे पैर न रखने वाले और अत्यन्त कोप में भरे इरावान् की ननसार का एक नाग उसके निकट बहुत से नाग ले कर आया। वे सब नाग इरावान् को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये। उस समय इरावान् अनेक फण धारी सर्प जैसा जान पड़ने लगा। उधर अलम्बुष को भी बहुत से नागों ने घेरा। जब वह इस प्रकार नागों से घिर गया; तब उस महारथी ने सोच विचार कर, तुरन्त गरुड़ का रूप धारण कर लिया और उन सब नागों को

मा डाला। जब अलम्बुष ने इरावान् के ननिहाल के नागों को इस प्रकार मार डाला, तब इरावान् अकेला रह गया और मूर्छित सा हो गया। इरावान् को मूर्छित देख, अलम्बुष ने उसी क्षण तलवार से मुकुट एवं कुण्डलों से भूषित उसका सिर काट कर भूमि पर गिरा दिया।

राक्षस अलम्बुष के हाथ से अर्जुनसुत इरावान् का मारा जाना देख, आपके सैनिक राजाओं सहित बड़े हर्षित हुए। तदनन्तर दोनों ओर की सेनाओं में पुनः युद्ध होने लगा। उस युद्ध में गजपति, अश्वारोही और पैदल सैनिक एकत्र हो दूसरे पक्ष के गजपतियों अश्वारोहियों और पैदल सैनिकों से जी खोल कर लड़ने लगे। हाथियों ने रथियों को मार डाला।

अर्जुन ने अपने पुत्र इरावन के मारे जाने का संवाद सुना न था। वे दूसरी ओर भीष्मरक्षित योद्धाओं का संहार कर रहे थे। हे राजन्! सहस्रों सृञ्जय तथा आपकी ओर के योद्धा प्राणों की आशा छोड़, एक दूसरे का वध करने लगे। बहुत से सैनिकों के सिर के बाल खुल गये थे, कवच टूट गये थे और वे रथहीन हो गये थे। धनुषों के कट जाने पर बहुत से योद्धा आपस में बाहुयुद्ध कर रहे थे। शत्रुनाशन भीष्म पाण्डवों की सेना को कँपाते हुए मर्मवेधी बाणों से महारथियों को मार रहे थे। उनके हाथ से पाण्डवों के पक्ष के बहुत से सिपाही, हाथी, घुड़सवार और रथी मारे गये। हे राजन्! मैंने युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रमी भीष्म का अद्भुत पराक्रम देखा। उस समय भीम, धृष्टद्युम्न और धनुर्धर सात्यकि ने भी विचित्र बल वीर्य प्रकट किया; किन्तु द्रोणाचार्य के पराक्रम से पाण्डव डर गये। द्रोण के अस्त्रों से पीड़ित हो, पाण्डव पक्षीय लोग कहने लगे—द्रोण तो सेना सहित हम सब का संहार कर सकते हैं। तिस पर उनके साथ जगत्प्रसिद्ध वीर उनकी सहायता के लिये मौजूद हैं। अतः वे क्या नहीं कर सकते। इस घोर संग्राम में उभयपक्ष के योद्धा पारस्परिक प्रहारों को न सह सके। वे क्रोध में भर, राक्षसों और पिशाचों की तरह लड़ने लगे। देवासुर संग्राम की तरह महावीरों के इस महाघोर युद्ध में मुझे

एक भी ऐसा योद्धा न देख पड़ा, जो अपने प्राणों की रक्षा के लिये प्रयत्न करता हो।

इक्यानवे का अध्याय

घटोत्कच का पराक्रम

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! मुझे अब यह बतलाओ कि, जब पाण्डवों को इरावान् के मारे जाने का संवाद मिला, तब उन लोगों ने क्या किया ?

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! जब इरावान् मरने लगा, तब भीमपुत्र घटोत्कच ने भयङ्कर शब्द किया। उसके उस भयङ्कर शब्द से उस समय पर्वत, वन, समुद्र सहित पृथिवी, आकाश और सारी दिशाएँ काँप उठीं। उस घोर शब्द को सुन, आपकी सेना के वीर थरथरा गये। उनके शरीरों से पसीना निकलने लगा। हे राजन् ! आपकी ओर के समस्त वीर सिंह से त्रस्त गजों की तरह भयभीत हो कर घबड़ा उठे। राक्षस घटोत्कच ने वज्र के समान महाघोर शब्द कर और भयङ्कर रूप बना, एक चमचमाता भयङ्कर त्रिशूल हाथ में लिया। फिर विविध प्रकार के आयुधों से लड़ने वाले राक्षसों को साथ ले वह रणभूमि में जा पहुँचा। जब दुर्योधन ने भयङ्कर रूपधारी घटोत्कच को अत्यन्त कुपित हो रणभूमि में आते देखा और देखा कि, उसकी सेना उस राक्षस को देखते ही भयभीत हो गयी है, तब वह बारंबार सिंह-नाद करता हुआ और हाथ में एक दृढ़ धनुष ले घटोत्कच की ओर लपका। उस समय वङ्गदेशाधिपति अपने साथ दस सहस्र गजपतियों को साथ ले, दुर्योधन के पीछे हो लिये। गजसैन्य के साथ आपके पुत्र को आते देख, घटोत्कच अत्यन्त कुपित हुआ। राक्षसों के साथ दुर्योधन की सेना का घोर युद्ध आरम्भ हुआ। अस्त्रधारी राक्षसों ने आपके पुत्र की मेघघटा के समान

गजसैन्य को देख, बिजलीयुक्त मेघ की तरह गर्जना की। तदनन्तर वे बाणों, ऋष्टियों और शक्तियों से गजसैन्य पर प्रहार करने लगे। त्रिशूल, मुद्गर, परशु, भिन्दिपाल, पर्वतशृङ्ग और वृक्षों से राक्षस योद्धा, गजों का वध करने लगे।

हे राजन्! उस समय कितने ही गजों के शरीरों के दो दो टुकड़े हो गये, कितनों ही के पेट ही कट गये, कितने ही ख़ून ओकने लगे और कितने ही हाथी बुरी तरह घायल हुए। जब इस प्रकार गजसेना का संहार होने लगा और सैनिक डर गये; तब स्वयं दुर्योधन ने राक्षसों पर आक्रमण किया। अपनी जान को हथेली पर रख और क्रोध में भर, दुर्योधन ने राक्षसों पर पैने पैने बाणों की वर्षा की और मुख्य मुख्य राक्षस योद्धाओं को मार डाला। दुर्योधन के हाथ से वेगवान्, महारौद्र, विद्युज्जिह्व और प्रमाथी नामक चार वीर राक्षस योद्धा मारे गये। तदनन्तर पराक्रमी दुर्योधन ने बारंबार राक्षस सैन्य पर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा की। महाबली घटोत्कच, दुर्योधन की इस बहादुरी को देख, क्रोध से जल उठा। उसने एक बड़ा भारी धनुष हाथ में लिया और उसे लिये हुए वह दुर्योधन की ओर लपका।

हे राजन्! जब दुर्योधन ने देखा कि, दण्डधारी यमराज की तरह घटोत्कच हाथ में धनुष लिये उसकी ओर झपटा चला आ रहा है, तब भी आपका पुत्र दुर्योधन न घबड़ाया। उस समय भीमपुत्र घटोत्कच ने क्रोध के मारे लाल लाल नेत्र कर दुर्योधन से कहा—रे क्षत्रिय! आज मैं माता पिता के ऋण से उऋण हो जाऊँगा। तूने मेरे पिता आदि को, जुए में धोखा दे और हरा कर बहुत दिनों तक वन में रखा है। एकवस्त्रा और रजस्वला द्रौपदी को भरी सभा में पकड़ मँगवा कर, उसे बड़ा कष्ट दिया था। फिर वन में रहने के दिनों में सिन्धुराज जयद्रथ ने, तुझे ख़ुश करने के लिये, आश्रमवासिनी द्रौपदी का हरण कर अपार कष्ट दिया था। सो यदि आज तू पीठ दिखा रण से भाग न गया, तो मैं आज तुझे पाण्डवों के

इन समस्त कष्टों और लाञ्छनाओं का फल चखाऊँगा। यह कह और क्रोध में भर घटोत्कच, मारे क्रोध के ओंठों को चबाता और दाँत कटकटाता दुर्योधन पर वर्षा ऋतु के बादलों की जलवृष्टि की तरह शरवृष्टि करने लगा।

बानवे का अध्याय

दुर्योधन के साथ घटोत्कच की लड़ाई

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर दुर्योधन ने उस बाणवृष्टि को जिसे दानव भी सहन नहीं कर सकते थे, वैसे ही सहन कर लिया जैसे गजराज जलवृष्टि को सह लेते हैं। तदनन्तर दुर्योधन क्रोध में भर, सर्प की तरह लंबी साँस लेता हुआ बड़े संशय में पड़ गया। फिर उसने घटोत्कच पर अति पैने पच्चीस बाण छोड़े। जैसे सर्प गन्धमादन पर्वत की खोह में घुस जाँय, वैसे ही दुर्योधन के वे समस्त बाण घटोत्कच के शरीर में घुस गये। उन बाणों से लगे हुए घावों से, राक्षसेन्द्र घटोत्कच मद टपकाते हुए गज की तरह रक्त टपकाने लगा। तदनन्तर दुर्योधन का वध करने की कामना से घटोत्कच ने एक ऐसी पैनी शक्ति हाथ में ली, जिसके प्रहार से पत्थर भी चूर चूर हो जाता। बिजली अथवा उल्का की तरह चमचमाती वह शक्ति, दुर्योधन को मार डालने के लिये, घटोत्कच ने उस पर छोड़ी। उसे दुर्योधन की ओर आते देख, वङ्गराज ने पर्वत समान एक गज उसकी ओर बढ़ाया और उसने बड़ी फुर्ती से दुर्योधन के रथ के आगे उस गज को खड़ा किया। जब क्रुद्ध हुए घटोत्कच ने देखा कि, वङ्गराज ने अपने हाथी को आगे खड़ा कर, दुर्योधन के रथ को आड़ में कर लिया है, तब वह शक्ति उसने वङ्गराज ही पर छोड़ी। उस शक्ति के प्रहार से वह गज रक्त की वमन करता हुआ, निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। हाथी के पृथिवी पर गिरते समय, वङ्गराज उसकी पीठ से कूद कर भूमि पर जा खड़ा हुआ। उस गज के मारे

आने से तथा आपकी सेना को भागते देख, दुर्योधन बहुत दुःखी हुआ। अपनी सेना के भाग जाने पर भी दुर्योधन, निज अवमानना और क्षात्रधर्म को स्मरण कर जहाँ का तहाँ पर्वत की तरह अटल भाव से खड़ा रहा। फिर क्रोध में भर उसने प्रलयकालीन अग्नि की तरह एक भयङ्कर बाण अपने धनुष पर चढ़ा, उसे घटोत्कच के ऊपर छोड़ा। इन्द्र के वज्र के समान उस चमचमाते प्रकाशवान् बाण को अपनी ओर आते देख, मायावी घटोत्कच ने बड़ी फुर्ती के साथ उस स्थान से हट, उस बाण को निष्फल कर डाला। फिर क्रोध में भर और लाल नेत्र कर घटोत्कच ने प्रलयकालीन मेघों की तरह गर्जना कर, समस्त शत्रुसैन्य को भयभीत कर दिया।

घटोत्कच के दारुण सिंहनाद को सुन, गङ्गापुत्र भीष्म जी ने द्रोणाचार्य के निकट जा कर कहा—यह तो घटोत्कच जैसा दारुण सिंहनाद सुन पड़ता है। इस समय वह दुर्योधन के साथ युद्ध कर रहा है। आपका मङ्गल हो! आप जा कर दुर्योधन की रक्षा करें। जब महाबली दुर्योधन से घटोत्कच लड़ रहा है, तब दुर्योधन की ऐसे समय में हमें रक्षा करनी चाहिये। यह सुन समस्त महारथी योद्धा तुरन्त दुर्योधन को बचाने के लिये प्रस्थानित हो गये। द्रोणाचार्य, सोमदत्त, बाल्हीक, जयद्रथ, कृपाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य, अवन्ति-राज, बृहद्बल, अश्वत्थामा, विकर्ण, चित्रसेन और विविंशति और इन सब के अनुयायी सैनिक तथा कई सहस्र रथी बड़ी फुर्ती से दुर्योधन के निकट पहुँचने को चले। त्रिशूल, मुद्गर और विविध प्रकार के आयुधधारी राक्षस योद्धाओं सहित घटोत्कच ने जब देखा कि, उन महारथियों से रक्षित एक सेना आततायी रूप से चढ़ी चली आ रही है, तब वह मैनाक पर्वत की तरह अचल भाव से डट कर रणभूमि में खड़ा हो गया और दुर्योधन के रक्षार्थ आयी हुई उस सेना से लड़ने लगा। यह युद्ध बड़ा भयङ्कर हुआ, उसे देख रोंगटे खड़े हो जाते थे। सारे रणक्षेत्र में धनुषटंकार और अस्त्रों की झन-झनाहट ही सुन पड़ती थी। उस समय इन अस्त्रों का वैसा ही शब्द हो रहा था, जैसा कि वन में आग लगने पर बाँसों के चटकने का हुआ

करता है। कवचधारी योद्धाओं के शरीरों पर टकराते हुए शस्त्रों का शब्द, पर्वत फोड़ने के समान सुन पड़ता था। वीर योद्धाओं के धनुषों से छूटे हुए बाण आकाश में उड़ते हुए सर्पों की तरह जान पड़ते थे। इतने में क्रोध में भर घटोत्कच ने घोर सिंहनाद कर, एक अर्धचन्द्राकार बाण छोड़ा, इससे द्रोणाचार्य का धनुष कट गया। फिर दूसरे बाण से उसने सोमदत्त के रथ की ध्वजा काट कर गिरा दी। फिर तीन बाण मार उसने बाल्हीक की छाती चीर डाली। फिर एक बाण से कृपाचार्य और तीन बाणों से चित्रसेन को उसने घायल किया। फिर एक बाण मार उसने विकर्ण को विद्ध किया। विकर्ण उस बाण के लगते ही रक्त को वमन कर और रथ का डंडा पकड़ बैठ गया। फिर विशाल काय घटोत्कच ने भूरिश्रवा पर पन्द्रह बाण छोड़े वे सब बाण भूरिश्रवा के मर्मस्थलों को घायल कर भूमि पर गिर पड़े। तदनन्तर उसने विविंशति और अश्वत्थामा के सारथियों का वध किया। उन दोनों के हाथों से रासें छूट पड़ीं और वे मर कर भूमि पर गिर पड़े। फिर उसने अर्धचन्द्राकार बाण से सुवर्णभूषित वराह के चिन्ह से चिन्हित सिन्धुराज जयद्रथ के रथ की ध्वजा काट कर, उसका धनुष भी काट डाला। फिर क्रोध से रक्त नेत्र कर, चार बाण चला घटोत्कच ने अवन्तिराज के रथ के चारों घोड़े मार डाले। फिर उसने तान कर एक बाण मारा, जिससे राजकुमार बृहद्बल घायल हो गया। फिर अत्यन्त कुपित हो घटोत्कच ने विषैले साँप जैसे तीक्ष्ण कई बाण धनुर्धर शल्य पर छोड़े। इन बाणों के प्रहार से शल्य भी घायल हो गये।

तिरानवे का अध्याय

कौरवों का घटोत्कच के साथ युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! घटोत्कच इस प्रकार आपके पक्ष के इन

समस्त महारथियों को घायल और पीड़ित कर, दुर्योधन का वध करने के लिये उसकी ओर झपटा। यह देख, आपके वे समस्त महारथी योद्धा, दुर्योधन की रक्षा करने के लिये दौड़ पड़े। वे सब सिंहनाद करते हुए और ताड़वृक्ष जैसे लंबे लंबे धनुषों को तान, घटोत्कच की ओर दौड़े। जैसे शारदीय मेघ जलवृष्टि कर पृथिवी को तर कर देते हैं, वैसे ही उन लोगों ने बाणवृष्टि कर, घटोत्कच को ढक दिया। उन बाणों के प्रहार से घटोत्कच अङ्कुश के आघात से पीड़ित गजराज की तरह विद्ध और पीड़ित हो, विनताकुमार गरुड़ की तरह बड़े वेग से आकाश की ओर उड़ गया। आकाश में जा वह बादल की तरह गरजा और इस गरज के शब्द से समस्त दिशाएँ प्रतिध्वनित कीं। धर्मराज युधिष्ठिर ने घटोत्कच के उस घोर सिंहनाद को सुन, भीमसेन से कहा—हे महाबाहो! यह तो घटोत्कच का सिंहनाद सुन पड़ता है। इस समय वह धृतराष्ट्र की सेना के साथ युद्ध कर रहा है। जान पड़ता है, इस युद्ध की परिस्थिति घटोत्कच के अनुकूल नहीं है। दूसरी ओर भीष्म पितामह पाञ्चालों का संहार करने के लिये आ पहुँचे हैं। पाञ्चालों की रक्षा के लिये अर्जुन वहाँ उपस्थित हैं। हे भीम! इस समय दो कठिन समस्याएँ सामने हैं। अतः तुम शीघ्र जा कर घटोत्कच की रक्षा करो।

धर्मराज के इस आदेशानुसार भीमसेन ने सिंहनाद किया और समस्त शत्रुपक्षीय राजाओं को भयभीत कर डाला। फिर वे समुद्र के वेग की तरह घटोत्कच की रक्षा करने को दौड़े। सत्यधृति, पराक्रमी सौचित्त, श्रेणिमान, वसुदान, काशिराज के राजकुमार, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, सुभद्रानन्दन अभिमन्यु, क्षत्रदेव, पराक्रमी क्षत्रधर्मा, ससैन्य अनूपदेशाधिपति राजा नील आदि महारथी योद्धा, भीमसेन के पीछे हो लिये। इनके साथ छः सहस्र गजसैन्य और अनेक रथी थे। ये लोग सिंहनाद, रथों की घरघराहट और अश्वों की टापों से भूमि को कँपाते हुए घटोत्कच के निकट जा पहुँचे और उसे चारों ओर से घेर कर उसकी रक्षा करने लगे। हे राजन्! उस समय आपके पक्ष की सेना, पाण्डवपक्षीय वीरों के विविध भाँति की ललकारों को सुन और

भीमसेन से भयभीत हो, उदास हो गयी तथा घटोत्कच को छोड़ इन नवागत योद्धाओं से भिड़ गयी। दोनों पक्षों के योद्धाओं में से किसी भी पक्ष के योद्धा पीछे पग नहीं रखते थे। अतएव उन दोनों ओर की सेनाओं में घोर युद्ध होने लगा। महारथी योद्धाओं ने एक दूसरे पर प्रहार कर, एक दूसरे पर चढ़ाई की। इस युद्ध में कायरों ने भी महाभयङ्कर रूप धारण किया। अश्वारोहियों गजारोहियों को और पैदल सैनिक रथियों को ललकार ललकार कर वे लड़ने लगे। रथों, घोड़ों, गजों और पैदल सैनिकों के दौड़ने से इतनी धूल उड़ी कि, रणक्षेत्र अन्धकारमय हो गया। उस समय अपने बिराने की सैनिकों को पहचान न हो सकी। वीरनाशी इस महाघोर युद्ध में पिता पुत्र को और पुत्र पिता को न पहचान पाया। सैनिकों का सिंहनाद और शस्त्रों की घोर झङ्कार प्रेतों के शब्दों के समान सुन पड़ी। गजों, घोड़ों और मनुष्यों के रक्त रूपी जल की लहरों से पूर्ण और केशरूपी सिवार से युक्त एक महाभयानक नदी रणभूमि में वह निकली। कटे हुए सिरों के भूमि पर गिरने का शब्द वैसा ही होने लगा, जैसा कि पत्थरों के टुकड़ों के गिरने का होता है। सैनिकों के कबन्धों, मृत गजों और अश्वों से रणभूमि पट गयी। महारथी योद्धा, परस्पर शस्त्रवृष्टि करते हुए बड़े वेग से दौड़ने लगे। अश्वारोही सैनिक एक दूसरे के निकट जा और शस्त्रप्रहार कर, घोड़ों और उन पर सवार योद्धाओं को मार मार कर भूमि पर गिराने लगे। इसी प्रकार पैदल योद्धा भी आपस में मार काट करते मारे जाने लगे। महावतों द्वारा चलाये गये गज, गजों के सामने जा, दाँतों और सूँड़ों से लड़ने लगे। पताकाओं से शोभित वे सब हाथी लोहू से लत्तपत्त हो वैसे ही जान पड़ते थे जैसे बादलों के बीच बिजली। कितने ही हाथी सूँड़ों के कट जाने पर निर्जीव हो भूमि पर लोट गये। कितने ही तोमरों के प्रहारों से पीड़ित हो कर, बादल की तरह चिंघार का शब्द करते हुए, समरक्षेत्र में दौड़ने लगे। कितने ही हाथियों की सूँड़ों के और कितनों ही के शरीरों के दो दो टुकड़े हो गये। वे सब गज मर मर कर रणभूमि में पहाड़ों की तरह गिरने लगे।

बड़े बड़े हाथियों के पेट दूसरे हाथियों के दाँतों की टक्कर से फट गये। उनके शरीरों से ऐसे ही रुधिर बहा कि, जैसे पर्वत से गेरू मिली हुई जलधारा बहती है। कितने ही हाथी बाणों और तोमरों से घायल हो और सवारों के मारे जाने पर, शृङ्गहीन पर्वत जैसे जान पड़ते थे। कितने ही गज, बाण-प्रहार से पीड़ित हो और क्रोध में भर, सैकड़ों रथों, अश्वों और पैदल सिपाहियों को सूँड़ से पकड़ और पैरों से कुचल नष्ट करने लगे। बहुत से घोड़े तो प्रासों और तोमरों से प्रहार करने वाले आक्रमणकारी अश्वारोहियों की ओर ही व्याकुल हो दौड़ पड़े। वीरकुलोद्भव समस्त वीर रथी योद्धा निर्भीक हो, रथियों के साथ लड़ रहे थे। उस समरक्षेत्र में स्वयम्बर सभास्थल की तरह, यश अथवा स्वर्गप्राप्ति की आशा से वीरगण आपस में भिड़े हुए थे। इस प्रकार के उस महादारुण संग्राम में कौरवों की विशाल वाहिनी के पैर उखड़ गये और वह पीठ दिखा भागने लगी।

चौरानवे का अध्याय

घटोत्कच की माया

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! अपनी सेना का नाश देख, दुर्योधन बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने शत्रुनाशकारी भीम पर आक्रमण किया। उसने इन्द्रवज्रतुल्य एक विशाल धनुष को उठा भीम पर बाणवृष्टि की और उसे ढक दिया। उसने परों से युक्त पैने अर्धचन्द्राकार बाण मार भीम के धनुष को काट डाला। तदनन्तर दुर्योधन ने पर्वत को भी विदीर्ण कर डालने वाला एक तीक्ष्ण बाण कस कर भीम की छाती में मारा। इस बाण के आघात से घायल हो तेजस्वी भीम ओठ चबाता अपने रथ की ध्वजा का सुवर्णदण्ड पकड़ कर बैठ गया; किन्तु भीम को इस प्रकार उदास देख, घटोत्कच प्रज्वलित अग्नि की तरह क्रोध में भर गया। अभिमन्यु आदि

पाण्डवों के वीर योद्धा (भीमसेन के जीवन के लिये) सशङ्कित हो और उच्चस्वर से दहाड़ते हुए दुर्योधन की ओर दौड़े। तब अभिमन्यु आदि महारथियों को क्रुद्ध और सशङ्कित देख भरद्वाजनन्दन द्रोण ने अपने पक्ष के महारथियों से कहा कि, ये सब पाण्डव पक्षीय महारथी क्रोध में भर और जयाभिलाषी हो और भीमसेन के आगे हो, क्षत्रिय वीरों को अपने सिंहनाद से त्रस्त करते हुए दुर्योधन की ओर दौड़े चले आ रहे हैं। दुर्योधन भी इस समय विपत्ति-महासागर में पड़ दुःखित हो रहा है। अतः हे महारथी वीरों! तुम्हारा मङ्गल हो। तुम लोग बड़ी फुर्ती से जा शत्रुपक्षीय राजाओं के हाथ से दुर्योधन को बचाओ। द्रोणाचार्य के इन वचनों को सुन, हे राजन्! आपके पक्ष के सोमदत्त आदि राजा पाण्डवों की सेना के निकट पहुँचे। कृपाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य, अश्वत्थामा, विविंशति, चित्रसेन, विकर्ण, जयद्रथ, बृहद्बल, एवं महाधनुर्धर अवन्तिराज शीघ्रता से दुर्योधन के निकट गये और उसे चारों ओर से घेर, उसकी रक्षा करने लगे। वे समस्त महारथी योद्धा वीर आगे बढ़, पाण्डवों की सेना पर प्रहार करने लगे। तदनन्तर दोनों सेनाओं में घोर युद्ध छिड़ गया। महाबाहु द्रोणाचार्य ने समस्त महारथी वीरों को दुर्योधन की रक्षा के लिये भेज, अपना विशाल धनुष उठा लिया और छब्बीस बाण भीमसेन के मारे। फिर तो वे भीम पर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगे, जैसे बादल आकाश से जल की धारा बर्साता है। महाबली धनुर्धर भीमसेन ने दस बाण मार द्रोण का वामपार्श्व विद्ध किया। बूढ़े द्रोण इन बाणों के आघात से घायल हो पीड़ित हुए और रथ में बैठ गये। तब दुर्योधन और अश्वत्थामा ने द्रोण को पीड़ित देख और क्रोध में भर भीमसेन पर आक्रमण किया। प्रलयकालीन यमराज की तरह इन दोनों महारथियों को अपने ऊपर आक्रमण करते देख, भीमसेन गदा हाथ में ले तुरन्त अपने रथ से कूद पड़े। फिर वे उस यमदण्ड जैसी भारी गदा को हाथ में लिये हुए अचल पर्वत की तरह भूमि पर खड़े हो गये। कुरुराज दुर्योधन और अश्वत्थामा, शिखरयुक्त कैलास पर्वत की तरह भीमसेन को गदा उठाये प्रहार

के लिये उद्यत देख, तुरन्त भीम के निकट पहुँचे। उन दोनों पराक्रमी वीरों को अपनी ओर आते देख, भीम उनकी ओर बड़े वेग से लपके। यह देख कौरवपक्षीय द्रोणादि महारथी भीम का वध करने की इच्छा से उसकी ओर बड़े वेग से झपटे। उन सब ने मिल कर चारों ओर से भीम की छाती में बाण मारना आरम्भ किया। यह देख पाण्डवों की सेना के अभिमन्यु आदि महारथी भीम को बचाने के लिये और अपने प्राणों को हथेली पर रख, बड़े वेग से दौड़े। भीमसेन के प्यारे मित्र अनूपदेशाधिपति राजा नील ने क्रोध में भर अश्वत्थामा का सामना किया। क्योंकि राजा नील सदा से अश्वत्थामा से डाह किया करते थे। राजा नील ने एक बाण अश्वत्थामा के मार, उसे घायल कर डाला।

हे राजन्! पूर्वकाल में विप्रचित्त नामक एक दानव हो गया है। उसने अपने क्रोध से तीनों लोक भयभीत कर रखे थे। देवराज इन्द्र ने जैसे उसे अपने शरों से घायल किया था, वैसे ही राजा नील ने एक बाण से अश्वत्थामा को विद्ध किया। इस बाण के आघात से अश्वत्थामा जब घायल हो लोहूलुहान हो गया, तब वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और इन्द्र-वज्रतुल्य भयङ्कर शब्द करने वाले धनुष को तान उसने राजा नील को मार डालना चाहा। उसने चार बाण चला राजा नील के चारों घोड़े मार डाले। फिर एक बाण से उसके सारथि का वध किया। फिर एक बाण से ध्वजा काट उसने एक बाण से राजा नील की छाती चीर डाली, तब राजा नील घायल हो रथ में बैठ गये। मेघवर्ण राजा नील को मूर्छित देख, घटोत्कच क्रोध में भर गया और अपने साथी राक्षसों सहित उसने अश्वत्थामा पर आक्रमण किया। यह देख तेजस्वी अश्वत्थामा भी झटपट उसकी ओर बढ़े और घटोत्कच के साथी समस्त राक्षस योद्धाओं को मार डाला। यह देख घटोत्कच और भी अधिक कुपित हुआ। राक्षसेन्द्र मायावी घटोत्कच ने अश्वत्थामा को मुग्ध करने के लिये विकट माया प्रकट की। तदनन्तर आपकी सेना के समस्त वीर घटोत्कच की माया से मोहित हो आपस में एक दूसरे

को देखने लगे। सब ने देखा कि द्रोण, दुर्योधन, शल्य, अश्वत्थामा एवं अन्य अनेक कौरव वीर योद्धाओं में से कितने ही अस्त्रों से पीड़ित और रक्त से लोहूलुहान हो भूमि पर मरे पड़े हैं। सहस्रों घोड़े और घुड़सवार मरे पड़े हैं। इस कौतुक को देख और रण छोड़, आपकी सेना शिविर की ओर बड़े वेग से दौड़ने लगी।

हे राजन्! उन सब को भागते देख, मैंने और भीष्म ने चिल्ला कर कहा—अरे तुम लोग क्यों भागे जाते हो? लड़ो, युद्ध करो। तुम लोग जिस दृश्य को देख भयभीत हो गये हो वह राक्षसी माया है और असत्य है। किन्तु उन लोगों ने हम दोनों की बात पर ध्यान न दिया और सशङ्कित हो वे भागते ही गये और खड़े न हुए। जब घटोत्कच और पाण्डवों ने उनको भागते देखा, तब वे समरविजयी वीर सिंहनाद करने लगे। शङ्ख, नगाड़े आदि मारू बाजे बजाये गये, जिनकी ध्वनि से पृथिवी प्रतिध्वनित हो गयी। सूर्यास्त होते होते दुष्ट घटोत्कच की माया से आपकी समस्त सेना इधर उधर भाग गयी।

पंचानबे का अध्याय

घटोत्कच के साथ भगदत्त की लड़ाई

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! उस महाघोर संग्राम में दुर्योधन ने भीष्म के पास जा और उनको प्रणाम कर, विनयपूर्वक उनसे अपने पराजय और घटोत्कच के विजय का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कहा। वृत्तान्त कहते समय दुर्योधन बारंबार लंबी साँसे लेता जाता था। समस्त वृत्तान्त सुना, अन्त में उसने कहा कि, हे पितामह! मैंने तो आपके सहारे वैसे ही यह युद्ध छेड़ा है, जैसे श्रीकृष्ण के सहारे पाण्डवों ने। हे परन्तप! ग्यारह अक्षौहिणी सेना सहित मैं आपके आज्ञानुसार कार्य करने को प्रस्तुत हूँ। तिस पर भी

पाण्डवों ने घटोत्कच द्वारा मुझे परास्त किया है। इससे मेरा शरीर मारे क्रोध के वैसे ही भस्म हुआ जाता है, जैसे तृणसमूह अग्नि से। अतः हे परन्तप ! मैं आपके अनुग्रह से जैसे बने वैसे इस राक्षस का नाश करना चाहता हूँ। आप मुझे इसका उपाय बतलावें।

दुर्योधन के इन वचनों को सुन, कुरु-कुल-भूषण शान्तनुनन्दन भीष्म ने कहा—दुर्योधन ! इस युद्ध में तुम्हें जो करना चाहिये, सो मैं तुम्हें सुनाता हूँ, तुम सुनो। हे वत्स ! केवल युद्ध ही में नहीं प्रत्युत सर्वत्र तुम्हें आत्म-रक्षा करना चाहिये। धर्मराज, अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव में से किसी भी एक के साथ तुम्हें युद्ध करना चाहिये, क्योंकि राजाओं को राजधर्म का आश्रय ग्रहण कर राजा ही के साथ युद्ध करना पड़ता है। यदि तुम्हारी इच्छा घटोत्कच का वध करने की है तो द्रोण, कृप, अश्वत्थामा, कृतवर्मा, शल्य, भूरिश्रवा, विकर्ण, दुःशासन आदि तुम्हारे मुख्य मुख्य सहोदर और मैं तुम्हारी ओर से घटोत्कच से लड़ेंगे। अथवा इन्द्र के समान पराक्रमी भगदत्त, उस दुष्टबुद्धि घटोत्कच के साथ लड़ने को जायगा।

बुद्धिमान भीष्म ने इस प्रकार दुर्योधन से कह उसके सामने ही उन्होंने राजा भगदत्त से यह कहा—हे राजन् ! आप झटपट घटोत्कच के समीप जा कर उसे वैसे ही भगा दो, जैसे इन्द्र ने तारकासुर को भगाया था। हे परन्तप ! आप समस्त दिव्यास्त्रों का चलाना रोकना जानते हैं और आप पराक्रमी भी हैं। पूर्वकाल में आप अनेक देवताओं के साथ लड़ चुके हैं, अतः इस भयङ्कर राक्षस के साथ लड़ने के योग्य आप ही हैं। आप अपना बल प्रकट कर, उस राक्षस को मार डालो।

अनन्तर सेनापति भीष्म के आदेशानुसार भगदत्त सिंहनाद करते हुए प्रस्थानित हुए। पाण्डवपक्षीय महारथी भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदिराज, वसुमान और दशार्ण देश के राजाओं ने भगदत्त का मेघगर्जनवत् सिंहनाद सुना और उसे

अपनी ओर आते देख, वे स्वयं झपट कर उसकी ओर गये। भगदत्त के साथ पाण्डवों के पक्ष के वीरों की लड़ाई होने लगी। महावेगवान और पैने बाण योद्धाओं के धनुषों से छूट छूट कर रथों और गजों पर गिरने लगे। मदमाते गज, महावतों के अङ्कुशों के आघातों से उत्तेजित हो, हाथियों से भिड़ गये। महामतवाले गज क्रोध में भर अपने मूसल जैसे दाँतों से अन्य गजों के शरीरों पर प्रहार कर उन्हें घायल करने लगे। चँवरभूषित घोड़े प्रासधारी अश्वारोहियों से प्रेरित हो, रणभूमि में चारों ओर दौड़ने लगे। अगणित पैदल सैनिक, परपक्षी पैदल सैनिकों के अस्त्रप्रहारों से पीड़ित हो, मर कर भूमि पर गिर पड़े।

रथी योद्धा अपने अपने रथों पर बैठे हुए, कर्णी, नालीक आदि बाण चला, वीरों का वध करते थे और सिंहनाद करते थे। इस लोमहर्षणकारी संग्राम में महाधनुर्धर राजा भगदत्त, मदमाते सुप्रतीक नामक गजराज पर सवार हो, भीमसेन के सामने गया। भगदत्त के गजराज के समस्त शरीर से वैसे ही मद चू रहा था, जैसे पर्वत के नाना स्थानों से जल झरा करता है। ऐरावत पर सवार इन्द्र की तरह राजा भगदत्त उस गज पर सवार हो और जलवृष्टि की तरह बाणवृष्टि करता हुआ आगे बढ़ा। जैसे मेघ वर्षाऋतु में पर्वत पर जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही भगदत्त अपनी बाणवृष्टि से भीम को पीड़ित करने लगा। तब महाधनुर्धर भीम ने क्रोध में भर भगदत्त के सौ से भी अधिक पृष्ठरक्षकों का वध किया। यह देख भगदत्त ने अपना हाथी भीमसेन के रथ पर लपकाया। भगदत्त से प्रेरित वह हाथी, धनुष से छूटे बाण की तरह बड़े वेग से भीमसेन के रथ की ओर लपका। केकयराज, अभिमन्यु, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, दशार्णराज, पराक्रमी क्षत्रदेव, चेदिराज और चित्रकेतु आदि पाण्डवपक्षीय महाबलवान महारथियों ने भीमसेन को आगे किया। फिर उन सब ने क्रोध में भर और दिव्यास्त्रों का प्रयोग कर, चारों ओर से उस हाथी को घेर लिया। इन महारथियों के बाणों से विद्ध हो कर और लोहूलुहान हो वह गजराज वैसे ही शोभित

हुआ, जैसे गेरू मिट्टी की धारा प्रवाहित करने वाला पर्वत शोभायमान होता है। दशार्णराज पर्वत जैसे विशालकाय एक गज पर सवार हो भगदत्त के सामने गये। तब भगदत्त के हाथी ने दशार्णराज के हाथी को वैसे ही रोका, जैसे समुद्र के वेग को उसका तट रोकता है। यह देख पाण्डवों के सैनिक भी वाह वाह कह भगदत्त के गजराज की प्रशंसा करने लगे। हे राजन्! तदनन्तर राजा भगदत्त ने क्रोध में भर कर, उस गज पर चौदह तोमर छोड़े। वे सब तोमर हाथी के कवच को फोड़ उसके शरीर में घुस गये। तब वह गज पीड़ित हो, निर्मद हो गया। जैसे पवन प्रबल वेग से चल वृक्षों को उखाड़ कर फेंक देता है, वैसे ही दशार्णराज का गज चिंघारता और अपनी सेना के लोगों को कुचलता हुआ भाग गया। जब वह हाथी भाग गया, तब पाण्डव भीम को आगे कर और सिंहनाद करते तथा भाँति भाँति के बाण और शस्त्रों को छोड़ते भगदत्त की ओर लपके।

हे राजन्! महाधनुर्धर भगदत्त इनका सिंहनाद सुन, बड़ा क्रुद्ध हुआ और निर्भीक हो उसने अपने हाथी को उन लोगों की ओर बड़े वेग से बढ़ाया। गजश्रेष्ठ सुप्रतीक भगदत्त के अङ्कुश और अँगूठे से हाँका जा कर, क्षणभर में प्रलयकालीन अग्नि की तरह अग्निवत् प्रज्वलित हो उठा। क्रोध में भरा वह गजराज इधर उधर दौड़ने वाले सवारों सहित रथों, हाथियों, अश्वों और हज़ारों पैदल सैनिकों को कुचलने लगा। पाण्डवों की सेना गजराज से पीड़ित हो, अग्नितप्त चर्म की तरह सिमिट गयी। यह देख घटोत्कच ने क्रोध में भर भगदत्त का सामना किया। उसके नेत्र लाल हो गये। भयङ्कर रूप बना उसने एक ऐसा भयङ्कर त्रिशूल हाथ में लिया, जो अभेद्य पर्वतों को भी विदीर्ण करने वाला था। फिर उस चमचमाते त्रिशूल को भगदत्त पर छोड़ा। यह देख, राजा भगदत्त ने एक अर्धचन्द्राकार बाण से काट कर उसे गिरा दिया। जैसे आकाश में इन्द्रधनुष की शोभा होती है, वैसे ही भगदत्त के बाण से कटा हुआ वह त्रिशूल शोभायमान हुआ। घटोत्कच के त्रिशूल के दो टुकड़े कर, राजा भगदत्त खड़ा रह, खड़ा रह,

कहता हुआ झपटा और अग्निशिखा जैसी प्रज्ज्वलित एवं सुवर्ण की मूठ की एक शक्ति उस पर फेंकी। यह देख, घटोत्कच ने ऊपर उछल कर, उस शक्ति को हाथ से पकड़ लिया और सिंहनाद किया।

हे भारत! उसने शक्ति को हाथ से पकड़ और घुटने पर रख, उसे राजा भगदत्त के सामने ही तोड़ डाला। उसने यह काम बड़ा विस्मयोत्पादक किया था, क्योंकि आकाश में विमानों पर सवार देवता, गन्धर्व और मुनि-गण उस बलवान् राक्षस के इस अद्भुत कर्म को देख आश्चर्य-चकित हुए थे। भीमसेनादि पाण्डवों ने धन्य! धन्य!! कह उसके बल पराक्रम की सराहना की। महाधनुर्धर एवं प्रतापी भगदत्त महाबली पाण्डवों के हर्षनाद को सुन, क्रोध में भर गया। उसने इन्द्र के वज्र की तरह प्रचण्ड एवं चम-चमाता एक धनुष उठा लिया। फिर सिंहनाद कर वह पाण्डवपक्षीय महारथियों के ऊपर चमचमाते पैने बाण छोड़ने लगा। उसने एक बाण से भीमसेन, नौ बाणों से घटोत्कच, तीन बाणों से अभिमन्यु और पाँच बाणों से केकयराज पाँचों भाइयों को घायल किया। फिर एक पैना बाण क्षत्रदेव की दहिनी भुजा में मारा। उस बाण के लगते ही क्षत्रदेव के हाथ का धनुष छूट पड़ा। तदनन्तर प्रतापी भगदत्त ने पाँच बाणों से द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को घायल किया। फिर क्रोध में भर उसने भीमसेन के रथ के घोड़े मार डाले। तदनन्तर उसने तीन बाण मार भीम की सिंहध्वजा को काट गिराया और तीन बाण पुनः छोड़ भीम के सारथि विशोक को घायल किया। भगदत्त के बाणप्रहार से विकल हो विशोक रथ में गिर पड़ा। तब तो रथिश्रेष्ठ भीम गदा ले रथ से कूद पड़े और भूमि पर जा खड़े हुए। उन्हें सशिखर पर्वत की तरह गदाधारी देख, आपकी सेना के वीर बहुत घबड़ाये।

हे राजन्! इतने ही में चारों ओर से शत्रु-सैन्य का संहार करते करते श्रीकृष्ण सहित अर्जुन वहाँ जा पहुँचे जहाँ भीमसेन, घटोत्कच, अभिमन्यु आदि भगदत्त से लड़ रहे थे। अर्जुन अपने महारथी भाइयों को भगदत्त के बाणों

से पीड़ित देख कर, शरवृष्टि कर युद्ध करने लगे। यह देख दुर्योधन ने अपनी समस्त चतुरङ्गिणी सेना अर्जुन पर आक्रमण करने के लिये भेजी। कौरवों की सेना को अपने ऊपर आक्रमण करने के लिये आते देख, अर्जुन वेग पूर्वक उसकी ओर लपके। इतने में भगदत्त पाण्डवों की सेना को अपने गजराज से नष्ट करता हुआ धर्मराज युधिष्ठिर के निकट जा पहुँचा। तब पाञ्चालों, पाण्डवों और केकयदेशीय योद्धाओं के साथ भगदत्त की बड़ी विकट लड़ाई हुई। इसी समय भीम ने श्रीकृष्ण और अर्जुन को इरावान् के मारे जाने का विस्तृत वृत्तान्त सुनाया।

छियानवे का अध्याय

समरभूमि का दृश्य

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! इरावान् के मारे जाने का समाचार सुन अर्जुन को बड़ा दुःख हुआ। वे सर्प की तरह फुँसकारते हुए श्रीकृष्णचन्द्र से बोले—हे मधुसूदन! महाबुद्धिमान् विदुर को पहले ही मालूम था कि, इस युद्ध में कौरवों और पाण्डवों का घोर विनाश होगा। इसीसे उन्होंने धृतराष्ट्र से कह, इस युद्ध को रोकना चाहा था। कौरव हमारे पक्ष के अनेक अवध्य वीरों का वध कर रहे हैं। इसी प्रकार हम भी अवध्य कौरवों का वध कर रहे हैं। हम लोग धन दौलत के पीछे ही इस प्रकार का ज्ञातिनाश करने में प्रवृत्त हुए हैं। अतः ऐसी सम्पत्ति अर्थात् अर्थ को सहस्र बार धिक्कार है। हे कृष्ण! धनहीन पुरुष को तो मर जाना ही अच्छा है; किन्तु जाति के लोगों का वध करना उचित नहीं। हे महाबाहो! हमें अपने जाति और कुटुम्ब के लोगों का वध करने से मिलेगा ही क्या? सुबलसुत शकुनि और कर्ण की कुमंत्रणा और दुर्योधन की करतूतों ही से क्षत्रियों का नाश हो रहा है। मैंने तो समझ लिया कि, धृतराष्ट्र से धर्मराज ने आधा राज्य माँगा था। जब उन्हें वह न मिला, तब उन्होंने

केवल पाँच गाँव ही माँगे थे। सो यह उन्होंने बहुत अच्छा किया था। यह बात आज मेरी समझ में आयी है; किन्तु इस याचना को भी दुष्टों ने स्वीकार न किया। अब इस समय शूरवीर क्षत्रियों को निर्जीव हो भूमि पर पड़े देख, मुझे अपने को धिक्कारना पड़ता है। धिक्कार है, क्षत्रियों की जीविका को। मेरी जाति बिरादरी के लोग मुझे कहीं असमर्थ न समझ बैठे—मुझे तो इसीसे इनके साथ लड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा है। हे कृष्ण! अब तुम मेरा रथ तुरन्त वहाँ ले चलो जहाँ धृतराष्ट्र के पक्ष की सेना है। मैं अपने भुजबल से इस समर-सागर से पार हो जाऊँगा। अब व्यर्थ समय गवाना ठीक नहीं।

अर्जुन के इन वचनों को सुन शत्रु-नाश-कारी श्रीकृष्ण ने वायुवेगी अपने घोड़ों को आपकी सेना की ओर बढ़ाया। उस समय आपकी सेना में वैसा ही कोलाहल मचा, जैसा पूर्णिमा के दिन समुद्र में हुआ करता है। सन्ध्या समय पाण्डवों के साथ भीष्म का भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में सैनिक बादलों जैसा गम्भीर गर्जन करते थे। आपके पुत्र चारों ओर से द्रोण को घेर कर वैसे ही भीम की ओर लपके जैसे वसुओं ने इन्द्र को चारों ओर से घेर कर दानवों के साथ लड़ने के लिये गमन किया था। तदनन्तर रथिश्रेष्ठ भीष्म, कृप, भगदत्त और सुशर्मा ने आगे बढ़ अर्जुन का सामना किया। कृतवर्मा और बाल्हीक सात्यकि से और अम्बष्ठ अभिमन्यु से लड़ने लगे। अन्य समस्त आपके महारथी योद्धाओं ने पाण्डवपक्षीय महारथियों पर आक्रमण किया। उस समय समस्त वीरों का महाघोर संग्राम होने लगा। हे राजन्! जब भीमसेन ने रण में आपके पुत्रों को देखा, तब तो उसका क्रोध वैसे ही भड़क उठा जैसे घृताहुति पड़ने पर अग्नि धधक उठता है। आपके पुत्रों ने भी भीम पर वैसे ही शरवृष्टि की, जैसे वर्षाकालीन मेघ, पर्वत के ऊपर जलवृष्टि करते हैं। आपके पुत्रों ने शरजाल से भीम को आच्छादित कर दिया। पराक्रमी भीमसेन ने बारंबार शरजाल से आच्छादित हो और मारे क्रोध के ओंठ चबा, व्यूढोरस्क पर एक पैना बाण छोड़ा। उस

बाण के लगते ही वह निर्जीव हो भूमि पर गिर पड़ा। तदनन्तर जैसे मृग के शावकों को सिंह अनायास मार गिराता है, वैसे ही विष में बुझे एक भल्ल बाण से भीमसेन ने कुण्डली को मार डाला। फिर भीम विष बुझे तीर धड़ाधड़ आपके पुत्रों पर छोड़ने लगा। भीम के इन बाणों से आपके पुत्र रथों से टपाटप नीचे गिरने लगे। अनाधृष्टि, कुण्डभेदी, विराट, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु और कनकध्वज नामक आपके शूरपुत्र रथों से गिरते समय वैसे ही देख पड़ते थे, जैसे वसन्त ऋतु में टूट कर नीचे गिरे हुए फूलों के भार से झुके हुए आम के वृक्ष देख पड़ते हैं। भीम को कालस्वरूप जान, आपके अन्य पुत्र रणक्षेत्र से भागे। आपके पुत्रों का भीम द्वारा मारा जाना देख, द्रोण ने भीम को शरवृष्टि से वैसे ही ढक दिया, जैसे जलवृष्टि कर मेघ पर्वत को ढक देते हैं। उस समय भीम ने अपना अद्भुत पराक्रम प्रदर्शित किया। मैंने देखा कि, यद्यपि आचार्य द्रोण बाणों की बाढ़ दाग बहुत चाहते थे कि, भीम आगे न बढ़ने पावें, तथापि भीम ने आगे बढ़ आपके पुत्रों का वध किया ही। जैसे साँड़ जलवृष्टि को सह लेता है, वैसे ही भीमसेन द्रोण के चलाये बाणों के प्रहार को सहन कर गया।

हे राजन्! आज के युद्ध में भीम ने यह अद्भुत कर्म किया कि, उसने द्रोणाचार्य के प्रहारों को रोका और आपके पुत्रों का वध भी किया। जैसे सिंह मृगों के झुंड में घूमता हुआ क्रीड़ा करता है, वैसे ही भीम आपके पुत्रों के बीच, भ्रमण कर उनको तितर बितर करने लगा। भीष्म, भगदत्त और महारथी कृपाचार्य; बलवान् पाण्डुपुत्र अर्जुन को निवारण करने लगे; किन्तु महारथी अर्जुन ने उन सब महारथियों के चलाये अस्त्रों को अपने अस्त्रों से व्यर्थ कर डाला। तदनन्तर आपकी सेना के छटा छटा एवं प्रधान वीरों को अर्जुन ने मार कर यमालय भेज दिया। अभिमन्यु ने जगत्प्रसिद्ध एवं रथियों में श्रेष्ठ राजा अम्बष्ठ को रथहीन कर दिया। राजा अम्बष्ठ तब अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित हो, निर्लज्ज हो रथ से कूद पड़ा और अभिमन्यु पर तलवार फेंक, कृतवर्मा के रथ पर जा बैठा। अभिमन्यु ने रथ को आगे पीछे हँकवा

उस तलवार के वार को व्यर्थ कर डाला। अभिमन्यु के इस कार्य को देख, सैनिक लोग वाह! वाह! कह कर उसकी सराहना करने लगे।

हे राजन्! दूसरी ओर पाण्डवों की सेना को साथ ले धृष्टद्युम्नादि वीर योद्धाओं के साथ आपके सैनिकों का घोर युद्ध होने लगा। दोनों सेनाओं के शूरवीर योद्धा एक दूसरे के केशों को खींच, नखों, दाँतों, घूँसों, तमाचों, कोहनियों और घुटनों से लड़ने लगे। दाँव हाथ आते ही वे शत्रुओं को मार कर यमालय भेज देते थे। पिता ने पुत्र पर और पुत्र ने पिता पर प्रहार किया। सैनिक लोग रणभूमि में प्रतिपक्षियों के योद्धाओं को सब प्रकार विकल कर, युद्ध का कार्य पूर्ण करने लगे। मरे हुए पुरुषों के सुवर्णभूषित और सुन्दर धनुष और उत्तम भूषण समरभूमि में बिखर गये और उनकी बड़ी शोभा हुई। सोने चाँदी की डंडियों वाले तीर सर्प की तरह रणभूमि में पड़े चमचमा रहे थे। हाथी दाँत की मूठों वाली तलवारों की मूँठें, सुवर्णभूषित तलवारें, ढालें, प्रास, पट्टिश, ऋष्टि, शक्ति, उत्तमोत्तम कवच, विशाल मूसल, परिघ, भिन्दिपाल, विविध प्रकार के सुवर्णभूषित धनुष, चँवर और विविध प्रकार के अन्य शस्त्रास्त्र रणभूमि में पड़े हुए थे। महारथी योद्धा अपने अपने अस्त्र शस्त्रों को लिये हुए ही मर कर रणभूमि में गिरते थे। मरे हुए होने पर भी वे जीवित जैसे जान पड़ते थे, बहुत से वीरों के शरीर तो गदाप्रहार से चकनाचूर हो गये थे। अनेक वीरों के सिर मूसलों की चोट से फूट गये। इस प्रकार मरे हुए समस्त योद्धा अपने अपने गजों, घोड़ों और भग्न रथों सहित रणभूमि में पड़े थे। उनके शवों से रणभूमि वैसे ही आच्छादित थी, जैसे पृथिवी पर्वतों से। समरभूमि में पड़े हुए शूलों, शक्तियों ऋष्टियों, बाणों, तोमरों, तलवारों, पट्टिशों, प्रासों, लोहे के भालों, फरसों, परिघों, भिन्दिपालों, भुशुण्डियों और शस्त्रों से आहत सैनिकों से वहाँ की भूमि पटी पड़ी थी। घायल और रक्त से लथपथ कितने ही योद्धा, निश्चेष्ट हो पड़े थे और कितने ही पड़े पड़े बुरी तरह चिल्ला रहे थे, सारांश यह कि, ऐसे लोगों से रणभूमि परिपूर्ण हो गयी थी। बलवान वीरों के गिर हुए

तनुत्राणों, चन्दन-चर्चित भुजाओं, हाथी की सूँड़ों जैसी कटी हुई जंघाओं और कुण्डलों एवं मुकुटों से शोभित सिरों से पृथिवी पूर्ण थी। जिस प्रकार शान्त हुई लपटों वाली अग्नि से भूमि शोभित होती है, वैसे ही रक्तरञ्जित सुवर्ण कवचों के यत्र तत्र पड़े रहने से रणभूमि शोभामयी जान पड़ती थी। इधर उधर पड़े हुए भूषणों, सुवर्ण की डंडी वाले बाणों, घंटियों से युक्त भग्न रथों, बाणों के प्रहारों से आहत, जीभ निकाले, लोहूलुहान शरीर वाले घोड़ों, रथ के कोठों, पताकाओं, तूणीरों, ध्वजाओं, वीरों के श्वेतवर्ण विशाल शङ्खों और पर्वत जैसी डीलडौल के और कटी हुई सूँड़ों वाले गजों से परिपूर्ण रणभूमि एक प्रमदा की तरह शोभायमान जान पड़ती थी। कितने ही गज भालों से घायल हो गये थे। वे पीड़ित हो चिघार रहे थे और सूँड़ों से जल की फुहारें छोड़ रहे थे। अतः वहाँ की रणभूमि सचल पर्वतों से युक्त जैसी जान पड़ती थी। वहाँ पर चारों ओर पड़ीं विविध प्रकार की झूलों, हौदों, वैदूर्यमणि जटित सुन्दर अङ्कुशों, गजघंटों तथा टूटे अङ्कुशों और फटी झूलों नाना प्रकार के गजों के कण्ठहारों, सुनहली लरों के तंगों, युद्धोपयोगी भग्न यंत्रों, सुवर्णभूषित तोमरों, धूलधूसरित ज़री के ज़ीनपोशों, बाजूबंदों से भूषित कटी हुई अश्वारोहियों की भुजाओं, चमकीले पैने भालों, पगड़ियों, सोने के मुलम्मे से भूषित बाणों, रंकुमृगचर्म के चारजामों, चूड़ामणियों, टूटे फूटे छत्रों, चँवरों, पंखों, सम्हाली हुई दाढ़ियों, मूँछों से युक्त चमचमाते कुण्डलों और मुकुटों से शोभित कटे हुए सिरों से रणभूमि, ग्रहनक्षत्रादि से भूषित आकाश जैसी जान पड़ती थी।

हे राजन्! इस प्रकार आपकी और पाण्डवों की दोनों सेनाओं के आमने सामने लड़ने से महासंहार हुआ। इस महासमर में योद्धा लड़ते लड़ते थक गये, कितने ही मारे गये और जो बचे, वे जान ले कर भाग गये। हे भारत! इतने में रात्रि का अन्धकार चारों ओर छाने लगा। योद्धाओं को जब उस अन्धकार में देखने में कष्ट होने लगा, तब कौरवों और पाण्डवों

ने अपनी अपनी सेनाएँ लौटायीं। दोनों पक्षों की सेनाएँ युद्ध बंद कर अपने अपने शिविरों को लौट गयीं।

[आठवें दिन की रात]

सत्तानबे का अध्याय

दुर्योधन का विलाप

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! छावनी में पहुँच कर, दुर्योधन, शकुनि, दुःशासन, कर्ण ने एकत्र हो, इस बात पर विचार किया कि, पाण्डवों को हम लोग किस प्रकार जीतें। दुर्योधन ने अपने मित्रों और विशेष कर कर्ण और शकुनि को सम्बोधन कर कहा कि, द्रोण, भीष्म, शल्य, कृप और भूरिश्रवा, क्यों पाण्डवों के साथ मन लगा कर नहीं लड़ते, यह बात मेरी समझ में नहीं आती। ये लोग पाण्डवों का वध नहीं करते, इसलिये पाण्डव मेरी सेना का संहार किये डालते हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि, मेरे सैनिकों और अस्त्रशस्त्रों की संख्या उत्तरोत्तर कम होती चली जा रही है। मैं तो पाण्डवों से हैरान हो गया हूँ। जान पड़ता है ये लोग देवताओं से भी अवध्य हैं। इसीसे मेरा मन संशयग्रस्त हो रहा है। अब मैं लड़ूँ भी तो किस प्रकार लड़ूँ।

हे राजन् ! दुर्योधन के इन वचनों को सुन कर, सूतपुत्र कर्ण ने कहा—हे भरतसत्तम ! आप चिन्ता न करें, मैं आपको प्रसन्न करूँगा। भीष्म जी को शीघ्र रणक्षेत्र से हट जाने दीजिये। जब भीष्म जी रण छोड़ कर हट जायँगे ; मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूँ, तब मैं समस्त सोमकों सहित पाण्डवों का नाश कर डालूँगा। यह बात चाहें तो भीष्म जी भी देख लें। इसमें सन्देह नहीं कि, पाण्डवों पर भीष्म का दयाभाव सदा से है और भीष्म में इन महारथियों को परास्त करने की शक्ति भी नहीं है। यद्यपि भीष्म को

युद्ध में पराक्रम प्रदर्शित करने का अभिमान है और वे सदा से रणप्रिय भी हैं; तथापि इतने से वे पाण्डवों को भला कैसे जीत सकते हैं? अतएव हे भारत! तुम शीघ्र भीष्म जी के निकट जाओ और समझा बुझा कर उनसे शस्त्र रखवा दो। भीष्म के शस्त्र रखते ही, मैं अकेला ही बन्धुबान्धवों सहित पाण्डवों को किस प्रकार मारता हूँ—यह तुम देख लेना।

हे राजन्! कर्ण के इन वचनों को सुन कर, आपके पुत्र दुर्योधन ने अपने भाई दुःशासन से कहा—हे दुःशासन! तुम समस्त सैनिकों को आज्ञा दो कि, वे मेरे पीछे चलने को तैयार रहें। दुःशासन से यह कह दुर्योधन ने कर्ण से कहा कि, मैं भीष्म को तुम्हारे प्रस्तावानुसार राज़ी कर अभी लौट कर आता हूँ। जब भीष्म जी युद्ध से विरत हो जाँय तभी तुम युद्ध करना। यह कह आपका पुत्र भीष्म जी के निकट अपने भाइयों को साथ ले वैसे ही गया; जैसे देवताओं को साथ ले इन्द्र जाते हैं। तदनन्तर दुःशासन ने सिंह समान पराक्रमी दुर्योधन को घोड़े पर सवार करवाया। बाजूबंदों, मुकुट तथा अन्य आभूषणों से भूषित दुर्योधन, जाता हुआ बड़ा सुशोभित जान पड़ा। पुष्पवासित, सुवर्णभूषित, उत्तम वस्त्रों से अलंकृत, सुगन्ध एवं चन्दनादि से चर्चित, सफेद वस्त्र पहिन, सिंह जैसी चाल से चलता हुआ दुर्योधन आकाशचारी सूर्य जैसा जान पड़ता था। भीष्म के शिविर की ओर दुर्योधन को जाते देख, जगत्प्रसिद्ध वीर योद्धा और दुर्योधन के भाई उसके पीछे वैसे ही चले जाते थे, जैसे देवगण इन्द्र के पीछे चलते हैं। कितने ही घोड़ों पर, कितने ही हाथियों पर और कितने ही पराक्रमी वीर रथों पर सवार हो और दुर्योधन को घेरे हुए चलने लगे। जैसे स्वर्ग में देवगण, इन्द्र की रक्षा करने को उनके अनुगामी होते हैं, वैसे ही अपना सुहृद्भाव प्रकट करते हुए कौरव वीर दुर्योधन के साथ चले जा रहे थे। कुरुराज दुर्योधन कौरवों से पूजित हो, यशस्वी गङ्गानन्दन भीष्म के निकट जाने लगा। वह अपने अनुगामी सहोदरों के साथ जा रहा था। हाथ जोड़े खड़े हुए नाना देशवासी लोग—उसके प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करते थे। समस्त शत्रुओं का

नाश करने वाला और हाथी की सूँड़ जैसा अपना दहिना हाथ उठा, दुर्योधन रास्ते में खड़े लोगों को यथायोग्य प्रणाम आशीर्वाद देता चला जाता था। उन लोगों के मुख से अपनी प्रशंसा तथा सूत मागधों द्वारा अपना यशोगान सुनता हुआ, चतुर दुर्योधन चला जा रहा था। उसके आगे पीछे अगल बगल सोने की मशालें जल रही थीं। उन मशालों में सुगन्धित तैल जलाया जाता था। उन मशालों के प्रकाश में तेजस्वी दीखता हुआ दुर्योधन तेजस्वी ग्रहों से घिरे हुए चन्द्रमा की तरह शोभायमान हो रहा था। सुनहली मण्डीलें बाँधे तथा हाथों में छड़ियाँ और बेंत लिये हुए चोबदार, हटो बचो कहते और रास्ता साफ़ करते उसके आगे आगे चले जा रहे थे। इस प्रकार चल कर, दुर्योधन भीष्म जी के तंबू के निकट जा पहुँचा और घोड़े से उतर तंबू के भीतर गया। भीतर जा और भीष्म पितामह को प्रणाम कर, बहुमूल्य सुवर्ण के सर्वतोभद्र नामक उत्तम सिंहासन पर वह बैठ गया। फिर हाथ जोड़, आँखों में आँसू भर, गद्गद् कण्ठ से बोला—हे शत्रुनाशन! आपका सहारा पा कर हम युद्ध में इन्द्र सहित समस्त देवताओं को तथा असुरों को परास्त कर सकते हैं। फिर मित्रों और बान्धवों सहित पाण्डवों को जीतना तो कोई बात ही नहीं है। अतः हे गङ्गानन्दन! आप मेरे ऊपर कृपा करें। जैसे इन्द्र ने दानवों का वध किया था, वैसे ही आप लड़ाई में पाण्डवों का वध करें। हे भरतकुलभूषण! आपने कहा था कि, आप सोमकों, पाञ्चालों, केकयों और करूषों को मार डालेंगे। अपने इस कथन को अब आप सत्य करें। समस्त कुन्तीनन्दन पाण्डवों को मार डालिये और समस्त सोमकों का नाश कर अपने कथन को पूरा कर दिखलाइये। हे राजन्! और यदि मेरे प्रति द्वेष और पाण्डवों के प्रति दया प्रदर्शित कर, अथवा मेरे दुर्भाग्यवश आप पाण्डवों की रक्षा करते हों, तो आप अपने पद पर कर्ण को काम करने की आज्ञा दें। कर्ण संग्राम को सुशोभित करने वाला है और वह बन्धु बान्धवों और मित्रों सहित पाण्डवों को परास्त कर सकता है।

हे राजन् ! आपका पुत्र दुर्योधन, भीष्म से यह कह चुप हो गया और फिर उसने कुछ भी न कहा, वह चुपचाप बैठ रहा।

अट्ठानवे का अध्याय

भीष्म का दुर्योधन को उत्तर

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! आपके पुत्र के वचन रूपी शरों से आहत एवं उदारमना भीष्म यद्यपि बड़े दुःखी हुए। तथापि उन्होंने अपने मुख से एक भी कठोर वचन नहीं निकाला। दुःखी और कुपित भीष्म जी बारंबार लंबी लंबी साँसे छोड़ते बहुत देर तक मन ही मन सोचते विचारते रहे। फिर क्रोधाग्नि से दोनों नेत्र रक्तवर्ण कर, मानों देवताओं, असुरों और गन्धर्वों को भस्म करते हुए, आपके पुत्र दुर्योधन को समझा कर, उससे यह कहा—हे दुर्योधन ! तू वाक्शरों से मुझे क्यों घायल करता है ? मैं तो अपनी पूर्ण शक्ति लगा कर युद्ध करता हूँ और तेरा भला चाहता हूँ। इतना ही नहीं तेरी भलाई के लिये मैं रण में अपने प्राण देने को सदा तैयार रहता हूँ; परन्तु पाण्डु के शूरपुत्र अजेय हैं। इसका प्रमाण यह है कि, अर्जुन ने इन्द्र को हरा कर खाण्डव वन को भस्म करवा अग्नि को तृप्त किया। फिर जब गन्धर्व तुझे बाँध कर लिये जाते थे, तब पाण्डुनन्दन अर्जुन ही ने तुझे छुड़ाया था। उस समय वहाँ कर्ण और तेरे समस्त भाई भी तो विद्यमान थे, किन्तु उनसे कुछ भी करते धरते न बन पड़ा, प्रत्युत उन्हें हार खा कर भागना पड़ा। पाण्डवों के अजेय होने का यह दूसरा प्रमाण है। फिर विराट् नगर में हम सब से लड़ने को अकेला अर्जुन ही तो आया था और हम सब को परास्त किया था। यह पाण्डवों के अजेय होने का तीसरा प्रमाण है। क्या तू भूल गया कि, उस युद्ध में धनञ्जय ने मुझे और द्रोण को हरा कर, हम लोगों के कपड़े तक उतरवा लिये थे। इसी

प्रकार गोहरण के समय अर्जुन ने द्रोणपुत्र अश्वत्थामा और कृपाचार्य को भी परास्त किया था। पराक्रमी होने का अभिमान रखने वाले कर्ण को जीत कर, अर्जुन ने उत्तरा कुमारी को इन दोनों के कपड़े उतरवा कर दिये थे। जिन निवात कवचों को इन्द्र भी न जीत सके, उन्हें अकेले अर्जुन ने जीता था—क्या यह उसके अजेय होने का प्रमाण नहीं है? इन सब बातों पर भली भाँति सोच विचार कर, जगत्‌रक्षक शङ्ख-चक्र-गदा-धारी श्रीकृष्ण जिन पाण्डवों की रक्षा का भार ग्रहण किये हुए हैं, उन्हें भला कोई क्या जीत सकता है? क्या तुझे नहीं मालूम कि, वासुदेव अनन्त-शक्ति सम्पन्न हैं? क्या तू नहीं जानता कि, वासुदेव ही सृष्टि-संहार-कारक, समस्त अधीश्वरों के भी ईश्वर, सनातन परब्रह्म हैं? नारदादि महर्षि तुझे अनेक बार समझा चुके हैं तो भी हे दुर्योधन! आज तक तुझे इतना भी बोध न हुआ कि क्या कहना चाहिये और क्या नहीं? यह सब तेरे अज्ञानी होने का कारण है। मरणोन्मुख मनुष्य को जैसे समस्त वृक्ष सुवर्ण की तरह पीले ही पीले रङ्ग के देख पड़ते हैं, वैसे ही तुझे भी सब विपरीत ही सूझता है। तूने पाण्डवों और सृञ्जयों से वैर कर अपने हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी है। हे नरव्याघ्र! मैं अर्जुन को छोड़ अन्य समस्त सोमकों और पाञ्चालों का नाश कर डालूँगा। अब या तो वे ही मुझे मार डालेंगे अथवा मैं ही उन सब का नाश कर, तुझे प्रसन्न करूँगा। शिखण्डी पहले स्त्री रूप में राजा द्रुपद के घर में जन्मा था; किन्तु पीछे वरदान के प्रभाव से वह स्त्री से पुरुष हो गया है। वास्तव में शिखण्डी स्त्री है। अतः हे भारत! मेरे प्राण भले ही चले जाँय, उस पर मैं हाथ न उठाऊँगा। ब्रह्मा ने जिस शिखण्डिनी स्त्री को पैदा किया था, वह यही है। हे दुर्योधन! अब तू निश्चिन्त हो कर अपने डेरे में जाकर सो। कल सवेरा होते ही मैं ऐसा भीषण युद्ध करूँगा कि, जब तक यह पृथिवी रहेगी, तब तक लोग मेरे युद्ध की आपस में चर्चा किया करेंगे।

हे राजन्! जब भीष्म ने ये वचन कहे, तब दुर्योधन ने माथा नवा

उनको प्रणाम किया और वहाँ से उठ अपने डेरे पर लौट आया। फिर उपस्थित जनों को अपने डेरे से विदा कर, वह अपने तंबू में जा कर सो रहा। आज की रात उसने तंबू के भीतर ही बितायी और ज्योंहीं सवेरा हुआ त्योंहीं उसने समस्त राजाओं को बुलवा कर समस्त सेनाओं को लड़ाई के लिये तैयार होने की आज्ञा दी। उसने उनसे यह भी कहा कि, क्रोध में भरे हुए भीष्म जी आज सोमकों का नाश करेंगे। रात में दुर्योधन की घबड़ाहट सूचक बातचीत को सुन भीष्म जी समझे कि दुर्योधन के वचन मेरे लिये एक प्रकार की आज्ञा है। उस पर पराधीन जीवन की निन्दा कर, भीष्म जी को बड़ा दुःख हुआ। वे मन ही मन अर्जुन के साथ विकट युद्ध करने के सम्बन्ध में विचार करने लगे। भीष्म के मानसिक विचारों को उनके मुख की चेष्टा से ताड़, दुर्योधन ने दुःशासन को आज्ञा दी कि हे शत्रुनाशन! भीष्म की रक्षा करने के लिये रथों को झटपट तैयार करवाओ। मेरी बाइसों सेनाओं को भीष्म की रक्षा करने की आज्ञा दो। मैं तो चिरकाल से ससैन्य पाण्डवों का नाश करना चाहता था। सो वह अवसर आज हाथ लगा है। यदि आज हम ससैन्य पाण्डवों का संहार कर पाये तो सारा राज्य अपने आप मेरे हस्तगत हो जायगा; किन्तु भीष्म की रक्षा करना, हम लोगों का पहला काम है। क्योंकि जब हम उनकी रक्षा करेंगे, तभी तो वे रण में पाण्डवों को मार हमारी सहायता कर सकेंगे। शुद्धान्तःकरण भीष्म जी ने मुझसे वादा किया है कि, वे शिखण्डी पर तो हाथ न उठावेंगे, क्योंकि वह पहले स्त्री था। उनका यह भी कहना है कि, यह बात सब जानते हैं कि, पिता को प्रसन्न करने के लिये वे समृद्धवान राज्य और स्त्रियों का त्याग कर चुके हैं। अतः वे किसी स्त्री पर या जो पहले कभी स्त्री रह चुका हो, उस पर हाथ न उठावेंगे। अन्त में भीष्म ने मुझसे कहा—मैं तुमसे यह सत्य सत्य कहता हूँ। तू यह जानता ही है, क्योंकि मैं पहले तुझे बतला चुका हूँ कि, शिखण्डी पहले स्त्री था। यदि वह मुझसे लड़ने आवेगा तो मैं उस पर कदापि बाण न

छोड़ूँगा। उसे छोड़ अन्य जो पाण्डवपक्षीय योद्धा मुझसे लड़ने को आवेंगे, उनको मैं मारूँगा। शास्त्रज्ञ भीष्म ने यह बात मुझसे कही है। अतः मेरी समझ में जैसे बने वैसे भीष्म की रक्षा करनी चाहिये। रक्षाहीन सिंह को एक क्षुद्र जन्तु भेड़िया भी मार डालता है। अतः भेड़िये जैसे शिखण्डी द्वारा हम सिंह समान भीष्म का वध करवाना नहीं चाहते। मामा शकुनि, शल्य, कृप, द्रोण और विविंशति, मिल कर भीष्म की रक्षा करें। इनकी रक्षा होने पर हमारे विजयी होने में सन्देह नहीं है।

दुर्योधन के इन वचनों को सुन, रथों में बैठ समस्त रथी भीष्म जी को घेर कर खड़े हो गये। जिस समय आपके पुत्र भीष्म जी को घेर, हर्षित हो रवाना हुए, उस समय पृथिवी, आकाश काँपने लगे। व्यूहबद्ध महारथी योद्धा, रथी, गजपति और अश्वारोही भीष्म को चारों ओर से घेर कर उनकी रक्षा करने लगे। जैसे देवासुर संग्राम के समय, देवताओं ने इन्द्र की रक्षा की थी, वैसे ही ये सब महारथी योद्धा भीष्म की रक्षा करने लगे। दुर्योधन ने पुनः दुःशासन से कहा—हे दुःशासन! युधामन्यु और उत्तमौजा अर्जुन के रथ के बाएँ, दहिने पहियों की रक्षा करते हैं। अर्जुन दोनों वीरों से रक्षित हो शिखण्डी की रक्षा करेगा। अतः यदि हम भीष्म की रक्षा न करेंगे, तो अर्जुन से रक्षित शिखण्डी भीष्म पितामह को मार डालेगा। अतः जैसे बने वैसे तुम सब भीष्म की रक्षा का प्रबन्ध करो।

हे राजन्! आपके पुत्र दुःशासन ने दुर्योधन के इन वचनों को सुन भीष्म को आगे कर ससैन्य रणक्षेत्र की ओर गमन किया। रथिश्रेष्ठ अर्जुन ने जब देखा कि, हज़ारों रथी भीष्म को घेर उनकी रक्षा कर रहे हैं, तब उसने धृष्टद्युम्न से कहा—हे राजकुमार! तुम शिखण्डी को भीष्म के आगे खड़ा रखना, मैं पीछे से उसकी रक्षा करूँगा।

[नवम दिवस]

निन्यानबे का अध्याय

अपशकुन और व्यूह रचना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर जब ससैन्य भीष्म जी रण-क्षेत्र में आ खड़े हुए और बड़ी चेष्टा के साथ उन्होंने सर्वभद्र नामक एक विशाल सैन्यव्यूह की रचना की, तब कृप, कृतवर्मा, शैव्य, शकुनि, जयद्रथ, सुदक्षिण, भीष्म तथा आपके सब पुत्र उस व्यूह के मुख पर जा खड़े हुए। द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा, शल्य और भगदत्त, कवच पहिन, उस सैन्यव्यूह के दक्षिण पार्श्व में खड़े थे। अश्वत्थामा, सोमदत्त और अवन्ति के दोनों राजकुमार बहुत सी सेना साथ ले, उस व्यूह के वामपार्श्व की रक्षा करते थे। दुर्योधन अपने साथ त्रिगर्त्तदेशीय योद्धाओं के बीच में खड़ा था। रथियों में श्रेष्ठ अलम्बुष और महारथी श्रुतायु कवच धारण कर, समस्त सेना सहित उस व्यूह के पृष्ठ भाग पर स्थित थे। हे भारत! आपकी ओर के समस्त योद्धा व्यूहबद्ध हो, प्रज्ज्वलित अग्नि की तरह प्रकाशित हो रहे थे।

इधर पाण्डुपुत्र राजा युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव अपनी सेना का महादुर्जय व्यूह रच, सब के आगे जा खड़े हुए। उनके पीछे धृष्टद्युम्न, राजा विराट, महारथी शत्रुनाशी सात्यकि, बड़ी सेना सहित खड़े थे। उनके पीछे शिखण्डी, अर्जुन, घटोत्कच, महाबाहु चेकितान और पराक्रमी कुन्तिभोज एक विशाल वाहिनी सहित लड़ने के लिये खड़े थे। तदनन्तर महाधनुर्धर अभिमन्यु, द्रुपद और केकयराज पाँचों भाई कवचों को पहिन कर, लड़ने को खड़े थे। पराक्रमी पाण्डव, कवच पहिन और महादुर्जय व्यूह रच, आपकी सेना के सामने लड़ने के लिये समरभूमि में आये। विजयाभिलाषी पाण्डव भीमसेन को आगे कर, भीष्म की ओर बढ़े। पाण्डव

सिंहनाद कर रहे थे और उनकी सेना में शङ्ख, भेरी, ढोल, मृदङ्ग आदि बाजे बज रहे थे। इस प्रकार तैयार हो पाण्डव युद्ध में प्रवृत्त हुए। हम लोगों ने भी झटपट मारू बाजे बजवा और सिंहनाद कर उन लोगों का सामना किया। उस समय घोर तुमुल शब्द हुआ। तदनन्तर उभयपक्ष के समस्त योद्धा आमने सामने खड़े हो लड़ने लगे। उस महाभयङ्कर शब्द से पृथिवी काँप उठी। सूर्य प्रखर किरणों का विस्तार करते हुए उदय हुए, किन्तु उस समय उनकी आभा मन्द पड़ गयी। वायु का वेग बढ़ गया। सियार बुरी तरह चिल्लाने लगे। समस्त दिशाएँ प्रज्वलित सी जान पड़ने लगीं। चारों ओर धूल छा गयी। रुधिर, माँस और हड्डियों की वर्षा होने लगी। हाथी, घोड़े रोने लगे। उनके नेत्रों से आँसू बहने लगे और डर कर उन सब ने मलमूत्र त्यागा। मनुष्यभक्षी राक्षसों के महाघोर चीत्कार से अन्य सब के शब्द छिप गये। शृगाल, गिद्ध, काक, आदि माँस-भक्षी पशुपक्षी भयानक बोल बोलने लगे। साथ ही उल्कापात भी हुआ। जैसे प्रचण्ड पवन के चलने पर वन के वृक्ष काँपने लगते हैं, वैसे ही पाण्डवों और कौरवों की सेनाओं में मारू बाजों के बजने से और वीरों के सिंहनाद से पृथिवी काँप उठी। ऐसे अशुभसूचक समय में युद्ध में प्रवृत्त समस्त राजाओं, गजों, अश्वों से पूर्ण उस महासैन्य का भयानक शब्द, वायुवेग से उमड़े हुए समुद्र के नाद की तरह सुन पड़ा।

एक सौ का अध्याय

अभिमन्यु का पराक्रम

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! उदारस्वभाव एवं तेजस्वी अभिमन्यु पीले रङ्ग के घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, दुर्योधन की सेना पर वैसे ही बाणवृष्टि करने लगा, जैसे आकाशस्थित मेघ जलवृष्टि करता है।

आपकी ओर के वीर, भय अपनी सागरोपम विशाल वाहिनी सहित अभिमन्यु को रोकने में समर्थ न हो सके। शत्रुनाशी यमदण्ड की तरह बाणों को जब अभिमन्यु ने छोड़ना आरम्भ किया और जब वह रथ सहित रथियों को, गजों सहित गजारोहियों को और अश्वों सहित अश्वारोहियों को बड़ी फुर्ती से बाणों द्वारा विद्ध कर नष्ट करने लगा, तब राजाओं ने अभिमन्यु के ऐसे अद्भुत पराक्रम को देख, उसकी सराहना की। जैसे पवन, रुई के ढेर को इधर उधर उड़ा देता है, वैसे ही अभिमन्यु ने दुर्योधन की सेना तितर वितर कर दी। हे राजन्! छिन्न भिन्न हुई आपकी सेना को दलदल में फँसे गज की तरह कोई भी अपना रक्षक न देख पड़ा। उस समय आपकी समस्त सेना को परास्त कर, अभिमन्यु धूम रहित अग्नि की तरह शोभायमान हुआ। जैसे कालप्रेरित पतङ्गे अग्नि के ताप को सहन नहीं कर सकते, वैसे ही आपकी समस्त सेना अभिमन्यु के बाणप्रहारों को न सह सकी। महाधनुर्धर अभिमन्यु पाण्डवों के समस्त वैरियों को परास्त कर, वज्रधारी इन्द्र जैसा दिखलायी पड़ने लगा। उसका सुवर्णभूषित धनुष चारों ओर मण्डलाकार हो घूम रहा था, जैसे मेघों में विद्युत दमकती है। उसके धनुष से छूटे बाण, पुष्प रूपी शत्रु-सैन्य के वन में भ्रमर रूपी हो, चारों ओर भ्रमण करने लगे। सुवर्णभूषित रथ पर सवार अभिमन्यु का कोई भी छिद्र शत्रुपक्षीय योद्धाओं को न देख पड़ा। महाधनुर्धर अभिमन्यु ने आचार्य द्रोण, कृपाचार्य, बृहद्बल, अश्वत्थामा और सिन्धुराज जयद्रथ को मोहित कर दिया और वह स्वयं रणक्षेत्र में भ्रमण करने लगा। आपकी सेना को भस्म करते समय उसका धनुष सूर्य की तरह प्रकाशित होता था। अभिमन्यु का ऐसा पराक्रम और हस्तलाघव देख, शूरवीर क्षत्रिय योद्धाओं ने समझा कि, इस लोक में दो अर्जुन हैं।

हे राजन्! आपकी विशाल वाहिनी अभिमन्यु के बाणों से पीड़ित हो, इधर उधर दौड़ने लगी। अभिमन्यु ने दुर्योधन की विशाल वाहिनी को छिन्न भिन्न कर, वैसे ही अपने सुहृदों को आनन्दित किया, जैसे इन्द्र

ने मयदानव को रण में परास्त कर देवताओं को हर्षित किया था। आपकी सेना अभिमन्यु के बाणप्रहार से पीड़ित हो, बादल की तरह घोर स्वर से आर्त्तनाद करने लगी। हे भारत! तब दुर्योधन ने पूर्णिमा के दिन, पवन के प्रचण्ड वेग से भयङ्कर शब्द करने वाले महासागर की तरह अपनी सेना का आर्त्तनाद सुन, ऋष्यशृङ्गनन्दन अलम्बुष राक्षस से कहा—हे राक्षसेन्द्र! अपर अर्जुन की तरह कुपित यह अभिमन्यु मेरी सेना को वैसे ही पीड़ित कर रहा है, जैसे वृत्रासुर ने देवसेना को पीड़ित किया था। तुम रण सम्बन्धी समस्त विद्याओं के ज्ञाता हो। तुम्हें छोड़ मुझे अपनी सेना का रक्षक इस समय अन्य कोई भी नहीं देख पड़ता। अतः तुम शीघ्र आगे बढ़ो और अभिमन्यु का वध करो। हम लोग भीष्म और द्रोण को आगे कर अर्जुन का वध करेंगे। दुर्योधन के इन वचनों को सुन प्रतापी राक्षसेन्द्र अलम्बुष ने वर्षाकालीन मेघों की तरह सिंहनाद किया और बड़े सपाटे से वह अभिमन्यु की ओर गया। उसके उस महाघोर सिंहनाद को सुन वायु के झकोरे से छितराये हुए सागरजल की तरह सेना इधर उधर फैल गयी। बहुत से सैनिक तो उस सिंहनाद को सुन यहाँ तक डरे कि, वे मर कर पृथिवी पर गिर पड़े; किन्तु सुभद्रानन्दन अभिमन्यु हर्षित हो और धनुष बाण ले, मानों रथ पर नृत्य करता हुआ सा, अलम्बुष के सामने पहुँचा। जब क्रोधी अलम्बुष ने अभिमन्यु को अपनी ओर आते देखा, तब पहले उसने कुछ दूर पीछे हट, फिर पाण्डवों की सेना पर आक्रमण किया। पाण्डवों की सेना अलम्बुष के अस्त्रों से पीड़ित हो, वैसे ही उस पर झपटी, जैसे देवताओं की सेना ने बलासुर पर आक्रमण किया था। तब उस महाभयङ्कर राक्षस ने पाण्डवों की सेना पर घोर उत्पात मचाये। अतः पाण्डवों की सेना में बड़ा कोलाहल मचा। अपना पराक्रम प्रदर्शित कर, अलम्बुष ने सहस्र सहस्र बाणों से समस्त वीरों को विद्ध कर, सारी सेना को छिन्न भिन्न कर डाला। तब तो पाण्डवों की सेना भयभीत हो भागी।

हे राजन्! अलम्बुष ने पाण्डवों की सेना को वैसे ही मसला, जैसे

हाथी कमलवन को मसल डालते हैं। तदनन्तर उस राक्षस ने द्रौपदी के पुत्रों पर आक्रमण किया। जैसे पाँच ग्रह एक सूर्य को घेरें, वैसे ही महारथी द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने चारों ओर से अकेले अलम्बुष को घेर, उस पर आक्रमण किया। जैसे प्रलयकाल उपस्थित होने पर पाँच ग्रह एक साथ चन्द्रमा को उत्पीड़ित करते हैं, वैसे ही वे पाँचों भाई अलम्बुष को पीड़ित करने लगे। महारथी प्रतिविन्ध्य ने परशु जैसे बाणों से अलम्बुष को घायल किया। वह राक्षस उसके बाणों से घायल हो, सूर्य-रश्मि युक्त मेघ की तरह जान पड़ने लगा। सुवर्ण की डंडी वाले उन बाणों से युक्त वह राक्षस, शृङ्गयुक्त पर्वत जैसा दिखलायी पड़ता था। तदनन्तर उन पाँचों भाइयों ने, सुवर्णभूषित पैने बाणों से पुनः अलम्बुष को घायल किया। तब तो वह राक्षस क्रुद्ध हुए सर्पराज की तरह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ; किन्तु कुछ देर तक बाण प्रहारों के कारण वह मूर्छित हो गया। तदनन्तर सचेत हो, वह दुगुना कुपित हुआ और बाण मार उसने प्रतिविन्ध्य की ध्वजा और धनुष काट डाला। फिर प्रत्येक वीर के उसने पाँच पाँच बाण मार, अत्यन्त क्रुद्ध हो उन महाबलियों के रथों के घोड़ों और सारथियों को वध कर, उन पाँचों को भी सहस्रों बाण मार घायल किया। अलम्बुष उन महारथियों को रथहीन कर, उनको मार डालने के लिये उन पर लपका। तब सुभद्रानन्दन अभिमन्यु ने दौड़ कर उस राक्षस का सामना किया। उभयपक्ष के वीर उस समय इन दोनों के इन्द्र-वृत्र-समर की तरह भयङ्कर युद्ध को देखने लगे। महाबली अभिमन्यु और अलम्बुष का युद्ध होने लगा। मारे क्रोध के लाल लाल नेत्र कर वे एक दूसरे को प्रलयकालीन अग्नि की तरह देखने लगे। उन दोनों महाबली वीरों का यह युद्ध वैसा ही था, जैसा पूर्वकाल में इन्द्र के साथ शम्बरासुर का घोर युद्ध हुआ था।

एक सौ एक का अध्याय

अलम्बुष का रणक्षेत्र से पलायन

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! महारथी एवं वीरघाती अभिमन्यु के साथ अलम्बुष किस प्रकार लड़ा? अथवा शत्रुघाती अभिमन्यु, उस राक्षस से कैसे लड़ा? यह वृत्तान्त तुम मुझे विस्तार पूर्वक सुनाओ। मेरी सेना के साथ अर्जुन, बली भीम, नकुल, सहदेव, घटोत्कच और सात्यकि ने किस प्रकार युद्ध किया? हे सञ्जय! तुम्हें समस्त वृत्तान्त विदित है। अतः तुम समस्त यथार्थ वृत्तान्त मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! राक्षसेन्द्र अलम्बुष के साथ वीरवर अभिमन्यु का जैसा युद्ध हुआ था, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और आपकी ओर के पराक्रमी भीष्म और द्रोण आदि ने जिस प्रकार निडर हो, निज पराक्रम प्रदर्शित कर, अद्भुत कर्म किये थे, सो सब वृत्तान्त मैं आपको सुनाता हूँ, आप सुनें। राक्षस अलम्बुष ने बड़ा नर्जन गर्जन कर, खड़ा रह! खड़ा रह! कहते हुए अभिमन्यु पर आक्रमण किया। तदनन्तर देवता और दानव के समान अभिमन्यु और अलम्बुष में महावीर युद्ध हुआ। राक्षसेन्द्र अलम्बुष मायावी था और वीरवर अभिमन्यु दिव्यास्त्रों का ज्ञाता था। प्रथम अभिमन्यु ने तीन बाण मार, अलम्बुष को घायल किया। फिर पाँच बाण उसके मारे, तब अलम्बुष ने क्रोध में भर, अभिमन्यु की छाती में नौ बाण वैसे ही मारे, जैसे महावत गज के अङ्कुश मारता है। फिर उसने एक हज़ार बाण छोड़ अभिमन्यु को पीड़ित किया, तब अभिमन्यु ने बढ़िया शान रखे हुए बड़े पैने नौ बाण मार अलम्बुष की छाती घायल की। अभिमन्यु के चलाये समस्त बाण अलम्बुष के शरीर को तथा मर्मस्थलों को बेध कर आर पार निकल गये। इससे अलम्बुष रक्तरञ्जित हो पुष्पित पलाश वृक्ष जैसा जान पड़ने लगा। इस पर

अलम्बुष ने कुपित हो, इन्द्रतुल्य पराक्रमी अभिमन्यु को शरजाल से ढक दिया। राक्षस के छोड़े बाण अभिमन्यु को घायल कर भूमि पर गिरने लगे और अभिमन्यु के सुवर्ण डंडी के बाण अलम्बुष के शरीर को छेद भूमि पर गिर पड़े। तदनन्तर अभिमन्यु ने अलम्बुष को रणक्षेत्र से वैसे ही भगाया, जैसे इन्द्र ने मयदानव को समरक्षेत्र से भगाया था। शत्रु के बाणों से पीड़ित अलम्बुष ने तामसी माया प्रकट की। इससे समरभूमि अन्धकारमयी हो गयी, उस अन्धकार में अभिमन्यु और पाण्डवों के कोई भी वीर योद्धा नहीं दिखलायी पड़ते थे। यह देख अभिमन्यु ने भास्कराख छोड़ा, तब तो वह राक्षसी माया नष्ट हो गयी और सब ओर पूर्ववत् प्रकाश फैल गया। कुपित अभिमन्यु ने इतने बाण छोड़े कि अलम्बुष बाणों से ढक गया। इस पर अलम्बुष ने तरह तरह की और मायाएँ प्रकट कीं; किन्तु दिव्यास्त्रों के प्रभाव से अभिमन्यु ने उस राक्षस की समस्त माया नष्ट कर डाली। जब उस राक्षस की समस्त माया निष्फल हो गयी और वह अभिमन्यु के बाण प्रहार से पीड़ित हुआ, तब तो वह रणभूमि में रथ छोड़, पैदल ही भागा। अभिमन्यु उस मायावी अलम्बुष को जीत, आपकी सेना को वैसे ही नष्ट करने लगा, जैसे मतवाला हाथी कमल सरोवर में घुस उसे नष्ट करता है।

हे राजन्! तदनन्तर शान्तनुनन्दन भीष्म ने आपकी सेना को अभिमन्यु के बाणों की मार से भागते देख, अनेक रथियों को साथ ले अभिमन्यु को चारों ओर से घेरा और आपके बहुत से महारथी मिल कर, उसे बाणप्रहार से घायल करने लगे। रथियों में अग्रणी, सर्व-शस्त्रज्ञ, निज पिता अर्जुन के समान पराक्रमी और अपने मामा श्रीकृष्ण के समान बलवान अभिमन्यु उन समस्त योद्धाओं से लड़ने लगा। अपने पुत्र को शत्रु द्वारा इस प्रकार घिरा हुआ देख, अर्जुन बड़ा कुपित हुआ और आपके वीर सैनिकों का वध कर, भीष्म के सामने जा डटा। आपके पिता भीष्म भी अर्जुन पर वैसे ही झपटे, जैसे राहु ग्रास करने के लिये सूर्य पर झपटता

है। उस समय चतुरङ्गिणी सेना साथ ले आपके पुत्र भीष्म की रक्षा करने लगे। तब पाण्डव पक्षीय वीर योद्धा भी अर्जुन को घेर उसकी रक्षा करने लगे। इतने में द्रोण ने पच्चीस बाण मार, अर्जुन को घायल किया। पाण्डव हितैषी सात्यकि ने कृपाचार्य पर वैसे ही आक्रमण किया, जैसे शार्दूल, किसी मतवाले गज पर आक्रमण करता है। सात्यकि ने कृपाचार्य को पैने बाण से घायल कर डाला। क्रोध में भर कृपाचार्य ने सात्यकि की छाती में नौ कङ्कपुंख युक्त बाण मारे। तब सात्यकि ने एक महाभयङ्कर बाण कृपाचार्य का वध करने को धनुष पर रख कर छोड़ा। इन्द्रवज्र तुल्य उस बाण को आते देख, अश्वत्थामा ने क्रोध में भर बाण चला उसके दो टुकड़े कर डाले। वह भूमि पर गिर पड़ा, तब सात्यकि ने कृपाचार्य को तो छोड़ दिया और वह अश्वत्थामा की ओर वैसे ही लपका, जैसे राहु चन्द्रमा की ओर लपकता है। इस पर अश्वत्थामा ने सात्यकि का धनुष काट डाला और उसे घायल किया। तब सात्यकि ने एक सुदृढ़ धनुष हाथ में ले, साठों बाणों से अश्वत्थामा की भुजा और छाती घायल की। क्षण भर के लिये अश्वत्थामा अचेत हो गया और रथ का डंडा पकड़ निश्चेष्ट हो बैठा रहा। सचेत होने पर अश्वत्थामा ने सम्हल कर, सात्यकि के एक बाण मार उसे घायल किया। अश्वत्थामा का वह बाण सात्यकि के शरीर को फोड़ पृथिवी में वैसे ही घुस गया, जैसे बलवान सर्प अपनी बाँबी में घुस जाता है। फिर सात्यकि की ध्वजा को एक बाण से काट कर, अश्वत्थामा ने सिंहनाद किया। अश्वत्थामा ने शरजाल से सात्यकि को वैसे ही ढक दिया जैसे वर्षाऋतु में बादल सूर्य को ढक देते हैं। तब सात्यकि ने अपने बाणों से उस शरजाल को छिन्न भिन्न कर अश्वत्थामा को बाणजाल से ढक दिया। मेघ निर्मुक्त सूर्य जैसे समस्त प्राणियों को उत्तप्त करता है, वैसे ही सात्यकि अश्वत्थामा के बाणों से मुक्त हो, अश्वत्थामा को तपाने लगा और उसे असंख्य बाणों से ढक दिया। प्रतापी द्रोण अपने पुत्र को राहुग्रस्त चन्द्र की तरह सात्यकि के बाणों से

पीड़ित देख, बड़े क्रुद्ध हुए और सात्यकि की ओर लपके। उन्होंने सात्यकि के बाणों से पीड़ित अश्वत्थामा की रक्षा करने को पैने बाणों से सात्यकि को घायल किया। इस पर द्रोणाचार्य से सात्यकि को बचाने के लिये अर्जुन ने द्रोणाचार्य पर आक्रमण किया। उस समय द्रोण और अर्जुन वैसे ही लड़ने लगे, जैसे आकाश स्थित बुध और शुक्र लड़ते हैं।

एक सौ दो का अध्याय

गजों का संहार

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जब दोनों महाधनुर्धर योद्धा द्रोण और अर्जुन आपस में भिड़ गये, तब उन दोनों का युद्ध कैसा हुआ? पाण्डुपुत्र अर्जुन पर द्रोणाचार्य का सदा से बड़ा स्नेह है और द्रोणाचार्य में अर्जुन की पूर्ण भक्ति है। वे दोनों अतिरथी और बड़े बली हैं सो उन दोनों ने यत्नवान हो कर किस प्रकार परस्पर युद्ध किया?

सञ्जय ने कहा—हे भारत! रणक्षेत्र में न तो द्रोण अर्जुन को अपना प्रिय शिष्य मानते और न अर्जुन भी क्षात्र धर्म के अनुरोध से द्रोण को अपना भक्तिभाजन गुरु समझते थे। यही नहीं रण में प्रवृत्त क्षत्रिय योद्धा किसी को नहीं छोड़ते। रणभूमि में भाई, पिता, पुत्र और पितामह का नाता भी कुछ नहीं गिना जाता और इनसे भी लड़ना पड़ता है। हे राजन्! अर्जुन के तीन बाणों से घायल हो कर भी द्रोण ने अर्जुन के गाण्डीव धनुष से छूटे इन बाणों की ज़रा भी परवाह न की; किन्तु जब अर्जुन ने द्रोण को शरवृष्टि से आच्छादित कर दिया, तब तो द्रोण वन-दग्ध-कारी अग्नि की तरह क्रोध से प्रज्ज्वलित हो उठे। उन्होंने बड़ी फ़ुर्ती से बाण छोड़ शरजाल से अर्जुन को ढक दिया। उस समय दुर्योधन ने सुशर्मा को द्रोणाचार्य का पृष्ठरक्षक बना कर भेजा। त्रिगर्त्तराज सुशर्मा ने लोहे के

बाणों से अर्जुन को पाट दिया। उन दोनों के छोड़े बाण आकाश में जा वैसे ही शोभित हुए, जैसे शरदऋतु में हंसपंक्ति आकाश में उड़ती हुई सुशोभित होती है। जैसे पक्षी सुस्वाद फलों से युक्त वृक्षों पर चारों ओर से आ कर गिरते हैं, वैसे ही चारों ओर से बाण अर्जुन के ऊपर गिर रहे थे; किन्तु रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने सिंहनाद कर के त्रिगर्त्तराज और उसके पुत्र को अपने बाणों से घायल कर डाला। सुशर्मा भी प्रलयकालीन यमराज की तरह भयङ्कर, अर्जुन के बाणों से पीड़ित हो कर और प्राणों की कुछ भी परवाह न कर, अर्जुन के सामने डटा रहा और अर्जुन पर बाण बरसाता रहा। जैसे पहाड़ जलवृष्टि को सहन कर लेता है, वैसे ही अर्जुन ने भी उस बाणवृष्टि को सह, अपने बाणों से उसे निवारण किया। अर्जुन के इस विस्मयोत्पादक हस्तलाघव को मैंने स्वयं देखा था। अर्जुन ने अकेले ही अनेक योद्धाओं को बाणवृष्टि कर वैसे ही हटाया, जैसे पवन बादलों को हटा देता है। अर्जुन के ऐसे कठिन कार्य को देख, क्या देवता और क्या दानव--सभी प्रसन्न हो रहे थे।

हे राजन्! फिर अर्जुन ने क्रोध में भर, त्रिगर्त्तसैन्य पर वायव्यास्त्र छोड़ा। उस अस्त्र के छोड़ते ही बड़े ज़ोर का अंधड़ चला, जिसके वेग से बहुत से वृक्ष जड़ से उखड़ उखड़ कर गिर पड़े और सैनिक मोहित हो गये। उस समय द्रोणाचार्य ने उस प्रचण्ड वायव्यास्त्र को नष्ट करने के लिये महाभयङ्कर शैलास्त्र चलाया। शैलास्त्र के छूटते ही वह आँधी बिला गयी और समस्त दिशाएँ निर्मल हो गयीं। तदनन्तर अर्जुन ने मारे बाणों के त्रिगर्त्तराज के समस्त रथियों के छक्के छुड़ा दिये। वे सब उत्साहहीन और पराक्रमशून्य हो, रण से विमुख हो गये।

तदनन्तर दुर्योधन ने अश्वत्थामा, शल्य, काम्बोजराज सुदक्षिण, कृपाचार्य, विन्द, अनुविन्द और महाराज बाल्हीक सहित एक विशाल वाहिनी साथ ले भीमसेन को घेरा। भूरिश्रवा, शल्य और शकुनि ने नकुल और सहदेव पर आक्रमण किया। धृतराष्ट्र पुत्रों को तथा सेना को साथ ले, भीष्म

ने चारों ओर से धर्मराज को घेर लिया। गजसैन्य को अपनी ओर आते देख, अत्यन्त पराक्रमी भीमसेन हाथ में गदा ले रथ से कूद पड़ा और वैसे ही गजसैन्य की ओर झपटा जैसे वन में सिंह गजसमूह पर झपटता है। पाँवप्यादे और हाथ में गदा लिये देख, गजपतियों ने बड़ी फुर्ती से भीम को चारों ओर से घेर लिया। जैसे बादलों के घेरे में सूर्य विराजमान होता है, वैसे ही पाण्डुपुत्र भीमसेन हाथियों के बीच शोभा को प्राप्त हुए। वे पवन की तरह, उस गजसैन्य रूपी मेघमण्डल को तितर वितर करने लगे। हाथियों की सेना भीमसेन के गदाप्रहार से भयभीत हो और मेघ की तरह गर्जती हुई, आर्त्तनाद करने लगी। भीमसेन भी निज शरीर में हाथी के दाँतों से घायल हो, रक्तरञ्जित होने के कारण पुष्पित पलाश वृक्ष की तरह शोभित हुआ। भीम ने दण्डधारी यमराज की तरह भयङ्कर बन, कितने ही हाथियों के दाँत उखाड़ उन्हें दन्तहीन कर डाला। फिर उनके उन्हीं दाँतों से उनके पेट विदीर्ण कर, उन्हें धराशायी कर दिया। गजों के माँस, मज्जा और रुधिर में सनी गदा को लिये हुए, भीम साक्षात् क्रुद्ध रुद्र जैसा जान पड़ता था। हे राजन्! इस प्रकार वह गजसैन्य मारी गयी और जो हाथी मारे जाने से बच गये, वे भीम के गदाप्रहार से पीड़ित तथा घायल हो, अपनी सेना के वीरों का नाश करते हुए रणक्षेत्र में इधर उधर दौड़ने लगे। उन बड़े बड़े गजों को चारों ओर भागते और सैनिक वीरों का उनके द्वारा कुचला जाना देख, दुर्योधन की समस्त सेना रणभूमि से पुनः भागी।

एक सौ तीन का अध्याय

भीष्म और धृष्टद्युम्न का युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इस दिन दो पहर के समय, सोमकों के साथ भीष्म का महाभयङ्कर लोकक्षयकारी युद्ध हुआ। इस युद्ध में एक एक

बार में भीष्म, पाण्डवों की सेना के सौ सौ और सहस्र सहस्र वीरों को अपने पैने बाणों से भस्म करने लगे। जैसे बैल अन्न की राशि को पैरों से रौंदते हैं, वैसे ही भीष्म पाण्डवों की सेना को अपने शस्त्रों से मर्दन करने लगे। धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, विराट और राजा द्रुपद भीष्म के सामने जा, उन्हें अपने बाणों से पीड़ित करने लगे। शत्रुनाशन भीष्म जी ने तीन तीन बाण मार, धृष्टद्युम्न और विराट को विद्ध किया और एक बाण राजा द्रुपद के ऊपर छोड़ा। धृष्टद्युम्नादि महाधनुर्धर योद्धा भीष्म के अस्त्रों से विद्ध हो कर, पैर से दबे हुए सर्प की तरह क्रुद्ध हो गये। शिखण्डी ने भीष्म को बाणों से घायल कर डाला; किन्तु अजय्य वीर भीष्म ने शिखण्डी को स्त्री जान, उस पर एक भी बाण न छोड़ा। तब क्रोधाग्नि से भभक धृष्टद्युम्न ने तीन बाण मार भीष्म की दोनों भुजाएँ और छाती घायल की। उस समय रक्त-रञ्जित भीष्म वसन्त कालीन पुष्पित अशोकवृक्ष जैसे जान पड़े। भीष्म ने शिखण्डी को छोड़, अन्य समस्त शत्रुसैन्य के वीरों को, तीन तीन बाण मार, घायल किया। फिर एक बाण चला उन्होंने राजा द्रुपद का धनुष काट डाला। इस पर द्रुपद ने दूसरा धनुष ले लिया और पाँच बाण छोड़ भीष्म को और उनके सारथि को घायल कर डाला। युधिष्ठिर के हितैषी भीमसेन, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, पाँचों भाई केकयराज और पराक्रमी सात्यकि एवं धृष्टद्युम्न को आगे कर, द्रुपद की रक्षा करने को भीष्म की ओर दौड़े। यह देख आपकी सेना के समस्त योद्धा अपनी अधीनस्थ सेनाओं को साथ ले और भीष्म की रक्षा करते हुए पाण्डवों की सेना पर झपटे। तब उभय सेनाओं के पैदल सिपाहियों, गजपतियों और अश्वारोहियों में परस्पर घोर संग्राम हुआ। रथी योद्धाओं ने रथी योद्धाओं पर आक्रमण किया और उनका वध किया। सिपाही, गजपति, अश्वारोही आपस में भिड़ एक दूसरे का वध करने लगे। इस युद्ध में बहुत से रथियों, सारथियों के मारे जाने पर अनेक रथी और सारथि रणभूमि में चारों ओर दौड़ने लगे। हे राजन्! मैंने स्वयं देखा कि, बहुत से रथ बेतहाशा दौड़ते हुए बहुत से मनुष्यों और

घोड़ों को कुचले डालते थे। उन रथों के इधर उधर दौड़ने से रणभूमि गन्धर्व नगर जैसा जान पड़ता था। जिन्होंने नीति में बृहस्पति, धन में कुवेर और शौर्य में इन्द्र की उपमा प्राप्त की थी। वे देवपुत्रों के समान शूरवीर एवं पराक्रमी रथी राजा लोग, जो कवच, कुण्डल, सुनहले वस्त्र और सब हथियारों से सम्पन्न थे, रथहीन हो, साधारण मनुष्य की तरह इधर उधर दौड़ने लगे। सब हाथी अपने सवारों से रहित हो, चिंघारते हुए, इधर उधर दौड़ रहे थे और अपनी सेना के वीरों को कुचल वीरों के अस्त्रप्रहारों से निर्जीव हो, भूमि पर धड़ाम धड़ाम गिर रहे थे। कितने ही गज वर्षाकालीन मेघों की तरह गम्भीर स्वर से चिंघारते हुए दौड़ रहे थे। उनके अद्भुत वर्म, चवँर, पताका, सोने की डंडी के छाते और पैने तोमर, समरभूमि में इधर उधर गिर पड़े। जिन हाथियों के सवारों के हाथी मारे गये, वे गजहीन हो रणभूमि में चारों ओर दौड़ रहे थे। नाना देशीय सैकड़ों सहस्रों घोड़े, सुनहले कवचों को पहिने हुए रणभूमि में वायु की तरह वेग से दौड़ रहे थे। घोड़ों के मारे जाने पर उनके सवार नंगी तलवार ले शत्रुओं पर आक्रमण करते थे और बहुत से शत्रुओं द्वारा पीड़ित हो इधर उधर दौड़ रहे थे। कोई कोई हाथी ऐसे भी थे जो दौड़ते हुए योद्धाओं और घोड़ों को अपने पैरों से रूँदते हुए दूसरे गजों के साथ चले जा रहे थे। रथ भी भूमि पर पड़े घोड़ों तथा लड़ते हुए अनेक सिपाहियों को कुचलते हुए दौड़ रहे थे। कितने ही हाथियों ने बहुत से रथों को नष्ट कर डाला था। इस प्रकार गजों और रथों से बहुत से सिपाही मारे गये। इस घोर युद्ध में रुधिर से पूर्ण और अस्त्र रूपी तरङ्गों से युक्त एक भयानक नदी बह निकली। हड्डियाँ उसमें तट की बालू, वीर योद्धाओं और घोड़ों के बाल उस नदी का सिवार थे और भग्नरथ उसमें नाव की तरह बहे चले जाते थे। बाणादि अस्त्र पतवार जैसे जान पड़ते थे। घोड़ों की लोथें मछली जैसी और वीरों के सिर पत्थरों के टुकड़े और हाथियों के शव मगर घड़ियाल जैसे जान पड़ते थे। उस नदी में जो कवच और वस्त्र बहे जाते थे, वे

फेन जैसे देख पड़ते थे। धनुष उस नदी की वेला-भूमि ; ढाल, तलवार उस नदी के कछुवे और ध्वजा, पताकाएँ उस नदी के तट पर उगे हुए वृक्षों जैसे देख पड़ते थे। यह नदी मनुष्य रूपी तट के ढहाने वाली और लड़ते हुए वीरों का समूह इस नदी की हंसपंक्ति थी। जिस प्रकार जल वाली नदियाँ, समुद्र के बढ़ाती हैं, वैसे ही यह नदी यमराज के राज्य के बढ़ाने वाली थी। बड़े बड़े पराक्रमी योद्धा, निर्भय हो, नाव रूपी रथों, गजों और घोड़ों पर सवार हो इस नदी के पार जाने लगे। यह रुधिर की नदी, अधमरे और डरपोंक योद्धाओं को वैसे ही बहाये लिये जाती थी, जैसे वैतरणी नदी मृत मनुष्यों को बहा कर यमपुरी में ले जाती है। जब क्षत्रिय योद्धाओं ने इस तरह वीरों का नाश होते देखा, तब वे चिल्ला कर कहने लगे—दुर्योधन के दोष ही से इन समस्त वीरों का नाश हो रहा है। राजा धृतराष्ट्र ने न जाने क्यों लोभ मोह में फँस, इन गुणवान पाण्डुपुत्रों से वैर बाँधा। उन वीरों के मुख से इस प्रकार पाण्डवों की प्रशंसा और आपके पुत्रों की निन्दा भरे अनेक वचन निकल रहे थे। सब से बढ़ कर अपराधी आपका पुत्र दुर्योधन, उनके इन वचनों को सुन कर भी, भीष्म, द्रोण, कृप और शल्य से बोला कि, आप लोग अहङ्कार त्याग कर लड़ें। आप लोग विलम्ब क्यों करते हैं? हे राजन्! तदनन्तर पुनः कौरवों और पाण्डवों में घोर युद्ध होने लगा। हे धृतराष्ट्र! बहुत से महात्माओं ने आपको रोका था; किन्तु आपने उन लोगों का कहना न माना। उसीका यह महादारुण फल अब उपस्थित हुआ है। युद्ध में पाण्डव, कौरव तथा उन दोनों की सेनाएँ और उनके अनुयायी लोगों में कोई भी निज प्राणरक्षा की चेष्टा नहीं करता।

हे राजन्! अतः दैवप्राबल्य से अथवा आपकी अनीति से आपके कुटुम्बियों और नातेदारों का संहार हो रहा है।

एक सौ चार का अध्याय

भीष्म-सात्यकि-युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! पुरुषसिंह अर्जुन ने तीक्ष्ण बाण मार सुशर्मा के साथी राजाओं को यमालय भेज दिया। इस पर सुशर्मा ने अर्जुन को बाणों से घायल किया। उसने सत्तर बाण श्रीकृष्ण के मार नौ बाण अर्जुन के मारे। अर्जुन ने सुशर्मा के बाणों को नष्ट कर उसके साथी सैनिकों का संहार कर डाला। कल्पान्त के काल की तरह रण में मारे जाते हुए महारथी भयभीत हो भागने लगे। इनमें से बहुत से घोड़ों को, बहुत से रथों को और बहुत से गजों को छोड़ कर इधर उधर भाग गये और बहुत से ऐसे भी थे जो अपने अपने रथों, घोड़ों और गजों को साथ ले भाग रहे थे। इनके अतिरिक्त बहुत से पैदल सैनिक हथियारों को पटक और किसी मनुष्य या वस्तु की परवाह न कर, समरभूमि से भाग गये। तब त्रिगर्त्तराज सुशर्मा ने चाहा कि, उन्हें रोकें और इसके लिये उसने बहुत प्रयत्न भी किया; किन्तु वे लोग न रुके। अतः जब सुशर्मा की सेना भाग गयी, तब यह देख आपका पुत्र दुर्योधन सब सेना के आगे जा और भीष्म जी को आगे कर, सुशर्मा को अर्जुन से बचाने के लिये प्रयत्न करने लगा। अपने भाइयों सहित अनेक प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों की वर्षा करता हुआ एकमात्र दुर्योधन तो डटा रहा, शेष सब भाग गये। उधर पाण्डव भी शक्ति भर उद्योग कर, वहाँ पहुँचे जहाँ भीष्म जी थे और वहाँ वे अर्जुन की रक्षा करने लगे। उन्हें गाण्डीवधारी अर्जुन की वीरता विदित थी, अतः वे होहल्ला मचाते और उत्साह में भर भीष्म जी को चारों ओर से घेर कर खड़े हो गये। ताल वृक्ष के चिन्ह से चिन्हित ध्वजा वाले भीष्म जी ने दृढ पर्व बाण छोड़, पाण्डवों की सेना को आच्छादित कर दिया। अब मध्यान्हकाल हो चुका था और समस्त कौरव जमा हो पाण्डवों के साथ लड़ रहे थे। सात्यकि ने पाँच बाण मार, कृतवर्मा को

घायल किया। फिर वह असंख्य बाणों की वृष्टि कर समरभूमि में डटा रहा। इसी प्रकार राजा द्रुपद ने तीव्र बाणों से द्रोण को विद्ध कर, उन पर सत्तर बाण छोड़े। फिर उनके सारथि के भी पाँच बाण मारे। भीमसेन ने राजा बाल्हिक और भीष्म पितामह को घायल किया और वैसे ही सिंहनाद किया जैसे वन में सिंह दहाड़ता है। यद्यपि चित्रसेन ने अर्जुन के पुत्र को बहुत घायल कर दिया था; तथापि वह अपना पराक्रम प्रदर्शित करता और शत्रुओं पर असंख्य बाण छोड़ता हुआ रणभूमि में डटा रहा। उसने तीन बाण ऐसे मारे, जिससे चित्रसेन बुरी तरह घायल हो गया। आमने सामने लड़ते हुए ये दोनों वीर वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे आकाश-स्थित और आमने सामने खड़े हुए बुध और शनिश्चर। शत्रु विनाशी सुभद्रानन्दन अभिमन्यु ने शत्रुपक्षीय चार योद्धाओं को नौ बाणों से मार कर बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। इस पर हताश्व चित्रसेन रथ से कूद पड़ा और दुर्मुख के रथ पर जा बैठा।

हे राजन्! पराक्रमी द्रोण ने द्रुपद को बाणप्रहारों से बुरी तरह घायल कर, देखते ही देखते उसके सारथि को भी मार डाला। अतः घायल और पीड़ित द्रुपद, पूर्व वैर को स्मरण कर, अपने वेगवान रथ को दौड़ा रणभूमि से चला गया। इधर देखते देखते भीमसेन ने राजा बाल्हीक के सारथि और उसके रथ के घोड़ों को मार डाला। इस प्रकार रथहीन राजा बाल्हीक बहुत घबड़ाया और दौड़ कर लक्ष्मण के रथ पर जा बैठा। उधर सात्यकि ने कृतवर्मा की गति अवरुद्ध कर दी और वह भीष्म पितामह के सामने जा पहुँचा। वह अपना विशाल धनुष चढ़ा, रथ पर खड़ा था। उस समय चारों ओर बाण फेंकता हुआ वह ऐसा जान पड़ता था, मानों नाच रहा हो। उसने बड़े तीक्ष्ण बाण चला भीष्म को घायल करना आरम्भ किया। इस पर भीष्म जी ने सुवर्णभूषित नागकन्या की तरह सुन्दर, लोहे की एक बड़ी भारी शक्ति सात्यकि के ऊपर फेंकी। मृत्यु-तुल्य महादुर्जेय उस शक्ति को अपनी ओर आते देख, कीर्तिवान वृष्णिवंशीय

सात्यकि ने बड़ी फुर्ती से उसे निवारण किया। वह परम दारुण शक्ति एक बड़े भारी उल्कापिण्ड की तरह भूमि पर गिर पड़ी। तब सोने की तरह चमचमाती एक शक्ति सात्यकि ने उठायी और सारा बल लगा उसे भीष्म पर छोड़ी। वह शक्ति बड़े वेग से वैसे ही भीष्म की ओर जाने लगी, जैसे कालरात्रि बड़े वेग से मनुष्य को ग्रस लेती है; किन्तु पैने पैने दो बाण मार भीष्म ने उस शक्ति के दो टुकड़े कर डाले। वह शक्ति टूट कर भूमि पर गिर पड़ी। तदनन्तर शत्रुविनाशी भीष्म ने क्रोध में भर और तिरस्कार सूचक हँसी हँस कर. नौ बाण मार सात्यकि की छाती विदीर्ण कर डाली। यह देख चतुरङ्गिणी सेना साथ ले पाण्डवों ने सात्यकि की रक्षा के लिये, भीष्म को चारों ओर से घेर लिया। उस समय विजयाभिलाषी कौरवों और पाण्डवों में रोमाञ्चकारी महाभीषण संग्राम होने लगा।

एक सौ पाँच का अध्याय

शल्य के साथ धर्मराज का युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! ग्रीष्मकालीन सूर्यतुल्य भीष्म पितामह को, पाण्डव वाहिनी रूपी मेघघटा में छिपा देख, दुर्योधन ने दुःशासन से कहा—हे भारत! शत्रुविनाशी एवं महाधनुर्धर पितामह भीष्म, पाण्डवों की सेना द्वारा घेर लिये गये हैं। अतः तुम्हें उचित है कि, इस समय तुम उनकी रक्षा करो। जब हम लोग पितामह भीष्म की रक्षा करेंगे, तब वह यत्नपूर्वक पाण्डवों सहित पाञ्चाल योद्धाओं का वध कर सकेंगे, अतः उनकी रक्षा करना मैं सर्वोपरि कार्य समझता हूँ। यह महाव्रती एवं महाधनुर्धर भीष्म पितामह, रण में बड़े क्लिष्टकर्मा हैं और हम लोगों के रक्षक हैं। अतः तुम समस्त सेना साथ ले कर, जाओ और उनकी रक्षा करो।

दुर्योधन के इस आदेशानुसार दुःशासन एक विशाल सेना सहित भीष्म को घेर कर खड़े हो गये। उधर रथीमुख्य सुबलनन्दन शकुनि ने शिक्षित और रणकुशल प्रधान प्रधान योद्धाओं को तथा कई हज़ार ऐसे अश्वारोही सैनिकों को, जो बड़े वेगवान् थे, जो ध्वजा पताकाओं से सुशोभित थे, बलाभिमानी थे तथा जो उत्तम प्रासों, ऋष्टियों और तोमरों से लड़ते थे—साथ ले, धर्मराज, नकुल एवं सहदेव को चारों ओर से घेर, उन पर आक्रमण किया। इतने में दुर्योधन ने दस हज़ार पराक्रमी घुड़सवारों को उनके पास और भेजा। वे गरुड़ की तरह वेग से आये और पाण्डवों का सामना करने लगे। उन घोड़ों की टाप से भूमि काँपने लगी। घोड़ों की टापों का शब्द वैसा ही सुन पड़ता था, जैसा पहाड़ पर जलते हुए बाँसों का चटाचट शब्द हुआ करता है। उन घोड़ों के चलने से इतनी धूल उड़ी कि, सूर्य छिप गये। जैसे बगलों की पंक्ति किसी जलाशय पर बड़े वेग से टूट पड़ती है, वैसे ही वे घुड़सवार भी पाण्डवों पर बड़े वेग से टूट पड़े। यह देख पाण्डवों की सेना विक्षिप्त हो गयी। घोड़ों की हिनहिनाहट के कारण कान में पड़ी बात भी नहीं सुन पड़ती थी। वर्षाकालीन परिपूर्ण महासागर में जैसे तरंगें बड़े वेग से उठती हैं और जैसे तट उन्हें रोकता है वैसे ही धर्मराज, नकुल और सहदेव ने बड़ी दृढ़ता के साथ उन अश्वारोही सैनिकों के आक्रमण को रोका। फिर ये तीन रथी ही धड़ाधड़ सवारों के सिर काटने लगे। इन महाधनुर्धरों के काटे हुए घुड़सवारों के सिर वैसे ही गिर रहे थे, जैसे मतवाले हाथियों के मारे हुए साधारण गज, पर्वतकन्दरा में ढह पड़ते हैं। वे योद्धा दसों दिशाओं में पहुँचने वाले अपने बाणों से सवारों के सिर धड़ाधड़ काट रहे थे। ऋष्टियों के प्रहार से ताड़ित घुड़सवारों के सीस कट कर भूमि पर वैसे ही गिर रहे थे, जैसे पेड़ों से टपाटप फल गिरें। उस महासमर में एक दो नहीं—सैकड़ों हज़ारों घुड़सवार अपने घोड़ों सहित कटे हुए और कटते हुए देख पड़ते थे। जैसे सिंह को देखते ही मृग जान ले भागता है, वैसे ही वे मारे जाते हुए

सैनिक भी भयभीत हो चारों ओर को भाग खड़े हुए। इस प्रकार शत्रु-सैन्य को परास्त कर, पाण्डवों ने शङ्ख और भेरियाँ बजायीं। इधर अपनी सेना की ऐसी दुर्दशा देख, उदास हुआ राजा दुर्योधन, मद्रराज से बोला—हे प्रभो! हे महाबाहो! हम सब लोगों के सामने ही नकुल और सहदेव से रक्षित धर्मराज हमारी सेना को भगा रहा है, अतएव इसे वैसे ही रोक देना चाहिये जैसे लहराते हुए समुद्र को समुद्रतट रोक देता है, क्योंकि आप बड़े बलवान और पराक्रमी हैं। आपके बल एवं पराक्रम को हर कोई नहीं सह सकता।

हे राजन्! आपके पुत्र के इन वचनों को सुन कर, प्रतापी शल्य अपने साथ एक रथसैन्य ले, युधिष्ठिर पर दौड़े। शल्य की समस्त सेना धर्मराज पर टूट पड़ी। तब आवेश में भर धर्मराज युधिष्ठिर ने शल्य की गति तुरन्त अवरुद्ध की और उसकी छाती में दस बाण मारे। सात सात सीधे जाने वाले बाण नकुल और सहदेव ने भी शल्य के मारे। उत्तर में शल्य ने भी प्रत्येक के तीन तीन बाण मारे और साठ पैने बाण मार धर्मराज को घायल किया। नकुल सहदेव को विकल देख, शल्य ने उन पर भी दो दो बाणों का प्रहार किया। राजा युधिष्ठिर को मानों काल के मुख में पड़ते देख और शल्य के रथ को धर्मराज के रथ के अतिनिकट देख, महाबली भीम अपने भाइयों की रक्षा करने को लपके। जब सन्ध्याकाल उपस्थित हुआ और सूर्य अस्ताचलगामी हुए, तब भी महादारुण संग्राम हो रहा था।

एक सौ छः का अध्याय

अपराजित भीष्म पितामह

सञ्जय ने कहा—महाराज! तदनन्तर पराक्रमी भीष्म पितामह ने, क्रोध में भर और चारों ओर से तीक्ष्ण बाणों की वर्षा कर, ससैन्य पाण्डवों

को पीड़ित करना आरम्भ किया। उन्होंने भीम को बारह, सात्यकि को नौ, नकुल को तीन और सहदेव को सात बाणों से घायल कर, बारह बाण मार धर्मराज की दोनों भुजाओं को तथा छाती को विदीर्ण किया। तदनन्तर धृष्टद्युम्न को घायल कर भीष्म ने सिंहनाद किया। तब नकुल ने बारह, सात्यकि ने तीन, सहदेव ने सात, अर्जुन ने नौ, धृष्टद्युम्न ने सत्तर, भीम ने सात और युधिष्ठिर ने बारह बाण चला भीष्म पितामह को घायल किया। जैसे अङ्कुश से हाथी के प्रहार कर, उसे पीड़ित किया जाता है, वैसे ही भीम और सात्यकि ने तीन तीन बाण मार द्रोणाचार्य को घायल किया। सौवीर, कितव, पूर्ववासी, पश्चिमवासी, उत्तरवासी, मालवे के अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वसाती आदि योद्धाओं ने भीष्म के तीव्र बाणों की चोट खा कर भी, उनको न छोड़ा। आपके पक्ष के नाना देशीय राजा लोग विविध अस्त्रप्रहारों से पीड़ित हो कर भी पाण्डवों का सामना करने लगे। पाण्डवों ने भीष्म को चारों ओर से घेर रखा था। तब भीष्म पितामह अपराजित प्रचण्ड अग्नि की तरह चारों ओर से प्रकाशित हो पाण्डवसैन्य को भस्म करने लगे। भीष्म रूपी प्रज्वलित अग्नि में पड़ रथशिखा, धनुष, खड्ग, शक्ति, गदा और बाण काठ की तरह भस्म होने लगे। भीष्म रूपी अग्नि से क्षत्रिय योद्धा रूपी काठ भस्म होने लगा। भीष्म ने गिद्धपंख वाले सोने की डंडी के तीक्ष्ण बाणों से पाण्डवों की सेना ढक दी। फिर उन्होंने समस्त रथों की ध्वजाओं को काट कर तालवन जैसा बना दिया। शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महाबली भीष्म ने गजों, अश्वों और रथों को मनुष्यों से रहित कर डाला।

हे राजन्! वज्र तुल्य भीष्म के धनुष के टंकार शब्द से और तनुत्राण के शब्द को सुन, समस्त सैनिक काँप उठे। हे राजन्! भीष्म के अमोघ बाण चारों ओर गिरते हुए देख पड़े। भीष्म के छोड़े हुए बाण केवल सैनिकों के कवचों से टकरा कर ही नहीं रह जाते थे, प्रत्युत वे वेगवान् घोड़ों सहित रथों को रथियों से रहित कर देते थे। रणभूमि में रथियों से

हीन रथ ही रथ देख पड़ते थे। केकय, काशि, चेदि और करुष देशीय ऐसे कुलीन चौदह हज़ार योद्धाओं को भीष्म ने मारा जो रण से जीते जी मुख नहीं मोड़ते थे। ये लोग अपने वाहनों सहित मारे गये थे। उस समय हे राजन्! मैंने देखा कि, सैकड़ों सहस्रों रथों के पहिये और उनके टूटे हुए ऊपरी हिस्से भूमि पर पड़े हैं। भग्न रथों, मृत गजों, मृत अश्वों, मृत रथियों, बाणों, कवचों, पट्टिशों, गदाओं, भिन्दिपालों. पैने बाणों, रथ के निम्न भाग में लगे काठों, वीर योद्धाओं की कटी भुजाओं, धनुषों, तलवारों, सकुण्डल मस्तकों, पदत्राणों, अँगुलित्राणों, ध्वजाओं और अनेक भग्न धनुषों से रणभूमि पटी हुई थी। सवारों से रहित सैकड़ों हजारों हाथी, घोड़े मर मर कर गिरने लगे। पाण्डव पक्षीय महारथी योद्धा, भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित हो, समरभूमि में इधर उधर भागने लगे। पराक्रमी पाण्डव, अनेक चेष्टाएँ कर के भी भीष्म को न रोक सके। इन्द्रतुल्य परम प्रतापी एवं पराक्रमी भीष्म पितामह के बाणों से पीड़ित और भयभीत पाण्डवों की समस्त सेना भागने लगी। भागते हुए वे लोग ऐसे हड़बड़ाने कि, दो दो योद्धा भी एक पंक्ति में नहीं चलते थे। पाण्डवसैन्य के हाथी, घोड़ों और रथों की ध्वजाएँ भीष्म के बाणों से कट कर भूमि पर गिर पड़ीं और सैनिक हाहाकार महाकोलाहल मचाने लगे। उस समय दैवप्रेरित, पिता पुत्र का, पुत्र पिता का और एक मित्र दूसरे मित्र का नाश करने लगा। हे राजन्! उस समय मैंने देखा कि, पाण्डवपक्षीय योद्धाओं के कवच खुल कर गिर पड़े हैं। वे नंगे सिर और खुले हुए सिर के केशों सहित भागे चले जाते हैं। जब भीष्म का रथ रणभूमि में चारों ओर दौड़ रहा था, तब भीष्म को देखते ही पाण्डव पक्षीय योद्धा, सिंह को देख भागती हुई गौओं की तरह, भागने लगते और आर्तनाद करने लगते थे।

हे राजन्! यह देख, यदुकुल-भूषण श्रीकृष्ण ने रथ खड़ा कर दिया और अर्जुन से कहा—हे पुरुषसिंह! हे अर्जुन! तुम्हारी पूर्वकालीन अभिलाषा के पूर्ण होने का समय उपस्थित है। अभी तुम भीष्म का वध

करो—नहीं तो पीछे तुम मोहित हो जाओगे। हे वीर! जब हस्तिनापुर से सञ्जय विराटनगर में तुम्हारे निकट गये थे, तब तुमने समस्त राजाओं के सामने उनसे यह कहा था कि, दुर्योधन के भीष्म, द्रोण आदि सैनिक पुरुषों तथा उनके अनुयायियों को जो मुझसे लड़ने आवेंगे—मैं रण में नष्ट करूँगा। हे कुन्तीनन्दन! हे शत्रुनाशन! अतः अब तुम क्षात्रधर्म को स्मरण कर तथा समस्त शोक और चिन्ताओं को त्याग कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो।

जब श्रीकृष्ण ने इस प्रकार कहा, तब अर्जुन ने तिरछी दृष्टि कर मुख नीचा कर लिया। उस समय ऐसा जान पड़ा मानों अर्जुन में लड़ने की ज़रा सी भी इच्छा नहीं है। अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा—अवध्य बन्धुजनों का वध कर नरकगति देने वाले राज्य को पाना अथवा वन में वास कर, दुःख भोगना—इन दोनों में मेरी भलाई किसमें है? हे हृषीकेश! जिधर भीष्म हों, उधर ही मेरा रथ हाँक ले चलो। आप जो कहेंगे मैं वही करूँगा। सब से अजेय कुरुओं के पितामह भीष्म को मैं मार डालूँगा। यह सुन श्रीकृष्ण ने चाँदी की तरह उज्ज्वल वर्ण घोड़ों को उस ओर हाँका जिस ओर सूर्य तुल्य देदीप्यमान और आँखों को चौंधिया देने वाले भीष्म जी थे। अर्जुन को भीष्म की ओर जाते देख, युधिष्ठिर की भागती हुई सेना पुनः लौट आयी। तब कौरव-श्रेष्ठ भीष्म पितामह ने वारंवार सिंहनाद कर के अपने बाणों की वर्षा से अर्जुन के रथ को छिपा दिया। भीष्म के बाणों की वर्षा से क्षण भर में घोड़े और सारथि सहित अर्जुन का रथ छिप गया। तब घायल घोड़ों को श्रीकृष्ण ने बड़ी सावधानी के साथ चलाया। तदनन्तर बादल की तरह शब्द करने वाले गाण्डीव धनुष को उठा पैने बाणों से भीष्म के धनुष को काट डाला। धनुष कटते ही भीष्म ने बादल के समान शब्द करने वाले एक दूसरे धनुष को ले, उस पर रोदा चढ़ाया और वे बाण छोड़ने लगे; किन्तु क्रुद्ध हो अर्जुन ने उस धनुष को भी काट डाला। यह देख और धन्य धन्य कह, भीष्म ने अर्जुन के पराक्रम

की प्रशंसा की। ये अर्जुन की प्रशंसा कर, फिर एक सुन्दर धनुष ले, उनके रथ पर बाणवृष्टि करने लगे, तब श्रीकृष्ण ने रथ को मण्डलाकार चला कर, भीष्म के समस्त बाणों को लक्ष्यच्युत कर निष्फल कर दिया। भीष्म के बाणों से घायल वे दोनों नरव्याघ्र आमने सामने लड़ते हुए सींगों से घायल बैलों की तरह देख पड़ते थे। युद्ध में अर्जुन की मृदुता और सूर्य की तरह प्रकाशमान एवं काल की तरह भीष्म को युधिष्ठिर की सेना के छटा छटा वीरों का नाश करते देख, मधुसूदन वासुदेव से न रहा गया। वे रथ के घोड़ों की रास छोड़ रथ से कूद पड़े। वे सिंहनाद करते और चाबुक हाथ में लिये हुए भीष्म की ओर दौड़े। उस समय अपार तेजस्वी श्रीकृष्ण के नेत्र मारे क्रोध के लाल हो रहे थे। अपने पैरों की धमक से पृथिवी को कँपाते हुए श्रीकृष्ण, भीष्म को मारने के लिये आगे बढ़े। श्रीकृष्ण को भीष्म के निकट जाते देख, आपके पक्ष के योद्धाओं के हृदय दहल गये। वे भयभीत हो चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे—यह भीष्म को मार डालेंगे। पीताम्बरधारी और नीलमणि जैसे कान्तिमान् एवं भीष्म की ओर जाते हुए श्रीकृष्ण, विद्युत युक्त घनघटा की तरह सुशोभित हो रहे थे। जैसे सिंह, हाथी पर लपके अथवा एक वृषभ दूसरे वृषभ पर आक्रमण करे, वैसे ही श्रीकृष्ण गरजते हुए भीष्म के ऊपर झपटे। श्रीकृष्ण को अपनी ओर आते देख, भीष्म तनक भी न घबड़ाये और धनुष तान उन्होंने निर्भय हो श्रीकृष्ण से कहा—हे पुण्डरीकाक्ष! आइये। हे देवों के देव! मैं आपको प्रणाम करता हूँ। हे सात्वतवंशियों में श्रेष्ठ! आज आप मुझे मार डालिये। हे निष्पाप! आज आपके हाथ से मारे जाने पर इस लोक में सब प्रकार मेरी भलाई होगी। हे गोविन्द! आज आपका मुझसे लड़ने के लिये मेरे सामने आना, मैं अपने लिये त्रिलोकी भर में सर्वश्रेष्ठ प्रतिष्ठा प्राप्ति का कारण समझता हूँ। हे अनघ! मैं तो आपका दास हूँ। अतः आप मन भर कर मेरे ऊपर प्रहार करें। इधर श्रीकृष्ण को भीष्म की ओर झपटते देख, अर्जुन ने दौड़ कर, पीछे से उन्हें पकड़ लिया; किन्तु इस

पर भी श्रीकृष्ण न माने और अर्जुन को घसीटते हुए बड़े वेग से आगे बढ़ते ही चले गये। उस समय सारी शक्ति लगा अर्जुन ने पैर जमाते जमाते दस पग बाद श्रीकृष्ण को आगे बढ़ने से रोका। उस समय श्रीकृष्ण मारे क्रोध के सर्प की तरह फुँसकार रहे थे। अतः उनके प्यारे सखा अर्जुन ने बड़े ही प्रेम के साथ कहा—हे महाबाहो! आप लौटिये, लौटिये। आपको ऐसा अनुचित कार्य करना शोभा नहीं देगा। हे माधव! आप प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि, आप न लड़ेंगे, अतः यदि आज आपने शस्त्र उठाया तो लोग आपको मिथ्यावादी कहेंगे। मैं इस युद्ध के समस्त भार को अपने ऊपर लेता हूँ और अपने इस अस्त्र की, सत्य की तथा पुण्य की शपथ खा कर प्रतिज्ञा करता हूँ कि, मैं भीष्म का संहार करूँगा। हे शत्रुनाशन! महारथी भीष्म को आप प्रलयकाल उपस्थित होने पर, नष्ट होते हुए तारापति चन्द्रमा की तरह युद्ध में मरा हुआ देखेंगे।

महाबली धनञ्जय के इन वचनों को सुन कर, श्रीकृष्ण बोले तो कुछ नहीं; किन्तु कोप में भरे, पीछे को लौट गये। वे लौट कर पूर्ववत् रथ पर बैठ घोड़े हाँकने लगे। तदनन्तर जैसे मेघ जलवृष्टि करते हैं, वैसे ही भीष्म उन दोनों पर बाणवृष्टि करने लगे। जैसे शिशिरऋतु के अन्तिम भाग में, सूर्य समस्त प्राणियों के तेज को हर लेते हैं, वैसे ही भीष्म, योद्धाओं के प्राण हरने लगे। जैसे पहले पाण्डवों ने कौरवसेना में भगदड़ डाल दी थी, वैसे ही भीष्म ने पाण्डवों की सेना में भगदड़ डाली। पाण्डवों की सेना भयभीत हो भागने लगी। मध्यान्हकालीन सूर्य की तरह अद्वितीय भीष्म की ओर, पाण्डव या उनके अनुयायियों में से कोई भी योद्धा आँख ऊँची कर देख तक न सका। भीष्म के हाथ से मरते हुए पाण्डवों के पक्ष के सैकड़ों हज़ारों वीरों को मारे जाते देख, शेष योद्धा भयभीत हो गये। वे चकित हो देवोपम पराक्रमी भीष्म की ओर ताकते ही रह गये और मन ही मन कहने लगे कि, क्या भीष्म आज सचमुच हम सब का संहार ही कर डालेंगे। दलदल में फँसी गौ की तरह पाण्डवों

की सेना की रक्षा उस समय कोई भी न कर सका। महाबली भीष्म ने आज की लड़ाई में पाण्डवों के दुर्बल योद्धाओं को चीटियों की तरह कुचल डाला। योद्धाओं को तप्त करने वाले एवं किसी से हार न खाने वाले, बाण रूपी रश्मियों से सम्पन्न सूर्य समान भीष्म को सामने देख, पाण्डव चौंधिया गये। भीष्म जी पाण्डव सैन्य का नाश कर ही रहे थे कि इतने में सूर्य अस्ताचलगामी हुए। अतः थके माँदे समस्त योद्धाओं ने युद्ध बन्द करना निश्चित किया।

[नवम दिवस की रात्रि]

एक सौ सात का अध्याय

भीष्म का पाण्डवों को अपने मारे जाने का उपाय बतलाना

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब लड़ते लड़ते सन्ध्या हो गयी और सूर्य अस्त हो गये तथा अन्धकार फैलने लगा; तब धर्मराज ने देखा कि उनकी सेना भीष्म पितामह के बाणों से पीड़ित, भयविह्वल और हथियारों को पटक, भागी जा रही है। भीष्म बराबर सैनिकों का संहार कर रहे हैं और सोमक योद्धा पराजित होने के कारण उत्साह रहित हो रहे हैं। यह देख धर्मराज बड़े चिन्तित हुए और अपनी सेना को युद्ध बन्द कर देने की आज्ञा दी। जब पाण्डवों की सेनाएँ लौट कर छावनी की ओर चल दीं, तब हे राजन्! आपकी सेनाएँ भी लड़ाई बंद कर अपनी छावनी में चली गयीं। अपनी सेनाओं को पीछे लौटी हुई देख, संग्राम में क्षत-विक्षत हुए महारथी विश्राम करने लगे। भीष्म के बाणों से पीड़ित पाण्डव उनके अद्भुत पराक्रम को भूले न थे। अतः उनके मन बहुत अशान्त थे। भीष्म, पाण्डवों को तथा सृञ्जयों को हरा कर और आपके

पुत्रों द्वारा वन्दित और पूजित हो कर, प्रसन्न होते हुए ससैन्य अपने शिविर में पहुँचे। इतने में समस्त प्राणियों को मुग्ध करने वाली रात हुई। उस महाघोर रजनी में पाण्डव, सृञ्जय और वृष्णिवंशी एकत्र हो आपस में परामर्श करने लगे। मंत्रकर्म विशारद ये लोग, मन को एकाग्र कर, समयानुसार अपनी भलाई के सम्बन्ध में परामर्श करने लगे। उन सब में बहुत देर तक परामर्श हुआ। अन्त में बहुत देर तक सोच विचार कर और श्रीकृष्ण की ओर देख, धर्मराज ने कहा—हे श्रीकृष्ण! तुमने देखा, आज भीष्म ने मेरे सैनिकों का वैसे ही नाश किया; जैसे हाथी कमल वन का नाश किया करते हैं। उन महातेजस्वी महात्मा भीष्म की ओर हम आँख उठा कर देख भी तो नहीं सकते थे। प्रतापी भीष्म पितामह, तक्षक सर्प की तरह क्रुद्ध हो, धनुष घुमा कर पैने बाणों के प्रहारों से मेरी सेना का संहार करते रहते हैं। यदि कोई चाहे, तो कुपित एवं दण्डधारी यमराज, वज्रधारी इन्द्र, पाशधारी वरुण और गदाधारी कुबेर को जीत सकता है, किन्तु इस महासमर में कुपित हुए भीष्म को कोई नहीं हरा सकता। अतएव हे कृष्ण! मैं निज बुद्धिदौर्बल्य के कारण भीष्म के लिये चिन्ता रूपी महासागर में निमग्न हो रहा हूँ। भीष्म तो सदैव ही हम लोगों को पीड़ित कर हमारी सेना का संहार किया करते हैं। अतः मेरा मन तो अब युद्ध से ऊब गया है। मैं तो अब वन को जाऊँगा—क्योंकि मेरे लिये तो वनवास ही परमोपयोगी है। जैसे पतिङ्गे दहकती हुई आग में गिर अपना शरीर भस्म कर डालता है। वैसे ही मुझे भीष्म पितामह भी देख पड़े। हे यदुकुलभूषण! मैं राज्य प्राप्ति के लिये पराक्रम साध्य इस युद्धकार्य में प्रवृत्त हो अपने हाथों अपना नाश कर रहा हूँ। मेरे शूरवीर बलवान् भाई भीष्म के बाणप्रहार से अत्यन्त पीड़ित हो रहे हैं। वे भ्रातृस्नेह के वशवर्त्ती हो, राज्य से भ्रष्ट हो वनवासी हुए थे। हे मधुसूदन! द्रौपदी को भी मेरे ही पीछे क्लेश सहना पड़ा है। यद्यपि मैं जीवन को बहुमूल्य समझता हूँ; तथापि अब वह जीवन दुर्लभ हो रहा

हूँ। अतः यदि मैं अपना जीवन बचा सका तो मैं अपने शेष जीवन को धर्माचरण में लगाऊँगा। हे केशव! यदि आप मेरे ऊपर और मेरे भाइयों पर अनुग्रह करना चाहते हैं, तो मुझे ऐसा हितकर परामर्श दें, जिससे मेरे धर्म में विरोध न पड़े।

युधिष्ठिर के इन करुणापूर्ण विस्तृत वचनों को सुन श्रीकृष्ण ने अर्जुन को धैर्य बँधाया और उनसे कहा—हे धर्मपुत्र! हे सत्यप्रतिज्ञ! आप दुःखी न हों। क्योंकि शत्रुविनाशी आपके भाई बड़े शूरवीर हैं। उन्हें कोई हरा नहीं सकता। अर्जुन और भीम, अग्नि और वायु की तरह तेजस्वी हैं। माद्री के दोनों पुत्र भी दो इन्द्रों के समान पराक्रमी हैं। यदि तुम्हें मेरे कथन पर विश्वास न होता हो, तो तुम इस कार्य पर मुझे नियुक्त कर दो। भीष्म से मैं लड़ूँगा। आपकी आज्ञा होने पर वह कौन काम है, जिसे मैं न कर सकूँ। यदि अर्जुन, भीष्म पर शस्त्रप्रहार करना नहीं चाहता तो मैं ही धृतराष्ट्रनन्दनों की आँखों के सामने भीष्म को ललकारूँगा और रण में उनका वध करूँगा। यदि तुम्हारी यह धारणा हो कि, भीष्म के मारे जाने पर ही तुम्हारी जीत हो जायगी, तो मैं अकेला ही रथ पर सवार हो आज भीष्म का वध करने को तैयार हूँ। हे राजन्! तुम्हें आज ही इन्द्र तुल्य पराक्रम रण में दिखलायी पड़ जायगा। बड़े बड़े अस्त्रों को चलाने वाले भीष्म को मैं मार कर रथ के नीचे गिरा दूँगा। क्योंकि जो पाण्डवों का वैरी है, वह निश्चय मेरा भी शत्रु है और जो पाण्डवों का मित्र है, वह मेरा भी मित्र है। तुम्हारा भाई अर्जुन मेरा मित्र है, नातेदार है और शिष्य है। अर्जुन के पीछे मैं अपने शरीर का माँस तक काट कर देने को तैयार हूँ और नरव्याघ्र अर्जुन भी मेरे पीछे अपने प्राण तक देने को तैयार है। हम लोगों का यह समझौता है कि, जब किसी एक पर आपत्ति पड़े तो दूसरा उसे दूर करे। अतः हे राजन्! आप मुझे आज्ञा दें कि मैं आपकी ओर से कौरवों से लड़ूँ। उपप्लव में अर्जुन ने सब के सामने प्रतिज्ञा की है कि, वह भीष्म का वध करेगा। अतः मुझे अर्जुन की प्रतिज्ञा

की सर्वथा रक्षा करनी चाहिये। यदि अर्जुन स्वयं उसे पूरा करना चाहे तो वही उसे पूरा करे। पर-पुरञ्जय भीष्म को रण में अर्जुन अवश्य मारेगा क्योंकि अर्जुन के लिये कोई भी कार्य असाध्य नहीं है। दैत्य दानवों सहित देवताओं को भी अर्जुन रण में जीत सकता है। फिर भीष्म तो है ही किस गिनती में। भीष्म जी इस समय तुम्हारा अनिष्ट करने में प्रवृत्त हैं, अतः उनकी बुद्धि बिगड़ गयी है। वे पराक्रमहीन और अल्पबुद्धि हो गये हैं अतः वे नहीं समझ सकते कि, उनके लिये क्या कर्त्तव्य है और क्या अकर्त्तव्य?

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन धर्मराज युधिष्ठिर बोले—हे महाबाहो! हे माधव! आपका कहना बहुत ठीक है। आप पुरुषसिंह हैं। जब आप ही मेरे पक्ष पर हैं, तब मेरे अभिलषित समस्त विषय मुझे सदैव प्राप्त होते रहेंगे। विजयप्रद गोविन्द! जब आप मेरे सहायक हैं, तब मैं देवताओं सहित इन्द्र को भी जीत सकता हूँ भीष्म तो हैं ही किस में; किन्तु हे कृष्ण! आप तो प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि, आप किसी ओर से भी न लड़ेंगे। अतः मैं निज स्वार्थ के वशवर्त्ती हो और आपको लड़ने की सम्मति दे, आपको मिथ्या-भाषी नहीं बनाना चाहता। अतः आप युद्ध न करें और हम लोगों को यथोचित सहायता प्रदान करें। प्रज्वलित संग्राम के विषय में भीष्म मुझसे प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि—"मैं तुम्हें परामर्श तो दूँगा; किन्तु तुम्हारी ओर से युद्ध कभी न लड़ूँगा। मैं लड़ूँगा तो दुर्योधन ही की ओर से। मेरे इस कथन को तुम सत्य समझो।" हे माधव! भीष्म जी मुझे राज्य देने वाले और मेरे परामर्श-दाता हैं। अतः मेरी सम्मति है कि, आपको साथ ले, हम लोग उनके निकट चलें और उन्हींसे उनके मारे जाने का उपाय पूँछें। हम सब को एकत्र हो अब शीघ्र ही भीष्म के निकट चलना चाहिये। अब विलम्ब करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वे हमको तो हमारे हित की और सच्ची ही सलाह देंगे। वे जो कुछ बतलावेंगे, उसीके अनुसार हम चलेंगे। वे हमें ऐसी सलाह देंगे, जिससे हमारी जीत होगी।

क्योंकि जब हमलोग बालक थे और हमारे पिता नहीं रह गये, तब उन्होंने तो हमारा लालन पालन कर हमें इतना बड़ा किया है। हे माधव! यदि ऐसे हितैषी पिता के भी पिता, बूढ़े बाबा को मैं मार डालना चाहूँ, तो इस क्षत्रिय-जीवन को बार बार धिक्कार है।

सञ्जय ने कहा—हे महाराज! इस पर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—हे युधिष्ठिर! तुमने जो बातें कहीं उनसे मैं भी सहमत हूँ। भीष्म पितामह युद्ध में शत्रुओं को दृष्टिमात्र से भस्म कर सकते हैं। अतः उनके मारे जाने का उपाय पूँछने के लिये उनके निकट जाना चाहिये। वहाँ जाने पर वे जो परामर्श दें तदनुसार ही हमें काम करना चाहिये।

हे राजन्! बलवान पाण्डवों और श्रीकृष्ण ने इस प्रकार निश्चय किया और अपने अपने कवच उतार डाले और हथियार रख दिये। फिर वे भीष्म के शिविर की ओर प्रस्थानित हुए। जब वे भीष्म जी के शिविर में पहुँचे, तब उन लोगों ने भीष्म जी को प्रणाम किया और उनके प्रति यथोचित सम्मान प्रदर्शित किया तथा उनके शरण हुए।

तब भीष्म पितामह ने उनका सब का स्वागत किया और कुशल प्रश्न पूँछने के अनन्तर कहने लगे—हे कृष्ण! तुम अच्छे आये। हे अर्जुन! तू भी अच्छा आया। हे धर्मपुत्र! हे भीम! हे नकुल! और हे सहदेव! तुम लोगों के आगमन से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। बतलाओ मैं ऐसा कौन सा काम करूँ, जिससे तुम्हारा मन प्रसन्न हो। यदि तुम्हारा कोई बड़ा कठिन भी कार्य होगा, तो भी मैं उसे किसी न किसी तरह अवश्य करूँगा।

जब गङ्गानन्दन भीष्म ने बड़े स्नेह के साथ यह वचन बारंबार कहा, तब उदास हो धर्मराज ने कहा—हे सर्वज्ञ! आप यह बतलावें कि हम लोगों को रण में क्यों कर विजय प्राप्त हो? हम लोगों को हमारा राज्य कैसे वापिस मिले। मैं चाहता हूँ कि मेरा अभीष्ट भी पूर्ण हो और प्रजा-जन का नाश भी न हो। हम लोग आपके तेज के सामने किसी प्रकार

भी नहीं टिक सकते। अतः आप हमें अपने वध का उपाय स्वयं ही बतलावें हे पितामह! रणक्षेत्र में आपका धनुष सदा मण्डलाकार देख पड़ता है। आपकी ज़रा सी भी त्रुटि हमें खोजने पर भी नहीं देख पड़ती। हे महाबाहो! आप सूर्य की तरह रथ पर सवार हो, कब बाण निकालते, कब उसे धनुष पर रखते और कब छोड़ते हैं, यह हम लोगों को नहीं जान पड़ता। जब आप रथियों, गजपतियों और अश्वारोहियों का नाश करने को पिल पड़ते हैं, तब किसमें शक्ति है, जो आपको हटा सके। आपने रणक्षेत्र में बाणवृष्टि कर बहुत से वीरों का संहार कर डाला है। अतः मुझे आप वह उपाय बतलावें, जिससे मुझे मेरा राज्य मिल जाय, मेरी सेना का कल्याण हो और आपका पराजय हो।

हे राजन्! युधिष्ठिर के इन वचनों को सुन, शान्तनुनन्दन भीष्म ने उनसे कहा—हे धर्मज्ञ! हे कुन्तीनन्दन! हे युधिष्ठिर! मैं जब तक जीवित हूँ, तब तक तुम्हारा विजय असम्भव है! मैं तुमसे यह बात सत्य ही सत्य कहता हूँ। मेरे पराजित होने पर तुम विजय प्राप्त कर सकते हो। अतः यदि तुम्हें युद्ध में विजयप्राप्ति की इच्छा है तो शीघ्र मेरे ऊपर शस्त्रप्रहार कर मेरा वध करो। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि, तुम इच्छानुसार मेरे ऊपर शस्त्र प्रहार करो। यह तुम्हारे पुण्य का उदय है कि तुम मुझे अजेय समझते हो। यदि तुम इस बात को न समझते और मुझसे लड़ते ही रहते तो इससे असंख्य योद्धा मारे जाते; किन्तु अब तो तुम मुझे अजित जान मेरे शरण आये हो, सो अब तुम इस संहार को बंद ही सा समझो। साथ ही मेरे वध का उद्योग करो।

युधिष्ठिर बोले—तब आप वह उपाय भी तो बतलावें, जिससे हम विजयी हों। दण्डधारी यमराज की तरह, क्रोध में भर रणक्षेत्र में खड़े हुए आपको हम कैसे जीतें? वज्रधारी इन्द्र, पाशधारी वरुण और दण्डधारी यमराज को कोई जीतना चाहे तो उनको जीत सकता है; किन्तु आपको तो इन्द्र सहित समस्त देवता और असुर भी नहीं जीत सकते।

भीष्म जी बोले—हे धर्मराज! तुम्हारा कहना सत्य है। यदि मैं रणक्षेत्र में हाथ में धनुष ले खड़ा हो जाऊँ, तो इन्द्र को आगे कर देवताओं और दानवों की भी मजाल नहीं कि वे मुझे हरा सकें। हाँ जब मैं हथियार रख दूँ, तब यह महारथी मुझे अवश्य जीत सकते हैं। शस्त्रत्यागी, शस्त्रों से घायल हो भूमि पर पड़ा हुआ, कवचहीन, ध्वजारहित, पलायमान, मैं आपका ही हूँ, यह कह शरण में आये हुए पर, स्त्री जाति पर, स्त्री नामधारी पुरुष पर, घबड़ाये हुए पुरुष पर, एकपुत्रक पर, सन्तानहीन पर, पापी पुरुषों पर, हथियार उठाने को मेरा जी नहीं चाहता। हे राजन्! मेरे पूर्वकृत सङ्कल्प को सुनो। आपकी सेना में महारथी राजा द्रुपद का पुत्र शिखण्डी है। वह संग्राम में किसी की मार सहने वाला नहीं है और वह प्रायः शत्रुओं को परास्त किया करता है। वह पहले स्त्री था; किन्तु पीछे पुरुष बन गया है। यह बात तुम सब लोगों को भी भली भाँति विदित है। शिखण्डी को आगे कर अर्जुन मेरे ऊपर तीक्ष्ण शस्त्रों का प्रहार करे। मैं तो स्त्री रूपी पुरुष को आगे कर युद्ध करने को आना, अमाङ्गलिक चिन्ह समझता हूँ। मैं ऐसी दशा में कभी भी शस्त्रप्रहार करना नहीं चाहता। जब ऐसा अवसर उपस्थित हो, तब धनञ्जय चारों ओर से मेरे ऊपर बाणवृष्टि करे। मुझे तो तीनो लोकों में श्रीकृष्ण और अर्जुन को छोड़ ऐसा पुरुष नहीं देख पड़ता, जो मेरा वध कर सके। अतः शिखण्डी को अथवा अन्य किसी शिखण्डी जैसे पुरुष को आगे कर, संग्राम के लिये तैयार हो अर्जुन को मेरे सामने भेज, मेरा वध करने दो। ऐसा करने ही से निश्चय ही तुम्हारी जीत हो सकेगी। हे सुव्रत कुन्तीनन्दन! मैंने जैसा बतलाया है, वैसा करने ही से तुम इन समवेत धृतराष्ट्रपुत्रों का नाश कर सकोगे।

सञ्जय ने कहा—भीष्म जी के मुख से उनके वध का उपाय सुन, पाण्डव उनको प्रणाम कर तथा उनसे विदा माँग निज शिविर में लौट आये। गङ्गानन्दन भीष्म के इन वचनों को सुन कर, अर्जुन बड़े दुःखी

हुए और लजा कर श्रीकृष्ण से कहने लगे—हे माधव! कुरुओं में वृद्ध, गुरु तुल्य, अनुभवी और बुद्धिमान पितामह के साथ मैं कैसे लड़ सकता हूँ? हे कृष्ण! जब मैं अबोध बालक था तब मैं धूल धूसरित हो, महायशस्वी, महात्मा इन पितामह की गोद में चढ़, उनके कपड़ों को तथा उनके शरीर को धूल से मैला कर दिया करता था। वे मेरे पिता पाण्डु के भी पिता हैं; किन्तु लड़कपन में मैं उनकी गोद में बैठ, उन्हें पिता पिता कह कर पुकारा करता था। तब उन्होंने मुझसे कहा था—हे वत्स! मैं तुम्हारा पिता नहीं हूँ। मैं तुम्हारे पिता का पिता हूँ। अतः इस परिस्थिति में, मैं उनका वध कैसे कर सकता हूँ? मेरी सेना के समस्त सैनिक जैसे चाहें वैसे उन पर शस्त्रों का प्रहार करें; किन्तु मैं तो उनसे युद्ध न करूँगा। भले ही ऐसा करने से चाहे मेरा विजय हो, चाहे पराजय। हे कृष्ण! इस सम्बन्ध में मेरा निज विचार यही है। इस विषय में तुम्हारा मत क्या है?

श्रीकृष्ण ने कहा—अर्जुन! तुम क्षात्रधर्म का अवलंबन कर यह प्रतिज्ञा कर चुके हो कि, मैं रण में भीष्म का वध करूँगा। अतः अब उनका वध किये बिना तुम शान्त कैसे रह सकते हो?

हे अर्जुन! तुम युद्धदुर्मद भीष्म को शीघ्र ही रथ से भूमि पर गिरा दो। भीष्म का वध किये बिना तुम जीत नहीं सकते। फिर भीष्म की मृत्यु इसी प्रकार होगी—इसका निर्धारण देवता पहले ही से किये बैठे हैं। पूर्व-निश्चयानुसार ही सब कार्य होने चाहिये। क्योंकि उसमें तिल भर भी अन्तर नहीं पड़ सकता। मुँह फाड़े यमराज की तरह परम पराक्रमी भीष्म को तुम्हें छोड़ और कोई मार भी तो नहीं सकता। मनुष्य तो क्या—वज्रधारी इन्द्र भी महाबलवान भीष्म को नहीं मार सकते। तुम मन में ज़रा सी भी दुविधा मत आने दो और निस्सङ्कोच हो भीष्म का वध करो। ऐसी परिस्थितियों के सम्बन्ध में बृहस्पति जी ने जो पहले ही कह रखा है, उसे तुम मुझसे सुनो—अनेक शुभगुणों से सम्पन्न श्रेष्ठ एवं वृद्ध जन भी यदि आततायी बन मारने आवे, तो उसको अवश्य मार डाले। हे अर्जुन!

क्षत्रियों का यह सनातन धर्म है निष्पाप क्षत्रिय को उचित है कि वह शत्रु के साथ लड़े, प्रजा की रक्षा करे और यज्ञ करे।

अर्जुन ने कहा—हे कृष्ण! शिखण्डी ही भीष्म का वध करेगा। क्योंकि उसे देखते ही भीष्म पितामह उस पर अस्त्रप्रहार न करेंगे। अतः मैं यही विचार करता हूँ कि, शिखण्डी को आगे खड़ा कर मैं पीछे से पितामह पर शस्त्र प्रहार करूँ। इस उपाय से ही मैं उनका वध कर सकूँगा। मैं लड़ते हुए अन्य योद्धाओं को अपने अस्त्रों से रोकूँगा और शिखण्डी, योद्धाओं में श्रेष्ठ भीष्म पर, शस्त्रप्रहार करेगा। मैंने कुरुश्रेष्ठ भीष्म से सुन रखा है कि, शिखण्डी पहले कन्या हो कर पीछे पुरुष बना है। अतः मैं शिखण्डी का वध न करूँगा।

इस प्रकार निश्चय कर, श्रीकृष्ण सहित पाण्डव, भीष्म से आज्ञा माँग कर, अत्यन्त हर्षित हो अपने शिविरों को लौट गये और सेजों पर जा सोये।

[दसवाँ दिन]

एक सौ आठ का अध्याय

भीष्म शिखण्डी-संवाद

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! अब तुम मुझे यह बात बतलाओ कि, शिखण्डी के सामना करने पर भीष्म ने क्या किया और वे किस प्रकार लड़े?

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! जब रात बीती और सवेरा हुआ, तब भेरी, मृदङ्ग और नगाड़े बजाये गये और दही की तरह सफेद रंग के कमल पुष्प ध्यान मग्न जैसे देख पड़ने लगे, तब पाण्डव उठे और शिखण्डी को आगे कर, लड़ने को रवाना हुए। हे राजन्! शत्रु-नाश-कारी सैन्य-व्यूह बना कर, शिखण्डी सब के आगे जा खड़ा हुआ। भीमसेन और

अर्जुन उसके रथ के दहिने बाएँ पहियों की रक्षा करने को रथ के दोनों ओर खड़े हो गये। शिखण्डी के पृष्ठरक्षक बने द्रौपदी के पाँचों पुत्र और सुभद्रानन्दन अभिमन्यु। महारथी सात्यकि और चेकितान, उन सब के रक्षक बनाये गये। इस प्रकार पाञ्चाल योद्धाओं से रक्षित हो धृष्टद्युम्न उन सब के पीछे खड़ा हुआ। उसके पीछे पाण्डवों की समस्त सेना के अधिपति महाराज युधिष्ठिर अपने साथ नकुल और सहदेव को ले, सिंहनाद करते हुए रवाना हुए। उनके पीछे राजा विराट, अपनी सेना सहित लड़ने को चले, उनके पीछे राजा द्रुपद चले। केकयराज पाँचों भाई और धृष्टकेतु उस सैन्यव्यूह की रक्षा करते हुए सब के पीछे थे। हे राजन्! इस प्रकार व्यूह बना पाण्डव अपने प्राणों को हथेली पर रख आपकी सेना पर टूट पड़े।

हे राजन्! इस ओर कौरवों ने भी महारथी भीष्म को समस्त सेना के आगे कर, पाण्डवों के विरुद्ध युद्धयात्रा की। आपके महाबली एवं पराक्रमी पुत्र भीष्म की रक्षा करने में प्रवृत्त हुए। तदनन्तर महाबली द्रोणाचार्य और उनके पुत्र महापराक्रमी अश्वत्थामा चले। इनके पीछे गजसैन्य को साथ ले राजा भगदत्त ने प्रस्थान किया। कृपाचार्य और कृतवर्मा, राजा भगदत्त के पीछे हो लिये। उनके पीछे बलवान् काम्बोजराज सुदक्षिण ने प्रस्थान किया। मगधाधिपति राजा जयत्सेन, सुबलपुत्र, बृहद्बल और सुशर्मा आदि अन्य समस्त महाधनुर्धर राजा समस्त सेना की रक्षा करते हुए सब के पीछे हो लिये। भीष्म नित्य कभी आसुरी, कभी पैशाची और कभी राक्षसी पद्धति से व्यूहरचना किया करते थे।

हे राजन्! तदनन्तर दोनों पक्षों का नाश कर के यमराज के राज्य की वृद्धि करने वाला आपकी और पाण्डवों की सेनाओं में युद्ध आरम्भ हुआ। अर्जुन आदि पाण्डव, शिखण्डी को आगे कर, अनेक बाण बरसाते भीष्म से भिड़ गये। इस युद्ध में भीम द्वारा घायल आपकी ओर के योद्धा रक्त से स्नान करते हुए यमालय जाने लगे। नकुल, सहदेव और महारथी सात्यकि आदि योद्धा आगे बढ़ आपके सैनिकों को पीड़ित करने लगे।

आपकी सेना के योद्धा जब इस प्रकार मारे जाने लगे, तब वे पाण्डवों की सेना का सामना करने में असमर्थ हुए। पाण्डवों के प्रहारों से घबड़ा आपके सैनिक चारों ओर भाग खड़े हुए। हे राजन्! जब पाण्डव और सृञ्जय आपकी सेना पर भीषण बाणों का प्रहार करने लगे, तब उनकी रक्षा कोई भी न कर सका।

धृतराष्ट्र ने पूछा—हे सञ्जय! जब पाण्डवों ने मेरी सेना को पीड़ित किया, तब कुपित हो भीष्म ने जो कुछ किया हो सो तुम मुझे सुनाओ। हे निर्दोष सञ्जय! शत्रुतापन भीष्म ने पाण्डवों के सम्मुख, युद्ध करते समय सोमकों का संहार किस प्रकार किया था। तुम मुझे यह भी सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे प्रजानाथ! जब पाण्डवों ने आपकी सेना को पीड़ित कर डाला, तब उस समय आपके भीष्म ने जो पुरुषार्थ प्रदर्शित किया—अब मैं उसीका वर्णन करता हूँ। परमपराक्रमी पाण्डव हर्षित हो आपके पुत्रों की सेना का संहार करते हुए जब आगे बढ़ने लगे, तब भीष्म जी अपनी ओर की सेना के हाथियों, घोड़ों और सैनिकों को शत्रुओं द्वारा नष्ट होते देख, न रहा गया। महाधनुर्धर एवं पराक्रमी भीष्म अपने प्राणों को त्यागने के निमित्त प्रस्तुत हो, पैने वत्सदन्त और अञ्जलिक बाणों से पाण्डवों, पाञ्चालों और सृञ्जयों पर प्रहार करने लगे। कुपित हो भीष्म ने पाण्डवों के पाँच शस्त्रधारी महारथियों को खदेड़, विविध प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों की वर्षा कर, शत्रुसैन्य के अनेक सैनिकों, गजों और अश्वों को मार डाला। वे विजयाभिलाषी पाण्डवों की सेना के रथियों को रथों से, गजपतियों को गजों से और अश्वारोहियों को अश्वों से, अपने बाणों के प्रहार से गिरा गिरा कर मारने लगे। पैदल सेना को भी बाण मार मार कर भूमि पर सुला दिया। इन्द्रवज्र की तरह भयङ्कर बाणों से प्रहार करते हुए भीष्म समस्त दिशाओं में भयङ्कर मूर्तिधारी जैसे देख पड़ने लगे। युद्ध करते समय भीष्म का इन्द्रधनुष की तरह विशाल

धनुष निरन्तर खिंचा रहने से मण्डलाकार देख पड़ता था। संग्राम में भीष्म के ऐसे पराक्रम को देख, आपके पुत्रों को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे उनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करने लगे। पूर्वकाल में जैसे देवगण शूर विप्रचित्त नामक दैत्य की ओर ताकते ही रह गये थे, वैसे ही उत्साहीन पाण्डव आपके पिता भीष्म की ओर ताकने लगे। मुख फाड़े काल की तरह भीष्म को कोई भी पाण्डवपक्ष का वीर न हटा सका। युद्ध के दसवें दिन, भीष्म ने शिखण्डी की सेना को वैसे ही मसल डाला, जैसे अग्नि, ने वन को जला कर भस्म कर डाला; तब शिखण्डी ने क्रोध में भर, सर्प की समान तथा महाकाल के भेजे हुए काल की तरह भीष्म की छाती में तीन बाण मारे। इन बाणों के प्रहार से भीष्म जी विकल हो गये और क्रोध में भर जाने पर भी उससे लड़े नहीं; किन्तु उसे अपने सामने देख मुसक्या कर उससे बोले—तू जैसे चाहे, वैसे मेरे ऊपर प्रहार कर; किन्तु मैं तेरे ऊपर प्रहार न करूँगा। विधाता ने तुझे तो स्त्री बनाया था सो तू वही शिखण्डिनी ही तो है।

यह सुन शिखण्डी मारे क्रोध के ओठों को चबाता हुआ कहने लगा—हे महाबाहो! आप क्षत्रियों का नाश करने वाले हैं। यह मुझे विदित है, आपका संग्राम परशुराम के साथ हो चुका है यह भी मैंने सुन रखा है। आपके लोकोत्तर प्रभाव और यश को भी मैं जानता हूँ। मैं आपके प्रभाव को भली भाँति जान कर भी, आपके साथ आज लड़ूँगा। हे पुरुषश्रेष्ठ! मैं आपके सामने सत्य सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ कि, अपने और पाण्डवों के हितार्थ, आपके साथ लड़ कर आपका वध करूँगा। मेरी इस प्रतिज्ञा को सुन आपको उचित है कि, आप अपने पराक्रम के अनुरूप पुरुषार्थ प्रदर्शित करें। हे समरविजयी भीष्म! आप मेरे ऊपर मनमाने बाण छोड़ें; किन्तु मेरे सामने से आप जीते लौट कर न जाने पावेंगे। अतः आपको इस लोक में जो कुछ देखना भालना हो सो देख भाल लें।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! शिखण्डी ने इस प्रकार भीष्म को बाक् बाणों से प्रथम विद्ध कर, पीछे स्वर्ण-दण्ड-युक्त बाणों से उन्हें घायल किया। शिखण्डी की इन बातों को सुन महारथी अर्जुन ने समझ लिया कि, यही भीष्म के वध का सुअवसर है। अतः अर्जुन ने शिखण्डी से कहा—हे महाबाहो! मैं शत्रु की समस्त सैन्य को छिन्नकर तुम्हारा अनुगामी बनूँगा। आप सावधान हो कर, महापराक्रमी भीष्म पर आक्रमण करें। महाबली भीष्म तुम्हें आज पीड़ित न कर सकेंगे। अतः तुम शीघ्र ही भीष्म पर आक्रमण करो। यदि आज तुम भीष्म का वध किये बिना ही लौटे, तो सब लोग तुम्हारी और मेरी हँसी करेंगे। हे वीर! तुम ऐसा करो, जिससे लोगों में हम लोगों की हँसाई न हो। तुम तुरन्त भीष्म का वध कर, उन्हें रणभूमि में गिरा दो। हे महाबली शिखण्डी! इस युद्ध में समस्त रथियों को निवारण कर, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुम भीष्म का वध करने के लिये यत्न करो। द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, दुर्योधन, चित्रसेन, विकर्ण, सिन्धुराज जयद्रथ, अवन्ति नगरी के राजा विन्द और अनुविन्द काम्बोजराज सुदक्षिण, पराक्रमी राजा भगदत्त, महाबली मगधराज, सोमदत्तनन्दन भूरिश्रवा, राक्षस ऋष्यशृङ्गी का पुत्र और त्रिगर्त्तराज को रोक रखूँगा। एकत्र हो लड़ने वाले समस्त महाबली कौरवों को मैं वैसे ही रोक रखूँगा, जैसे तट समुद्र को रोक रखता है। तुम तो शीघ्र केवल भीष्म पितामह का वध करो।

एक सौ नौ का अध्याय

भीष्म और अर्जुन का युद्ध

धृतराष्ट्र ने पूँछा—हे सञ्जय! पाञ्चालराजनन्दन शिखण्डी ने कुपित हो सुव्रत एवं धर्मात्मा गङ्गानन्दन भीष्म पर, किस प्रकार आक्रमण किया

था? पाण्डवों के पक्ष के कौन कौन से योद्धा क्रुद्ध हो बड़ी फुर्ती के साथ शस्त्रधारी शिखण्डी की रक्षा करने पहुँचे थे? महाबली शान्तनुनन्दन भीष्म ने युद्ध के दसवें दिन किस प्रकार पाण्डवों और सृञ्जयों के साथ युद्ध किया था? शिखण्डी ने आगे हो जो भीष्म पर आक्रमण किया, उसे मैं नहीं कह सकता। जिस समय शिखण्डी ने भीष्म के ऊपर बाणप्रहार किये, उस समय भीष्म जी का रथ तो नहीं टूटा था? या उनका धनुष तो नहीं कट गया था?

सञ्जय ने कहा—हे भारत! युद्ध में प्रवृत्त भीष्म का न तो धनुष कटा और न उनका रथ ही टूटा। वे तो अपने पैने बाणों से शत्रुओं का संहार कर रहे थे। उस दिन आपकी ओर के कई सौ और कई हज़ार महारथी गजपति और अश्वारोही सैनिक सुसज्जित हो और भीष्म पितामह को आगे कर, लड़ाई में सम्मिलित हुए थे। समरविजयी भीष्म ने प्रतिदिन अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार पाण्डवपक्षीय सैनिकों का नाश किया था। दसवें दिन महाधनुर्धर भीष्म जब अस्त्रप्रहारों से शत्रुसैन्य का संहार कर रहे थे, तब उनका पराक्रम देख, पाण्डव और पाञ्चाल उन्हें रोकने में समर्थ न हुए। पाण्डवों के पक्ष के बड़े बड़े नामी सूरमा अगणित बाण छोड़ कर भी भीष्म को न रोक सके। दण्डधारी यमराज की तरह सेनापति भीष्म जी को हराने की उनमें शक्ति ही न थी।

हे राजन्! तदनन्तर सव्यसाची अर्जुन समस्त रथियों को त्रस्त कर भीष्म के निकट गया। वह बारम्बार सिंहनाद करता और गाण्डीव धनुष का रोदा टंकोरता तथा बाण छोड़ता रणभूमि में घूमने लगा। अर्जुन के सिंहनाद और गाण्डीव धनुष की टंकार को सुन, आपकी ओर की समस्त सेना भयत्रस्त हो वैसे ही भागी जैसे सिंह का दहाड़ना सुन मृगों के झुंड भागते हैं। जब दुर्योधन ने देखा कि समर में अर्जुन विजयी हो रहा है और उसकी सेना पीड़ित हो भाग रही है, तब वह दुःखी हुआ और भीष्म पितामह से बोला—हे पितामह! देखिये, श्रीकृष्ण सारथि सहित

श्वेतवाहन अर्जुन मेरी सेना का वैसे ही नाश कर रहा है, जैसे अग्नि वन को जला कर नष्ट कर डालता है। देखिये, मेरी सारी सेना अर्जुन के बाणों से पीड़ित हो, चारों ओर भागी जा रही है। हे शत्रुनाशन ! जैसे ग्वाला वन में गौओं को मार पीट कर अपने वश में कर लेता है, वैसे ही अर्जुन भी मेरी सेना को अपने अस्त्रों शस्त्रों से पीड़ित कर, युद्धभूमि से भगा रहा है। मेरी सेना सर्वत्र अर्जुन के बाणों से पीड़ित हो, इधर उधर भागी जा रही है। इतना ही नहीं दुर्जेय भीम भी मेरी सेना को तितर बितर कर रहा है। इन दोनों के अतिरिक्त सात्यकि, चेकितान, नकुल, सहदेव और पराक्रमी अभिमन्यु आदि रथी योद्धा भी मेरी सेना का नाश कर रहे हैं। शौर्य और वीर्य से सम्पन्न धृष्टद्युम्न और घटोत्कच भी धड़ाधड़ मेरी सेना को मार मार कर भगा रहे हैं। हे भारत ! आप देवोपम पराक्रमी हैं, अतः इस समय आपको छोड़, अन्य कोई भी मुझे नहीं देख पड़ता, जो शत्रुपक्षीय महारथियों से पीड़ित मेरी सेना की रक्षा करे और शत्रुओं का सामना करे। अब आप अविलंब इन सब शत्रुपक्षीय महारथियों का निवारण करें। अर्जुनादि महारथियों के बाणों से नष्ट होती हुई मेरी सेना की आप रक्षा करें।

हे राजन् ! दुर्योधन के इन वचनों को सुन शान्तनुनन्दन भीष्म ने क्षण भर में मन ही मन अपना कर्त्तव्य निश्चय कर डाला और दुर्योधन को धैर्य धरा कहा—हे प्रजानाथ ! हे महाबली दुर्योधन ! मैंने आपके निकट पहले यह प्रतिज्ञा की थी कि, मैं दस हज़ार योद्धाओं का वध कर चुकने के बाद मैं युद्ध से निवृत्त होऊँगा। अतः मैं निज प्रतिज्ञानुसार कार्य कर भी चुका हूँ। फिर भी आज मैं युद्ध में अपना अपूर्व कर्त्तव्य दिखलाऊँगा। मैं आज या तो पाण्डवों को मारूँगा या उनके अस्त्रों से मारा जाकर रणभूमि में शयन करूँगा। आज ही मैं तुम्हारे सामने ही तुम्हारे दिये अन्नादि के ऋण से उऋण हो जाऊँगा। महापराक्रमी एवं दुर्जय, महाबली भीष्म ने यह कह, गजसैन्य पर बाणवृष्टि की और

पाण्डवों की सेना पर आक्रमण किया। उस समय पाण्डव रणक्षेत्र में क्रुद्ध सर्पवत् भीष्म को, युद्ध से निवारण करने की चेष्टा करने लगे। दसवें दिन भीष्म ने शत्रुपक्षीय एक लक्ष योद्धाओं का संहार किया। जैसे सूर्य जल को सोख लेते हैं, वैसे ही भीष्म जी ने पाञ्चालों के छुटा छुटा महारथी योद्धाओं का तेज हर लिया। सवारों सहित दस हज़ार हाथी, दस हज़ार घोड़े और दो लाख पैदल योद्धाओं का वध कर, वे वैसे ही रणभूमि में स्थित हुए जैसे धूमरहित दहकता हुआ अग्नि। पाण्डवों की सेना में एक भी पुरुष ऐसा न था, जो उत्तरायण काल के उत्तप्त सूर्य की तरह महाबली भीष्म की ओर आँख उठा कर भी देख सकता। तदनन्तर पाण्डव और सृञ्जय आदि महारथी योद्धा, भीष्म के बाणप्रहार से पीड़ित हो, उनका वध करने को बड़ी फुर्ती से आगे बढ़े। उस समय युद्ध में प्रवृत्त शान्तनु-नन्दन भीष्म अनेक योद्धाओं से घिर कर, वैसे ही शोभायमान हुए जैसे कृष्णवर्ण मेघों में छिपा हुआ सुमेरु पर्वत शोभित होता है। उस समय आपके पुत्र निज समस्त सैन्यदल को ले, भीष्म जी के चारों ओर खड़े हो गये। पुनः युद्ध होने लगा।

एक सौ दस का अध्याय

भीष्म संरक्षण

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! भीष्म का पराक्रम देख, अर्जुन ने शिखण्डी से कहा—तुम अब भीष्म पितामह से लड़ो। आज तुम उनसे ज़रा भी मत डरना। मैं आज उन्हें मारे बाणों के रथ के नीचे गिरा दूँगा। जब अर्जुन ने शिखण्डी से यह कहा, तब शिखण्डी उनका कहना मान, भीष्म के निकट गया। वृद्ध राजा विराट, राजा द्रुपद और राजा कुन्तिभोज भी अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो, पुत्र सहित भीष्म की ओर दौड़े। नकुल,

सहदेव, धर्मराज युधिष्ठिर तथा उनकी सेना के समस्त वीरों ने भीष्म पर एक साथ चढ़ाई की। आपकी सेना के जिन जिन वीरों ने इन आक्रमण-कारियों का सामना किया, उन सब का वृत्तान्त मैं आपको सुनाता हूँ। आप सुनें।

हे राजन्! चित्रसेन ने चेकितान पर आक्रमण किया। जैसे सिंह-शावक साँढ़ पर लपकता है, वैसे ही फुर्ती के साथ भीष्म के निकट पहुँचे हुए धृष्टद्युम्न को कृतवर्मा ने रोकना चाहा। इसी प्रकार भीष्म का वध करने को कुपित हुए एवं आक्रमणकारी भीम को भूरिश्रवा ने रोका। भीष्म की रक्षा करने की इच्छा से, बाणवृष्टि कर आक्रमण करते हुए नकुल का सामना विकर्ण ने किया। हे राजन्! पितामह के रथ के ऊपर आक्रमण करने वाले सहदेव को, क्रोध में भरे हुए कृपाचार्य ने रोका। क्रूरकर्मा एवं भीष्म वधाकांक्षी भीमनन्दन घटोत्कच को बलवान दुर्मुख ने रोका। इस प्रकार आगे बढ़ते हुए सात्यकि को आपके पुत्र ने निवारण किया।

हे राजन्! पितामह भीष्म के रथ की ओर लपकते हुए अभिमन्यु को काम्बोजराज सुदक्षिण ने रोका। हे भारत! शत्रु-विध्वंस-कारी बूढ़े राजा विराट को तथा राजा द्रुपद को कुपित हो अश्वत्थामा ने अटकाया। भीष्म वधाकांक्षी धर्मराज युधिष्ठिर को आचार्य द्रोण ने रोका। शिखण्डी को आगे कर तथा दसों दिशाओं को प्रकाशित करते हुए भीष्म के आक्रमणकारी अर्जुन को महाधनुर्धर दुःशासन ने रोका। इसी प्रकार भीष्म पितामह पर आक्रमण करने वाले पाण्डवपक्षीय अन्य योद्धाओं को आपके पक्ष के अन्यान्य योद्धाओं ने रोका। एक मात्र धृष्टद्युम्न महारथी भीष्म पितामह के निकट पहुँच, चिल्ला चिल्ला कर, सैनिकों से कहने लगा—अर्जुन, लड़ने के लिये भीष्म के सामने जा रहे हैं। अब तुम ज़रा भी मत डरो और अविलंब भीष्म पर आक्रमण करो। अब भीष्म तुम्हारे ऊपर प्रहार न करने पावेंगे। इन्द्र भी अर्जुन के साथ नहीं लड़ सके, तब बलहीन और अल्प-पराक्रमी भीष्म उनका बिगाड़ ही क्या सकते हैं?

पाण्डवों की सेना के महारथी योद्धा अपने सेनापति धृष्टद्युम्न के इन वचनों को सुन, हर्षित हो भीष्म के रथ की ओर झपटे। उस समय आपके सैनिक, अग्नि के समान तेजस्वी उन प्रचण्ड महारथियों को आते देख हर्षित हो, उन्हें रोकने लगे। महारथी दुःशासन, भीष्म की रक्षा करने को निर्भय हो अर्जुन की ओर लपका। भीष्म के रथ के पास ही, पराक्रमी पाण्डवों ने आपके पुत्रों पर आक्रमण किया। हे राजन्! इस स्थान पर मुझे एक अद्भुत कर्म यह देख पड़ा कि, दुःशासन के रथ के निकट पहुँच अर्जुन फिर आगे न बढ़ सका। दुःशासन ने अर्जुन को वैसे ही रोक दिया, जैसे तट, समुद्र को रोक देता है। वे दोनों रथिश्रेष्ठ पराक्रमी एवं तेजस्वी चन्द्रमा और सूर्य की तरह प्रकाशित हुए। क्रोध में भरे हुए और परस्पर वधाकाँक्षी वे दोनों वैसे ही युद्ध करने लगे, जैसे पूर्वकाल में मायासुर और इन्द्र की लड़ाई हुई थी। हे राजन्! दुःशासन ने श्रीकृष्ण के ऊपर बीस और अर्जुन के ऊपर तीन बाण छोड़े। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को पीड़ित देख, सौ बाण मार दुःशासन को छेद डाला। अर्जुन के छोड़े बाण दुःशासन का कवच फोड़, उसका रक्त सोखने लगे। इस पर दुःशासन ने क्रोध में भर, पाँच बाण अर्जुन के ललाट में मारे। ललाट में चुभे उन बाणों से अर्जुन वैसा ही जान पड़ने लगा, जैसे पर्वत महोच्च शृङ्गों से शोभित होता है। महाधनुर्धर अर्जुन दुःशासन के बाणों से विद्ध हो कर, पुष्पित पलाश वृक्ष जैसा जान पड़ने लगा। तदनन्तर पूर्णिमा के दिन जैसे अत्यन्त क्रुद्ध हुआ राहु, चन्द्रमा को पीड़ित करता है, वैसे ही अर्जुन ने क्रोध में भर दुःशासन को पीड़ित किया। हे प्रजानाथ! दुःशासन ने अर्जुन के बाणों से पीड़ित हो, कङ्कपत्र शोभित पैने बाणों से अर्जुन को पुनः घायल किया। तब अर्जुन ने तीन बाण छोड़ दुःशासन का धनुष काटा और रथ बेकाम कर डाला तथा नौ बाण मार उसे घायल किया। तब दुःशासन ने दूसरा धनुष ग्रहण किया और भीष्म के सामने खड़े अर्जुन की दोनों भुजाओं और छाती में पच्चीस बाण मार प्रहार किया।

इस पर शत्रुनाशन अर्जुन ने क्रोध में भर यमदण्ड जैसे भयङ्कर अनेक बाण दुःशासन के ऊपर छोड़े। इन सब बाणों को दुःशासन ने बीच ही में अपने बाणों से नष्ट कर डाला। फिर पैने बाण मार अर्जुन को घायल किया। यह अद्भुत लीला देख सब लोग विस्मित हुए।

तदनन्तर अर्जुन ने अत्यन्त कुपित हो, सुवर्णभूषित बढ़िया पैने बाण दुःशासन पर छोड़े। जैसे हंसों का समूह जलाशय देख उस पर टूट पड़ता है, वैसे ही वे सब बाण दुःशासन के शरीर में घुस गये। तब तो आपका पुत्र दुःशासन भाग कर भीष्म के रथ पर चढ़ गया। उस समय विपद् रूपी महासागर में निमग्न होते हुए दुःशासन के लिये भीष्म ही द्वीप स्वरूप बन गये। तदनन्तर दुःशासन सम्हल कर फिर अर्जुन का सामना करने लगा। आपका विशाल वपुधारी पुत्र दुःशासन पैने पैने बाण छोड़ पुनः अर्जुन को वैसे ही विद्ध करने लगा जैसे पूर्वकाल में इन्द्र ने वृत्रासुर को विद्ध किया था; किन्तु दुःशासन के इन बाणप्रहारों से अर्जुन ज़रा भी विचलित न हुए।

एक सौ ग्यारह का अध्याय

द्वन्द्व युद्ध

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! महाधनुर्धर ऋष्यशृङ्ग के पुत्र राक्षस अलम्बुप भीष्म की रक्षा के लिये, उनके सामने जा, बलवान सात्यकि को निवारण करने लगा। यदुकुलनन्दन सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर, हँसते हँसते नौ बाण मार कर, अलम्बुप को पीड़ित किया। तब अलम्बुष ने भी नौ बाण मार सात्यकि पर प्रहार किया। तब पराक्रमी सात्यकि ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर अलम्बुप पर बाण छोड़े। फिर अलम्बुप ने सात्यकि पर बाण छोड़ सिंहनाद किया। तेजस्वी सात्यकि उस समय अलम्बुष

राक्षस के बाणों से अत्यन्त विद्ध हो और सम्हल कर सात्यकि ने भी सिंहनाद किया। उस समय क्रोध में भर भगदत्त ने सात्यकि पर पैने बाणों से वैसे ही प्रहार किया, जैसे किसी बड़े हाथी पर अङ्कुश से प्रहार किया जाता है। रथियों में श्रेष्ठ सात्यकि राक्षस अलम्बुष को त्याग कर, राजा भगदत्त के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। इतने में भगदत्त ने बड़ी फुर्ती से सात्यकि का धनुष काट डाला। शत्रुनाशन सात्यकि ने एक दूसरा वेगवान धनुष ले, तीक्ष्ण बाणों से राजा भगदत्त को विद्ध किया। इस पर भगदत्त ने मारे क्रोध के ओठों को चबा, सुवर्णभूषित लोहमयी यम-दण्डोपम एक महाभयङ्कर शक्ति सात्यकि की ओर चलायी। सात्यकि ने भगदत्त के हाथ से छूटी हुई उस शक्ति को बड़ी फुर्ती से काट कर उसके दो टुकड़े कर डाले। वह शक्ति उल्कापिण्ड की तरह तेजहीन हो भूमि पर गिर पड़ी। हे राजन्! आपके पुत्रों ने भगदत्त की चलायी शक्ति को निष्फल जाते देख, एक बड़ी भारी रथसैन्य को साथ ले सात्यकि को घेरा। यह देख दुर्योधन ने हर्षित हो अपने भाइयों से कहा—हे वीरों! तुम लोग ऐसा उद्योग करो कि, अब रथसैन्य के भीतर से सात्यकि जीता जागता निकल कर न जाने पावे। मैं समझता हूँ कि, सात्यकि को मार लेने से पाण्डवों की महासेना का नाश होगा।

हे राजन्! आपके पुत्र दुर्योधन के कथनानुसार आपके अन्य समस्त पुत्रों ने भीष्म के निकट ही सात्यकि के साथ युद्ध किया। उधर जब काम्बोजराज ने देखा कि अभिमन्यु, भीष्म पर चढ़ा चला आता है, तब उसने सुभद्रानन्दन को रोका। काम्बोजराज सुदक्षिण ने भीष्म की रक्षा की अभिलाषा से अभिमन्यु को कई पैने बाणों से घायल किया। फिर उसके गिन गिन कर चौसठ बाण मारे, फिर उसने अभिमन्यु को पाँच बाणों से घायल कर, नौ बाण मार उसके सारथि को घायल किया। इन दोनों योद्धाओं में तब तो बड़ी भयङ्कर लड़ाई हुई। इतने में शत्रुनाशी शिखण्डी ने भी भीष्म पर चढ़ाई की। वृद्ध राजा विराट और द्रुपद ने शत्रुपक्ष की

एक बड़ी सेना को भगा, भीष्म पर आक्रमण किया। रथिश्रेष्ठ अश्वत्थामा ने क्रुद्ध हो, राजा विराट और राजा द्रुपद पर आक्रमण किया। अतः इन दोनों महारथियों के साथ अश्वत्थामा का युद्ध हुआ। राजा विराट ने द्रोणनन्दन अश्वत्थामा को दस बाणों से विद्ध किया और द्रुपद ने भी पैनाये हुए तीन बाणों से अश्वत्थामा पर प्रहार किया। वे दोनों महाबली महारथी अश्वत्थामा के ऊपर बाणवृष्टि करने लगे। तब अश्वत्थामा ने भी भीष्म के निकट पहुँचे हुए राजा विराट और राजा द्रुपद पर बहुत से बाण छोड़े। उस समय हे राजन्! मैंने उन दोनों वृद्ध राजाओं का बड़ा अद्भुत पराक्रम देखा। वे दोनों अश्वत्थामा के छोड़े एक भी बाण को अपने पास नहीं फटकने देते थे। उधर सहदेव को भीष्म पर आक्रमण करते देख, कृपाचार्य ने उस पर वैसे ही आक्रमण किया, जैसे एक मतवाला हाथी वन में दूसरे मतवाले हाथी पर आक्रमण करता है। पराक्रमी कृपाचार्य ने माद्रीपुत्र सहदेव को सत्तर बाणों से विद्ध किया। तब सहदेव ने कृपाचार्य के धनुष को बाणों से काट कर उसके दो टुकड़े कर डाले। फिर सहदेव ने कृपाचार्य के नौ बाण मारे। तब कृपाचार्य ने दूसरा धनुष ले कर, भीष्म की प्राणरक्षा के उद्देश्य से माद्रीनन्दन सहदेव की छाती में दस बाण मारे। इन दोनों महाबली पुरुषसिंहों में बड़ा विकराल युद्ध हुआ। भीष्म की रक्षा करने वाले महाबली शत्रुनाशन विकर्ण ने सात बाण मार नकुल को घायल किया। तब नकुल ने भी आपके पुत्र विकर्ण के सत्तर बाण मार उसे घायल किया। भीष्म के पास ही इन दोनों का आपस में वैसे ही युद्ध हो रहा था जैसे किसी गौ के पीछे दो वृषभों में युद्ध होता हो।

पराक्रमी दुर्मुख ने जब देखा कि, घटोत्कच उसकी सेना का संहार करता हुआ भीष्म की ओर बढ़ा चला आ रहा है, तब उसने अपना रथ घटोत्कच की ओर बढ़ाया। हिडिम्बानन्दन घटोत्कच ने अपने पैने बाणों

से दुर्मुख की छाती पर प्रहार किया, तब शत्रुनाशी दुर्मुख ने सिंहनाद कर और हर्षित हो भीमनन्दन घटोत्कच के साठ पैने बाण मारे।

महारथी कृतवर्मा ने जब देखा कि, धृष्टद्युम्न बढ़ता हुआ भीष्म पर आक्रमण करता चला आता है, तब उसने द्रुपदनन्दन को रोका। इस पर धृष्टद्युम्न ने लोहमय पाँच बाणों से कृतवर्मा को घायल कर डाला। फिर खड़ा रह! खड़ा रह!! कह पुनः कृतवर्मा के पचास बाण मार उसे घायल किया। महारथी कृतवर्मा भी धृष्टद्युम्न को बाणों से पीड़ित करने लगा। तदनन्तर धृष्टद्युम्न ने कङ्कपत्र-युक्त पैने नौ बाण मार कृतवर्मा को घायल किया। उस समय उन दोनों में भीष्म के पीछे वैसे ही युद्ध हुआ जैसे इन्द्र और वृत्रासुर में हुआ था।

राजा सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा ने जब देखा कि, भीमसेन बड़ी तेज़ी से बढ़ता चला आता है, तब उसने खड़ा रह! खड़ा रह!! कह भीम पर आक्रमण किया और उसकी छाती में पैने बाण मारे। हे राजन्! उस समय भीम की छाती में उन बाणों के चुभने से उसकी वैसी ही शोभा हुई जैसी शोभा पूर्वकाल में क्रौञ्चासुर की स्वामिकार्त्तिक की बर्छी से विद्ध होने पर हुई थी। उस समय भूरिश्रवा और भीम—दोनों ही महाकुपित हो रहे थे और अतितीक्ष्ण तथा चन्द्र अथवा सूर्य की तरह चमचमाते बाण एक दूसरे पर छोड़ रहे थे। भीष्म का वध करने की इच्छा से भीम तो भूरिश्रवा के ऊपर और भीष्म की रक्षा करने के लिये भूरिश्रवा, भीम पर, बाण छोड़ अपना अपना पराक्रम प्रदर्शित कर रहे थे।

हे राजन्! जब विशाल वाहिनी ले धर्मराज युधिष्ठिर ने आगे बढ़ भीष्म पर आक्रमण करना चाहा, तब द्रोण ने उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता ही न दिया। द्रोण के रथ की बादलों के गर्जन जैसी घरघराहट को सुन प्रभद्रक वीर योद्धा भयभीत हो थरथराने लगे। द्रोण के बाणों से पीड़ित धर्मराज की वह विशाल वाहिनी, लाख यत्न करने पर भी एक पग भी आगे न बढ़ सकी।

हे राजन्! चेकितान को भीष्म की ओर आते देख, आपके पुत्र चित्रसेन ने उसे रोका। भीष्म की रक्षा करने के उद्देश्य से चित्रसेन ने अपनी शक्ति भर चेकितान को रोकना चाहा और चेकितान ने बलपूर्वक आगे बढ़ने का उद्योग किया। इससे इन दोनों में भी आपस में बड़ी भयङ्कर लड़ाई हुई।

हे राजन्! यद्यपि आपके पुत्र दुःशासन ने अर्जुन को रोकने का बड़ा भारी उद्योग किया; तथापि अर्जुन आपके पुत्र दुःशासन को भगा, आपकी सेना का संहार करने लगा। यह देख आपके पुत्र दुःशासन ने भीष्म की रक्षा का निश्चय कर पुनः अर्जुन के कार्य में बाधा डाली और शक्ति भर अर्जुन को रोकने की चेष्टा की।

हे राजन्! पाण्डवों के प्रधान प्रधान रथी, आपकी सेना के योद्धाओं का वध करते हुए, आपकी विशाल वाहिनी के वीरों को छिन्न भिन्न करने लगे।

एक सौ बारह का अध्याय

उदास द्रोण का अश्वत्थामा के साथ वार्तालाप

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर महाधनुर्धर, मतवाले गज जैसे पराक्रमी, पुरुषश्रेष्ठ एवं वीर द्रोण, मदमत्त गज को भी निवारण करने वाले एक दृढ़ धनुष को हाथ में ले और उसे तान, पाण्डवों की सेना में घुस, उसे भगाने लगे। उस समय उन्होंने सब ओर बुरे लक्षण देख, अपने पुत्र अश्वत्थामा से जो उस समय शत्रुसैन्य का संहार कर रहा था, कहा—हे वत्स! जान पड़ता है आज अर्जुन भीष्म का वध करने के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा देगा। क्योंकि देखो, मेरे तरकस से बाण अपने आप निकले पड़ते हैं और मेरा धनुष हिल रहा है। मेरी बुद्धि में क्रूरता

समाई हुई है और मेरे अस्त्र अपने आप काम करने को तैयार हैं। इधर उधर पशुपक्षी चिल्ला रहे हैं। वे हमारी सेना में घुसे पड़ते हैं। सूर्य का तेज धुंधला पड़ गया है। दिशाओं में लालिमा छायी हुई है। पृथिवी से एक अजीब शब्द सा निकल रहा है और पीड़ित हो वह डगमगा रही है। कङ्क, गिद्ध, बगले, बारम्बार चीखें मार मार कर चिल्ला रहे हैं। महाभय की सूचना देती हुई शृगालियाँ अमङ्गलकारी भयङ्कर रुदन कर रही हैं। सूर्यमण्डल से उल्काएँ निकल रही हैं। कबन्धों सहित परिघ सूर्य को घेरे हुए हैं। चन्द्रमा और सूर्य का रूप भयङ्कर हो कर, क्षत्रियों के नाश की महाभयङ्कर सूचना दे रहा है, कौरवश्रेष्ठ धृतराष्ट्र के देवालयों में उनके कुलदेवताओं की मूर्त्तियाँ काँपती हैं, हँसती हैं, नाचती हैं और रोती हैं।

[नोट—मूल श्लोक यह है :—

देवतायतनस्थाश्च कौरवेन्द्रस्य देवताः।
कम्पन्ते च हसन्ते च नृत्यन्ति च रुदन्ति च॥

इससे यह स्पष्ट है कि, महाभारत-काल में देवालय थे और उनमें देवताओं की मूर्त्तियाँ भी थीं।]

ग्रह, अशुभ की सूचना देते हुए सूर्य की दहिनी ओर गमन कर रहे हैं। भगवान चन्द्रदेव नीचा सिर किये उदय होते हुए देख पड़ते हैं। धृतराष्ट्रनन्दनों की सेना में कवचधारी योद्धाओं की शोभा मलिन पड़ गयी है। दोनों पक्षों की सेनाओं में केवल गाण्डीव धनुष का टंकार शब्द और पाञ्चजन्य शङ्ख की ध्वनि ही सुन पड़ती है। इससे यह जान पड़ता है कि, आज अर्जुन निश्चय ही निज शस्त्रबल से अन्य योद्धाओं को पीछे हटा कर, भीष्म के निकट पहुँच जायगा। आज समरभूमि में भीष्म और अर्जुन की भिड़न्त होगी। मैं जब इस बात को सोचता हूँ तब मेरा शरीर रोमाञ्चित हो जाता है और मेरा मन पीछे हटता है। कपटी एवं पापी शिखण्डी को आगे कर, धनञ्जय आज भीष्म पितामह के साथ लड़ने को चढ़ा चला

आता है। क्योंकि भीष्म पहले ही कह चुके हैं कि, मैं शिखण्डी के साथ न लड़ूँगा। कारण कि विधाता ने पहले इसे स्त्री बनाया था; किन्तु पीछे दैव की लीला के प्रभाव से यह पुरुष हो गया। यज्ञसेन का यह महाबली पुत्र, शिखण्डी स्वयं ही अमङ्गल रूप है अतः इस अमङ्गल रूप शिखण्डी पर गङ्गानन्दन भीष्म बाण न चलावेंगे। साथ ही अर्जुन आज भीष्म के आगे आ रहा है। इस बात को जब मैं विचारता हूँ तब मेरे शरीर के बन्धन शिथिल पड़ जाते हैं। युधिष्ठिर का कोप, पितामह और धनञ्जय का युद्ध तथा मेरा शस्त्र-सञ्चालन—ये तीनों ही निस्सन्देह प्रजा का अमङ्गल करने वाले हैं। अर्जुन उत्साही, बलवान, शूर, अस्त्रविद्या में प्रवीण, दूर से निशाना लगाने वाला, दृढ़ शरों वाला और शुभाशुभ शकुनों का ज्ञाता है। रण में तो अर्जुन को देवताओं सहित इन्द्र भी परास्त नहीं कर सकते, क्योंकि अर्जुन बड़ा बलवान, बुद्धिमान, कभी न थकने वाला और योद्धाओं में श्रेष्ठ है। युद्ध में यह सदा विजयी हुआ करता है। इसके अस्त्र बड़े भयङ्कर हैं। हे सुव्रत वत्स! तू शीघ्र इसे अतिक्रम कर, जा कर पितामह की रक्षा कर। आज के महासमर में मनुष्यों का महासंहार होगा। अर्जुन आज क्रुद्ध हो कर, अपने तीक्ष्ण बाणों से शूर-वीरों के सुवर्णभूषित बढ़िया कवचों को काटेगा। रथ की ध्वजाओं, तोमरों, धनुषों, प्रासों, सुवर्णभूषित पैनी शक्तियों और गजों पर फहराती हुई पताकाओं को अर्जुन बाण मार मार कर गिरावेगा। हे बेटा! वेतनभोगी पुरुषों के लिये यह समय अपने प्राणों की ममता करने का नहीं है। अतः स्वर्ग अथवा यश की प्राप्ति की चाहना रख तुम युद्ध करने के लिये गमन करो। कपिध्वज अर्जुन, रथों, गजों और अश्वों रूपी भँवर वाली महाघोर और अतिदुस्तर समररूपिणी नदी को अपनी रथ रूपी नाव से पार करेगा। जिस धर्मराज में ब्रह्मनिष्ठा, दम, दान, तप और सच्चरित्रता विद्यमान है, जिसके भ्राता और शुभचिन्तक अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव हैं और जिसके सहायक यदुकुलभूषण श्रीकृष्ण हैं और जिसका

शरीर तप द्वारा शुद्ध हो निर्मल हो गया है, उस युधिष्ठिर का धृतराष्ट्र के नीचमना पुत्रों पर कुपित होना ही, कौरवों की सेना को भस्म कर रहा है। यह देख, श्रीकृष्ण की सहायता से अर्जुन, दुर्योधन की समस्त सेना को छिन्न भिन्न कर रहा है। जैसे वायु महासागर की तरङ्गों को उठा कर, दूर पटक देता है, वैसे ही अर्जुन भी समस्त कौरवसैन्य को युद्ध से विमुख कर रहा है। सुनो, सेना में कैसा हाहाकार मचा हुआ है। अतएव हे पुत्र ! तुम शिखण्डी के साथ लड़ने को जाओ। मैं युधिष्ठिर के साथ लड़ने को जाता हूँ। परमतेजस्वी युधिष्ठिर के सैन्यव्यूह के भीतर जाना मानों समुद्र में प्रवेश करने की तरह महाकठिन कार्य है। क्योंकि पाण्डवों का व्यूह चारों ओर से अतिरथियों से सुरक्षित है, सात्यकि, अभिमन्यु, धृष्टद्युम्न, वृकोदर, नकुल और सहदेव, महाराज युधिष्ठिर की रक्षा करने को तैयार खड़े हैं। इन्द्रानुज उपेन्द्र तुल्य श्याम वर्ण और प्रलम्ब साल वृक्ष जैसा प्रलम्ब वपुधारी अभिमन्यु अपर अर्जुन की तरह सेना के आगे खड़ा है। यह सब होने पर भी मैं उस सैन्यव्यूह में प्रवेश करूँगा। हे वत्स ! तुम बढ़िया अस्त्र शस्त्र ले जाओ और भीम एवं धृष्टद्युम्न के साथ लड़ो। कौन नहीं चाहता कि, पुत्र सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहें ; किन्तु मैं क्षत्रिय धर्म का विचार कर तुम्हें यह काम सौंपता हूँ। हे वत्स ! देख, यम एवं वरुण की तरह पराक्रमी भीष्म पितामह भी इस महासमर में पाण्डवों के विशाल सैन्यदल को अपने बाणों से भस्म कर रहे हैं। अतएव तुम शीघ्र वहाँ पहुँचो।

एक सौ तेरह का अध्याय

भीष्म का आगे बढ़ना और अर्जुन का पराक्रम

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, कृतवर्मा, उज्जैन के विन्द और अनुविन्द, सिन्धराज जयद्रथ, चित्रसेन और विकर्णादि

आपके पक्ष के दस योद्धा भीम के साथ लड़ने लगे। उनके साथ अनेक देशों के सैनिकों का बड़ा भारी एक सैन्यदल था और वे भीष्म को विजय दिलाने के उद्योग में लगे हुए थे। शल्य ने नौ, कृतवर्मा ने तीन और कृपाचार्य ने नौ बाण मार भीम को घायल किया। फिर चित्रसेन, विकर्ण, भगदत्त में से प्रत्येक योद्धा ने भीम के दस दस बाण मारे। सिन्धुराज जयद्रथ ने तीन, अवन्ती के विन्द और अनुविन्द ने पाँच पाँच और दुर्मर्षण ने बीस बाण भीम के मारे। इस प्रकार पृथक् पृथक् प्रहार करने वाले आपके नामी योद्धाओं ने यद्यपि भीम को घायल किया; तथापि शत्रु-नाश-कारी भीम ने उनके प्रहारों को कुछ भी न गिना। भीम ने सात बाण से शल्य को और आठ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया। फिर उसने कृपाचार्य का धनुष काट डाला। तदनन्तर भीम ने पुनः उनके सात सात बाण मारे। विन्द और अनुविन्द के उसने तीन तीन बाण मारे। फिर दुर्मर्षण के बीस, चित्रसेन के पाँच, विकर्ण के दस और जयद्रथ के भीम ने पाँच बाण मारे। तदनन्तर अत्यन्त हर्षित भीम ने सिंहनाद कर, जयद्रथ के तीन बाण मार उन्हें घायल किया। महारथी कृपाचार्य ने अपने कटे हुए धनुष को पटक, दूसरा धनुष उठा लिया और भीम के दस पैने बाण मारे। तब अङ्कुश से घायल मतवाले हाथी की तरह कृपाचार्य के दस बाणों से घायल भीम ने क्रोध में भर बहुत बाण छोड़, कृपाचार्य को विद्ध किया। तदनन्तर यमराज के समान, मूर्त्तिमान भीमसेन ने जयद्रथ के चारों घोड़े और सारथि को तीन बाण मार भूमि पर गिरा दिया। तब महारथी जयद्रथ, अश्वहीन रथ से तुरन्त कूद पड़ा और उसने भीम पर पैने पैने बहुत से बाण चलाये; किन्तु भीम ने दो बाण मार महात्मा जयद्रथ का धनुष काट डाला। इस पर जयद्रथ दौड़ कर चित्रसेन के रथ पर जा बैठा। पाण्डुनन्दन भीम ने युद्ध में इन समस्त महारथियों को बाणों से विद्ध कर, अद्भुत कर्म किया।

किन्तु जयद्रथ का सब योद्धाओं के सामने रथहीन होना, शल्य को

सह्य नहीं हुआ। उसने खड़ा रह, खड़ा रह कह, बड़े चोखे बाण भीमसेन के ऊपर छोड़े। कृपाचार्य, कृतवर्मा, पराक्रमी भगदत्त, अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द, चित्रसेन, विकर्ण, दुर्मर्षण, और पराक्रमी जयद्रथ बलवान शल्य की रक्षा के लिये भीम को अपने बाणों से घायल करने लगे। भीमसेन ने भी उन समस्त महारथियों को पाँच पाँच बाणों से विद्ध किया। फिर शल्य को सत्तर बाणों से विद्ध कर, फिर उसके दस बाण मारे। शल्य ने इस पर भीम को प्रथम नौ बाणों से विद्ध कर, पुनः उसके पाँच बाण मार, उसे घायल किया। शल्य ने एक बाण मार भीम के सारथि को मर्मविद्ध किया। तब प्रतापी भीम ने अपने सारथि विशोक को बाण-प्रहार से अत्यन्त पीड़ित देख, मद्रराज की दोनों भुजाओं और छाती में तीन बाण मार प्रहार किया। फिर भीम ने शत्रुपक्षीय अन्य महारथियों के तीन तीन बाण मार, सिंहनाद किया। तदनन्तर उन सब महारथियों ने यत्न पूर्वक बड़े पैने तीन तीन बाण छोड़, भीम के मर्मस्थल घायल किये। जैसे पहाड़ जलवृष्टि करते हुए बादलों की जलधार से नहीं घबड़ाता, वैसे ही भीम भी शत्रुओं के बाणप्रहारों से अत्यन्त विद्ध हो कर भी दुःखित न हुए। तदनन्तर महायशस्वी भीमसेन ने चारों ओर से तीन तीन बाण छोड़ मद्रराज शल्य को और नौ बाणों से कृपाचार्य को विद्ध कर, राजा भगदत्त के सौ बाण मार, उसे घायल किया। तदनन्तर भीम ने निज हस्तलाघव से बाण मार, कृतवर्मा के धनुष को मय उस पर चढ़े बाण के काट डाला। शत्रुनाशी कृतवर्मा ने तुरन्त दूसरा धनुष उठा लिया और एक बाण चढ़ा उसने भीमसेन की दोनों भौंहों के बीच का स्थान विद्ध किया। इस पर भीम ने शल्य के नौ, भगदत्त के तीन, कृतवर्मा के आठ और कृपाचार्यादि महारथियों के दो दो बाण मारे। तब वे सब महारथी, भीम पर टूट पड़े और भीम को तीक्ष्ण बाणों से घायल करने लगे। उनके बाणों के प्रहारों से भीम अत्यन्त पीड़ित हुआ तो, किन्तु उसने इसको कुछ भी न गिना; प्रत्युत उन्हें तृणवत् समझा और वह समरभूमि में चारों ओर भ्रमण करने लगा।

तब उन समस्त महारथियों ने मण्डल कर भीम के सौ सौ और हज़ार हज़ार बाण मारना आरम्भ किया। हे राजन् ! वीराग्रणी भगदत्त ने सोने की डंडी वाली परम वेगवान एक शक्ति उठा भीमसेन पर फेंकी। महाबली जयद्रथ ने तोमर और पट्टिश, कृपाचार्य ने शतघ्नी, शल्य ने बाण और अन्य धनुर्धरों में से प्रत्येक ने पाँच पाँच बाण भीमसेन पर छोड़े। वायुसुत भीम ने उन सब के चलाये अस्त्रों के निफल कर डाला। क्षुरप्र एवं तोमर के उसने काट कर दो टुकड़े कर डाले। फिर पट्टिश के तीन टुकड़े कर डाले। भीम ने कङ्कपुंख युक्त नौ बाण मार शतघ्नी को बेकाम कर डाला। फिर भीम ने मद्रराज के चलाये बाणों के काट कर, भगदत्त की फेंकी शक्ति को भी बड़ी फुर्ती से काट कर गिरा दिया। फिर अन्य महारथियों के छोड़े हुए बाणों को भीम ने काट कर भूमि पर गिरा दिया, फिर उन समस्त योद्धाओं में से प्रत्येक के तीन तीन बाण मार उन्हें घायल किया।

इतने में उन महारथियों से भीम को लड़ते देख, अर्जुन वहाँ जा पहुँचा। अर्जुन और भीम को सामने देख, वे सब महारथी अपने विजय से हताश हो गये। अर्जुन तो शिखण्डी को आगे कर भीष्म के वध करने को जा रहा था। उसने रास्ते में भीम के साथ आपके दस महारथियों को लड़ते देख, भीम को प्रसन्न करने के लिये, उन दसों को बाणप्रहार से घायल किया। उस समय भीम का वध करवाने के लिये दुर्योधन ने सुशर्मा से कहा—हे सुशर्मा ! तुम ससैन्य तुरन्त वहाँ जाओ, जहाँ भीम और अर्जुन मेरे महारथियों से लड़ रहे हैं और उन दोनों को मार डालो। इस पर त्रिगर्त्तराज सुशर्मा ने, दुर्योधन के आदेशानुसार, अपने साथ हज़ारों रथियों को ले, बड़े वेग से चढ़ाई की और भीम तथा अर्जुन को चारों ओर से घेर लिया। तब त्रिगर्त्तराज और कौरवसेना के साथ अर्जुन ने लड़ना आरम्भ किया।

एक सौ चौदह का अध्याय

भारी विपत्ति, भीमार्जुन की अद्भुत वीरता

सञ्जय कहने लगे—हे राजन्! युद्ध में प्रवृत्त शल्य के अर्जुन ने तीक्ष्ण बाण मारे और मारे बाणों के शल्य को ढक दिया। साथ ही सुशर्मा और कृपाचार्य के तीन तीन बाण मार उन्हें घायल किया। राजा भगदत्त, जयद्रथ, चित्रसेन, विकर्ण, कृतवर्मा, दुर्मर्षण और अवन्तिराज विन्द और अनुविन्द को मयूर एवं कङ्कपत्रों से युक्त तीन तीन बाणों से विद्ध कर, आपकी सेना के अन्य योद्धाओं को घायल किया। सिन्धुराज जयद्रथ ने चित्रसेन के रथ पर चढ़, अपने बाणों से भीम तथा अर्जुन को विद्ध किया। रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य और शल्य ने विविध प्रकार के मर्मवेधी बाणों के प्रहारों से अर्जुन को घायल किया। आपके चित्रसेनादि प्रत्येक पुत्र ने बड़ी फुर्ती के साथ पाँच पाँच बाण मार अर्जुन को घायल किया। भरत-कुल-भूषण एवं कुन्तीनन्दन भीम और अर्जुन ने त्रिगर्त्तदेशीय सेना के योद्धाओं को पीड़ित किया। बलवान सुशर्मा ने अर्जुन के ऊपर नौ बाण छोड़े और घोर सिंहनाद कर शत्रुसैन्य को भयभीत किया। पराक्रम से युक्त अन्य अनेक शूरवीर योद्धा, तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन और अर्जुन को विद्ध करने लगे। रथियों में श्रेष्ठ एवं उदार स्वभाव वाले भीम और अर्जुन उन सम्पूर्ण रथियों के बीच वैसे ही क्रीड़ा सी करते देख पड़ते थे, जैसे गौओं के गिरोह में माँसलोलुप दो सिंह क्रीड़ा सी किया करते हैं। उन्होंने अगणित सैनिकों के धनुषों को काटा और बहुत के सिर काट डाले। इस युद्ध में बहुत से रथ बेकाम हो गये। हज़ारों गज और अश्व अपने सवारों सहित अस्त्रप्रहार से पीड़ित हो भूमि पर गिरते थे और पुनः उठ कर लड़ने लगते थे। मरे हुए गजों, अश्वों, पैदल सैनिकों से समरभूमि ढक गयी। वहाँ पर जगह जगह टूटे हुए छत्र, ध्वजाएँ, अङ्कुश, कोड़े, केयूर, अङ्गद, हार, मालाएँ, ऋष्टियाँ, चवँर, पंखे पड़े हुए

थे। जगह जगह चन्दन-चर्चित राजाओं की भुजाएँ और उनकी जंघाएँ कटी हुई पड़ी थीं। उस समय मैंने अर्जुन का यह अद्भुत पराक्रम देखा, कि वह आपके समस्त महारथी वीरों को रण से विमुख कर, आपकी सेना के सैनिकों का नाश करने लगा। आपके समस्त पुत्र, भीम और अर्जुन के पराक्रम को देख भाग कर गङ्गानन्दन भीष्म के निकट चले गये; किन्तु कृपाचार्य, कृतवर्मा, शल्य, जयद्रथ और विन्द, अनुविन्द वहाँ अड़े रहे—भागे नहीं। महाधनुर्धर भीमसेन और महारथी अर्जुन ने उस महाभयङ्कर कुरुसैन्य को छिन्न भिन्न कर डाला। उस समय आपके पक्ष के योद्धा भीम और अर्जुन के रथों पर असंख्य बाणों की वर्षा कर रहे थे; किन्तु अर्जुन उनके बाणों में से एक को भी अपने निकट नहीं फटकने देता था, वल्कि उन सब को बीच ही में नष्ट कर डालता था। साथ ही वह धड़ाधड़ योद्धाओं का संहार कर पृथिवी पर लिटाता जाता था। इस पर महराज शल्य ने कुपित हो, क्रीड़ा सी करते हुए अर्जुन की छाती में बहुत से बाण मारे। तब अर्जुन ने पाँच बाण छोड़ शल्य का धनुष और उनके अङ्गुलित्राण काट डाले और उनके मर्मस्थलों को विद्ध किया तब पराक्रमी शल्य ने एक दूसरा धनुष ग्रहण कर, तीन बाण अर्जुन के मारे और पाँच बाण मार श्रीकृष्ण को घायल कर डाला। फिर नौ बाण मार भीम की दोनों भुजाएँ और वक्षःस्थल को घायल किया। तदनन्तर दुर्योधन के आदेशानुसार महारथी मगधराज तथा आचार्य द्रोण वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों कुन्तीनन्दन कौरवसेना का संहार कर रहे थे। मगधराज जयत्सेन ने प्रचण्ड अस्त्रधारी भीमसेन के आठ पैने बाण मारे। इस पर भीम ने प्रथम दस फिर पाँच बाणों से उनको घायल किया। फिर एक बाण उनके सारथि के मार, उसे पृथिवी पर गिरा दिया। सारथि के मारे जाने पर जयत्सेन के रथ के घोड़े भड़के और चारों ओर दौड़ने लगे। इससे जयत्सेन को अपने समस्त सैनिकों के सामने ही युद्ध से अलग होना पड़ा। आचार्य द्रोण ने घात पा, भीमसेन के पैंसठ बाण मार उसे घायल

किया। युद्ध में सराहनीय भीम ने, पितृतुल्य गुरु द्रोण को प्रथम नौ और फिर साठ बाणों से विद्ध किया। अर्जुन ने सुशर्मा के अनेक बाण मार उसे क्षत विक्षत कर डाला। अर्जुन ने त्रिगर्त्त देश की सेना के सैनिकों को मार मार कर एक ओर वैसे ही कर दिया जैसे वायु, आकाशस्थित बादलों को उड़ा कर एक ओर जमा कर देता है।

तदनन्तर भीष्म पितामह, कोशलराज बृहद्बल और दुर्योधन क्रोध में भर, भीम और अर्जुन पर लपके। इधर मुख फाड़े काल की तरह पाण्डवों ने तथा धृष्टद्युम्न ने भीष्म पितामह पर आक्रमण किया। भीष्म के निकट आते ही शिखण्डी हर्षित और निर्भय हो, रथ से उतर बड़े वेग से दौड़ता हुआ आगे को बढ़ा; किन्तु युधिष्ठिरादि कुन्तीनन्दनों ने उसे रथ पर बिठा दिया और फिर वे सृञ्जयों को साथ ले भीष्म से लड़ने लगे। उधर आपके पक्ष के समस्त योद्धा, भीष्म को आगे कर, शिखण्डी आदि पाण्डवों के पक्ष वाले योद्धाओं से लड़ने लगे। उस समय भीष्म के लिये उभयपक्ष वालों में घोर संग्राम होने लगा।

हे राजन्! कौरवों और पाण्डवों में हार जीत का फैसला करने को युद्ध रूपी द्यूत आरम्भ हुआ। उस द्यूत में भीष्म पितामह के प्राणों का दाँव था। हे राजेन्द्र! उस समय सेनापति धृष्टद्युम्न अपने समस्त सैनिकों को उत्तेजित करता हुआ कह रहा था—हे रथिसत्तम क्षत्रियों! तुम तनक भी न डर कर, भीष्म पर आक्रमण करो। अपने सेनापति के इस आदेश को सुन, पाण्डवों के सैन्य दल ने अपनी जानों को हथेली पर रख, भीष्म पर आक्रमण किया। जैसे समुद्र के प्रबल वेग को समुद्र का तट रोक लेता है, वैसे ही भीष्म ने पाण्डवों के आक्रमणकारी सैन्यदल को अपने अस्त्रों से रोका।

———

एक सौ पन्द्रह का अध्याय

प्राणों का दाँव

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय ! शान्तनुनन्दन महाबली भीष्म ने पाण्डवों और सृञ्जयों से दसवें दिवस किस प्रकार से युद्ध किया था? युद्ध में सराहनीय भीष्म ने दसवें दिवस जो महाघोर संग्राम किया था, उसे तुम विस्तार पूर्वक मुझे सुनाओ।

सञ्जय ने कहा—हे राजन् ! कौरवों ने पाण्डवों के साथ जिस प्रकार युद्ध किया उसका ज्यों का त्यों वर्णन करता हूँ। आप ध्यान देकर सुनें। अर्जुन ने प्रतिदिन आपकी सेना के अनेक रथियों का वध किया और उन्हें यमालय भेजा। कौरवों की ओर से समरविजयी भीष्म ने निज प्रतिज्ञानुसार प्रतिदिन पाण्डवपक्षीय योद्धाओं का संहार किया। हे शत्रुनाशन ! आपकी ओर के योद्धाओं में भीष्म और पाण्डवों की ओर के पाञ्चाल वीरों सहित अर्जुन को देख, जय सम्बन्धी सन्देह लोगों के मनों में उत्पन्न हो गया था; किन्तु दसवें दिन जब भीष्म और अर्जुन का संग्राम हुआ, तब उभयपक्ष के वीर मारे गये। परन्तप भीष्म ने कई बार दस दस हज़ार योद्धा मार कर भूमि पर बिछा दिये। इन मारे गये योद्धाओं के नामों और गोत्रों का पता नहीं बतलाया जा सकता। ये योद्धा बड़े पराक्रमी थे और इन्होंने युद्ध में कभी पीठ न दिखलायी थी; किन्तु ये सब भीष्म के बाणों के प्रहार से मारे जा कर यमालय जा पहुँचे।

शत्रुनाशन एवं महाबाहु आपके पिता भीष्म ने दसवें दिवस पाण्डव-सैन्य को अत्यन्त पीड़ित कर, अपने जीवन की आशा से हाथ धो डाले। उन्होंने शीघ्र ही शरीरत्याग का निश्चय कर लिया और साथ ही यह भी निश्चय कर लिया कि, मैं अब श्रेष्ठ पुरुषों का संहार न करूँगा। ऐसा निश्चय कर, निकट खड़े हुए युधिष्ठिर से भीष्म ने कहा—हे वत्स ! हे सर्वशास्त्रज्ञ

महाबली युधिष्ठिर ! मैं तुमसे स्वर्गप्राप्ति के लिये धर्मयुक्त वचन कहता हूँ, उसे तुम सुनो। मैंने युद्ध में बहुत से वीरपुरुषों का वध कर बहुत सा समय व्यतीत कर डाला ; किन्तु अब मैं अपना यह शरीर रखना नहीं चाहता हूँ। अतएव तुम पाञ्चालों और सृञ्जयों सहित अर्जुन को आगे कर, शीघ्र ही मेरे वध के लिये यत्न करो।

हे राजन् ! धृष्टद्युम्न और युधिष्ठिर भीष्म के इन वचनों को सुन अपनी ओर के समस्त सैनिकों को सम्बोधन कर कहने लगे; तुम सब मिल कर भीष्म पर आक्रमण करो और उनसे लड़ कर, उन्हें परास्त करो। शत्रुञ्जय अर्जुन आप लोगों की रक्षा करेंगे। सेनापति महाधनुर्धर धृष्टद्युम्न और भीमसेन तुम्हारी सब की रक्षा करेगा। हे सृञ्जयों ! तुम्हें भीष्म से ज़रा भी न डरना चाहिये। क्योंकि हम लोग शिखण्डी को आगे कर, भीष्म को हरा देंगे। इसमें तुम लोगों को ज़रा सा भी सन्देह न करना चाहिये।

हे राजन् ! दसवें दिन पाण्डव इस प्रकार निश्चय और ब्रह्मलोक जाने का पक्का विचार कर, कुपित हो और शिखण्डी एवं अर्जुन को आगे कर, भीष्मवधार्थ उनकी ओर बढ़े। तदनन्तर महाबली एवं महापराक्रमी द्रोणाचार्य, अपने साथ अश्वत्थामा को तथा अनेक देशों के राजाओं को ले एवं दुःशासन अपने समस्त भाइयों को साथ ले, समरभूमिस्थित भीष्म पितामह की रक्षा करने लगे। हे राजन् ! तदनन्तर आपकी सेना के वीर लोग भीष्म को आगे कर शिखण्डी आदि पाञ्चालों और पाण्डवों के साथ भिड़ गये। कपिध्वज अर्जुन ने, शिखण्डी को आगे कर, चेदि और पाञ्चाल-देशीय योद्धाओं सहित, भीष्म के सामने गमन किया। सात्यकि का अश्वत्थामा से, धृष्टकेतु का पौरव से और अभिमन्यु का अनुचरों सहित दुर्योधन से युद्ध होने लगा। राजा विराट अपनी सेना को साथ ले जय-द्रथ से भिड़ा। वार्द्धक्षेमि के जामाता ने विचित्र धनुष बाणधारी आपके पुत्र चित्ररथ से युद्ध किया। ससैन्य धर्मराज युधिष्ठिर ने मद्रराज्य शल्य से भिड़न्त की। सुरक्षित गजसैन्य के साथ भीम ने युद्ध करना आरम्भ

किया। धृष्टद्युम्न अपने भाइयों सहित, सर्वशास्त्रज्ञ एवं अतिदुर्जेय द्रोणाचार्य से जा भिड़ा। शत्रुनाशी सिंहध्वज राजपुत्र वृहद्बल का, अभिमन्यु के साथ युद्ध हुआ। आपके समस्त पुत्र, बहुत से राजाओं को अपने साथ ले शिखण्डी और अर्जुन को मार डालने की कामना से, इन दोनों वीरों के सामने आ उपस्थित हुए।

हे भारत! जब दोनों ओर की महासेनाएँ महाभीषण युद्ध कर और निज पराक्रम प्रदर्शित करती हुई एक दूसरे पर आक्रमण करने लगीं; तब उनके आक्रमण करने से समरभूमि डोलने लगी। भीष्म को देख, दोनों पक्षों के योद्धा आपस में गुथ गये। उस समय समस्त सेनाओं का ऐसा महाघोर सिंहनाद हुआ कि, वह समस्त दिशाओं में व्याप्त हो गया। शङ्खों, नगाड़ों और ढोलों की ध्वनि और हाथियों के चिंघारने का शब्द और वीरों का सिंहनाद स्पष्ट सुन पड़ने लगा। राजाओं के बढ़िया बढ़िया कवच और किरीट, सूर्य अथवा चन्द्र की तरह चमकने लगे। दोनों पक्षों की सेनाओं के एक दूसरे पर आक्रमण करने पर, जो धूल उड़ी वह ऊपर मेघवत् दिखलायी पड़ने लगी। उस समय वीरों के शस्त्र, बिजली जैसे देख पड़ते थे। उभय सेनाओं में शङ्खों और भेरियों के बजने का, धनुषों की टंकारों का, रथों के घरघराहट का और वीरों के सिंहनाद का शब्द चारों ओर सुनायी पड़ने लगा। अन्तरिक्ष प्रासों, शक्तियों, ऋष्टियों और बाणों के जाल से पूरित हो गया। रथी रथियों पर, घुड़सवार घुड़सवारों पर चोट कर उन्हें भूशायी करने लगे। पैदल सिपाही पैदल सिपाहियों का नाश करने लगे। गजपति गजपतियों को मार कर, पृथिवी पर गिराने लगे! हे राजन्! जैसे माँस के निमित्त दो बाज पक्षियों का आपस में युद्ध होता है, वैसे ही भीष्म के लिये, पाण्डवों और कौरवों में महाघोर युद्ध होने लगा। वे सब क्रोध में भर और एक दूसरे को मार डालने के लिये बड़ी विकट लड़ाई लड़ने लगे।

एक सौ सोलह का अध्याय

भीष्म का विस्मयोत्पादक पराक्रम प्रदर्शन

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! भीष्म का वध करने के उद्देश्य से सुभद्रानन्दन अभिमन्यु अपने साथ बड़ी भारी सेना ले, दुर्योधन के साथ लड़ने लगे, दुर्योधन ने पैने नौ बाण अभिमन्यु पर छोड़े। फिर क्रुद्ध हो उसने तीन बाण अभिमन्यु की छाती में मारे। तब कुपित हो अभिमन्यु ने एक भयङ्कर शक्ति दुर्योधन के रथ पर चलायी। हे राजन्! आपके पुत्र दुर्योधन ने उस महाभयङ्कर शक्ति को सामने आते देख, क्षुरप्र बाण छोड़, उसके दो टुकड़े कर डाले। यह देख अभिमन्यु का क्रोध बहुत अधिक भड़का। उसने तीन बाण मार दुर्योधन की दोनों भुजाएँ और छाती घायल कीं। फिर पराक्रमी अभिमन्यु ने दुर्योधन की छाती में दस बाण मारे। भीष्म के वध और अर्जुन पराजय के लिये सुभद्रानन्दन अभिमन्यु के साथ कुरुराज दुर्योधन का जो विकट युद्ध हुआ वह बड़ा विचित्र था एवं सराहनीय था। समस्त शूर राजाओं ने उस युद्ध को सराहा। शत्रुनाशन एवं ब्राह्मणश्रेष्ठ द्रोणनन्दन अश्वत्थामा ने कोप में भर, सात्यकि की छाती में एक बाण मारा। हे भारत! तब सात्यकि ने नौ बाण मार अश्वत्थामा के समस्त मर्मस्थलों को विद्ध किया। तब अश्वत्थामा ने भी पहले नौ और फिर बड़ी फुर्ती से तीस बाण छोड़ सात्यकि की छाती और दोनों भुजाओं पर प्रहार किया। इस पर महाधनुर्धर एवं महायशस्वी सात्यकि ने अश्वत्थामा के बाणों से विद्ध हो कर, द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के ऊपर तीन बाणों से प्रहार किया। महारथी पौरव ने धृष्टकेतु का धनुष काट कर, बड़े ज़ोर से सिंहनाद किया। फिर अपने तीक्ष्ण बाणों से उसे विद्ध किया। धृष्टकेतु ने दूसरा धनुष उठा तिहत्तर बाण मार पौरव पर प्रहार किया। वे दोनों महारथी और महाधनुर्धर वीर परस्पर बाणप्रहार कर, घायल करने लगे। वे विचित्र प्रकार की ढालें और तलवारें को ले, इस प्रकार एक

दूसरे पर झपके, जैसे ऋतुमती सिंहनी के पीछे दो सिंह आपस में एक दूसरे पर आक्रमण करते हैं। वे वार करने की घात की खोज में मण्डलाकार घूमने लगे। अनन्तर पौरव ने खड़ा रह! खड़ा रह!! कहते हुए धृष्टकेतु के ललाट में खड्गप्रहार किया। तब चेदिराज धृष्टकेतु ने भी पौरव पर खड्गप्रहार किया। वे दोनों शत्रुनाशन वीर, एक दूसरे पर खड्गप्रहार करते करते बेदम हो भूमि पर गिर पड़े। तब आपका पुत्र जयत्सेन, पौरव को अपने रथ पर बिठा कर उसे समरक्षेत्र की सीमा के बाहर ले गया। उधर माद्रीसुत प्रतापी एवं पराक्रमी सहदेव, धृष्टकेतु को अपने रथ पर बिठा कर ले गया।

भीम ने प्रथम बहुत से बाण छोड़ सुशर्मा को विद्ध किया। फिर उसने उनहत्तर बाणों से सुशर्मा पर प्रहार किया। तब सुशर्मा ने क्रोध में भर भीम के दस बाण मारे। तब भीम ने क्रोध में भर सुशर्मा के ऊपर तीस बाण छोड़े। इस प्रकार वे दोनों यश एवं कीर्ति प्रार्थी वीर, भीष्म के पीछे आपस में भिड़े हुए थे।

हे राजन्! पराक्रमी अभिमन्यु, भीष्म के पास पहुँच, अर्जुन की सहायता के लिये, बृहद्बल से लड़ने लगा। कोशलराज बृहद्बल ने पहले अभिमन्यु के पाँच फिर बीस बाण मार उसे घायल किया। तदनन्तर अभिमन्यु जब आठ बाण मार कर भी बृहद्बल को विचलित न कर सका, तब उसने पुनः बाणों से विद्ध करना आरम्भ किया। उसने बृहद्बल का धनुष काट डाला और फिर कङ्क-पत्र-युक्त तीस बाण बृहद्बल के मारे। इस पर बृहद्बल ने दूसरा धनुष ले और क्रोध में भर, अनेक बाण मार, अर्जुनपुत्र अभिमन्यु को विद्ध किया। हे परन्तप! जैसे पूर्वकाल में देवासुर संग्राम में देवराज इन्द्र और दानवराज बलि का युद्ध हुआ था, वैसा ही युद्ध भीष्म के पीछे, अभिमन्यु और राजा बृहद्बल में हुआ। वे दोनों क्रोध में भर लड़ रहे थे, भीमसेन गजसैन्य का संहार करते हुए वैसे ही जान पड़ते थे, जैसे वज्रधारी इन्द्र पर्वतों को विदीर्ण करते हुए जान पड़ते हैं।

पर्वताकार बहुत से हाथी भीमसेन की गदा के प्रहार से चिंघारते हुए पृथिवी पर गिर पड़े। वे श्यामवर्ण गज निर्जीव हो समरभूमि में पड़े हुए काजल के पहाड़ जैसे जान पड़ते थे।

महाधनुर्धर धर्मराज युधिष्ठिर ने विशाल सैन्य साथ ले, मद्रराज शल्य को पीड़ित किया। तब भीष्म की रक्षा के लिये शल्य ने क्रोध में भर, मारे बाणों के युधिष्ठिर को व्यथित कर डाला। जयद्रथ ने विराट के नौ बाण मारे, तब राजा विराट ने सेनापति जयद्रथ की छाती में शिला पर घिसे पैने तीस बाण मार उसे घायल कर डाला। राजा विराट और सिन्धुराज जयद्रथ दोनों ही के धनुष, खड्ग, कवच, ध्वजाएँ और अस्त्र शस्त्र विचित्र थे। वे दोनों विचित्र ढंग से युद्ध कर रहे थे।

हे राजन्! द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के सामने जा घोर युद्ध किया। द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न पर पचास बाण छोड़े और उसका धनुष काट डाला। फिर बहुत से बाण मार धृष्टद्युम्न को घायल किया। शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्न ने दूसरा धनुष ले, द्रोण के ऊपर बाण मारना आरम्भ किया। महारथी द्रोणाचार्य ने बाणों से धृष्टद्युम्न के चलाये हुए समस्त बाण काट डाले और उसके ऊपर पाँच बाण छोड़े। हे राजन्! तदनन्तर शत्रुनाशन वीर धृष्टद्युम्न ने यमदण्ड के समान एक गदा ग्रहण कर द्रोणाचार्य पर छोड़ी। द्रोणाचार्य ने सुवर्णभूषित उस गदा को सम्मुख आते देख, पचास बाणों से उसे निवारण किया। वह गदा द्रोणाचार्य के बाणों से कई टुकड़े हो कर, पृथिवी पर गिरी। शत्रुनाशन धृष्टद्युम्न ने गदा को व्यर्थ गयी देख, लोहे की एक चोखी शक्ति द्रोणाचार्य की ओर चलायी। हे राजन्! द्रोणाचार्य ने नौ बाणों से उस शक्ति को काट कर, फिर धृष्टद्युम्न को अपने बाणों से पीड़ित किया। हे राजेन्द्र! भीष्म के लिये महाधनुर्धर द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का इस प्रकार महाघोर संग्राम हुआ।

भीष्म को सामने देख, अर्जुन तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित कर, भीष्म की ओर वैसे ही झपटे जैसे बनैला मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथी

पर लपके। प्रतापी महायशी राजा भगदत्त ने अपने युद्धदुर्मद हाथी पर चढ़ कर, उसे अर्जुन की ओर वेग से हाँका। उस समय भगदत्त के हाथी के शरीर से मद झरता था। इन्द्र के ऐरावत हाथी के समान भगदत्त के गजराज को सामने आते देख, अर्जुन बड़ी सावधानी के साथ उसके सामने गये। अनन्तर प्रतापी महाबलवान राजा भगदत्त ने बाणवृष्टि कर, अर्जुन को रोकना चाहा। जब भगदत्त के गज ने अर्जुन पर आक्रमण किया; तब उन्होंने सुवर्ण-पुङ्ख युक्त लोहे के बाणों से उसे बेधा। अर्जुन ने शिखण्डी से बारम्बार कहा—जाओ! जाओ!! भीष्म के पास जाओ!!! उनका वध करो। राजा भगदत्त, अर्जुन को त्याग कर, शीघ्रता के सहित भीष्म के सामने उपस्थित हुए। तदनन्तर युद्ध होने लगा, तब आपकी सेना के शूरवीर, सिंहनाद करते हुए अर्जुन पर लपके। वे सब विचित्र ढंग से दौड़ रहे थे। जैसे वायु आकाशस्थित मेघों को तितर बितर कर देता है; वैसे ही अर्जुन ने अवसर पा, आपके पुत्र की सेना को छिन्न भिन्न कर डाला। भीष्म पितामह को देख, शिखण्डी ने निर्भय हो, इतने बाण छोड़े कि भीष्म पितामह बाणों से ढक गये। उस समय भीष्म मानों रथरूपी अग्निगृह में बैठे थे। धनुष उस अग्नि की शिखा था, तलवार, गदा और शक्ति उस अग्नि के ईंधन थे। वे अपने बाण रूपी महाभयङ्कर ज्वाला से युक्त हो, क्षत्रिय योद्धाओं को मानों भस्म कर रहे थे। जैसे वायु और अग्नि मिल कर तृणसमूह को भस्म कर डालते हैं और उसे भस्म करते समय चारों ओर प्रकाश फैल जाता है, वैसे ही भीष्म पितामह अपने दिव्यास्त्र चलाते हुए प्रकाशित हो रहे थे। महारथी भीष्म सोने की डंडी वाले बाणों से पाण्डवों के सहायक चन्द्रवंशियों का संहार कर रहे थे। महारथी भीष्म रथों की ध्वजाओं को काट काट कर, रथों को ताल के झुण्डवनों की तरह बना रहे थे। उन्होंने रथों, हाथियों और घोड़ों को उनके सवारों से रहित कर दिया था। समस्त सैनिक योद्धा उनके धनुष टंकार को सुन भयभीत हो थरथरा रहे थे। हे प्रजानाथ! भीष्म के छोड़े बाण चारों ओर अमोघ रूप

से घूमते हुए देख पड़ते थे। वे बाण केवल योद्धाओं के शरीरों में लग कर ही नहीं गिरते थे, बल्कि शरीरों को फोड़ कर निकल जाते थे।

हे राजन्! उस समय मैंने देखा कि, शीघ्रगामी घोड़ों के सहित भीष्म के बाणों से अनेक मनुष्य मर कर पृथिवी पर लोट गये। कितने ही रथों के रथियों के मारे जाने पर उनके रथ के घोड़े बड़े वेग से रथों को खींचते हुए रणभूमि में इधर उधर भाग रहे थे। चेदि, काशी और करूप देशों के चौदह सहस्र कुलीन शूरवीर महारथी योद्धा, जो कभी युद्ध में पीठ नहीं दिखलाते थे और जिनके रथों पर सुवर्णभूषित ध्वजाएँ लगी हुई थीं—वे सब जीवन की आशा त्याग यमोपम भीष्म के आगे जा, अपने गज, अश्व आदि वाहनों सहित यमलोक सिधारे। उस समय चन्द्रवंशियों में एक भी ऐसा पुरुष वहाँ न था, जो भीष्म के आगे पहुँच जीता जागता बना रह सके। भीष्म के पराक्रम को देख, वहाँ उपस्थित समस्त योद्धाओं ने अपने को काल के गाल में पड़ा हुआ समझ लिया। अतः उनके सामने जाने का किसी भी योद्धा का साहस न होता था। श्वेतवाहन अर्जुन, जिसके सारथि श्रीकृष्ण थे और दूसरा परमतेजस्वी शिखण्डी, भीष्म के सामने जाने का साहस कर सके।

एक सौ सत्रह का अध्याय

भीष्म का शौर्य

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! शिखण्डी ने भीष्म के सम्मुख जा दस भल्ल बाण मार उनको घायल किया। भीष्म पितामह के नेत्र उस समय मारे क्रोध के लाल हो रहे थे। उन्होंने शिखण्डी की ओर ऐसी वक्रदृष्टि से देखा कि, मानों वे उसको भस्म ही कर डालेंगे।

हे राजन्! उस समय पितामह ने शिखण्डी को स्त्री समझ उसके

ऊपर हाथ न उठाया ; किन्तु शिखण्डी इसका रहस्य न जान पाया। यह सब काण्ड सब के आगे हो रहा था। उस समय अर्जुन ने शिखण्डी से कहा —अरे शीघ्र आगे जा और भीष्म पितामह पर प्रहार कर। हे वीर ! तुम्हारा क्या कहना है ? तुम भीष्म पितामह को मार कर रथ से गिरा दो। तुम्हें छोड़, युधिष्ठिर के सैन्यदल में और किसी में भी इनका वध करने की शक्ति नहीं है। हे पुरुषसिंह ! भीष्म के साथ लड़ने वाला तुझे छोड़ अन्य कोई नहीं है।

अर्जुन के इन वचनों को सुन, शिखण्डी विविध प्रकार के बाणों से पितामह को विद्ध करने लगा ; किन्तु भीष्म जी ने शिखण्डी के बाणप्रहार को कुछ भी न गिना। वे क्रोध में भर अर्जुन पर बाण छोड़ने लगे और अर्जुन को आगे न बढ़ने दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने असंख्य पैने बाण मार पाण्डवों की बहुत सी सेना मार डाली। पाण्डवों ने भीष्म को वैसे ही बाणजाल से आच्छादित किया जैसे मेघ सूर्य को ढक दिया करते हैं। पाण्डवों के सैन्यदल से घेरे गये पितामह भीष्म शत्रुपक्षीय शूरों को वैसे ही भस्म करने लगे जैसे धधकता हुआ अग्नि, वन को भस्म करता है। उस समय मैंने आपके पुत्र दुःशासन का विस्मयोत्पादक पुरुषार्थ देखा, वह अर्जुन के साथ लड़ रहा था और साथ ही साथ पितामह की रक्षा भी कर रहा था। आपके पुत्र दुःशासन के इस पराक्रम को देख, सब लोग उसके ऊपर प्रसन्न हुए। दुःशासन अकेला ही अर्जुनादि पाण्डवों से लड़ रहा था। उस वीर को कोई भी पाण्डव न रोक सके। इस युद्ध में दुःशासन ने बड़े बड़े शत्रुपक्षीय वीरों को रथहीन कर डाला और बड़े बड़े धनुर्धर गजपतियों और अश्वारोही योद्धाओं को मार डाला। बाणप्रहार से पीड़ित हो कितने ही हाथी इधर उधर भागने लगे। जैसे अग्नि काष्ठ समूह को पा, धधक उठता है, वैसे ही पाण्डवों की सेना के आगे आते ही आपका पुत्र क्रोध में भर, उसका संहार करने लगा। उस समय दुःशासन के सामने जा उससे लड़ने की अर्जुन को छोड़ अन्य किसी भी पाण्डव में

हिम्मत न थी। उस समय श्वेतवाहन विजय उपनाम अर्जुन ही ने दुःशासन का सामना किया और सब के सामने उसे हरा, वह वेगपूर्वक भीष्म की ओर बढ़ा। आपके पुत्र दुःशासन ने, अर्जुन द्वारा परास्त किये जाने पर भी भीष्म के बाहुबल का सहारा लिया और अपने सैनिकों को ढाढ़स बँधा तथा क्रोध में भर वह पुनः अर्जुन से लड़ने लगा। शिखण्डी विषधर सर्प तथा वज्र के समान स्पर्श करने वाले बाणों से भीष्म पितामह को विद्ध करने लगा; किन्तु शिखण्डी के उन बाणप्रहारों से भीष्म पितामह ज़रा भी व्यथित न हुए। वे हँस हँस कर शिखण्डी के बाणप्रहारों को सहते रहे। भीष्म जी, शिखण्डी के चलाये बाणों को वैसे ही ग्रहण करते रहे जैसे गर्मी से दुःखी मनुष्य जलधारा को ग्रहण करने की इच्छा करता है। उस समय समस्त योद्धाओं ने देखा कि, महात्मा भीष्म अग्निवत् लाल ताते हो पाण्डवपक्षीय सैन्य के वीरों को अपने अस्त्रप्रहार से भस्म किये डालते थे।

तदनन्तर दुर्योधन ने अपनी सेना के समस्त वीरों को सम्बोधन कर, उनसे कहा—तुम हर ओर से अर्जुन पर आक्रमण करो। धर्मात्मा भीष्म तुम्हारी सब की रक्षा करेंगे। अतः तुम सब लोग मृत्युभय छोड़, पाण्डव-सैन्यदल से लड़ने को आगे बढ़ो। भीष्म पितामह अपने पक्ष के समस्त योद्धाओं की रक्षा करते हुए, सुवर्णदण्डभूषित, विशाल तालध्वजा से शोभायमान हो कर, रणभूमि में स्थित थे। जब मिल कर सब देवता भी रण में भीष्म को पराजित नहीं कर सकते, तब पाण्डव बलवान मनुष्य हो कर ही उनका क्या बिगाड़ सकते हैं। हे सूरमाओं! अतः तुम अर्जुन की सूरत देखते ही भागे क्यों जा रहे हो। तुम लोग तो क्षत्रिय हो। अतः डट कर युद्ध करो। मैं तुम लोगों के साथ ही अर्जुन से लड़ूँगा।

हे राजन्! आपके धनुर्धर पुत्र दुर्योधन के इन वचनों को सुन, आवेश में भरे हुए महाबली विदेह, कलिङ्ग, दासेरक—अर्जुन पर टूट पड़े। इस महासमर में निषाद, शूरसेन, सौवीर, बाल्हीक, दरद, प्रतीच्य, मालव,

अभीषाह, शिवी, वसाती, शाल्व, शक, त्रिगर्त, अम्बष्ठ और केकय आदि भिन्न भिन्न देशों के योद्धा भी अर्जुन पर वैसे ही टूटे, जैसे पतङ्गे दीपक पर टूट पड़ते हैं। ससैन्य आगे को बढ़ते हुए इन समस्त महारथी योद्धाओं को, अर्जुन ने अपने दिव्यास्त्रों का स्मरण कर और उन दिव्यास्त्रों को दृढ़ता पूर्वक प्रयोग कर, उन सब को वैसे ही भस्म करना आरम्भ किया जैसे दीपक पतंगों को भस्म करता है। कटी हुई ध्वजाओं वाले वीरों की पुनः हिम्मत न पड़ी कि, वे कपिध्वज के पास आवें। अर्जुन के बाणों से घायल रथी अपने रथों सहित, अश्वारोही सैनिक अपने घोड़ों सहित, गजपति योद्धा अपने हाथियों सहित रणभूमि में मर मर कर गिरने लगे। देखते ही देखते अर्जुन के बाणप्रहारों से पीड़ित हो भागते हुए राजा रण-भूमि में चारों ओर भागते हुए देख पड़ते थे।

हे राजन्! आपकी सेना को भगा कर, अर्जुन ने आपके पुत्र दुःशासन से युद्ध किया। जैसे साँप रेत के ढेर वाले बिल में घुस जाय, वैसे ही लोहे के फलों वाले बाण आपके पुत्र दुःशासन के शरीर को फोड़ भूमि में घुस रहे थे। तदनन्तर अर्जुन ने दुःशासन के घोड़ों का वध कर, उसके सारथि को बाणप्रहार से मार कर पृथिवी पर गिरा दिया। फिर अर्जुन ने विविंशति पर बीस बाण छोड़ उसे रथहीन कर दिया। फिर उसके पाँच बाण और मारे। तदनन्तर श्वेतवाहन अर्जुन ने, कृपाचार्य, शल्य और विकर्ण को अनेक बाणों से विद्ध कर, उन सब को रथहीन कर डाला। कृपाचार्य, शल्य, दुःशासन, विकर्ण और विविंशति, अर्जुन से हार कर रणभूमि से भागे।

हे राजन्! पूर्वाह्णकाल में अर्जुन, इन सब को परास्त कर, निर्धूम अग्नि की तरह प्रकाशित होने लगे। जैसे रश्मिधारी सूर्य अपने किरणजाल को विस्तार करता है, वैसे ही अर्जुन बाणवृष्टि कर अन्य क्षत्रिय योद्धाओं को भस्म करने लगे। अर्जुन ने महारथी वीरों को परास्त कर, समरभूमि में कौरवों एवं पाण्डवों के बीच रक्त की नदी बहा दी। कहीं कहीं पर गजों,

अश्वों और रथियों के ढेर के ढेर मरे हुए पड़े थे। बहुत से गज, घोड़े और रथियों की लोथें और कटे हुए सिर रणभूमि में चारों ओर पड़े हुए थे। हे राजन्! रुधिर रूपी कीचड़ से युक्त बहुत से मृत अश्वों, गजों और टूटे रथों के पहियों के नीचे दब कर मरे हुए सैनिकों की लाशों से रणभूमि ढक गयी। पैदल और घुड़सवार सैनिक रणभूमि में चारों ओर दौड़ रहे थे। बहुत से रथी, गजपति, अश्वारोही सैनिक, वीर योद्धाओं के अस्त्र-प्रहार से मारे जा कर भूशायी हो गये थे। बहुत से रथों की ध्वजाएँ, चक्के और धुरियाँ टूट गयी थीं। रणभूमि में वे सब इधर उधर बिखरे पड़े थे। जैसे शरदृतु में लाल रङ्ग के बादल आकाश में देख पड़ते हैं, वैसे ही युद्धभूमि रथियों के रुधिर से लाल हो रही थी। कौए, गिद्ध, श्वान, शृगाल, वृक और अन्य बहुत से भयानक पशुपक्षी पेट भर, माँस खा, भयङ्कर बोलियाँ बोल रहे थे। राक्षसादि अनेक प्राणी भी महाघोर शब्द करने लगे। क्षण क्षण में वायु का रुख बदलने लगा। सोने की बहुमूल्य पताकाएँ वायु के प्रचण्ड वेग में उड़ गयीं। सैकड़ों हज़ारों श्वेत छत्र और ध्वाजाओं से युक्त रथ, वायु की प्रचण्डता से तितर बितर हो गये। हे राजन्! पताकाओं सहित कितने ही हाथी अस्त्रों से पीड़ित हो, रणभूमि में इधर उधर दौड़ रहे थे। हे प्रजानाथ! मैंने मरे हुए कितने ही क्षत्रिय योद्धाओं के हाथों में गदा, शक्ति और धनुष देखे थे। तदनन्तर महाबली भीष्म, दिव्यास्त्रों को प्रकट कर, समस्त धनुर्धरों के आगे ही अर्जुन की ओर झपटे और शिखण्डी के अग्नितुल्य बाणों के प्रहार को सहने लगे। उसी समय श्वेतवाहन, कुन्तीनन्दन अर्जुन ने भीष्म पितामह को मोहित किया और वे आपके सैनिकों का संहार करने लगे।

एक सौ अठारह का अध्याय

भीष्म का भीषण पराक्रम

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! दोनों पक्ष की सेनाएँ समान रूप से व्यूहबद्ध की गयी थीं। उन दोनों ही सेनाओं के योद्धा, रण में पीछे पग न रख, ब्रह्मलोकप्राप्ति की कामना से युद्ध करने लगे। जब महाविकट युद्ध होने लगा, तब सैनिक शूरवीरों ने अपने जोड़ के सैनिक वीरों के साथ लड़ने का विचार न किया। समस्त योद्धा मतवालों की तरह, जहाँ तहाँ लड़ रहे थे। उभयपक्ष की सेनाओं में अत्यन्त भयङ्कर, मर्यादाशून्य और विपरीत युद्ध होने लगा। उस महाघोर युद्ध में मनुष्य, घोड़े, हाथी छितरा कर चारों ओर लड़ते दिखलायी पड़ते थे। पैदलों, रथियों और अश्वारोहियों तथा गजपतियों में कुछ भी विशेषता न रह गयी। जिसने घात पाया उसीने शत्रु का वध कर डाला। इधर शल्य, कृपाचार्य, चित्रसेन, दुःशासन और विकर्ण—ये पाँचों महारथी योद्धा, अपने अपने चमचमाते रथों पर सवार हो, पाण्डवों की सेना को कंपायमान करने लगे। जैसे पवन के झोंक से समुद्र में जहाज़ हिलने लगता है, वैसे ही शूर योद्धाओं के हाथ से मारी जाती हुई पाण्डवों की सेना इधर उधर भागने लगी। जैसे शिशिर काल में गौ आदि पशु शीत से अत्यन्त दुःखित होते हैं, वैसे ही परमपराक्रमी भीष्म के बाणों से पाण्डवों की सेना पीड़ित हुई।

उधर महाबली अर्जुन भी आपकी सेना के काली मेघघटा जैसे अनेक गजों को मार अनेक यूथपति रथियों को पीड़ित करने लगा। कितने ही बड़े बड़े गज सहस्रों बाणों से पीड़ित हो, आर्त्तनाद करते करते भूमि पर लोट गये। कितने ही शूर वीर महात्मा योद्धा मारे गये। उनके सुन्दर भूषणों से भूषित शरीर और कुण्डलों से सुशोभित मस्तक भूमि पर पड़े भूमि को आच्छादित कर रहे थे। उस महाघोर युद्ध में जब भीष्म और अर्जुन अपना पराक्रम प्रकट कर रहे थे, तब आपके समस्त पुत्र अपनी सारी

सेना को आगे कर, भीष्म के निकट पहुँचे और स्वर्ग जाने की कामना से प्राण की ममता त्याग, पाण्डवों पर झपटे।

हे राजन् ! पराक्रमशाली पाण्डव भी आपके पुत्रों द्वारा दिये गये पूर्वकालीन दुःखों को स्मरण कर और ब्रह्मलोक प्राप्ति की कामना से प्रेरित हो, निर्भीक भाव से, कुपित हो, युद्ध करने लगे। सेनापति महारथी धृष्टद्युम्न ने रणभूमि में अपने सैनिकों से कहा—तुम लोग सृञ्जय योद्धाओं को साथ ले कर गङ्गानन्दन भीष्म पर आक्रमण करो। चन्द्रवंशी क्षत्रिय और सृञ्जय शूरवीर योद्धा सेनापति धृष्टद्युम्न के वचनों को सुन कर, चारों ओर से अस्त्र शस्त्र बरसाते, भीष्म की ओर दौड़े। तब भीष्म जी उन सब के अस्त्रों शस्त्रों से पीड़ित हो और क्रोध में भर, उनके साथ युद्ध करने लगे। यशस्वी भीष्म पितामह को बुद्धिमान् परशुराम ने जो शत्रुओं की सेना का नाश करने वाले अस्त्रों शस्त्रों की शिक्षा दी थी, उन्हीं अस्त्रों शस्त्रों से भीष्म ने नित्य दस हज़ार योद्धाओं का संहार किया था। आज दसवें दिन, अकेले भीष्म ने मत्स्यों और पाञ्चालों की सेना के असंख्य हाथियों और घोड़ों को मार कर सात महारथियों का वध किया। फिर दूसरी बार पाँच हज़ार रथी, चौदह हज़ार पैदल सिपाही, छः हज़ार हाथी और दस हज़ार घोड़ों का वध किया। तदनन्तर समस्त शत्रुपक्षीय राजाओं को तितर बितर कर, भीष्म ने विराट के प्यारे भाई शतानीक का वध किया। फिर भीष्म ने अपने पैने बाणों से एक हज़ार राजाओं को पीड़ित किया। जो राजा अर्जुन के पीछे पीछे आये थे, वे सब भीष्म के सामने पहुँच उनके अस्त्रों से मारे जा कर, यमलोक को सिधारे। इस प्रकार भीष्म ने दसों दिशाएँ बाणों से पूरित कर, पाण्डवों की ओर के योद्धाओं का वध किया और कितनों को बाणप्रहार से पीड़ित कर वे कौरवों की सेना के आगे जा खड़े हुए। जब क्लिष्टकर्मा भीष्म पितामह धनुष तान उभय सेनाओं के बीच जा खड़े हुए, तब कोई भी उनकी ओर वैसे ही न ताक सका, जैसे ग्रीष्मकालीन तपते हुए सूर्य को मध्यान्ह के समय कोई नहीं देख सकता। भीष्म ने अपने अस्त्रों के सहारे पाण्डवों

की सेना को वैसे ही भग्न किया जैसे इन्द्र ने दानवों की सेना को भग्न किया था। जब श्रीकृष्ण ने यह देखा, तब उन्होंने प्रीतिपूर्वक अर्जुन से कहा—हे अर्जुन ! बलवान् भीष्म उभय सेनाओं के बीच खड़े हैं। तुम बल लगा उनका वध कर समरविजयी हो। वे जहाँ समस्त सैनिकों को बाण-प्रहारों से पीड़ित कर रहे हैं, वहीं तुम अपना पराक्रम प्रकट कर उन्हें रोको। हे अर्जुन ! तुम्हें छोड़ और दूसरा कोई भी योद्धा, पराक्रमी भीष्म के बाण-प्रहार को नहीं सह सकता।

श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन, कपिध्वज अर्जुन ने तत्काल बाणवृष्टि कर ध्वजा, रथ और घोड़ों सहित भीष्म को छिपा दिया। कौरवों के मुख्य योद्धाओं में श्रेष्ठ भीष्म ने बाण चला, अर्जुन के बाणों को छितरा दिया। तब तो पाञ्चालराज वीर्यवान् धृष्टकेतु, पाण्डवनन्दन भीमसेन, पृषतवंशी धृष्टद्युम्न नकुल, सहदेव, चेकितान, पाँचों केकयराज, सात्यकि, अभिमन्यु घटोत्कच, द्रौपदी के पाँचों पुत्र, पराक्रमी शिखण्डी, कुन्तिभोज, सुशर्मा, विराट् तथा अन्य महाबली पाण्डव पक्षीय योद्धा, भीष्म के बाणों से पीड़ित होने के कारण, शोकमग्न हो गये; किन्तु उन सब को अर्जुन ने बचाया।

तदनन्तर शिखण्डी बड़ा भारी धनुष हाथ में ले बड़े वेग से भीष्म पितामह की ओर झपटा। उस समय पीछे से अर्जुन उसकी रक्षा कर रहा था। रणविद्या के पूर्ण ज्ञाता अजेय धनञ्जय ने प्रथम तो भीष्म के अनुयायियों का वध किया, तदनन्तर भीष्म पर आक्रमण किया। सात्यकि, चेकितान, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, नकुल और सहदेव आदि योद्धा अर्जुन की रक्षा में भीष्म के ऊपर चढ़ दौड़े। अभिमन्यु एवं द्रौपदी के पाँचों पुत्रों ने भीष्म पर आक्रमण किया। वे शत्रुओं के बाणों को नष्ट करने वाले अनेक बाणों को छोड़ने लगे। इन सब के बाणों का निवारण कर भीष्म पाण्डवों की सेना में घुस गये और बाणवृष्टि करने लगे। उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानों वे खेल कर रहे हों। इतने में शिखण्डी उनके

सामने गया; किन्तु उसे स्त्री समझ भीष्म ने उस पर एक भी बाण न छोड़ा। जब वह भीष्म पर बाण छोड़ता, तब भीष्म जी बार बार हँस दिया करते थे। जब पितामह ने पाञ्चाल सेना के सात महारथी मार डाले, तब तो रणभूमि में बड़ा कोलाहल मचा। जैसे घनघोर घटा सूर्य को ढक दे, वैसे ही मत्स्य, पाञ्चाल, चेदि आदि सेनाओं के योद्धाओं ने अकेले भीष्म के ऊपर बाणवृष्टि कर उनको ढक दिया। शत्रुतापन गङ्गानन्दन भीष्म के साथ पाण्डवों का यह युद्ध ठीक देवासुर संग्राम जैसा हुआ था। उस समय शिखण्डी को आगे कर, अर्जुन, भीष्म जी के ऊपर निरन्तर बाणप्रहार कर रहा था।

एक सौ उन्नीस का अध्याय

भीष्म का पतन

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! शिखण्डी को आगे कर, भीष्म को सब पाण्डवों ने चारों ओर से घेर लिया, सृञ्जय योद्धा और वे सब मिल कर, महाभयङ्कर शतघ्नियाँ, पट्टिश, परशु, मुद्गर, मूसल, प्रास, सुवर्णदण्ड, बाण, शक्तियाँ, तोमर, लोहे के बाण, भुशुण्डियाँ आदि अस्त्र शस्त्रों की भीष्म पर वृष्टि करने लगे। इन लोगों के अस्त्रों शस्त्रों के प्रहारों से भीष्म का तनुत्राण-कवच कट गया और उनके मर्मस्थान बाणों से विद्ध हो गये; किन्तु मर्मस्थानों के विद्ध होने पर भीष्म जी ज़रा भी दुःखी न हुए; प्रत्युत उस समय वे प्रलयकालीन अग्नि की तरह प्रकाशित हो, चारों ओर घूमने लगे। धनुष बाणों तथा अन्य समस्त महास्त्रों से उनका तेज उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया। उनके धनुष से छूटे हुए बाण, अग्निसहायक वायु जैसे देख पड़ते थे। उनके रथ की घरघराहट से लोग वैसे ही घबड़ाते थे; जैसे अग्नि से लोग घबड़ाते हैं। उस समय उनका धनुष अग्नि शिखावत् और

वीरों के शरीर उस धनुष रूपी अग्निशिखों के लिये ईंधन थे। उन समस्त राजाओं के रथों के समूह के बीच से निकल शत्रु-नाश-कारी अग्नि रूपी भीष्म जी, कभी तो बाहर हो जाते थे और कभी उन सब के बीच भ्रमण करते हुए देख पड़ते थे। तदनन्तर उन्होंने पाञ्चालराज और चेदिराज को तृणवत् समझ, पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया और सात्यकि, भीमसेन, अर्जुन, द्रुपद, विराट और धृष्टद्युम्न पर अतितीक्ष्ण बाणों की वर्षा की। इस पर इन छओं महारथियों ने भीष्म के चलाये तीक्ष्ण बाणों को रोका और इनमें से प्रत्येक ने भीष्म जी के तान तान कर दस दस बाण मारे। महारथी शिखण्डी के चलाये पैने बाण भीष्म के शरीर में घुस गये। इतने में शिखण्डी को आगे कर, अर्जुन ने भीष्म पर आक्रमण किया और बाण मार उनका धनुष काट डाला।

द्रोणाचार्य, कृतवर्मा, सिन्धुराज जयद्रथ, भूरिश्रवा, शल, शल्य और भगदत्त नाम के सात महारथियों को भीष्म के धनुष का काटा जाना सह्य न हुआ। वे लोग अत्यन्त कुपित हो अपने दिव्यास्त्रों को चमचमाते, बड़ी फुर्ती के साथ अर्जुन के सम्मुख जा उपस्थित हुए और अर्जुन को अपने अस्त्रों शस्त्रों की वृष्टि से ढक दिया। जब वे लोग अर्जुन के निकट जा उससे लड़ने लगे, तब वहाँ वैसा ही कोलाहल मचा जैसे प्रलय-कालीन महासागर की तरङ्गों का महाभयङ्कर शब्द हुआ करता है। अर्जुन के रथ के समीप मारो, धरो, अस्त्रों से छेद डालो, काट डालो आदि बोलियाँ चारों ओर सुन पड़ती थीं। हे भारत! उस महाघोर कोलाहल को सुन, महारथी सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद, घटोत्कच और अभिमन्यु अद्भुत विशाल धनुषों को हाथों में ले और क्रोध में भर अर्जुन की रक्षा के लिये भीष्म की ओर झपटे। पूर्वकाल में जैसा देवासुर संग्राम हुआ था, वैसा ही कुरुपाण्डवों का महाविकट युद्ध हुआ। इस महासमर को देखने से देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते थे। उधर अर्जुन रक्षित शिखण्डी ने धनुष कटे हुए महाबली भीष्म के और उनके सारथि को दस

दस बाण मार घायल किया और एक बाण चला उनके रथ की ध्वजा काट डाली। इतने में भीष्म ने दूसरा एक वेगवान् धनुष हाथ में लिया, तब अर्जुन ने तीन पैने बाण मार उसे भी काट डाला। इस प्रकार भीष्म जी ज्यों ही नया धनुष हाथ में लेते त्यों ही अर्जुन उसे काट डाला करते थे। जब कई बार अर्जुन ने भीष्म के धनुष काट डाले, तब मारे क्रोध के दाँतों से ओंठ काटते हुए भीष्म जी ने पर्वतों को भी विदीर्ण कर डालने वाली महाभयङ्कर एक शक्ति अर्जुन के ऊपर फेंकी। अर्जुन ने अग्नि की तरह उस प्रज्ज्वलित शक्ति के, पैने पाँच बाण छोड़, पाँच टुकड़े कर, उसे भूमि पर गिरा दिया। जैसे बादलों से निकल विद्युत् भूमि पर गिरती है, वैसे ही वह चमचमाती शक्ति पाँच टुकड़े हो भूमि पर गिर पड़ी। परपुरञ्जय भीष्म जी यह देख, मन ही मन सोचने लगे कि, यदि जनार्दन भगवान् श्रीकृष्ण आज पाण्डवों के सहायक न होते, तो मैं एक ही धनुष हाथ में ले, समस्त पाण्डवों और उनके पक्ष के योद्धाओं का संहार कर डालता; किन्तु पाण्डव अवध्य हैं और शिखण्डी स्त्री है। अतः मैं अब इन लोगों से न लड़ूँगा। पूर्वकाल में मेरे पिता शान्तनु ने सत्यवती से विवाह करते समय मुझे "इच्छा मृत्यु" का वरदान दिया था। सो यदि मैं अभी मरना न चाहूँ तो इस समरक्षेत्र में मुझे कोई मार भी तो नहीं सकता, तो भी मैं अब जीवित रहना नहीं चाहता। मेरा इस समय यही कर्त्तव्य है क्योंकि मरने के लिये यही उपयुक्त समय है। परमतेजस्वी भीष्म के इस आन्तरिक अभिप्राय को जान, आकाश में विमानस्थ ऋषियों और ऋषियों ने भीष्म से कहा—तुम्हारे विचार से हम लोग सहमत हैं। हे महाधनुर्धर भीष्म! तुम अब अपने विचारानुसार ही कार्य करो और युद्ध से निवृत्त हो जाओ। उनके यह वचन पूरे होते ही शीतल मन्द बयार चलने लगी। समस्त देवताओं ने हर्षित हो, स्वर्ग में नगाड़े बजाये और भीष्म पर पुष्प-वृष्टि की।

हे राजन्! वसुओं और ऋषियों के कथित वचनों को, भीष्म के अति-

रिक्त अन्य कोई भी न सुन पाया। वेदव्यास जी के परानुग्रह से मैं उन सब वचनों को सुन पाया। जब देवताओं ने यह विचारा कि, भीष्म जी अब रथ से गिरेंगे, तब तो वे मन ही मन अत्यन्त दुःखी हुए।

महायशस्वी शान्तनुनन्दन भीष्म ने देवताओं और ऋषियों के वचनों को सुन, अर्जुन के चलाये बाणों से विद्ध हो गये और फिर उन पर आक्रमण न किया। शिखण्डी ने क्रोध में भर भीष्म की छाती पर बाणप्रहार किया; किन्तु भूचाल के समय अटल अचल रहने वाले पर्वत की तरह, भीष्म जी, शिखण्डी के उस बाणप्रहार से रत्ती भर भी विचलित न हुए। तदनन्तर अर्जुन ने हँस कर गाण्डीव धनुष को ताना और पचीस क्षुद्रक बाण भीष्म के मारे। तदनन्तर क्रोध में भर पुनः अर्जुन ने भीष्म का सारा शरीर बाण मार मार कर वेध डाला। उनके समस्त मर्मस्थान बाणों से विद्ध हो गये। सत्यपराक्रमी एवं महाबली भीष्म को अन्य महारथियों ने भी बाणों से विद्ध किया। साथ ही उन लोगों ने भीष्म के छोड़े बाणों को अपने बाणों से निवारण किया।

महारथी शिखण्डी ने सुवर्ण की डंडी के जितने बाण भीष्म पर छोड़े, उनके लगने से भीष्म को ज़रा भी पीड़ा न हुई। तदनन्तर कुपित हो और शिखण्डी को आगे कर अर्जुन, भीष्म के आगे गया और उनका धनुष बाण मार कर काट डाला। तदनन्तर एक बाण से उनके रथ की ध्वजा को काट, दस बाण मार उनके सारथि को घायल किया। तब गङ्गानन्दन भीष्म ने पुनः एक धनुष हाथ में लिया; किन्तु अर्जुन ने तीन बाण छोड़ उस धनुष को भी काट डाला। इस प्रकार अर्जुन ने इस समर में जब भीष्म जी के कितने ही धनुष काट डाले, तब उन्होंने लड़ना बंद कर दिया; किन्तु अर्जुन इस पर भी न माना उसने पचीस बाण मार भीष्म को बुरी तरह घायल किया। उस समय भीष्म ने दुःशासन से कहा—देख! देख!! पाण्डवपक्षीय यह योद्धा अर्जुन अत्यन्त क्रुद्ध हो रहा है और अगणित बाण मार मुझे विद्ध कर रहा है। रण में इसे इन्द्र भी नहीं जीत सकते।

मुझे भी देवता और असुर मिल कर नहीं जीत सकते। फिर मैं इन मानव महारथियों को तो कुछ भी नहीं गिनता।

जब भीष्म पितामह दुःशासन के साथ इस प्रकार वार्त्तालाप कर रहे थे, तब शिखण्डी को आगे कर अर्जुन ने भीष्म जी पर तेज़ बाण छोड़ना आरम्भ किया। अर्जुन के बाणों से विद्ध हो भीष्म जी ने मुसक्या कर पुनः दुःशासन से कहा—वज्रस्पर्शी ये बाण—जो सरसराते लगातार मेरे ऊपर गिर रहे हैं ये सब अर्जुन के बाण हैं। ये शिखण्डी के छोड़े हुए नहीं हैं। ये समस्त बाण मेरे दृढ़ कवच को फोड़ कर, मर्मस्थानों में पीड़ा उत्पन्न कर रहे हैं। ये बाण शिखण्डी के नहीं हैं। ये बाण *ब्रह्मदण्ड की तरह स्पर्श करने वाले और वज्र की तरह असह्य हैं। इनसे मेरे शरीर में बड़ी व्यथा हो रही है। ये बाण शिखण्डी के चलाये नहीं है। गदा और परिघ के समान स्पर्श वाले—ये समस्त बाण मानों यमदूतों की तरह मेरा नाश करना चाहते हैं। जैसे माघ मास में गौओं के मर्मस्थानों में पीड़ा उत्पन्न होती है, वैसे ही ये समस्त बाण मेरे शरीर को पीड़ित कर रहे हैं। अतः ये सब बाण अर्जुन ही के चलाये हुए हैं। ये बाण शिखण्डी के नहीं है। गाण्डीव-धनुपधारी एवं कपिध्वज वीर अर्जुन को छोड़ अन्य समस्त क्षत्रिय योद्धा मिल कर भी मुझे पीड़ित नहीं कर सकते।

हे राजन्! भीष्म जी ने इस प्रकार कहते कहते, एक महाभयङ्कर शक्ति अर्जुन के ऊपर छोड़ी। उस समय ऐसा जान पड़ा, मानों वह शक्ति अर्जुन

---

* ब्रह्मदण्ड से अभिप्राय है ब्राह्मण की बाँस की लाठी। यह लाठी ब्राह्मण के तपःप्रभाव से, पतली होने पर भी इन्द्र के वज्र से कहीं बढ़ बढ़ कर बलवती होती है। क्योंकि इन्द्र का वज्र तो जिस पर गिरता है उसीका नाश करता है; किन्तु ब्रह्मदण्ड तो वंश-मूलच्छेद कर जगत् का नाश कर डालता है। केवल ब्रह्मदण्ड ही से वसिष्ठ जी ने विश्वामित्र के समस्त दिव्यास्त्रों को व्यर्थ कर डाला था।

को जला कर भस्म कर डालेगी। तदनन्तर अर्जुन ने समस्त कुरुवंशियों की आँखों के सामने ही तीन बाणों से तीन टुकड़े कर उसे भूमि पर गिरा दिया। तब भीष्म ने स्वयं मरने अथवा अर्जुन को जीत लेने की कामना से, सुवर्णभूषित ढाल और तलवार हाथ में ली। ढाल तलवार लिये हुए भीष्म रथ से उतर ही रहे थे कि, फुर्तीले अर्जुन ने बाण मार कर उनके सौ टुकड़े कर डाले। अर्जुन के इस क्लिष्ट कर्म को देख, लोग बड़े विस्मित हुए। तदनन्तर धर्मराज ने अपनी सेना के योद्धाओं को आज्ञा दी कि, तुम बड़ी फुर्ती से भीष्म पर आक्रमण करो और ज़रा भी मत डरो। तब युधिष्ठिर के आदेशानुसार वे सब योद्धा गदाएँ, तोमर, प्रास, पट्टिश, धनुष, बाण तथा अन्य बढ़िया आयुधों को ले और सिंहनाद करते हुए भीष्म की ओर दौड़े। हे राजन्! आपके समस्त पुत्र भीष्म के विजय के लिए उनकी रक्षा करने को, सिंहनाद करते हुए, पाण्डवों की सेना की ओर झपटे। इस युद्ध के दसवें दिन भीष्म और अर्जुन की भिडन्त होने पर आपकी सेना और पाण्डवों की सेना में घोर संग्राम हुआ। दोनों ओर के योद्धा परस्पर बाणप्रहार से पीड़ित होने लगे। जैसे समुद्र का गङ्गा के साथ समागम होने पर क्षण भर में जिधर देखो उधर ही जल ही जल देख पड़ता है, वैसे ही समरभूमि में जहाँ तक दृष्टि जाती वहाँ तक सैनिक ही सैनिक देख पड़ते थे। उस समय भीष्म के समस्त मर्मस्थान अर्जुन के बाणों से घायल हो चुके थे तिस पर भी भीष्म ने पाण्डवों की सेना के दस हज़ार योद्धा मार डाले। तब धनुर्धर अर्जुन अपनी सेना के आगे जा, कौरवों की सेना को छिन्न भिन्न करने लगे। उस समय हम लोग अर्जुन के तीक्ष्ण बाणों से विद्ध हो कर भाग खड़े हुए। सौवीर, कितव, प्राच्य, प्रतीच्य, मालव, अभीषाह, शूरसेन, शिवि, वशाति, शाल्व, अम्बष्ठ और केकय आदि देशों के योद्धाओं के बाण से पीड़ित हो भीष्म को छोड़ और कौरव सैनिक भाग खड़े हुए। तो भी भीष्म पितामह अर्जुन आदि का चीत्कार भीष्म के रथ के निकट सुनायी पड़ा। हे राजन्! भीष्म ने सैकड़ों

सहस्रों योद्धाओं को मार डाला, अतः उनके शरीर पर दो अंगुल भी चाम ऐसा न था जो घायल न हो। क्योंकि अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से भीष्म का रोम रोम वेध डाला था, सो सूर्यास्त के समय, आपके पुत्रों के सामने ही भीष्म पितामह पूर्व को सिर और पश्चिम को पैर कर, रथ से नीचे गिर पड़े।

हे राजन्! जिस समय भीष्म जी रथ के नीचे गिरे, उस समय आकाश-स्थित देवताओं ने और भूमिस्थित राजाओं ने बड़ा ही हल्ला मचाया। भीष्म का पतन देख हमारी ओर के समस्त योद्धा हताश हो गये। इन्द्र के वज्र की तरह समस्त धनुर्धरों के ध्वजा रूपी भीष्म जी धड़ाम से भूमि पर गिर पड़े; किन्तु उनके शरीर भर में बाण चुभे हुए थे। अतः उनका शरीर पृथिवी से न छू कर, ऊपर ही रहा। पुरुषश्रेष्ठ महाधनुर्धर भीष्म जी जब रथ से गिर कर शरशय्या पर सो गये तब उनके शरीर में दिव्य भाव सञ्चार हुआ। उस समय आकाश से मेघों ने जलवृष्टि की और पृथिवी काँपने लगी। उस समय भीष्म ने जब देखा कि, सूर्य दक्षिणायन हैं, तब वे सावधान हुए और साथ ही चिन्तित भी। उस समय चारों ओर से उन्हें यह देववाणी सुनायी पड़ी कि, दक्षिणायन सूर्य में गङ्गानन्दन, एवं धनुर्धरों में श्रेष्ठ भीष्म प्राणत्याग क्यों करते हैं? इस देववाणी को सुन भीष्म ने कहा—मैं जीवित हूँ। रथ से गिर कर भी और शरशय्या पर लेटे हुए कुरुपितामह भीष्म उत्तरायण काल की प्रतीक्षा करने लगे। भीष्म के अभिप्राय को जान कर, हिमालयनन्दिनी गङ्गा ने हंस रूप में महर्षियों को भीष्म के निकट भेजा। मानसरोवर के हंसों का रूप धारण किये हुए वे महर्षि आकाशमार्ग से वहाँ जा पहुँचे जहाँ भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े हुए थे। उन महर्षियों ने भीष्म को शरशय्या पर पड़ा हुआ देखा, तदनन्तर उन समस्त मनीषी महर्षियों ने गङ्गानन्दन की प्रदक्षिणा की। फिर दक्षिणायन काल देख वे सब चिन्तित हो आपस में कहने लगे—भीष्म बड़े धर्मात्मा और महात्मा हैं। अतः दक्षिणायन में प्राणत्याग क्यों करते

हैं ? हंस रूपधारी वे ऋषि दक्षिण को मुख किये खड़े हुए ये बातें कह रहे थे। तब मन ही मन सोच विचार कर, महाबुद्धिमान् शान्तनुनन्दन भीष्म जी उनसे बोले—जब तक सूर्य दक्षिणायन हैं, तब तक मैं कभी भी प्राण-त्याग न करूँगा। यह मैं पहले ही निश्चय कर चुका हूँ। हे हंसो! मैं तुमसे सत्य सत्य कहता हूँ जब उत्तरायण काल आवेगा, तब ही मैं निज सनातन स्थान को जाऊँगा। मैं उत्तरायण काल की प्रतीक्षा करता हुआ, अपने प्राणों को इसी शरीर में धारण किये रहूँगा और मरूँगा नहीं। मुझे अपने पिता से इच्छामरण का वरदान मिला हुआ है।

हंसों से यह कह भीष्म जी शरशय्या पर सो रहे। जब कौरवों के शिखर रूप परमतेजस्वी भीष्म पितामह रण में इस प्रकार गिर गये, तब पाण्डवों और सृञ्जयों ने मिल कर उच्च स्वर से हर्षनाद किया। हे भरतसत्तम! उस समय आपके पुत्रों की बुद्धि में यह बात न आयी कि अब क्या करें। वे सब मोहित से हो गये। कृपाचार्य, दुर्योधन, लंबी लंबी साँसे ले रुदन करने लगे। वे मारे विषाद के कितनी ही देर अचेत से रहे। हे राजन्! वे बड़े विचार में पड़ गये। उनमें अब और लड़ने की रुचि ही न रह गयी, वे पाण्डवों की ओर बढ़ ही न सके। उन्हें ऐसा जान पड़ा मानों किसी अदृश्य शक्ति द्वारा उनके पैर जकड़ दिये गये हों। जब संग्राम में अवध्य भीष्म जी गिर पड़े, तब सब को यह बात भास गयी कि, अब कौरव-राजाओं का नाश हो कर ही रहेगा। हमारी ओर के बड़े बड़े शूरमा मारे गये, जो बचे वे तीक्ष्ण बाणों से घायल थे। अर्जुन से सर्वथा पराजित हो, हम लोग यही न समझ सके कि हम अब करें भी तो क्या करें? उधर विजयी पाण्डवों ने समझा कि हमें परलोक का श्रेष्ठ स्थान प्राप्त हो गया। अतः वे बड़े परिघों को ले, बड़े बड़े शङ्ख बजाने लगे।

हे राजन्! इसी प्रकार सोमक और पाञ्चाल भी अत्यन्त हर्षित हो, सहस्रों तुरहियाँ बजाने लगे। महाबली भीमसेन खंभ ठोंक सिंहनाद करने लगा। जिस समय महाबली गङ्गानन्दन गिरे, उस समय उभयपक्ष

के योद्धाओं ने हथियार रख दिये और वे बड़े चिन्तित हो गये। कितने ही फूट फूट कर रोने लगे और कितने ही मूर्छित हो गिर पड़े। कितने ही क्षात्रधर्म की निन्दा करने लगे। कितने ही भीष्म की प्रशंसा करने लगे। कितने ही भीष्म पितामह का गुणानुकीर्तन करने लगे। शान्तनुपुत्र बुद्धिमान् भीष्म उत्तरायण काल की प्रतीक्षा करते हुए उपनिषद्-कथित, योग का आश्रय ले, समय व्यतीत करने लगे।

एक सौ बीस का अध्याय

अर्जुन और भीष्म का तकिया

धृतराष्ट्र ने कहा—हे सञ्जय! जिन भीष्म जी ने पिता के लिये आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया, उन देवोपम पराक्रमी भीष्म पितामह के न रहने पर, मेरे योद्धाओं की क्या दशा हुई? द्रुपदसुत शिखण्डी के प्रति घृणा प्रकट कर जब उसका वध करने को भीष्म जी ने अस्त्र शस्त्र नहीं चलाये, मैंने तो तभी समझ लिया था, अब अनुयायियों सहित कौरवों का, पाण्डवों के हाथ से बचना कठिन है। मुझे आज अपनी दुर्बुद्धि के कारण अपने पिता भीष्म के मारे जाने का वृत्तान्त सुनना पड़ा है। इससे बढ़ कर दुःख मेरे लिये और क्या हो सकता है? हे सञ्जय! निश्चय ही मेरा हृदय पत्थर का है। यदि ऐसा न होता, तो इस दुःखदायी समाचार को सुन मेरे हृदय के सौ टुकड़े अवश्य हो जाते। हे सञ्जय! अब तुम मुझे यह सुनाओ कि कुरुवृद्ध भीष्म ने घायल होने के बाद क्या क्या किया? युद्ध में भीष्म के मारे जाने की बात बारंबार नहीं सुनी जाती। पूर्वकाल में जमदग्निनन्दन परशुराम दिव्यास्त्रों का प्रयोग कर के भी जिनका वध न कर सके; हा! वे ही भीष्म युद्ध में द्रुपदनन्दन शिखण्डी के अस्त्रों से मारे गये।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! कुरुपितामह भीष्म ने सन्ध्या समय घत-विक्षत हो, आपके पुत्रों को विषादित और पाण्डवों को आनन्दित करते हुए और पृथिवी का स्पर्श न कर, शरशय्या पर शयन किया। वे जिस समय, बाणों से विद्ध हो रथ से नीचे गिरे उस समय समस्त प्राणधारियों ने हाहाकार किया। जब समरविजयी भीष्म जी दोनों सेनाओं के बीच सीमावर्त्ती वृक्ष की तरह पड़े थे, हे राजन्! तब दोनों सेनाओं के सैनिक भयभीत हो गये। क्योंकि यदि भीष्म पितामह जीवित रहते, तो सम्भव था वे दोनों पक्षों में समझौता करवा देते; किन्तु अब तो समझौते की कुछ भी आशा नहीं रही। इसी विचार के मन में उदय होने के कारण योद्धागण भयभीत हो गये। जिस समय कवच के विदीर्ण होने पर और रथ की ध्वजा के कटने पर, भीष्म पितामह भूमि पर गिर पड़े, उस समय कौरव और पाण्डव उनके चारों ओर एकत्रित हो गये। आकाश में अन्धकार छा गया था। सूर्य अस्त हो गये थे। शान्तनुनन्दन भीष्म के मारे जाने पर पृथिवी में महाघोर शब्द होने लगा। जब इच्छानुसार मृत्यु पाने के लिये भीष्म जी ने शरशय्या पर शयन किया तब सब लोग आपस में कहने लगे—यह पुरुषश्रेष्ठ और ब्रह्मज्ञ, ब्रह्मज्ञों की गति है। ऋषि, सिद्ध और चारण लोग भरतकुल सत्तम भीष्म को शरशय्या पर शयन करते देख परस्पर कहने लगे—इन्होंने अपने पिता राजा शान्तनु को कामार्त्त देख, आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने की प्रतिज्ञा कर, उस प्रतिज्ञा का पूर्णरूप से पालन किया था। जब भीष्म पितामह घायल हो रथ से गिरे, तब आपके पुत्र चिन्तित हुए और क्या करना चाहिये—सो निश्चय न कर सके। उन लोगों का मुख मलिन पड़ गया और तेज नष्ट हो गया। मारे लज्जा के उन सब ने अपने सिर नीचे कर लिये। उधर समरविजयी पाण्डवों ने सुवर्ण-भूषित शङ्ख बजाये तथा अन्य समस्त बाजे बजवाये। उस समय महाबली कुन्तीपुत्र भीमसेन को बलपूर्वक कौरवसेना के योद्धाओं का संहार करते मैंने देखा। कौरवों को चेत न था। कर्ण और दुर्योधन बारंबार लंबी लंबी

साँसें लेते चिन्तित हो रहे थे। भीष्म को शरशय्या पर शयन करते देख, समस्त कौरव पक्षीय सैनिक हाहाकार मचाने लगे। आपका पुत्र दुःशासन भीष्म को शरशय्या-शायी देख दौड़ कर द्रोण के निकट गया। दुर्योधन के आदेशानुसार दुःशासन ने भीष्म की रखवाली के लिये चारों ओर पंक्तिबद्ध सैनिकों को खड़ा कर दिया था। तदनन्तर वह द्रोण के निकट गया था। दुःशासन को आचार्य द्रोण के निकट आता हुआ देख, कुरुसेना के समस्त योद्धा, उसकी बातें सुनने को उसे घेर कर खड़े हो गये। तब दुःशासन ने द्रोण से भीष्म के शरशय्याशायी होने का समस्त वृत्तान्त कहा। दुःशासन के मुख से इस अप्रिय संवाद को सुनते ही आचार्य द्रोण अचेत हो गये। कुछ समय बाद सचेत हो भरद्वाज-नन्दन द्रोणाचार्य ने अपनी अधीनस्थ सेना के सैनिकों को लड़ाई बंद करने का आदेश दिया। यह देख पाण्डवों ने घुड़सवार हलकारे भेज, अपनी समस्त सेना को युद्ध बंद करने की आज्ञा भिजवायी तब सब सैनिकों ने युद्ध बंद किया। समस्त सेनाओं के युद्ध से निवृत्त होने पर, समस्त राजाओं ने अपने अपने कवच उतार कर रख दिये और वे सब भीष्म पितामह के निकट जमा हुए। वे सब क्षत्रिय योद्धा उस समय भीष्म के समीप वैसे ही जमा हो गये, जैसे समस्त देवता प्रजापति ब्रह्मा के निकट आ खड़े होते हैं।

पाण्डव और कौरव, भीष्म पितामह को शरशय्या-शायी देख, उनको प्रणाम कर, उनके सामने खड़े हो गये। तब धर्मात्मा शान्तनुनन्दन भीष्म ने उन सब से यह कहा—हे महाभागो! तुम भले आये। मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। हे देवोपम शूरवीरपुरुषो! तुम सब लोगों को देख मैं परम सन्तुष्ट हूँ। उस समय भीष्म का सिर शरशय्या के नीचे लटक रहा था। सो वे समस्त समागत जनों का इस प्रकार वाणी द्वारा स्वागत कर, अपने चारों ओर आपके पुत्रों को खड़ा देख, उनसे बोले—मेरा सिर नीचे लटक रहा है, सो तुम लोग सिर तले तकिया लगा दो। यह सुन आपके पुत्र महीन वस्त्र के बड़े कोमल तकिये ले आये; किन्तु उन तकियों को अपने

सिर तले रखना अस्वीकार कर, भीष्म जी ने मुसक्या कर कहा—हे राजा लोगो ! ये तकिये इस वीरोचित शय्या के लिये उपयुक्त नहीं। उन लोगों से यह कह भीष्म ने उन सब के बीच खड़े हुए महाभुज, महारथी पाण्डु-नन्दन अर्जुन से कहा—हे महाबाहो ! तकिये बिना मेरा सिर लटक रहा है अतः तुम मेरे सिर के उपयुक्त तकिये का आयोजन करो।

सञ्जय ने कहा—इस पर अर्जुन ने भीष्म पितामह को प्रणाम किया। फिर आँखों में आँसू भर अपने धनुष पर रोदा चढ़ा उनसे कहा—हे शस्त्रधारियों में अग्रणी पितामह ! मैं आपका सेवक यहाँ उपस्थित हूँ। कहिये मुझे क्या आज्ञा है ?

अर्जुन का अभिप्राय समझ शान्तनुनन्दन भीष्म ने कहा—हे अर्जुन ! इस शरशय्या के योग्य तकिया मेरे सिर तले लगा दे। हे अर्जुन ! तू समस्त धनुर्धरों में सर्वश्रेष्ठ और समर्थ है। तू क्षात्र धर्म का ज्ञाता है, बुद्धिमान है और सद्गुणों से सम्पन्न है। यह सुन अर्जुन ने कहा बहुत अच्छा और वे तदनुसार कार्य करने को उद्यत हुए। उन्होंने भीष्म पितामह की अनुमति के अनुसार तीन नतपर्व—तीक्ष्ण बाण अपने धनुष पर रखे, फिर उन्हें अभि-मंत्रित कर, बड़े वेग से छोड़ा। उन बाणों से भीष्म का सिर वेध कर उसे ऊँचा कर दिया। सव्यसाची अर्जुन मेरे अभिप्राय को समझ गया—यह देख, धर्मज्ञ एवं धर्मात्मा भीष्म सन्तुष्ट हो गये, साथ ही ऐसा उपयुक्त तकिया लगा देने के लिये उन्होंने अर्जुन की सराहना की। तदनन्तर समस्त भरतवंशियों की ओर देख कर, वे मित्रों का हर्ष बढ़ाने वाले और योद्धाओं में सर्वश्रेष्ठ अर्जुन से बोले—हे अर्जुन ! तूने मुझे शरशय्या के योग्य ही तकिया दिया है। यदि तू इसके विपरीत करता, तो मैं कुपित हो तुझे शाप देता। हे महाबाहो ! निज धर्म पर दृढ़ रहने वाले क्षत्रिय को इसी तरह शरशय्या पर शयन करना उचित है। अर्जुन से इतना कह चुकने के बाद भीष्म जी ने उन समस्त राजाओं, राजपुत्रों और पास ही खड़े पाण्डवों से कहा—अर्जुन ने मेरे सिर के नीचे जो तकिया लगाया है—उसे

तुम सब देखो। जब तक सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण न होंगे तब तक मैं इसी प्रकार इस शरशय्या पर शयन करता रहूँगा। उस समय जो राजा लोग मेरे पास आवेंगे वे ही मेरी महायात्रा देख सकेंगे। जब शीघ्रगामी सात घोड़ों से युक्त रथ पर सवार हो, भुवन-भास्कर वैश्रवणी (उत्तर) दिशा की ओर जाँयगे, तब मैं अपने इस शरीर को वैसे ही त्याग दूँगा, जैसे एक मित्र अपने प्यारे दूसरे मित्र को त्याग देता है। तुम लोग मेरे चारों ओर गहरी खाई खोद दो। मैं असंख्य बाणों से बिधा हुआ, यहाँ पड़ा पड़ा ही सूर्य का आराधन करूँगा। हे राजाओं! अब तुम वैरभाव को त्याग कर, इस लड़ाई को बंद कर दो।

सञ्जय ने कहा—हे राजन्! इतने में दुर्योधन के बुलवाये हुए चतुर जर्राह बाण निकाल घावों पर दवा लगाने के लिये वहाँ आ उपस्थित हुए। उन जर्राहों को देख, गङ्गानन्दन ने आपके पुत्र दुर्योधन से कहा—इन जर्राहों को धनादि प्रदान से सम्मानित कर विदा कर दो। क्योंकि इस दशा में पहुँच, मैं इन जर्राहों को क्या करूँगा? मैं तो क्षात्र धर्म द्वारा प्रशंसित परमगति को प्राप्त कर चुका हूँ। हे राजाओं! मेरा यह कर्त्तव्य नहीं कि मैं शरशय्या पर पोढ़ा पोढ़ा जर्राहों से अपना इलाज करवाऊँ। हे राजन्यवर्ग! जब मैं शरीर त्याग दूँ, तब तुम इन बाणों सहित मेरे शरीर का अग्नि-संस्कार कर देना। भीष्म पितामह के इन वचनों को सुन दुर्योधन ने उन जर्राहों को धनादि प्रदान कर, सम्मान पूर्वक विदा कर दिया। वहाँ उपस्थित देश देशान्तरों के राजा लोग, भीष्म पितामह की ऐसी धर्मनिष्ठा देख, बहुत विस्मित हुए। आपके पिता के सिर के नीचे ऐसा विलक्षण तकिया लगा देख, पाण्डवों सहित उन राजाओं ने तीन बार भीष्म की परिक्रमा की, फिर उनकी रक्षा के लिये पहरेदार नियुक्त कर और पितामह को प्रणाम कर वे वहाँ से चल दिये। वे उस समय बड़े विकल हो रहे थे और उस समय की परिस्थिति पर विचार करते हुए सन्ध्या के समय वे अपने अपने शिविरों में जा पहुँचे। उस समय वे सब रुधिर से सने हुए थे। पाण्डव हर्षित हो अपने

शिविर में बैठे हुए थे और भीष्म जी के मारे जाने पर बड़ा आनन्द मना रहे थे। इतने ही में श्रीकृष्ण वहाँ आ पहुँचे और धर्मराज से बोले— धर्मराज! धन्य भाग जो आज भीष्म मारे गये और तुम विजयी हुए। सचमुच इन महारथी एवं सत्यप्रतिज्ञ भीष्म को कोई भी मनुष्य नहीं मार सकता था। मनुष्य ही क्यों, इन समस्त-शस्त्र-पार-दर्शी भीष्म को देवता भी नहीं जीत सकते थे; किन्तु आप जैसे दृष्टिमात्र से भस्म कर देने वाले शत्रु के पंजे में फंस वे, आपके नेत्राग्नि से जल कर भस्म हो गये हैं।

जनार्दन श्रीकृष्ण के इन वचनों को सुन कर, युधिष्ठिर ने उनसे कहा— हे कृष्ण! आपकी जिस पर कृपा होती है, उसका विजय होता ही है और जिस पर आप कुपित होते हैं, उसका पराजय हुआ करता है। हम भक्तों को अभय प्रदान करने वाले और हम लोगों की रक्षा करने वाले आप ही हैं। हे केशव! आप समर में जिनकी सदैव रक्षा करें और सदा जिनके हित में तत्पर रहें, उनके विजयी होने में कुछ भी आश्चर्य नहीं है। जो सर्वथा आप ही के सहारे रहते हैं, उनकी संख्या सहस्रों पर ही क्यों न हो, वे यदि विजयी हों तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जब युधिष्ठिर ने इस प्रकार कहा, तब श्रीकृष्ण ने मुसक्या कर यह कहा—हे राजसत्तम! ऐसी बातें कहना आप ही को शोभा देता है।

एक सौ इक्कीस का अध्याय

बाणगङ्गा का प्राकट्य

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! जब रात बीती और सवेरा हुआ, तब पाण्डवों और आपके पुत्रों सहित समस्त राजा लोग भीष्म के निकट उनके दर्शन करने गये। वीर-सेज पर पड़े भीष्म को प्रणाम कर, वे सब लोग उनके आगे खड़े हो गये। सहस्रों कन्याएं अबीर, चन्दन, खीलें, पुष्पमालाएं लिये हुए वहाँ पहुँचीं और भीष्म जी का इन पदार्थों से पूजन किया।

जैसे प्राणी मात्र सूर्य का दर्शन किया करते हैं, वैसे ही क्या बूढ़े क्या वारे, क्या स्त्री और क्या पुरुष-सभी दर्शन करने को आये। युद्ध बंद कर, पाण्डव एवं कौरव अपने कवच उतार और हथियार रख, शत्रु-संहारकारी भीष्म के चारों ओर एकत्र हो, यथास्थान बैठ गये। जैसे आकाशस्थित सूर्य मण्डल शोभायमान जान पड़ता है, वैसे ही बहुत से राजाओं से संयुक्त और समरभूमि में लगी हुई भरतवंशियों की सभा भीष्म जी से शोभायमान जान पड़ने लगी। देवराज इन्द्र की उपासना करने वाले देवताओं की तरह, उन राजाओं की शोभा जान पड़ती थी जो उस समय गङ्गानन्दन भीष्म की उपासना करने को वहाँ एकत्रित हुए थे। यद्यपि बाणों के प्रहार से शरीर में लगे हुए घावों में बड़ी जलन पड़ी हुई थी, तथापि भीष्म जी उस वेदना को साँप की तरह फुसकारें छोड़ते हुए बड़े धैर्य से सह रहे थे। जिनका शरीर बाणों के घावों से दग्ध सा हो रहा था और घावों की वेदना से जो रह रह कर बेहोश हो जाते थे, उन भीष्म ने राजाओं की ओर देख, उनसे कहा—"जल पिलाओ।" यह सुन वे राजा लोग जल लाने को दौड़े और विविध प्रकार के भोजन तथा शीतल जल से भरे घड़े ला कर, वहाँ रख दिये। उस जल को देख भीष्म ने कहा—इन भोगे हुए पदार्थों को मैं अब नहीं भोग सकता। मैं तो अब मृत्युलोक से बाहिर हो, शरशय्या पर शयन कर रहा हूँ। मुझे तो केवल अब सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा है।

हे राजन्! यह कह उन राजाओं की मूर्खता की निन्दा करते हुए भीष्म जी ने कहा—अर्जुन को मेरे पास बुलाओ। यह सुनते ही अर्जुन झट उनके सम्मुख जा खड़ा हुआ। उसने पितामह को प्रणाम किया और हाथ जोड़, विनम्र भाव से खड़े हो कर वह उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। अर्जुन को इस प्रकार अपने निकट विनम्र भाव से खड़ा देख, हर्षित हो भीष्म ने कहा—मैं तुम्हारे बाणों से बहुत घायल हो गया हूँ। मेरे शरीर में जलन पड़ी हुई है। मर्मस्थलों में बड़ी पीड़ा हो रही है। मेरा मुख सूखा

जाता है। मैं वेदना से विकल हो रहा हूँ। अतः हे अर्जुन! तू मुझे जल दे। तू शक्तिमान और धनुर्धर है। तू ही मुझे मेरे उपयुक्त जलपान करवा सकता है। यह सुन वीर्यवान अर्जुन झटपट अपने रथ पर सवार हुआ और गाण्डीव धनुष को टंकोरा। बिजली की कड़क की तरह गाण्डीव धनुष के रोदे के टंकार-शब्द को सुन समस्त राजा और अन्य लोग डर गये। तदनन्तर रथि-श्रेष्ठ अर्जुन ने समस्त शस्त्रधारियों के मान्य एवं शरशय्या-शायी पितामह भीष्म की रथ पर चढ़े ही चढ़े प्रदक्षिणा की। तदनन्तर एक चमचमाता बाण निकाला। फिर उसे मंत्र से अभिमंत्रित कर, उस पर्जन्यास्त्र को धनुष पर रख, भीष्म की दहिनी ओर भूमि में मारा। उस बाण के भूमि में घुसते ही पृथिवी से निर्मल, पवित्र एवं शीतल अमृतोपम जल की धारा निकलने लगी। उस शीतल जल की धारा से अर्जुन ने दिव्यकर्मा एवं पराक्रमी कुरु-सत्तम भीष्म जी को तृप्त किया।

इस प्रकार पराक्रम प्रदर्शित करने वाले धनञ्जय के इस काम से वहाँ उपस्थित समस्त राजागण विस्मित हुए और बीभत्सु के इस अमानुषी पराक्रम को देख कर, वे सब कौरव, जड़ानी हुई गाय की तरह थर थर काँपने लगे। अर्जुन के इस अमानुषिक कर्म को देख अन्य समस्त राजा भी मारे भय के काँप उठे और चारों ओर शङ्ख नगाड़े बजाने लगे। शान्तनु-पुत्र भीष्म ने तृप्त हो, सब क्षत्रियों के आगे अर्जुन की प्रशंसा की और यह कहा—हे कुरु-वंश-आनन्द-वर्द्धन! हे अत्यन्त तेजस्वी महाबाहु अर्जुन! तुम्हारे लिये यह कोई अनहोना काम नहीं है। तुम पुरातन ऋषि हो। यह बात देवर्षि नारद ने मुझसे कही थी। जिस काम को समस्त देवताओं सहित इन्द्र भी नहीं कर सकते, उसे तुम श्रीकृष्ण की सहायता से पूर्ण कर सकोगे। ज्ञानी पुरुष तुम्हें समस्त क्षत्रियों का नाश करने वाला जानते हैं। तुम इस धराधाम के समस्त धनुर्धरों में मुख्य हो और सर्वश्रेष्ठ पुरुष हो। इस पृथिवीमण्डल पर जिस प्रकार समस्त जीव-धारियों में मनुष्य श्रेष्ठ है, समस्त पक्षियों में जैसे गरुड़ श्रेष्ठ है और समस्त

सरिताओं में जैसे समुद्र श्रेष्ठ है, वैसे ही समस्त धनुर्धरों में तुम श्रेष्ठ हो। जैसे तेजस्वियों में सूर्य, पर्वतों में हिमालय और वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है, वैसे ही तुम धनुर्धरों में श्रेष्ठ हो। मैं विदुर, आचार्य द्रोण, जमदग्नि-नन्दन परशुराम, जनार्दन श्रीकृष्ण और सञ्जय आदि ने अलग अलग दुर्योधन को समझा कर, इस युद्ध को रोकना चाहा था; किन्तु दुर्बुद्धि दुर्योधन ने, बुद्धि-हीन पुरुष की तरह, हम लोगों के कथन पर ध्यान न दिया। क्योंकि उसकी श्रद्धा किसी के कथन पर है ही नहीं। वह शास्त्रप्रतिकूल आचरण करता है, अतः वह शीघ्र ही भीम द्वारा मारा जा कर भूशायी होगा।

भीष्म के इन वचनों को सुन दुर्योधन दुःखी हुआ और उसका मन उदास हो गया। दुर्योधन को दुःखी देख, भीष्म ने कहा—दुर्योधन! दीन भावको त्याग और मैं जो कहूँ, उसे सुन। धीमान् अर्जुन ने दिव्यगन्ध मिश्रित अमृतोपम जो जलधारा प्रकट की वह तुम देख ही चुके। क्या इस धराधाम पर कोई ऐसा भी अन्य पुरुष है, जो इस प्रकार का कर्म कर सके। आग्नेय, वारुण, सौम्य, वायव्य, वैष्णव, ऐन्द्र, पाशुपत, ब्राह्म और प्राजापत्य तथा विधाता, त्वष्ठा और सविता के सम्पूर्ण अस्त्र—इस धराधाम पर श्रीकृष्ण और अर्जुन को छोड़ और कोई नहीं जानता। हे दुर्योधन! जिस महात्मा का तुमने ऐसा अलौकिक कर्म अपनी आँखों से देखा है, उसे तुम रण में क्योंकर परास्त कर सकते हो? अतः अब यही उचित है कि, रणसम्बन्धी समस्त-कला-विशारद अर्जुन के साथ तुम्हारी शीघ्र सन्धि हो जाय। हे कुरु-सत्तम! जब तक श्रीकृष्ण के कुपित होने के पूर्व ही तुम पाण्डवों के साथ सन्धि कर लो। अर्जुन द्वारा अपनी समस्त सेना के भस्म किये जाने के पूर्व ही तुम पाण्डवों के साथ सन्धि कर लो। जब तक तुम्हारे शेष सहोदर भ्राता तथा अन्य बहुत से राजा इस युद्ध में जीवित हैं, तब तक तुम सन्धि कर लो। राजा युधिष्ठिर क्रोधपूरित नेत्रों से तुम्हारी सेना को भस्म करें, इसके पहले ही तुम पाण्डवों के साथ सन्धि कर लो। भीमसेन, नकुल और सहदेव द्वारा अपनी समस्त सेना का संहार किये जाने के पूर्व ही तुम पाण्डवों

से सन्धि कर लो। मेरी अब अन्तिम इच्छा यही है। हे वत्स ! तुम पाण्डवों के साथ मेल कर शान्ति अवलम्बन करो। मेरी मृत्यु के साथ ही इस युद्ध की समाप्ति होनी चाहिये। हे पापरहित ! मैंने जो बातें तुमसे कहीं हैं, उन्हें मान लेना तुम्हारा कर्त्तव्य है। क्योंकि मेरी समझ में इसीमें तुम्हारे लिये और इस वंश के लिये भलाई है। हे वत्स ! क्रोध त्याग कर तुम पाण्डवों से मेल कर लो। अर्जुन के यहाँ तक के कर्म के साथ ही युद्ध की समाप्ति कर दो। भीष्म के निपात के साथ ही अब तुम लोगों में मैत्री स्थापित हो जाय और जो क्षत्रिय युद्ध में मारे जाने से बचे हुए हैं, वे जीवित रहें। अतः तुम हर्षित हो पाण्डवों को आधा राज्य दे डालो। धर्मराज युधिष्ठिर हस्तिनापुर चले जाँय। हे कुरुराज ! जब ऐसा होगा तभी समस्त क्षत्रियों में तुम पापी और मित्रद्रोही कह कर बदनाम न होगे। मैं चाहता हूँ कि, मैं मरने के पूर्व समस्त लोगों में शान्ति स्थापित हुई देख लूँ। राजा लोग प्रेमपूर्वक अपने अपने स्थानों को चले जाँय। पिता पुत्र को, भांजे मामा को और भाई भाई को जीवित देखें। यदि मेरे समयोचित इन वचनों के अनुसार निज नीच बुद्धि के वशवर्ती हो, तुम काम न करोगे, तो तुम्हें पीछे पछताना पड़ेगा। मैंने जो कुछ कहा है सो तुमसे यथार्थ ही कहा है। इसमें बनावट ज़रा भी नहीं है। अतः तुम यहाँ तक ही युद्ध कर, शान्त हो जाओ और लड़ाई बंद कर दो।

सञ्जय ने कहा—गंगानन्दन भीष्म ने समस्त क्षत्रियों के सामने दुर्योधन को इस प्रकार समझाया। यद्यपि भीष्म पितामह, अपने समस्त मर्मस्थलों के तीक्ष्ण बाणों से क्षत विक्षत होने के कारण अत्यन्त पीड़ित हो रहे थे; तथापि उन्होंने उस पीड़ा को सहन कर और सम्हल कर ये सब बातें कहीं थीं। उनके इन हितकर, एवं धर्म-अर्थ-युक्त उत्तम वचनों को सुन कर, दुर्योधन की उनमें वैसे ही रुचि न हुई ; जैसे कालग्रस्त रोगी को दवा में रुचि नहीं होती।

दशम दिवस का अवसान

एक सौ बाईस का अध्याय

कर्ण और भीष्म का वार्त्तालाप

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र! तदनन्तर शान्तनु-नन्दन भीष्म चुप हो गये और समस्त क्षत्रिय योद्धा लौट कर अपने अपने शिविरों में चले गये। इस बीच में कर्ण ने भीष्म के सांघातिक चोटों का हाल सुना। इससे उसे बड़ा विस्मय हुआ और वह तुरन्त उनके निकट पहुँचा। कर्ण ने जा कर देखा कि भीष्म जी शरशय्या पर लेटे हुए हैं। आँखें बंद कर और ध्यान में मग्न भीष्म को शरशय्या पर शयन करते देख कर्ण के नेत्र सजल हो गये। महाकान्तिमान कर्ण ने पितामह के चरण छू कर और गद्गद वाणी से कहा—हे महाबाहो! हे भीष्म!! हे कुरुश्रेष्ठ!!! आप जिसे सदा द्वेष भरी दृष्टि से देखते रहे हैं। आपकी आँखों के आगे फिरने वाला वही मैं राधा का पुत्र कर्ण हूँ।

यह सुनते ही भीष्म ने भारी पलकों से ढके हुए पलकों को उठा कर, देखा। फिर वहाँ जो पहरेदार थे, उनको दूर हटवा दिया। फिर जैसे पिता पुत्र को हृदय से लगावे, वैसे ही गङ्गा-नन्दन भीष्म ने एक हाथ से कर्ण को छाती से लगा कर बड़े स्नेह से यह कहा—हे मेरे प्रतिद्वन्द्वी! यहाँ आ, यहाँ आ। तू कितनी ही बार मुझसे ईर्ष्या कर चुका है। सो यदि आज तू मेरे निकट न आता, तो तेरा मङ्गल न होता। तू कुन्ती का पुत्र है, राधा का नहीं। तेरा पिता अधिरथ सारथि नहीं है। मुझसे नारद जी ने कहा था कि तू तो सूर्यनन्दन है। फिर वेदव्यास जी ने भी यही बात मुझसे कही थी। अतः इसकी सत्यता में ज़रा सा भी सन्देह नहीं है। हे तात! मुझे तुझसे ज़रा सा भी द्वेष नहीं है। मेरी इस बात को तू सत्य मान। हे वत्स! तू निष्कारण ही सदैव पाण्डवों के साथ बैर करता था। अतः अनुचित मार्ग में जाने के तेरे उत्साह

को भङ्ग करने के लिये मैं तुझसे कटुवचन कहा करता था। हे सूतनन्दन! मेरी ऐसी बुद्धि होने का कारण तेरा उस राजा की सङ्गति है, जो तुझे उकसाया करता है। नीच की सङ्गति में रहते रहते, तेरा स्वभाव गुणियों से द्वेष रखने का हो गया है। इसीसे मुझे कौरवसभा में तुझसे अनेक बार कटुवचन कहने पड़े थे। यह मुझे भली भाँति विदित है कि तुझमें ऐसा पराक्रम है कि रण में शत्रु उसे सहन नहीं कर सकते। फिर तेरी ब्रह्मण्यता, शूरता और वदान्यता भी मुझे भली भाँति मालूम है। हे देवतुल्य! इन गुणों में तेरी बराबरी का इस धराधाम पर अन्य कोई मनुष्य नहीं है; किन्तु कौटम्बिक कलह रोकने के उद्देश्य ही से मैं तुझसे सदा कटुवचन कहा करता था। लक्ष्य वेधने में, दिव्यास्त्रों के प्रयोग में, हस्तलाघव में तो तू अर्जुन अथवा श्रीकृष्ण की बराबरी का है। हे कर्ण! काशीपुर में जा कर, तूने अकेले ही कुरुराज को राजकुमारी दिलाने के लिये सहस्रों राजाओं का युद्ध में संहार किया था। हे युद्ध में प्रख्यात! कभी किसी से न दबने वाला राजा जरासन्ध भी तेरा सामना न कर सका। तू ब्राह्मणप्रेमी, निज बल पर निर्भर हो युद्ध करने वाला तेजस्विता और बल में देवोपम है। रण में तू सर्वश्रेष्ठ पराक्रम दिखलाने वाला है। पहले मैं निश्चय ही तेरे ऊपर कुपित था; किन्तु अब मैं तेरे ऊपर क्रुद्ध नहीं हूँ। जो होनहार था वही हुआ है पुरुषार्थ से कोई भी भाग्य को पलट नहीं सकता। हे शत्रुनाशन महाबाहो! पाण्डवों का तू सहोदर भ्राता है। अतः यदि तेरी इच्छा मुझे प्रसन्न करने की है तो तू उन लोगों से मेल कर ले। हे सूर्यनन्दन कर्ण! मैं चाहता हूँ कि मेरी मृत्यु के साथ ही साथ, पाण्डवों के साथ तुम लोगों की शत्रुता की भी इतिश्री हो जाय, जिससे पृथिवीमण्डल के समस्त राजा लोग जीवित रह कर, निज निज स्थानों को जा सकें।

कर्ण ने कहा—हे परमतेजस्विन्! हे महाबाहो! हे पितामह! आपका कथन सब सच है और जो बातें आपने कहीं, वे मुझे अवगत हैं। मैं सूतपुत्र नहीं हूँ, कुन्ती का पुत्र हूँ। इसमें ज़रा सा भी सन्देह नहीं है;

किन्तु कुन्ती ने जब मुझे त्याग दिया, तब सारथि अधिरथ ने मुझे पालपोस कर बड़ा किया। फिर मैं आज तक दुर्योधन का ऐश्वर्य भोग रहा हूँ। उसके ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए, मैंने उसके समक्ष जिस कार्य को करने की प्रतिज्ञा की है, उस प्रतिज्ञा से मैं च्युत नहीं हो सकता। बहुत सी दक्षिणा देने वाले हे देवव्रत भीष्म जी! जिस प्रकार वासुदेव श्रीकृष्ण पाण्डवों की रक्षा करने में स्थिरप्रज्ञ हैं। उसी प्रकार मैं भी दुर्योधन के पीछे धन, पुत्र, स्त्री, यश आदि समस्त पदार्थों को उत्सर्ग करने के लिये तैयार हूँ। क्योंकि क्षत्रिय के लिये बीमार हो चारपाई पर पड़े पड़े मरना शोभा नहीं देता और न इससे ऐसे क्षत्रिय की भलाई ही होती है। विशेष कर, मैं दुर्योधन का पक्ष ग्रहण कर, पाण्डवों को चिढ़ा चुका हूँ। जो होनहार है. उसे कोई टालना चाहे तो वह टाली नहीं जा सकती। ऐसा कौन पुरुष है जो अपने पुरुषार्थ से दैवी घटनाओं को रोक दे। हे पितामह! आप पृथिवी के नाशसूचक दुर्निमित्तों (अपशकुनों) को बीच सभा में सुना ही चुके हैं। मुझे भी यह अच्छी तरह मालूम है कि. कोई भी मनुष्य श्रीकृष्ण और अर्जुन को जीत नहीं सकता। तो भी मेरा मन कहता है कि यदि मैं इनके साथ लड़ूँ तो मैं इनको जीत लूँगा। पाण्डवों के साथ जो शत्रुता हो गयी है, वह दारुण शत्रुता अब छोड़ने पर भी नहीं छूट सकती। मैं निज वर्णोचित क्षात्र धर्मानुसार, हर्षित हो धनञ्जय के साथ लड़ूँगा। साथ ही मैंने यह भी निश्चय कर रखा है कि, आपकी आज्ञा प्राप्त कर मैं अर्जुन से लड़ूँगा। अतः हे वीर! आप मुझे ऐसा करने की आज्ञा दीजिये। यदि मेरे मुख से हड़बड़ी में अथवा चपलतावश कोई अनुचित बात निकल गयी हो, अथवा मुझसे कोई अनकरना काम बन पड़ा हो, तो उसके लिये आप मुझे क्षमा प्रदान करें।

भीष्म जी ने कहा—हे कर्ण! यदि तू इस दारुण शत्रुभाव को नहीं त्याग सकता तो मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि, स्वर्गप्राप्ति की कामना से तू हर्षित हो, युद्ध कर। क्रोध एवं अभिमान को त्याग कर, साधुजनों की तरह

उत्तम चरितों से सम्पन्न होकर, अपनी शक्ति और अपने उत्साह के अनुसार अपने आश्रयदाता राजा के लिये युद्ध करके अपना कर्त्तव्य पालन कर। हे कर्ण ! मैं तुझे लड़ने की अनुमति देता हूँ। तेरी जो इच्छा होगी वह पूर्ण होगी। क्षत्रिय धर्म से प्राप्त होने वाले लोक को तू धनञ्जय द्वारा प्राप्त करेगा। तू अहङ्कार को त्याग कर और अपने बल वीर्य के सहारे युद्ध करना। क्योंकि क्षत्रियों के लिये युद्ध से बढ़ कर उत्तम अन्य कोई कर्म नहीं है।

हे कर्ण ! मैंने बहुत उद्योग किया कि सन्धि हो जाय; किन्तु मैं सदा असफल रहा। यह बात मैं तुझसे सत्य ही सत्य कहता हूँ।

सञ्जय ने कहा—हे धृतराष्ट्र ! जब गङ्गानन्दन भीष्म ने ये वचन कहे, तब राधेय कर्ण ने उनकी बातों की सराहना की और अपने रथ पर सवार हो, वह आपके पुत्र के शिविर की ओर प्रस्थानित हुआ।

भीष्म पर्व समाप्त